

अनुभवगिराउद्योत.

श्रीरामलेहधर्मप्रकाश ।

३५६
राम

संशोधक—

पं. मालचन्द्रजी शर्मा

प्रकाशक—

चौकसरामजी (सिंहथल)

बनारसद्वारा

वीकानेर.

रामलेह दिव्यवत्सर १०८१४
वि. संवत् १९८७, सन १९३१.

प्रथमावृत्ति. १०००

३५५.

(All rights reserved by the publisher).

PUBLISHED:—Chaukasramji (Simhathal) Badaramdwara, Bikaner.

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, Niranya Sagar Press,



Ram Narainji Vaidyara]
(Pikaner).

ॐ नमः श्रीमद्दरिरामरामदासंभ्यः ।

हरिया रसा तत्तका मतका रसा नाहिं ।
 मतका रसा जो फिरै, तहँ तत पायो नाहिं ॥
 वेद न जाने वेदको, पाच सुनाये वेद ।
 हरिया वेद वेदको, वेद करै सय छेद ॥
 दारकमें पायक पसै, यों भातम घट माहिं ।
 हरिया पयमें घृताहै, यिन भयियाँ कहु नाहिं ॥
 ज्ञान प्रह्लादी दृष्टि है, क्रिया ध्यान स्वरूप ।
 जनहरिया मिल एकटा, भातमतत्प अनूप ॥
 हरिया निर्गुण मूल है, सगुण सु शाय पान ।
 भक्ति बीज फल मुक्ति है, और धर्म सय आन ॥

(धीहरि • वाक्यम्)

रामनाम ततसारहै, सयदीको आधार ।
 रामा सुमरो रामको, भेटो विषय जँजार ॥
 दुनियाँ चाहे सुखको, सुख सयदी है झूट ।
 रामदास जो सुखहै, तासों रहिया रुठ ॥
 हंसः सोहँ जहँ नहीं, जहँ नहीं ध्यासोन्मुस ।
 विष्णु प्रह्ला शिष्य शेष नहीं, जहँ है प्रह्ला विलास ॥
 जीय शीय मेला भया, मिले ओत अरु मोत ।
 रामा साँई एक है, जहाँ प्रह्ला निज जोत ॥
 सलिल समाणा सिन्धुमें, सिंधु सलिल मिल एक ।
 रामदास केवल मिस्या, जहँ कोइ रूप न रेख ॥

(धीराम • वाक्यम्)

हरि घरया सर भावमें, निजमन सीपि सदाय ।
 शुद्धसमाज स्वातीनक्षत्र, मुक्ता क्यों नहीं धाय ॥
 अन्योन्याभावमें, कारज अपनी दौर ।
 प्रागभाव भास्यन्त मिल, शुद्ध सिद्धान्त पद दौर ॥

रामश्लेहीलक्षण ।

छप्पय.

मिलतां पारस्य प्रसिद्ध विमलं चित रामसनेही ।
उर कोमल मुख निर्मल प्रेम प्रवाह विदेही ॥
दरसन परसन भाव नेमनित भद्धा दासा ।
साच घाच गुरुभाम भक्ति प्रणमत इफ आसा ॥
देह रोह सम्पति सकल हरि अर्पण परमानिये ।
जनरामा मन घच कर्म रामश्लेही जानिये ॥ १ ॥
खान पान पदिरान निर्मली दशा सदाई ।
सारियक लेन भाहार द्विस्ता करिदि न कदाई ॥
नीर छाप तन परत दया जीयां पर राखे ।
बोले खान विचार असन कयहु मदि भाघे ॥
साधु भंगति पण्यत सुदढ नेम प्रेम दासा लियां ।
रामश्लेही रामदास तन मन घन लेघे क्रियां ॥ २ ॥
भद्धा सुमरण राम मीन मन रामसनेही ।
शुष्पमारी शुष्पयन्त नाप लेगी हरि रेही ॥
अमल संघालू घांग तजे भागिन मर पाने ।
सुभा दूनका कर्म नारि पर माना ज्ञाने ॥
साच हील शमा गढे राम राम सुमरण रता ।
रामा भर्ता भाव दद रामश्लेही ये मता ॥ ३ ॥

(श्रीगणेशाय नमः)

निवेदन ।

कोटिशः धन्यवाद है उन जगदाधार जगन्नियन्ता सर्वेश्वर परमेश्वर रा-
को जिनकी मेरणा से रामचंद्र-धर्मावलम्बी महानुभावों के लाभार्थ औ-
सद्धर्म के प्रचारार्थ श्रीसद्गुरुवाणी के प्रथम पाँचवार उपजानेके अनन्त
अब फिर कई विशेष अंग उपवाकर प्रकाशित करने का मुअवसर प्रा-
हुआ । परस्य शुद्ध करने का जैसा मनोरथ था वह सफल नहीं हुआ ।

आशा है समस्त महात्मा व सुज्ञ विज्ञ सज्जनगण इस अज्ञ व
अल्पज्ञता को न देख अपनी कृतज्ञताका परिचय देकर मुझको विशेष
आभारी करेंगे ।

दृष्टं किमपि लोकेऽसिद्ध निदोषं न निर्गुणम् ।

आवृणुध्वमतो दोषान्विवृणुध्वं गुणान् बुधाः ॥ १ ॥

विनीत

श्रीकृत्तरामसाधुः



नियमपंचदशी

अर्थात्

रामलेहीधर्मके पन्द्रह नियम ।

- (१) निर्गुण निराकार एक रामजी का ही दृष्ट रखना और उसी निर्लेप निरंज परमेश्वर की पराभक्ति से उपासना करनी ।
- (२) वेद, श्रुति, स्मृति, गुरुवाणी, शास्त्र, आर्षप्रंथ, पुराण, आत्मवाक्यों का मानना और सद्विद्या का प्रचार करना ।
- (३) पाठ पूजन संध्यावंदनादि नित्य कर्मों का पालन करना और शरीर सारे सुखों को छोड़कर निरंतर रामस्मरणपूर्वक योगाभ्यासी होना ।
- (४) सद्गुरु और सन्तों की आज्ञा मानना उनको ईश्वररूप जानना और सत्संग को परम लाभ समझना ।
- (५) अपने सब व्यवहारों को ईश्वरधीन जानना और हिसारहित सत्य धर्म युक्त साक्षिक उद्यमी होना ।
- (६) भोजनाच्छादन की चिन्ता न करना और न किसी से याचना करना केवल सर्व शक्तिमान एक ईश्वर का ही आश विश्वास रखना ।
- (७) ईश्वर के अर्पण किया हुआ प्रसाद ग्रहण करना आन देवताओंके प्रसाद का सर्वप्रथम स्मरण करना और न आन देवताओं को देवतबुद्धिकर मानना ।
- (८) धील, सन्तोष, त्याग, वैराग्य, क्षमा, सरलता, धृति आदि धारण करना और हित मित सख्यभाषी होना ।
- (९) काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग, द्वेष, अभिमान, ईर्ष्या, निंदा आदिका त्याग कर अन्तःकरण शुद्ध रखना संयम नियम से रहना और क्षीमात्र व्यवहार माता बहिन समझना ।
- (१०) बल छान कर पीना, रात्रि में भोजन न करना जीव रक्षार्थ पोंव देखना बचना और चातुमोस में विहार न करना अर्थात् एक जगह रहना ।
- (११) दूसरों के सुख दुःख हाजि लाभ को अपनी ही तरह समझना और सब

चाणी-विषय-सूची ।

(प्रथमपरिच्छेदः)

	पृष्ठ		पृष्ठ
धीरामानन्दजी महाराजकी अनुभवयाणी.	४४	१ प्राणायामवर्णन.	९७
धीरामानन्दजी महाराजकी अनुभवयाणी.	४६	१० पूरक कुंभक रेपक लक्षणवर्णन.	"
धीररिरामदासजी महाराजकी अनुभवयाणी.	५०	११ प्राटक ध्यानवर्णन.	९८
१ प्रत्यस्तुति.	"	१२ छुपुष्णावर्णन.	"
२ धीगुरुदेवजीको अंग.	५१	१३ ज्ञानन्परिहरणवर्णन.	१०१
३ गुरुशिष्यको प्रसंग.	५५	१४ भैरवगुफावर्णन.	१०२
४ उपदेशको अंग.	५६	१५ पदचक्रवर्णन.	१०३
५ ज्ञानसंयोगविरहको अंग.	५८	१६ सहस्रदलकमलवर्णन.	"
६ परशेको अंग.	६०	१७ नाडीवर्णन.	१०६
७ चैतावनीको अंग.	६३	१८ कुंडलिनीनाडीवर्णन.	"
८ ज्ञानविचारको अंग.	७१	१९ कुंडलिनी आपतके रुई तथा वर्णन.	१०८
९ शून्यसरोवरको अंग.	७२	२० मद्रमनियमादि प्रथिधर्मा वर्णन.	"
१० मायाप्रहलनिर्णयको अंग.	"	२१ शून्यसरोवरवर्णन.	१०९
११ घेहदको अंग.	७३	२२ नादकी आरंभादि चार अवस्था वर्णन.	"
१२ भ्रमनिर्णयको प्रसंग.	७५	२३ बोधरत्नाधारवर्णन.	११०
१३ निर्गुणको प्रसंग.	"	२४ द्विलक्ष्यवर्णन.	"
१४ प्रत्यक्षमाधिको प्रसंग.	७६	२५ श्योमपंचकवर्णन.	"
१५ ग्रंथ-निस्ताणी.	८२	२६ अनहदनाद तथा वाजाओका वर्णन.	१११
१ सहस्रदलक्षणवर्णन.	"	२७ ध्यानवर्णन.	११२
२ सारशब्दवर्णन.	८३	२८ पूर्व पश्चिम मार्गवर्णन.	११३
३ ध्रुविस्मृत्यादिप्रमाणद्वारा रामनामस्मरणवर्णन.	८३	२९ आसनवर्णन.	"
४ रसनधि रामनामस्मरणवर्णन.	९२	३० विशेषलेन सिद्धासनवर्णन.	"
५ स्मरणस्थान व मेदवर्णन.	"	३१ पंचमुद्रावर्णन.	११७
६ सुष्ठमवेद वर्णन.	९४	३२ समाधिबर्णन.	११९
७ ओउं सोउं अर्थात् हंसः सोहं नामक अजपानायत्रीवर्णन.	"	३३ पुनः संज्ञोपलेन योगके अर्थावर्णन.	१२०
८ अर्धनामवर्णन.	९६	३४ त्रिकुटिवर्णन.	१२३
		३५ लयावस्थावर्णन.	१२२
		३६ जीवनमुक्तिवर्णन.	१२५

श्रीपूरणदासजी महाराजकी अनुभववाणी.	३०७
१ छन्द चित्तद्वलोल.	३०७
२ ग्रन्थ-जन्मलीला.	३०
श्रीअर्जुनदासजी महाराजकी अनुभववाणी.	३०९
१ ग्रन्थ-पूर्वजन्म.	३०९
२ ग्रन्थ-परचीसार.	१६
श्रीपरसरामजी महाराजकी अनुभववाणी.	३१३
श्रीसेवगरामजी महाराजकी अनुभववाणी.	३१५
(तृतीयपरिच्छेदः)	
रामरक्षाएँ.	३१६
आरतीएँ.	३२२
श्रीहरिरामदासजी महाराज की परची	३२४

श्रीकबीर साहबकी अनुभववाणी रेखता.	३७८
श्रीनामदेवजी महाराजके अनुभव पद.	३८३
श्रीरैदासजी महाराजके अनुभव पद.	३८५
मंत्रद्वारा कंठीधारणदंडवतादिविधान.	३८९
(संग्रह-सार)	
निर्गुणभजनमाला.	१
विनयवैराग्योपदेशमंजरी.	५५
चौरासी बोल.	८६
विविध पुष्पगुच्छ.	९६
उपयोगी अनुकमणिका.	१०४
मादवृक्ष (वंशवृक्ष)	

१ अज्ञात वश कोई टहनी हट गई हो तो अपराध क्षमा करें ।

राग रागनिर्ये माने का समय ।

- (चार बजे से सूर्योदक तक)
 विभाष, जोगिया, ललित, कालिंगडा, भैरव ।
 (सूर्योदय से १० बजे तक)
 आसावरी, टोरी, भैरवी, विलावल ।
 (दिनके ११ से २ बजे तक)
 सुहासुपरई, सारंग, भीमपलासी, जिज्ञोटी ।
 (दिनके ३ बजे से सूर्यास्त तक)
 जयश्री (जैतथी) धनाश्री, पीछ, पूरवी, पूरिया, पहाकी, गौडी ।
 (सूर्यास्त से लेके रात्रि के १० बजे तक)
 कल्याण, ईमनकल्याण, केदारा, हमीर, सम्बायच, पहाक, नट, छायानट, भोपाली ।
 (रात्रि के १० बजे से १२ बजे तक)
 जैजैवन्ती, कान्हडा, माठ, गिरनारी, देश, सोरठ, विहाग, मारु ।
 (रात्रि के १२ बजे से ४ बजे तक)
 मालकोव, सोहनी, परज ।

नोटः—परिचय १३ पृष्ठके साइन २२ में (शामवी और सुदव) के स्थानमें भव और सुदवह पाठ जानना । इस पुस्तकमें समस्त पद ३०० हैं ।



॥ ॐ नमः श्रीमदाचार्यैभ्यः ॥

परिचय

नित्यं शुद्धं निराभासं निराकारं निरंजनम् ॥
नित्ययोषधिदानंदं गुरुं ब्रह्म नमाम्यहम् ॥ १ ॥
यावदायुस्त्रयो वन्द्या वेदान्तो गुरुरीश्वरः ॥
आदौ ज्ञानप्रसिद्धयर्थं कृतमत्वापनुत्तये ॥ २ ॥

श्रीसंप्रदायाचार्य श्रीरामानुजस्वामी की २३ वीं पद्धति में श्रीरामानंदस्वामी हुए। और इनकी ११ वीं पद्धति में कोडमदेसर (चीकानेर) के रामानंदी वैष्णव महंत श्रीचरणदासजी महाराज के शिष्य श्रीजैमलदासजी महाराज हुए। आप सांवतसर ग्राम में विराजमान होकर परंपरानुसार वैष्णवधर्म की मूर्तिपूजनादि सगुणोपासना बाल्यावस्था में ही करने लगे। सं० १७६० के चौमासे में दोपहरी के समय श्रीगोपालजी के मंदिर में आप श्रीमद्भगवद्गीता की कथा कर रहे थे। उसीसमय परब्रह्मराम पथिक का रूप धारण कर वहां पधारे। और श्रीजैमलदासजी महाराज को सम्बोधन करके कहा “अरे जैतराम! जल ला”। आपने पथिक की ओर देखा तो अलौकिक दिव्यमूर्ति योगिराज दिखाई दिए। आपने झट अलांबु (तूम्बी) पात्र में जल ला हाजर किया। योगिराजने प्रेमदत्त जल पानकर कहा कि भाई! अगले ग्राम जाने का मनोरथ है रास्ता बतावें।

१—संप्रदाय चार हैं:—

१ श्रीसंप्रदाय, २ शिवसंप्रदाय, ३ सनकारिकसंप्रदाय, और ४ ब्रह्मसंप्रदाय।
जिनके चार ही आचार्य हैं।

१ श्रीरामानुजस्वामी, २ श्रीविष्णुस्वामी, ३ श्रीनिम्बार्कस्वामी, ४ श्रीमध्वाचार्य।

रमा पद्धति रामानुज, विष्णुस्वामी त्रिपुरारि।

निम्बार्कस्वामी सनकारिका, माधव गुरुमुख चारि ॥ १ ॥

२—दीशक्ति प्रथम का नाम है।

यों कहकर आप रवाने होगये और जैमलदासजी महाराज को साथ लेलिये । फिर उनको एकांत में शमी (खेजडी) वृक्षके नीचे ले जाकर कहा “अथ तुम क्या साधन करते हो ?” जैमलदासजी महाराजने अपना आद्योपांत सारा वृत्तांत कह सुनाया । भगवान् ने कहा, इनके करनेसे तुमको कुछ निश्चय हुआ या नहीं ? । आपने कहा कि, भगवन् ! आपही बतलावें । तब महापुरुष परब्रह्मराम ने शुद्धान्तःकरण देख ब्रह्म की प्राप्तिके लिये योग-क्रियासहित मूलतारकमंत्रका उपदेश दिया । पूजनादि सब क्रियाकांड छुड़वाकर आप वहीं अंतर्धान होगये । इस बात का जैमलदासजी महाराज को बड़ा आश्चर्य हुआ और उनकी चारों ओर बहुत खोज की परंतु कुछ पता नहीं मिला । फिर आप मंदिरमें पधारे तो मी आपको यही चिन्ता थी कि मुझे कहीं स्वप्न तो नहीं आगया है । अथवा किसी ने मुझको धोखे से छला है । इसी विचारमें उन्होंने ने कुछ न खाया न पिया निराहार ही रहे । निद्रा भी नहीं आई । अर्धरात्रि होगई तब विचार आया कि स्वयम् ईश्वर ही ने ऐसा किया है परंतु मेरा ऐसा भाग्य कहाँ ? मैंने ऐसा कौनसा जप तप किया है जिससे ऐसा होता । उसी समय आकाशवाणी हुई “हे बालक ! तू मेरी खोज में इतना जातुर क्यों होरहा है ? साक्षात् सच्चिदानन्द अविनाशी पूर्णब्रह्म प्रकाशमान महापुरुष मैंने ही दिव्यरूप धरकर उपदेश और दर्शन दिए है और सत्य २ कहता हूं, आदि अन्त में तू मेरा ही जन है । संकल्प विकल्प छोड दे । तेरा अन्तःकरण शुद्ध होगया है । इसलिये ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के लिये सगुणउपासना को छोड कर ध्यानावस्थित हो और राम राम रटता हुआ निर्गुण-भक्ति कर” । इस आकाशवाणी को सुनते ही चित्त में शान्ति आगई और भेष पंथका सारा झमेला छोडकर योगाभ्यासपूर्वक राम राम रटण करते हुए योगारूढ होगए । और अलौकिक वैराग्योत्पादक निर्गुण पद वाणी का वर्णन किया । दर्शनार्थ यात्रियों की मीड़ अधिक रहने से आप खिन्न

१—भेषपंथ का संग तज दीया ।

दोय निरंतर हरिपद लीया ।

(श्रीराम, परची विधाम ९)

होकर दुलचासर पधार गए । कुए पर एक हजार मेट रहतेथे उनकी गति कर आप धीरे (टीवे) पर निवास करने लगे । यहाँ पर भी मीड अधिक होने लगी तब तो आप रोड़े ग्राम में पधार गए । और यहीं संवत् १८१० में पांचमौतिक शरीर को त्यागर परमधाम पधारे ।

भगवद्दर्शनोपदेश से पहले आपके एक रामदासजी नामक शिष्य हुए थे । जो दीक्षा लेते ही अयोध्याजी की तरफ चले गए और आपने जीवन का सारा समय भगवद्भक्ति आदि सगुणोपासना में उधर ही बिताया । वृद्धावस्था होने पर आप दुलचासर पधारे उस समय गुरुदेव तो परमधाम पधार ही चुके थे । फिर आपने यहाँ पर एक ठाकुरमंदिर बनवाया और उनकी सेवा पूजा में लवलीन रहने लगे । अकस्मात् एक-दिन मंदिर के चारे में एक राजपूत से बोल चाल होगई तब केवल मंदिर की सेवा के लिए आपने एक शिष्य को वहां छोड कर आप रोड़े को मुख्य गुरुस्थान समझकर वहीं पधारे । और वहां भगवन्मंदिर बनवाय भगवत् सेवा में समय ध्यतीत किया और दो चार नये शिष्य भी होगए । आपके परलोक पधारनेपर रोड़ा दुलचासर में आपकी दो गद्दी हुई जो अभीतक चली आती हैं और उनके गद्दीघर रामानंदी बैरागियों में (रामावत साधुओं में) महंत कहलाते हैं । गुरुपरंपरा से ये दोनों सिंह-थल के गुरुस्थान हैं और सिंहथल में जब दोनों स्वामीजी महाराजको पधराते हैं तब बधावणा भेट पूजादि क्रम प्राचीन रीतिअनुसार किया जाता है ।



(श्रीहरिरामदासजीमहाराज)

श्रीकान्हेर राज्यावर्गन गिद्मन्त नामक श्रमके श्रमन भाग्यचंद्रजी जीर्ण के घर आरने शुभनक्षत्र में शरीर भारत किया । गिरा ने शास्त्रविहित संपूर्ण संस्कार कराकर शुभनाम श्रीहरिरामदासजी महाराज रक्ता । धत्युम बुद्धि होने से बाल्यावस्था में ही गंगादि शास्त्रों में पाठन होगये और गणित (ज्योतिष) विद्या में प्रथमधेनी के पंडित गिने जाते थे । पूर्वजन्मोपाजित पुण्यपमात्र से छोटी अवस्थामें ही मोगांगों में योग्यता संपादन करलेने के बाद सिन्धी मन्मिष्ठगुरुदेवके शरण होने की अभिलाषा प्रगट की तो रामसर भाग के उदयरामजी नामक सद्गुरु ने आपको साथ दुल्हनासर भाग लेकर श्रीजैमलदासजी महाराज के दर्शन करवाये । आपने साष्टांग दंडवत प्रणाम पूर्वक विनय की और

१—रामानन्द भगवानन्द कर्मचन्द देशाकर ।

पूरणमालवि शिष्य रामोदरदास उज्जगर ॥

नारायण मोहनदास दास भाष्य मैदानी ।

ता शिष्य सुन्दरदास चरणदास निज सानी ॥

जिन जैमल प्रगटे नमो हरिरामदास के सब सुतन ।

रामदास वन्दन करत पदपङ्कज अनुचर यतन ॥ १ ॥

२ साष्टांग दंडवत प्रणामः—

दे पुनि पांच प्रदक्षिणा, अष्ट अंग परणाम ।

स्वामी जैमलदास के, परसे पद हरिराम ॥ १ ॥

३ विनयः—

धन्य २ मम भाग आज अनुराग दरस्से ।

धन्य २ मम भाग भिळे वैराग्यपुरुस्से ॥

धन्य २ मम भाग प्रेम अरु क्षेम प्रकासे ।

धन्य २ मम भाग जाग भव भर्म विनासे ॥

धन्य आज मम जन्म धन्य ताते तुम दर्शन भयो ।

जा काज सकल पूछत फिरत तो मनबोछित फल लयो ॥ १ ॥

1 उर शिरै वैष्टी वचन भैत पैद कैर जालु प्रमान ।

अष्ट अंग से होत है नमस्कार सविधान ॥ १ ॥





नम्रता के साथ श्रीजैमलदासजी महाराज के उपदेश से अपनी शंकाओं का निवारण कर संवत् सत्रहसौ के सईके में आपाढ कृष्णा त्रयोदशी को दीक्षा धारण की। श्रीगुरुदेव ने प्रसन्न हो औशीर्वाद प्रदान किया। बाद आप आज्ञा मांग सिंहथल पधारे। और नियम किया कि सिंहथल से दुलचासर जो ७ कोश है वहांपर संध्या होते ही श्रीगुरुदेवजी के पास चला जाना और रातभर गुरु सत्संगति कर प्रातः सूर्योदय से पहले ही वापिस आजाना इस प्रकार छः मास बीत गये। श्रीगुरुदेव ने आपको कहा कि तुम अब वहाँ पर भजन किया करो पर आप माने नहीं तो दश दश दिन का नियम किया। इस के कुछ दिन बाद फिर गुरुदेव ने एक एक मास से आने की आज्ञा दी तो आपने हट करना अनुचित समझ शिरोधार्य की और उसीपर चलते रहे। शिलोच्छ्रुति से निर्वाह कर भजन करते करते थोड़े ही काल में दशमद्वारसमाधिस्थ पूर्ण योगिराज होगये। और जीवों के परमकलशार्थ वेद वेदान्त उप-

छप्पय ।

- १—परा परम को धरम गुरु उर परम गुनायो ।
 दे करमें परसाद राम निज मंत्र गुनायो ॥
 नासा निरतहु छुरति आन पर एक हुयार्ते ।
 जोग जुगति की बात कही सब परम कृगार्ते ॥
 सर भये जबहु मंगल परम, करम भरम सब कथिया ।
 हरिरामदासकूं परमगुरु, यह उपदेश जु भणिया ॥ १ ॥
 मंत्र सत्रीवन जासु, जो निरिजःप्रति शिव कसो ।
 श्रीगुरु जैमलदास, (सो) यह उपदेशजु भणियो ॥ १ ॥

कुंडलिया ।

- १—धन्य १ सिधधर्म यह, कहे निगम लछ जेन ।
 परसो मम तुम उरन मध, परा परम जन प्रेम ॥
 परा परम जन प्रेम, नेम नित सेम निशास ।
 बहुत बड़े परताव मान, सग कचन
 निज हरिजन दिनहर परनि, गुन
 धन्य १ सिधधर्म यह,

निपट योगसारगर्भित अनुभववाणी का प्रकाश किया । आपके शिष्य हुए, अनेक परचे हुए, परंतु विस्तारमयसे थोड़ेसे लिखने में एकवार आप भजन कर रहे थे कि देवताओं की भेजी हुई अंपसरा परीक्षा के लिये आई और आपके पास बैठ गई । ध्यान की आंख खुली तो माखम हुआ कि छलने के लिये माया आई, आपने उसके उलटे हाथकी थाप मारी और पूर्ववत् ध्यानावस्थित रह । एकवार आपके शिष्य विहारीदासजी महाराज से एक निष्कारण द्वेष करने लगा तो आप अनुचित समझ वहां से एक दूरी पर नापासर ग्राम में पधार गये । वहां पर ठाकुर देवीने ग्रामसहित आपका बहुत स्वागत किया । पीछे से उस पुरुष के पुत्र एकही दिनमें पंचत्व को प्राप्त होगये और अग्नि के प्रकोपसे धन सब स्वाहा होगया तब घबराकर विलाप कलाप करने लगा । उसे समझाया कि यह फल महात्माओं से विद्वेष करनेका है । गांव के लोग डरने लगे । तब तो करणीदानजी ने ढोल बजवाकर वास इकट्ठे किये और उस को साथ लेकर नापासर आये । श्रीहरियानन्दजी महाराज के चरणों में पड़कर अपराध क्षमा कर वापस पधराये ।

बीकानेर शहर के दो वैश्य जिनका नाम नेतराम और मुरली था उन्होंने ने विचार किया कि रातही रातमें चलकर सिंहथल श्री महाराज के दर्शन कर आवें । ऐसी सलाह कर घरवालों से कहदिया हम लक्ष्मीनाथ भगवान् के दरवारमें ही आज जागण करेंगे और सिंहथल का रास्ता लिया । बीकानेर से ९ कोश दूरी होने के कारण अर्धर को वहां पहुंचे । श्रीमहाराज ध्यानावस्थित हो चुके थे और दीपक रोशनी कुछ भी प्रकाश नहीं था सो उनके लिये यह बहुत दुःख की बात हुई

१—पुत्र मुवा अति दुख पच्यो, हीन भवो धन छाज ।

घर टिरणाओ हुयगयो, कहा हम कियो अज्ञाज ॥ १ ॥

(श्रीदमि. परची)

हम बिना दर्शन किये पीछे कैसे जाँय । श्रीजी महाराज ने उनकी ऐसी उत्कट इच्छा जान एक ऐसा दिव्य प्रकाश प्रकट किया कि वे आश्चर्य में भरगये और आपके दर्शन किये और स्तुति की। तब श्री महाराज ने उनसे फरमाया कि यह सब ईश्वर की माया है इसके विषय में किसीसे कुछ मत कहना। इस आज्ञा को शिरोधार्यकर रातकी रात में वे दोनों पीछे चौकानेर आगये।

स्वरूपसिंहजी नामक ब्राह्मण जो दैवयोगसे निर्धन हो गये थे अतः उनके घर वारादि सब गिरवी होगये। जब बहुतही दुःखित होकर आप श्रीजी महाराज के पास आये और अपना सारा वृत्तांत कह सुनाये तब श्रीमहाराज दयार्द्रचित्त हो उनको शिष्य बनाकर लक्ष्मीपूजा पढ़नादिया।

एकवार सब शिष्यों ने आपके जीवितमहोत्सव (मेला) के लिये संवत् १८३४ चैत्रकृष्णा ७ का निश्चयकर सब को आमंत्रण देदिया मेले की सारी तय्यारियां होने लगी। अकस्मात् ऐसा हुआ कि आप १५ दिन पहले ही शरीर को छोड़ परलोक पधार गये। शिष्यों को बहुत दुःख और चिंता हुई। उनकी ऐसी स्थिति देख आप भगवान् ने एकमास की आज्ञा लेकर पीछे पधारे तब तो सारे काम बड़ी धूमधाम से होने लगे। नियत तिथि पर सारा आमंत्रित समाज एकत्रित होगया और जिनको पानीका टेका दिया गयाथा वे पर्याप्त पानी नहीं देसके इसलिये लोगों को पानी बिना बड़ा कष्ट होने लगा। शिष्यों ने सारी बातें श्रीगुरुदेव से अर्ज की। आपने फरमाया कि ईश्वर सब इच्छाओं को पूर्ण करेगा। और आप अपनी कुटी में ध्यान लगाकर

१—पादो गुण गोविंद की, पादो इत्य अमाय ।

आदो साव सत्वर के, सतगुरु दयाल प्रसाद ॥ १ ॥

(ओइति. परपी)

२—एतन्न वरदा वरदे, एतन्नायक विष्णवत ।

वरदाया वरतर सं, आवे महा दयाल ॥ १ ॥

विराजगये । इसके दो घड़ी बादही उत्तर की तरफ में एक छोटी सी बादली उठी और उसका इतना विचार हुआ कि उसने वहाँ बरस कर पानी ही पानी कर दिया । फिर महोत्सव पांच दिन तक बड़े समारोह के साथ मनाकर सब लोग अपने अपने मान को चले गये । तब कई दिन के बाद आप अपनी प्रतिज्ञा को यादकर संवत् १८३५ मिति चैत्रशुक्ल ७ शुक्लवार को तीन पहर पहिले से ही अन्त्येष्टि क्रिया की सारी सामग्री मंगवाली । दर्शनार्थ हजारों पुरुष इकट्ठे हुए । उस समय बीठू चारणों ने आपकी बडी सेवा बजाई । तब आपने जीवनदान चारण को बुलवाया और उसे गुल्ल सीनसे बहा । वह जहाँ अब देवउ बने हैं उस स्थानको गया और वहाँ पर बेरी घृत के पात्र एक रेत का दूबा जो महोत्सव के पहिले ही से बनाथा वह ज्यों का त्यों मिला । और जैसे ही उसके हाथ लगाया इधर भीजी महाराज ने इस पंच-भौतिक शरीर को त्याग दिया । आपका विमान जो बनाया गया वह बड़ा बनगया । लोगों को चिंता हुई इसकी चारणे (दरवाजे) में से किस तरह से निकालेंगे । तब पूर्ण विश्वस्त बीदा नामक सुधार ने कहा आपकी गती अपरंपार है "कैतो होय चारणो चोढो कै बैकुंठ होय जावै सोढो" यों कह विमान बाहर पधराया तो शट बाहर आगया । देवलोक स्थान में पधराकर अगर कपूर घृत खोपरा (गिरी) चंद्रनादि से आपकी अन्त्येष्टि क्रिया की । चिता ठंडी होनेपर नारायणदासजी महाराज की प्रार्थनानुसार अबोट एक नारियल एक गादी और पांच सात पटल-दर्शनार्थ मिले । और मी ऐसे आपके अनेक परचे हुए ।

भूत ग्रह दुज पीड़ा पंगुल, अंध मूक जड़ दीन ।

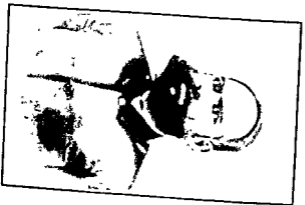
दृष्टि देखतां किये सुखारी, पर उपकार प्रवीन ॥ १ ॥







Set Ramprapuji Maharaj



Chowke Kamal Vaidya A. J. 1904

श्रीविहारीदासजी महाराज

श्रीनारायणदासजी महाराज । श्रीलक्ष्मणदासजी महाराज ।
 श्रीरामदासजी महाराज । श्रीअमीरामजी महाराज ।
 श्रीआदूरामजी महाराज । श्रीदईदासजी महाराज ।

आदि कई शिष्य श्रीहरिरामदासजी महाराजके हुए जिनमें श्रीविहारी-
 दासजी महाराज अधिकारी थे । जिनके श्रीहरदेवदासजी महाराज
 पाटवी हुए । आपके बाद यथाक्रम निम्न लिखित पाटगादी विराजे ।

श्रीमोतीरामजी महाराज ।
 श्रीरघुनाथदासजी महाराज ।
 श्रीचेतनदासजी महाराज ।

आप सब भजनानन्दी तपोमूर्ति प्रभावशाली महात्मा हुए । और
 आपके सैंकड़ों शिष्य हुए ।

वर्तमान समय में प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद श्री १०८ श्रीरामप्रतापजी
 महाराज पाटगादी पर विराजमान हैं । आप शम, दम, त्याग, वैराग्य,
 तितिक्षामें शुक्रदेवजी के समान अद्वितीय दयालु मूर्ति हैं ।

सवैया ।

१ अनुभवः—

रैण दिहा नित नाम चितारत भूल मती मन मूड गँबारा ।
 भवसागर मति हूँव मुसाफिर होय सचेत बिकार सुँ न्यारा ॥
 माया मद मोह सुँ राच मती नर या जुगमोहि नही कोइ थारा ।
 आदुराम कहै ऐसी सुँज मिली अब राम हि राम जपो मेरे प्यारा ॥ १ ॥

इंदय छन्द ।

२ अनुभवः—हरिराम के पाट तपैं हरदेव जु हंस दसा सब संतन प्यारो ।
 शीरथ दृष्टि रु बैन विसाल जु राग रु द्वेष दोऊँ पख न्यारो ॥
 शील सन्तोष सदा मन शीतल ज्ञान रु ध्यान भगतिको भारो ।
 मोतिय राम कहै कर जोर जु भेष की टेक निभावनवारो ॥ १ ॥

दोहा ।

मल दासजी भयो प्रणम्य हरिराम ।
 मोती दास रघू विधाम ॥ १ ॥

(श्रीरामदासजी महाराज)

जोधपुर राज्य के वीकोकोर नामक ग्राम में राष्ट्रीय शार्दूलजी के घर में संवत् १७८३ फाल्गुण कृष्णा १३ के दिन शुभ मुहूर्त में आप प्रगट हुए । आपके जन्मसमयमें बहुत आनंदोत्सव हुआ । बड़े होनेपर थोड़े काल में विद्या प्राप्त करली और शाक्तिक मतावलंबी होकर वैराग्य धारण कर जहां तहां विचरने लगे । द्वादश गुरु किये परन्तु चित्त की शांति कहीं भी नहीं हुई । ऐसे विचरते विचरते बीकानेर पधार गये । वहां एक सद्गृहस्थ के मुखसे श्रीहरिरामदासजी महाराजका रेखता सुना । सुनते ही उस गृहस्थसे सारा पता पूछ आप सीधे सिंहथल पधारे । और श्रीहरिरामदासजी महाराज के चरणों में पड़ विनय की कि महाराज ! मैं

१—क्षेत्र भक्त श्रममग्नत नामा, सुरधरदेश प्रकट तनु धामा ।
अवनीपति ह्यस ऋषि जानो, अजगुण मास प्रगट दरसानो ॥
उदय अंकुर अनवरत परया, भयो मुकाल भक्तजन हरया ।
सादृताम लकार सिधंता, धन धन पिता पुत्र जन्मंता ॥
(श्रीराम. परची)

१ रेखता:—

अयम अगाध में ज्ञान पोषी पञ्चा भरम अज्ञान कुं दूर डान्या ।
नाम निरधार आधार मेरे भया गहर गुम्मान मन मोह मान्या ॥
गीन चढ चूर करि पित्त चौये गया नाभि अस्थान धुनि धम्मकारा ।
साय उरयाय में काय निरभे क्रिया रम रया एक आतम्म यारा ॥
सद्वच में साय सुगुराय ऐसे मंडे रोम में रोम ररकार जागे ।
दाय हरियम सुददेव प्रगार ते हरकुं जीत वेहर जागे ॥ १ ॥

१ उच्यते:—मडे होय के कात्र लात्र छांटी जगकेरी ।

दृष्ट पव क्रिया अनेक तुया उर मिठी न मेरी ॥
इन्द्रय गुर फिर क्रिया क्रिया मन मील्या स जोई ।
मन उद्वेग अगार कात्र हरिया नई कोई ॥
अनुद्यम सिधंत कायव अनंग आर अय भाये छवे ।
अवय नय अउरण दरण महरथान हूत्रे अबै ॥ १ ॥

रोट:—अरत्र ह्यपी एर मित्र, दुष्कर कठिन तरण ।

काया कात्र कात्र दृष्ट, बसो उररे कात्र ॥ १ ॥

(श्रीराम. परची)

बहुत जगह भटक लिया और द्वादश गुरु भी करबुका परंतु मुझे सच्चा और पूरण ज्ञान किसी से नहीं मिला । अब मुझको सिवाय आपके कहीं पर भी आश्रय नहीं है अतः कृपाकर इस दास को दीक्षा दीजिये श्रीजी महाराज ने आपके ओषड रूप को देखकर फरमाया-भाई ! रामखेह ऐसा रूप नहीं रखते हैं । यह सुनते ही आपने सेली, सिंगी, टामण दूणादि सारे आडंबरों को दूर फेंक दिये । तब श्रीगुरुदेव ने आज्ञा दी कि एक वर्ष के अनंतर तुम शिष्य बनाए जावोगे । तब आपने अधी होकर प्रतिज्ञा के साथ कहा कि, या तो आप अपना शिष्य बनालें नहीं तो अन्न और जल परित्याग कर शरीर छोड़दूंगा । यह सुन एक दूसरे शिष्य को परीक्षा लेने के वास्ते आज्ञा दी कि वास्तव में इनकी दीक्षा लेने की सच्ची इच्छा है या नहीं । परंतु सोने को जितना तपाया जाए उतना ही वह उत्तम होता है इसी तरह आपकी कसौटी पर पूर्ण उतरे तब तो आपको सच्चे जिज्ञासू समझ संवत् १८०९ वैशाख शुक्ल ११ के प्रातःकाल सिद्धियोग में सन्मुख आसन लगवाकर राममंत्रोपदेश दे शिष्य बना लिये । और राममंत्र का प्रभाव भक्ति ज्ञान योग क्रिया सहित भजन की सारी विधि बताकर सदुपदेश दे रामखेहधर्म के संपूर्ण नियम बतलाये । और फरमाया कि इस रामखेह संगत में आजसे तुम्हारे

१—गुरु धर्म मर्यादा रीति अनुसार खैदापके महन्त आज दिनपर्यंत सिद्धयल सन्मुख ही विराजते हैं ।

- २—रामदास तोहि नाम सदाई । राम सनेह संगति के भाँई ॥ १ ॥
 ध्यान सनेह जाल जग झँटा । जामण मरण काल कम कूटा ॥ २ ॥
 मोह सनेह जन्म घर घरणा । जाति सनेह चौराही फिरणा ॥ ३ ॥
 काम क्रोध के लोभ सनेही । खान पान धन मनुं मिलेही ॥ ४ ॥
 देह अवस्था प्रकृति सनेहा । कर्म प्रधान संजोग मिलेहा ॥ ५ ॥
 पांच पचीस सनेह सनेहा । पांच कोस मध चितवन देहा ॥ ६ ॥
 एता नेह सत्रैरे भाई । एक प्रीति गुहचरण संभाई ॥ ७ ॥
 रामसनेही जाको नामा । हरि गुरु साथ संगति विधाना ॥ ८ ॥
 श्रीगुरुदेव कृपा भई भारी । मान लई तिस परा परारी ॥ ९ ॥

(श्रीराम. परचौ विधाम ८)

नाम रामदासजी है। ऐसा सुनते ही आप तो कृतकृत्य होगये। श्रीजी महाराज के फरमाए हुए सारे उपदेशों को शिरपर चढ़ा प्रणाम कर आज्ञा ले विनयकर मारवाड में महलाणे ग्राम पधारे। लोगों ने एक पर्णकुटी बनवा दी तो आप वहीं पर श्वासोच्छ्वास भजन करने लगे। दो मास के अनंतर कुछ घट चिन्ह दिखाई दिए और गुरुदर्शन की इच्छा हुई तब तो आप रवाने होकर रामसर गाँव जो गुरुधाम से चार कोश है वहीं से पनही परित्याग कर दंडवत प्रणाम करते हुए सिंहथल पधारे और श्रीगुरुदेवजी के चरणारविंदों में पड़कर साष्टांग दंडवत प्रणाम किया और सब गुरु भाइयों से मिले। गुरुदेव ने संबोधन किया तो आपने और कुछ नहीं कहा। केवल यही कहा कि "परचै नाद हमारे स्वामी"। तब श्रीगुरुदेव ने आज्ञा दी कि अमी तुम भ्रम में हो। दूसरे शिष्यों के साथ तुम्हारी भी परीक्षा ली जायगी। और ली गई। उसमें आप सब से पीछे रहगये। तो आपको इस बात का अत्यंत खेद हुआ। श्रीगुरुदेव ने आप की ऐसी स्थिति देख फरमाया कि तुम इस बात का क्या दुःख करते हो? तुम्हारी भक्ति मेरे प्रति सबसे अधिक है। और आगे चलकर तुमही सबसे बढ़कर होवोगे। ऐसे आशीर्वादात्मक गुरुवाक्य सुनकर आप बड़े प्रसन्न हो एक पखवाड़ा और कुछदिन गुरुचरणों में निवास कर पीछे महलाणे ही पधार गये। छ मास के अनंतर आप फिर गुरुदर्शनार्थ सिंहथल पधारे तब श्रीगुरुदेवने आपको अपने उत्तम शिष्य

१—बार बार कर जोर के, बहु विधि कथ्यो प्रणाम ।

श्रीगुरु शरणै राखियो, खाना जाद गुलाम ॥ १ ॥

(श्रीराम. परची विधाम ११)

२—अधिकारीजन विहारीदासा, तारुं मिले रामजनदासा ।

गुरु भाई वृष होते जेता, सबसुं मिले परस्पर डेता ॥

(श्रीराम. परची विधाम १३)

३—मीर भरका दूर कराए । धीगुरु सनमुख दास बैठाए ।

अथ सनमुख होय भजन कराओ । आतम परचै सुरत लगावो ।

(श्रीराम. परची विधाम १३)

बताये । और शिष्य बनाने तथा उपदेश देने की आज्ञा दी । आप कई दिन गुरुधाम में निवास कर पीछे ही पधार गए । और भजन करने लगे । नामीचिन्ह प्रगट होने पर फिर सिंहथल पधारे । अपना बनाया हुआ "ज्ञानविवेक" ग्रंथ श्रीजी महाराज को सुनाया, सुनकर महाराज ने फरमाया कि पुत्र ! तुम्हारे घट में ज्ञान प्रगट होगया है ।

दोहा ।

नाभि लयो विधाम मन, घंक्र नाल रस लेत ।
रामदास पच्छिम दिशा, शब्द चलण का नेत ॥ १ ॥

चौपाई ।

श्रीगुरु आगम यों वरणै । तिरसी जीव तुम्हारे शरणै ॥ १ ॥
रामदास कहै मैं जु अनरथा । आप प्रताप भाप मम नरथा ॥ २ ॥
(श्रीराम. परची विभाम १४)

आज्ञा ले फिर पीछे पधार गए । इस भांति श्रीगुरुदेवजी के दर्शनार्थ आप कई बार पधारे । बहुत से पुरुष आपके शिष्य होने को पहले आए थे पर आपने उनको दीक्षा नहीं दी । फिर श्रीगुरुदेवजी की आज्ञा से दीक्षा देनी आरंभ करदी । आपके ५२ शिष्य हुए । शिष्यों के आग्रह से मालवा, मेवाड़ आदि देशों में रामत कराते हुए पहिले गुरुदर्शनार्थ सिंहथल पधारे, फिर मारवाड़ बह्मग्राम पधारे, वहां कुछ समय विराजे और वहां से आसोप पधार गए । वहीं पर आपके दशवें द्वार की समाधि सिद्ध हुई । और गुरुमहिमा, भक्तमाल, चैतावनी, जमफारगती आदि अनेक ग्रंथ तथा अंगबद्ध अनुभव वाणी की रचना हुई । जिन वाणी के दास, उदास, शांभवी, और खुदब करके चार भेद हैं । इस प्रकार वाणी-रचना के बाद फिर आप सिंहथल पधारे । यहां एक दिन बाहिर की तरफ आप संध्या करा रहे थे इतने में ही तो आपको श्रीकबीर साहब का

१—दो उपदेश जिग्याती आवै । गुरुपद दरखां गुरुपद पावै ।

(श्रीराम. परची विभाम १३)

२—रामभजन को दो उपदेशा, परा परायण गावत शैसा ।

(श्रीराम: परची विभाम १५)

दर्शन हुआ और कभीर साहब ने फरमाया कि रामदासजी जाशों में रहना । आपने आकर श्रीगुरुदेव से कहा तो श्रीगुरुदेवजी ने जाशों का अर्थ सत्संगति और सबाई भक्ति का बताया । आज्ञा माँग वहाँ से आप शीलवा नामक ग्राम में पधारे । प्रातःकाल में आप स्नान पधरा रहे थे कि इतने ही में आकाशवाणी हुई कि “हे रामदासजी ! यह हमारा सत्य वचन है कि, तुम्हारे धर्म की खूब वृद्धि होगी ।” फिर वहाँसे आसोप और अरटिया ग्राम होते हुए पुरोहितजी पन्नसिंहजी के अत्याग्रह से आप सं० १८२२ में खैड़ापे पधारे और यहाँपर आपका स्थान बना और हजारों शिष्य हुए । कुछ समय के उपरांत आपने अपने शिष्यों से प्रकट किया कि, यहाँ पर श्रीगुरुदेवजी महाराज को पधारवें तो बड़ा आनंद हो ऐसा फरमाकर तत्क्षण बहल जुड़वा आपने कान्हड़दासजी और हेमदासजी कूं सिंहथल श्रीजी महाराज को पधाराने के लिये रवाने कर दिये । यह समाचार चपला की चमक की भांति सारे गामों में फैल गया । तमाम बाल वृद्ध नर और नारियों के आनंद की सीमा न रही । और सारे मांगलिक साज सजाने लगे । इतना ही नहीं, रास्ते के ग्राम जिधर से श्रीगुरुदेवजी महाराज पधारने को थे उनमें भी उसी तरह आनंद मंगल वधाइयाँ होने लगीं । श्रीगुरुदेव जिस ग्राम से होकर पधारते थे वहाँ के निवासी बड़े आवभाव से एक दो दिन विराजमान कर फिर आगे पधारने देते थे । इस भांति ४४ कोसकी रासत कराते हुए कई दिन से खैड़ापे पधारे । आप पधार गए हैं इस आनंदवर्धक वधाई को सुनते ही श्रीरामदासजी महाराज अपने साधु गृहस्थ आदि तमाम शिष्यों के सहित गाजेवाजे से वधावणे की सब सामग्री सजाय दंडवत प्रणाम करते हुए श्रीगुरुदेवजी को वधाने के लिये सन्मुख पधार वधावणे की रीति से वधाय बाजोट पर श्रीजी महाराज को विराजमान कर पूजन आरती की, और पगमंडा निबछावर करते हुए स्थान में पधराए । उस समय के सुख आनंदका बताना इस निर्जीव लेखनी की शक्ति से बाहर है । हां अल-

बत्ते श्रीदयालदासजी महाराज के फरमाये हुए उस वक्त के बधावणे के दो पदों से कुछ आनंद का अनुभव कर सकते हैं। श्रीजी महाराज के पधारणे की खुशी में प्रत्येक दिन नित्य नए उत्सव होने लगे। एक महीना और पांच दिन क्षण के समान चले गए। अत्यंत हट के साथ सीख मांग ने पर अपने शिष्यों से फूल डोल के मेले पर प्राप्त हुई जो आदि अंत की भेट वह सारी की सारी श्रीरामदासजी महाराज ने श्रीगुरुदेवजी महाराज को अर्पण कर दी। श्रीगुरुदेवने कुछ अपने लिए भी रखने को फरमाया तो भी आपने नहीं रखी और विनय की कि, इसमें मेरा क्या किरावर है? मैंने तो मालधणी को माल अर्पण किया है, यहां तक कि मेरे प्राणभी आप के न्योछावर हैं। यों विनय कर फिर शाल दुशाले घानू वर्तन आदि बहुत वस्तुएँ भेंट की। और आपको दो कौस तक पहुंचाने के लिये पधारे। वापस लौटाने पर भी पीछे नहीं

१—झारें मन आज उमावो हो, राम सनेही आविया निज भाव बधावो हो ॥ १ ॥

या दिन कों मैं बलि जाऊं हो, मिले पियारे रामजन सन्मुख छिर नाऊं हो ॥ २ ॥

यह दोनों बधावणे इसी पुस्तक के बधावणा प्रकरणमें हैं।

२—आईं भेट समर्पण सारी, आदि अंत पूजा पूजारी।

जीव जिंद धिन प्राण निछरावर, माल धणी देतां नहि किरावर ॥

(श्रीराम. परची विधाम २०)

स्वामी कह्यो क्यो न तुम राखी, अरपण करी आज कर अखी।

रामदास कहै तन मन धन चेरा, मैं तो सदा चरनका चेरा ॥

(धीहरि. परची)

पूजन भेट घरे निज भावं., पाट पीतांबर सोम धीपावं।

धीगुरुज नमो हरिरामं, सा अधिकारि विहारि प्रणामं।

ओर सभे सिख अंबर सुभावं., संत पिदा हुय पंच सिधायं।

(परची धीबालदासजीकृत)

३—जोजन अर्ध पहुँचावण गया, रामसेही व्याकुल भया।

धीगुरुआज्ञा सीनी जबही, अब जावो तुम घरकूं सबही ॥

रामदास ऐसे मुख गायक, धीगुरुचरणसरोज घर लायक।

या दिन टौर नही मम कहहू, जीव विधाम त्रिकारी सबहू ॥

(श्रीराम. परची विधाम २०)

होते हैं । बड़े गुरिहत्त से पीछे सोटवाने । पेरती मांति श्रीगुरुदेवजी महाराज की पपरावणी कई बार हुई । एकवार आपने श्रीगुरुदेव से शर्ष की कि महाराज ! गांव के अंदर का स्नान आपके परिवार के लिये छोटा है अतः अब कोई बड़ा स्नान बनवाने की आज्ञा फरमावें । तब आपने भागसे पूर्ण की ओर पहाड़ी की तलहटी में जगह बतलाई कि यहाँ बनवा लो । तब तो श्रीजी महाराज की आज्ञा से वहीं पर संवत् १८१४ फाल्गुण कृष्णा ४ के दिन स्नान की नींव डालदी गई । और कई वर्षों में जाकर यह आलिशान स्नान संपूर्ण हुआ । आप के जीवन-काल में जितने परचे हुए हैं वे सब परची में श्रीदयालुदासजी महाराजने सपिस्तृत वर्णन किए हैं । जिनका संक्षिप्त सार जो श्रीअर्जुनदास जी महाराज करके बनाया गया है वह यहाँ पर उद्धृत किया जाता है ।

अथ परची सार ।

श्रीहरि गुरु हरिराम धिन, रामदास मुझ सांम ।
घालपुष्पपूरण प्रती, अर्जुन की परणाम ॥ १ ॥

दोहा ।

नित अवतारी संत धिन, जीवां करण उधार ।
भरतखंड मुरघर धरा, आन लियो अवतार ॥ १ ॥

छप्पय ।

संवत सतरहसो जान वर्ष तँयास्यो कहिये ।
फागण बद् ब्रयोदशी रामदास जनमाये ॥
खोजत वर्ष पचीस मिले गुरु हरियानंदा ।
नव को वर्ष प्रसिद्ध शुक्ल वैशाख लहंदा ॥
लेह ग्यारस अग्या रमता आप देशमज ।
गांव मेलानै विराजकर सुमरण विध एकंत सज ॥ १ ॥
वर्ष तीन हम भये जुगलमत अडिग सधीरा ।
वर्ष दुकाल जु मांहि नाजकी अतिशय भीरा ॥
नारवान जदुवंश सुभी है गाँवज ठाकर ।
७५५ मायना ताह भेट रुपियो ले आकर ॥

३ हम राखाँ नहीं करो पुण्य दूजा घणा ।
रामराय पूरे सवन हम शरणागत ह्यां तणा ॥ २ ॥

इंदव छंद ।

मान लई सत यात तिही दिन नित्य रसोई सु आन जिमावै ।
 काल वारोतड़े लोक दुखी तब संत को चित अत्यन्त दुखावै ॥
 लेत उदे कण पंच पियै जल पूछ तिनां प्रति सांच वतावै ।
 एम भये दिन सात अखंडसु तो पण ध्यान अडिगग लगावै ॥ १ ॥
 सेवगरूप धरे तब माधव चून रोहं घृत दाल ले आप ।
 साधु हि राम रसोई करो तुम राम गुरू पति भोग लगाए ॥
 आजहुं ते दुख दूरि भयो तुम कहकर आपन धाम सिधाए ।
 नार जु खान आप ढलते दिन संतहुते सब दुःख जु गाये ॥ २ ॥

मनहर छंद ।

कहै नारखान अहो बड़ो दुःख समय मांहि
 पुसी गूघरी जु पाय आज हमें भाये हैं ।
 साधूराम कहै तुम आये परमात इहां
 लायके रसोई हमें कखो गांघ जाये हैं ॥
 तबै नारखान भाखै गांघ जो विराई हंत
 आप तुमे पास जेज घड़ी नाँहि लाये हैं ।
 साधूराम हंत कखो रामदास षोल एम
 इने केश बघे पटफटे देख धाये हैं ॥ १ ॥

दोहा ।

नारखान मन विसम हुय, अद्भुत यात निहार ।
 भाग बड़ो मेरो अहो, इसे संत हम द्वार ॥ १ ॥

कवित्त ।

ताहि समे देशमाँस दिपिणी फौज लेव आप
 राज विरोध राज काज देश पेसवार है ।
 गाम जो मेलणा हत लोक सबै भाग चले
 भाटी आय संत पास स्वाल एम डार है ॥
 मात आसा देहु सो तो चलत कबीला साथ
 आप हमें चदां पाइ यहाँ संभ्या सार है ।
 रामदास कहै तुम मेरी चित करो नाहिं
 मुन्हें घट सोई राम उनमें निहार है ॥ १ ॥

लौटते हैं। बड़े मुश्किल से पीछे लोटवाये। ऐसी भांति श्रीगुरुदेवजी महाराज की पधरावणी कई वार हुई। एकवार आपने श्रीगुरुदेव से अर्घ की कि महाराज! गांव के अंदर का स्थान आपके परिवार के लिये छोटा है अतः अब कोई बड़ा स्थान बनवाने की आज्ञा फरमावें। तब आपने ग्रामसे पूर्व की ओर पहाड़ी की तलहटी में जगह बतलाई कि यहां बनवा लो। तब तो श्रीजी महाराज की आज्ञा से वहीं पर संवत् १८३४ फाल्गुण कृष्णा ४ के दिन स्थान की नींव डालदी गई। और कई वर्षों में जाकर वह आलिशान स्थान संपूर्ण हुआ। आप के जीवन-काल में जितने परचे हुए हैं वे सब परची में श्रीदयालुदासजी महाराजने सविस्तृत वर्णन किए हैं। जिनका संक्षिप्त सार जो श्रीअर्जुनदास जी महाराज करके बनाया गया है वह यहां पर उद्धृत किया जाता है।

अथ परची सार।

श्रीहरि गुरु हरिराम धिन, रामदास मुझ सांम।
घालपुरुषपूरण प्रती, अर्जुन की परणाम ॥ १ ॥

दोहा।

नित अयतारी संत धिन, जीवां करण उधार।
भरतरांड मुरघर घरा, आन लियो अवतार ॥ १ ॥

छप्पय।

संयत सतरहसो जान धरं तँयास्यो फहिये।
फागण थद प्रयोदशी रामदासं जनमारये ॥
सोजत धरं परचीम मिले गुरु हरियानंदा।
नय को धरं प्रसिद्ध गुरु धैशाख लहंदा ॥
लेह ग्यारम अग्या रमता आप देशमज।
गांव मेलाणै विराजकर सुमरण विघ एकंत सज ॥ १ ॥
धरं तीन हम भये जुगलमत अहिग सधीरा।
धरं दुकाल जु मांदि नाजकी अतिशय भीरा ॥
नारखान जदुयंत सुभी हे गाँवज ठाकर।
उपज मायना ताह भेट रुपियो ले आकर ॥
बहे साधु हम राखीं नहीं करो पुण्य दूजा घणा।
रामराप पूरे सपन हम शरणागत त्यां तणा ॥ २ ॥

इंदव छंद ।

मान लई सत घात तिही दिन नित्य रसोई सु आन जिमाड़े ।
 काल बारीतइ लोक दुखी तब संत को चित अत्यन्त दुखावै ॥
 लेत उदे कण पंच पिथै जल पूछ तिनानं प्रति सांच बतावै ।
 एम भये दिन सात अखंडसु तो पण ध्यान अदिग्ग लगावै ॥ १ ॥
 सेवगरूप धरे तब माथव चून गेहूं घृत दाल ले आप ।
 साधु हि राम रसोइ करो तुम राम गुरू पति भोग लगाए ॥
 आजहुं ते दुख दूरि भयो तुम कहकर आपन धाम सिधाए ।
 नार जु खान आप ढलते दिन संतहुते सब दुःख जु माये ॥ २ ॥

मनहर छंद ।

कहै नारखान अहो बड़ो दुःख समय मांहि
 पुसी गूबरी जु पाय आज हमें आये हैं ।
 साधूराम कहै तुम आये परमात इहां
 लायके रसोई हमें कह्यो गांय जाये हैं ॥
 तबै नारखान भाखै गांय जो विराई हूंत
 आप तुमे पास जेज घड़ी नांहि लाये हैं ।
 साधूराम हूंत कह्यो रामदास बोल एम
 इने केश वधे पटकटे देख धाये हैं ॥ १ ॥

दोहा ।

नारखान मन विसम हुय, अद्भुत यात निहार ।
 भाग यही मेरो अहो, इसे संत हम द्वार ॥ १ ॥

कवित्त ।

ताहि समें देशमाँस दिर्गणी फीज लेख आप
 राज विरोध राज काज देश पेसवार है ।
 गाम जो मेलाणा हूत लोक सयै भाग चले
 भाटी आय संत पास स्वाल एम डार है ॥
 मात आहा देहु सो तो चलत कबीला साथ
 आप हमें चदां पाइ यहाँ सँभ्या सार है ।
 रामदास कहे तुम मेरी चित करो नाहि
 नुगड़े घट सोई राम उनमें निहार है ॥ १ ॥

तथै नारखान कहै आना आप सोई करूं
 धोल संत कह्यो साग्रां जाय जाय कीजिये ।
 चले आना पाय तबी जायके पकार माँझी
 हमें तुम्हें जुद्ध है पकार पहल दीजिये ॥
 पीछे मेरा हाथ देर मरूं में निशंक अथ
 तोहि मोहि जोड़ कहा गठपति छीजिये ।
 तथै सेनपति पाग घदल जु धात भयो
 ऐसो रजपूत कहां मिले मोहि रीक्षिये ॥ २ ॥
 आय गाँव कहै तोहि कौन ऐसी मत्त भई
 तथै नारखान कहै गुरु परतापही ।
 आय सेनापति संग संत को नवाय शीश
 धरी भेट कहै ये तो रामरूप आपही ॥
 लई नाँहि संत सोई कियो दृढ बेर यह
 ऐसेही अचाही ताके दर्श जाय पापही ।
 नारखान दृढ धार लेऊं दीक्षा आज अहो
 लायके प्रसाद कह्यो देवो मंत्र जापही ॥ ३ ॥
 तथै रामदास मान गुरु कह्यो सत्य सोई
 आदू रीत जान नारखान दीक्षा दप हैं ।
 धन्यो दाम ताके वख साधुराम किया जयै
 जान राम हेत संत दास आस लप हैं ॥
 भए शिषशाखा बहु रामत करत गए
 रहे बहू गाँवमाँझ चाल जन्म भए हैं ।
 फेर कई मास गाँव आसोप विथ्राम लयो
 करे भाव भक्ति जहां संत आय रए हैं ॥ ४ ॥

इंदव छंद ।

एक दिनाँ संत आये खेड़ापे हि, प्रोहित नाम पदम्भ मिलानो ।
 धोल कहै पद गाँव तुमारो है, याँहि कृपाकर वासहि ठानो ॥
 जानि आँकूर उदै जहां विराजत, धर्य धाईस के धाम बंधानो ।
 शिष्यशाखा बहुते मिलतां प्रति, श्रीगुरु आसत मो गुरु आनो ॥१॥

दोहा ।

हरियानन्द आए यहाँ, उच्छव करे अपार ।
 एक समय जा प्रातही, गुरु शिष गुष्ट विचार ॥ १ ॥

रामदास कीनी अरज, आसा दीजे मोय ।
 आप काथ माय नहीं, करांज अस्यल सोय ॥ २ ॥
 गाँय हूत पूयं दिशा, पैचरात पंडसु जाय ।
 शुभ पुल इच्छा जोय के, सतगुरु दर्ई घताय ॥ ३ ॥

छंद पदरी ।

शुभ संवत अठारहसो प्रवान । भल घरय तिये चोके निधान ॥
 फागन घद् चौधज नीय दीध । यद्द राम चौक कोठार कीध ॥ १ ॥
 उतराद दयिन मंडार सोय । चहुं कोट इन्द्र पौलसजु होय ॥
 फिर उरघखंड महलौ शरोर । छवि अद्भुत यरनूं केम गोय ॥ २ ॥
 तहां माजमान गुरुदेव आप । शिपहंत मेट तन त्रिविध ताप ॥
 अथ राम भजनको बन्यो ठाट । चत यरण न्दाय गुरु चरण घाट ॥ ३ ॥
 कर रामत मुरधर देस नौहि । लद् उष्टर घोड़ा घहल तौहि ॥
 तंबू फनात सय रीत जोय । छेपी तय देखे दुखी होय ॥ ४ ॥
 इम भाच अभावी पक्ष होय । कोड साथ असाधहु कट्टे सोय ॥
 कोड भुरफी मोहनिमंत्र भाच । कोड आदि असीको पंध आख ॥ ५ ॥
 इन तीर्थ मंदिर सैय नौहि । सय शूद्र विप्र मिल एक ठौहि ॥
 इम दुष्ट जाय गुरुराज पास । सय अधिकी थोछी कही तास ॥ ६ ॥
 इक आज रैड़ापे पंध जोय । सो घजे आप महाराज होय ॥
 इनको नहिं पूछै कौन जाय । नय विजयसिंह राजा रिसाय ॥ ७ ॥
 लिख हुकुम दियाणीपत्र जोय । चत अथ चढे भूत चले सोय ॥
 उन राम महोले आय देख । अद्भुत सतसंगति भजन पेख ॥ ८ ॥
 मुखसे अति सेवक भाच घात । कित स्वामीजी को दरश पात ॥
 सय घाल दीन आगम जनाय । जन सेवादासहि को सुनाय ॥ ९ ॥
 सर राम कुंड मरमत्त जान । धीरामदास तहां विराजमान ॥
 कर दरश बोल नौहिन कहाय । जो लिख्यो पत्रिका माँय ताय ॥ १० ॥

दोहा ।

कौन जाति पुज्यक पधति, यो किसो उपदेश ।
 कोय नृपति प्यसो कछो, छोडो महारो देस ॥ १ ॥
 पद्धति जानो रामजी, रामजनाँ उपदेश ।
 रामजनाँ प्यसो कछो, भोँ छि धारो देस ॥ २ ॥

चौपाई ।

इतना कहकर चले ते सारा । राम जनागति अगम अपारा ॥
 जैसे संग सराय बसेरा । पनग कांचली दृष्टि न हेरा ॥ १ ॥
 आयनहारा देखत याता । कहा जानूं का करिहै दाता ॥
 पैदल हुय कर संग चलाये । रामदास जुत शिष सरसाये ॥ २ ॥
 कोस तीन पैदल सब थाए । यहाँसे बैल दास जोताए ॥
 आगेहंता घाट सवाया । दिनदिन विभो घघत दरशाया ॥ ३ ॥
 देवगढ़में भक्त सवाए । राज रैत सब बंदत पाए ॥
 प्रेत इग्यारे भयो उद्धारह । विराजे एक मास दिन तेरह ॥ ४ ॥
 यहाँसे आगे गाँव करेड़े । राय गोपालदास तहाँ तेड़े ॥
 दिन तेयीस विराजे स्वामी । दिन दिन प्रेम भाव विध पामी ॥ ५ ॥
 आछा मांग चले गुरुदरसन । सिंहथल महंत मिले मन परसन ॥
 माँडेस्यांमें आन विराजे । सेवक भाव घरप दौय राजे ॥ ६ ॥

दोहा ।

मंडलायत ठाकुर शुभी, इंद्रसिंह तेहि नाम ।
 सारुंटे हितभाय कर, परचो पायो ताम ॥ १ ॥
 संत छोड़ चाले जयी, मारवाड़ दुख थाय ।
 पितापुत्र भृत बदल सब, खोसा रिलमिल राय ॥ २ ॥
 दरिणी जात न पांति कलु, आँण फिती तिण घेर ।
 यड़ी जात सो कलु गया, हरि की गति नहिं हेर ॥ ३ ॥
 यीकाणे का राजमें, सुख संपति परताय ।
 सारुंटे में आयकर, मुत्थर रहे लुकाय ॥ ४ ॥

चौपाई ।

मुलक घोषले करिहै निदा । जैसे भाव फलै कर बंदा ॥
 हिंदू राममहोले माँदी । मारे जीय मरजाद हटाँदी ॥ १ ॥
 ठाकुर मूरति निरामी तामें । परचो भयो देस भय पामे ॥
 बद्धत संतचरित कुन जानै । हरिमरजाद तादि को मानै ॥ २ ॥

१—श्रीगुरुन्मो वरणम करि, हरिवन्दनव्रत ।

रामरेषमें रामरथ, राम रामरे छत ॥ १ ॥

हथ छरी गुरदेवरी, बंधजी गुरु अस्तन ।

बैठे ज्यौं टाबड़े, हरि धरमननन ॥ २ ॥

अथल मांहि चीज थी सारी । रामदास हरिजन सब डारी ॥
 संगी जानर लीन्ही सोई । अजरी भोजन जिमि गति होई ॥ ३ ॥
 लीजे हरिजन माल तुमारो । नहिँ लौं हरिअरपन हे सारो ॥
 रामदास ऐसे अनचाही । सुरतसिंह ऐसी सुन पाई ॥ ४ ॥
 हे महाराज हाल का मेरो । धिन धिन धनी रामजी तेरो ॥
 रामदास कै नहीं सिधाई । जिसी भावना फलै सदाई ॥ ५ ॥
 रामदास ऐसे अनचाई । सुरतसिंह मनभाय जु थाई ॥
 चातुमांस की अर्ज करायो । लिखो पत्रिका तुरत बुलायो ॥ ६ ॥
 संत भाय यस जानो सारा । करी धीनती आचनद्वारा ॥
 रामदास संग शिप ले सबही । बीकानेर पधारे तबही ॥ ७ ॥
 राजा के विश्वास विशेषा । विन बरपा निंदक कर घेपा ॥
 अतः शिष्य सांपी जन आई । सो सुरतेश सुनी मनभाई ॥ ८ ॥
 देयस तीसरे मेह जु फीयो । सुरसागर सूताँ भरदीयो ॥
 देन दिन भाय उछाह जु सारा । सतसंगति बहु भीर अपारा ॥ ९ ॥
 देन प्रति राज रसोई आवै । पंच पकवान मिठाई लावै ॥
 राजस भोजन कामन काई । रामदास यों कहे समुझाई ॥ १० ॥
 मोदी एक बुलायो राजा । रुचै रसोई सो विधि साजा ॥
 चातुमांस दिन दिन अधिकाई । राजा परजा भाय घधाई ॥ ११ ॥

दोहा ।

विजयसिंह भृत सयनसों, कही हमें दुख काय ॥
 गढ़ छूटो सुत यदलियो, पासवान मरवाय ॥ १ ॥
 घंडायल ठाकुर शुभी, कहि हरिसिंह घखान ।
 रामदास फुं सीप दी, ता दिनते दुख जान ॥ २ ॥
 कह राजा साची कही, फ्यों ऐसी बुधि आय ।
 होनहार सो नाँ टरे, कहो अय फौन उपाय ॥ ३ ॥
 संत पधारै सो विधी, फीजे राज विजेश ।
 ता दिन अपने आधमहिं, धार्यो सय सुख देश ॥ ४ ॥

छंद पद्वरी ।

स पत्र भाय भती समेत, दे भेट पठाये संत हेत ।
 बाँच पत्रिका संत राज, लखि भाय घटनको कियो साज ॥ १ ॥

१—मेह बरपायो बापजी, दुनिया पावे दुःख ।
 रामदास की धीनती, जनाँ ऊरजे सुख ॥ १ ॥
 मेह बूझ हरिया हुआ, भावना भवकात ।
 रामदास सुख जान्या, जहँ तहँ भया सुकत ॥ २ ॥

दोहा ।

भाव माँहि सब जान ज्यो, व्है निश्चै मन थाय ।
 गढ़ चढ़ नौयत वाजसी, वार प्रताप सवाय ॥ १ ॥
 परगट परचो दीसियो, भाव अभाव कराय ।
 आगे अघै नजीक है, भक्तीवस हरि राय ॥ २ ॥
 फिर सिख पीयो दास की, पूरन कीनी आस ।
 रामत कर रतलाम दिशि, अनत जीव सुख रास ॥ ३ ॥

छन्द पद्धरी ।

जन चले पंथ निर्भय सदाय, मँझ गाम गाम विधाम थाय ।
 मिल राम सनेही भाव चाव, रतलाम धाम उच्छव वनाव ॥ १ ॥
 सिप कनीराम गुरु धर्म काज, तन मन धन अरपे सखै साज ।
 नित प्रति रसोई नवी विद्धि, गुरु भोग धरै अक्यूट ऋद्धि ॥ २ ॥
 तहाँ अखै राजप्रोहित प्रवीन, उच्छव में उच्छव करसु लीन ।
 फिर गाँव सारंगी दासभाव, पधराय संतकर चित्त चाव ॥ ३ ॥
 एक गाँव दोतरिये दुष्ट पत्ति, बहु विकट घाट झाड़ीसु अत्ति ।
 उन तेड़े संताँ पत्र मेल, हरिजन के हरिका करै खेल ॥ ४ ॥
 मनमाँहि हुतो खोसण विचार, कर दरश पलट सब कुबुधि टार ।
 पढ़ चरन माँहि कर गुना माफ, मैं दास तुम्हारो गुरु आप ॥ ५ ॥
 जिन भाव रसोई भेट कीन, संग सचिय मेल पहुंचाय दीन ।
 इर महिमा सवही मुलक माँय, फिर संत शहर रतलाम आय ॥ ६ ॥

दोहा ।

दिन तेवीश विराजिया, रामदास महाराज ।
 सिप पीथल परिवार के, पहुंचायन संग काज ॥ १ ॥
 सौंखेड़े आये जना, दुष्टी चित ललचाय ।
 सारंगी भाटी प्रसिध, ठीकरियाके माँय ॥ २ ॥
 रिल मिल खोसा सामठा, दोये दयिया आय ।
 यौसे याया जावसी, लेसां माल छिनाय ॥ ३ ॥
 लछमण कहै दयालसों, दुई दिन विराजो और ।
 इतने बीखर जावसी, गाँव भरजादन तोर ॥ ४ ॥

छन्द भुजंगी ।

पाल बोले सुणो दास सांची, कहूं यात तोकूं कदे नाहि काची ।
 राम रिच्छा नित्प्रति करही, उन्हें दुष्ट इच्छा दिनां तीन भरही ॥ १ ॥

अधू पात्र भरियो अवे नाश पासी, सबै लोक मोकुं वदे सिद्ध गासी ।
 तुमे मत्त चिन्ता करो दास मेरी, जिन्हे शरण लीन्हों तिन्हे लाज फेरी ॥२॥
 हरी मत्त फेरी खोसा और सूजी, लगै जेज साधां करो धाड़ दूजी ।
 घले रात आधी खोसे गाम जाई, एको ठोड़ माँझी घसे गेह माँई ॥३॥
 तहां हाथ नारी फटयो शीश जोये, लखै संगवाला मनां माँहिरोये ।
 रफयो कंठ दुखियो नहीं नीर पायो, मरे दिवस तीजे वचन संत गायो ॥४॥

दोहा ।

रामदास महाराज हम, सबकुं कह्यो सुनाय ।
 चलो अभी जेजन करो, हुइ आशा हरि राय ॥ १ ॥

छन्द त्रोटक ।

हरि पाय आशा विचरे जयही, सब दास उदास भये तबही ।
 पहुँचावण हाकम आदि सह, कह ठाकुर के दिन साथ रह ॥ १ ॥
 महाराज कहे तुम भाय इसो, रछ पाल गुरू तय शंक किसो ।
 घिरताय सबै संत पंथ लयो, हम आनंद मग्य न दुःख भयो ॥ २ ॥
 कहे लोक तुमें सिधराज खरे, उन महाजन राजमें दंड भरे ।
 फिर घोकिय नाम न लेत कहँ, जहँ जायत जोरत हाथ सहँ ॥ ३ ॥

दोहा ।

मांगरोल पीतोड़ द्रुय, घाटे उतरे आय ।
 खेड़ापै मशाल महीं, उच्चय करे सवाय ॥ १ ॥
 रामदास महाराज का, परचा अगम अपार ।
 मो धुधिसम घरणन कन्या, पछ छंद अनुसार ॥ २ ॥

कवित्त मूल ।

रामदास महाराज का फिर परचा घरणन कन्या ।
 प्रेमदास शिष्य व्याधि भंग जमदूत जु भाये ।
 करि करुणा गुरु इत ततच्छिन भान थचाये ॥
 यो बाढक हे राम मुम्हारो काम न कोई ।
 गुरु धेमुस अघधाम मोध तुम लेयो सोई ॥
 मुख फेर हाथ फिर ताप तिम आधि व्याधि दूरे दन्या ।
 रामदास महाराज का परचा फिर घरणन कन्या ॥ १ ॥
 प्रेमदास सतसंगने देवपुरी को हुम टन्यो ।
 धरप घरणमें जग्य गुमाई भंग थनायो ।
 भैरव हुग बन करे जगतमें परघो थायो ॥

के दिन बीतां कह्यो मोर भोपो हुय भाई ।
 नहिँतो सान्यो कर्यो गुसाईं मना न लाई ॥
 तय विकल चित्त सुधि नाँहि तन पीपाइ भ्रमतो आपन्यो ।
 प्रेमदास सतसंगते देवपुरीको दुख टन्यो ॥ २ ॥
 नित नेम हजुरी महन्त गुरु, देह लग तिनके संग रह्यो ।
 प्रेमदास ता प्रती पूछ सय कह्यो राम भज ।
 देवपुरी इढ़ धार राम मुख रठ्यो रात माँझ ॥
 भैरव दूरे हूत क्रोध कर बहुत इराये ।
 राम टेक विश्वास धार गुरु दरशन आये ॥
 गुरु रामदास महाराजकी ले दीक्षा आनन्द भयो ।
 नित नेम हजुरी महन्त गुरु देह लग तिनके संग रह्यो ॥ ३ ॥

छन्द मनहर ।

राजगुरु पुरोहित नाम सगरामदास ।
 ईडरके मध्यवास साधुसंग भयो है ॥
 देवी देव मात त्याग साचो राम इष्ट जान ।
 सत्तगुरु रामदास शरण आन लयो है ॥
 राजा शिवसिंह कहे पूज तमें बेचरा की ।
 छोड़दई ताको फल अबी पाय गयो है ॥
 भ्रात रामसिंह हू की बधू स्यानगत्त हुई ।
 साधु शोभाराम पास दुःख सबे कयो है ॥ १ ॥
 तयै साधु कह्यो एम मास एक मध्य खेम ।
 धरो प्रण प्रीति नेम गुरु साच आनियो ॥
 ताहीदिन रामसिंह लियो खण मिष्टहू को ।
 जाऊँ रामधाम तयै पाऊँ एम जानियो ॥
 एक दिन भूलचूक बटत प्रसाद साथ ।
 लेतही शयन माँझ गैब छड़ी हानियो ॥
 थोल कह्यो मूढ तुम किरी चूक गयो बहो ।
 ऊठ के किचाइ देखे जठयो हाथ जानियो ॥ २ ॥

दोहा ।

मास दिवस आयो जयै, शुद्ध भई ता नार ।
 फिर गुरुदर्शन आयके, लखा दर्श मुखसार ॥ १ ॥
 दास सगराम जु भक्तिभल, गुर्जर वषी सवाँय ।
 अनता जीव चेतावके, मिले मोक्षके माँय ॥ २ ॥

कवित्त ।

विम एक याही दाहर राज कामदार हुनो ।
 घेर घूक भाकसीमें घेड़ी गाल डार है ॥
 फहत रगराम ताहि सुनो पात भेरी अहो ।
 गुरु रामदास तोहि दुःखसे निवार है ॥
 ताही निशा जाम दोय गयो भयो दर्श दिज्य ।
 कतो ताहि भाय अय डन्यो ताहि पार है ॥
 तीसरी निशाह फेर भयो दर्श याही घेर ।
 फाट भाखसीसें घेड़ी फाट फीयो पार है ॥ १ ॥

दोहा ।

यह परचो ईंडर मही, जानत अजहं लोय ।
 राम गुरु अंतर नहीं, शिष विभ्यास तु होय ॥ १ ॥

कवित्त ।

रामाराम शिष्य नदी दूवत पुकार सुन ।
 धाररूप गहे याँह फन्यो गुरु क्षेम ही ॥
 एक समय भाषी गाँव डेरो सर पाल शोभे ।
 व्याल दौरि आय गोदमाँहि फीयो प्रेम ही ॥
 जीभ हूत चरण चाट गयो वृक्ष तणी चाट ।
 फहै संत इने जीभ ठंडी गड़े जेमही ॥
 कहाँ लग गाऊं परचा रामदास गुरु तणां ।
 काल आदि बंदे पाँव और कहो फेमही ॥ १ ॥
 सर्प एक गाँव जो खैड़ापा माँझ कहं सोय ।
 झाल्यो झले नाँहि कोऊ सवी हार थाकेहँ ॥
 गुरु रामदास आय कहे साप राम सुनो ।
 थानक तुल्लारे अभी जाय हम नाखे हँ ॥
 सुन्यो खाल संत मुख नसजु पसार दर्ई ।
 झाल डार ताही घेर फेर नहीं शाके हँ ॥
 शीत काल ऊँट एक संत पंथ आन अन्यो ।
 रहे खडो दूर पम रामदास भाखे हँ ॥ २ ॥

कुंडलिया ।

उष्टर चलयो न पेंड इक, धणि आयो पचिहार ।
 विनय करी संता प्रती, फहु इनको उपचार ॥

कहो इनको उपचार तबै सो छड़ी झलाई ।
या तुम देहु लगाय होय आगे जिम जाई ॥
(उन) जाय सोई विधि करि तबै, उछर चल टोलै गयो ।
रामदास महाराजको अद्भुत परचो सब लयो ॥ १ ॥

छंद मनहर ।

शिष्य केर सेवादास पुत्र सोधनेकी आस ।
गुरु रामदासपास मांग आशा चाले हैं ॥
विकट पहाड़ झाड़ी अकेलो चलत तहां ।
देख सिंह रूख आय आगे रीछ भाले हैं ॥
टेर रामदास हूंत माँचसे वचाय अथी ।
करत हुँकार यहां तहां दुःख टाले हैं ॥
पायके अंदेश जु शिष्य अजं करत भये ।
फरमायो राम कहो तबै चुप्प झाले हैं ॥ १ ॥
घटां रूप धार छड़ी हाथ साम ताम मारे ।
गये भालु सिंह दोऊं दास सुख भयो है ॥
गाँव बटपाड़ी माँझ संत विराजमान भए ।
आयके दरश लह्यो कह्यो दुःख पयो है ॥
अहो अंतर्धामी आप जानत सबै ही बात ।
पूछे शिष्य दूसरा हू तबै भर्म गयो है ॥
संत राम एकरूप भिन्न भेद नाहि कबै ।
आगे अबै देखि लेहु कहु नाहि नयो है ॥ २ ॥

॥ इति ॥

इसप्रकार आपके अनेक परचे हुए । आप एक अद्वितीय महात्मा थे । सम्बत् १८५५ आषाढ कृष्ण ७ मंगलवारको आप परम धाम पधारे । आपका इस संसारमें प्राकट्य लोगोंके कल्याणार्थ ही हुआ था । आप गुरुधर्मी भी एकही थे । आपके बचन जो श्रीगुरुदेवजीके प्रति कहे गये हैं वे कितने गुरु भक्तिसे सराबोर होरहे हैं । यथा—

“अमर लोक सँ आय सिंहथल मॉहि विराजे ।
तेज पुंज परकास वजे अनहद के घाजे ॥”
“सता समाधि अगम जहाँ आसण सुखमण सहज समादी ।
आय रामियो चरणाँ लागो सिप है आद बनादी ॥”

“चरणां चाकर रामियो, सतगुरु है महाराज ।
चार चक्र चवद्वै भवन, ताहि परे संतराज ॥”

(श्रीगुरुमहिमा)

“मैं अथला हूं रामदास, आंधो अंत अचेत ।
तुम सतगुरु हो शीशपर, हमको करो सचेत ॥”

(श्रीभक्तमाल)

“सतगुरु मेरे शिर तपै, मैं चरणांकी रज्ज ।
शरणे आयो रामियो, लखचौरासी तज्ज ॥”

(जमकारगती)

“सतगुरु दीनदयालु कहीजे, सन्मुख करसूं सेवा ।
पार अपंपर पावे नाहीं, किस विधि लहिये मेवा ॥”

(मनराइ)

“सतगुरु है हरिरामजी, मेरा प्राण अधार ।
चौरासीका जीव था, शरणे लिया संभार ॥”

(श्रीब्रह्मजिज्ञास)

कहांतक लिखा जाय ! जबतक आपका पांचमौतिक शरीर इस पृथिवीतलपर विराजमान रहा तबतक तो गुरुधर्मको निमाना ही था, परंतु परमधाम पधारने के उपरांत मी आपने विचारा कि मेरा सनातन गुरुशिष्यधर्म मेरेतक ही न रह जाय । जहाँतक मेरा नाम रहे तहाँतक मेरे शिष्य गुरुस्नान सिंहायलको न भूलें । इस लिये परमधाम पधारने के तीन दिन बाद असद्य विरहवेदना से पीड़ित श्रीदयालुदासजी महाराज की कर्तव्यता देख साक्षात् अपना स्वरूप धारण कर दर्शन दिया और मस्तकपर हस्तकमल धर तत्त्वज्ञानोपदेश दे घोरज बंधाई । और फरमाया कि मैंने जो सद्गुरु गादी की टेक निमाई है वैसी ही सर्वदा तुम मी निमाते रहना । और अंतसमय में जैसी मेरी साँच भावना

१—हरई काई अरपात, मन तन वित धरि विहलना ।

सगुन न सतगुरु छाव, यो चारत्र कैमे भयो ॥ १ ॥

पूरणप्रदा दयाल, बाबाजी कीत्रै कृपा ।

यो विष देहु सैमाल, नदितर यो तन त्यागम् ॥ २ ॥

(श्रीराम. परपी वि० ४१)

फली है उसका मेद आजसे चौथे दिन सिंहयलसे श्रीहरदेवदासजी महाराज पधारकर तुमको जतावेंगे । ऐसा फरमाकर आप अंतर्धान होगये ।

ऐसे गुरुधर्मी सत्पुरुषों को धन्य है और उनको कोटिशः दंडवत् प्रणाम है ।

धन्य है उस धाम को जिसमें आपने वास किया । साक्षात् उस धामके दर्शन करने से मुक्त हो जाय इसमें तो आश्चर्य ही क्या है । अगर स्वप्नमें भी दर्शन हो जाय तो वह प्राणी शून्य हो जाता है । उम धामका आजतक भी इतना प्रभाव है कि कोई भी प्राणी मृत भ्रंत शक्तिनी शक्तिनी आदिसे पीड़ित हो और वह धाम की शरण में आता है तो उपरोक्त सब दुःखों से मुक्त हो परम पदवी को प्राप्त होता है ।



१—श्रीहरदेवदासजी महाराज हम पांचमैशिक शक्ति को स्वयं वर दिन शक्तिसे प्रत्यक्ष सिद्ध कर श्रीगुरु धर्मके दर्शनकर फिर बंधुंड पददेते । इस धेरेके श्रीहरदेवदासजी महाराज जगतके से श्रीर आप धामके बसुदेविन अंतर्धानदेवदेवके से हय सिद्धे श्रीहरदेवदासजी महाराज के परमात्म कि—

एक धरमः बडे शक्ति, दो देवी हरिदेव जनी, कंचे सिद्ध कर्मण से कर्मण, निव हय जगो कर्मण कर्मण, दंत कर्मणो गुरुसाम्पन्न, कर्मणकर्मण हय सिद्धण, कर्मण कर्मण देव सिद्धणे, हरगुरु कर्मण देव सिद्धणे ।

(श्रीराम. वाणी पृ. ११)

(श्रीदयालुदासजी महाराज)

श्रीदयालुदासजी महाराज की अगाध महिमा का वर्णन करना अति कठिन है । आप ब्रह्मवेत्ता अनुभवी बड़े ही सचरित्र महात्मा हुए । श्रीरूपदासजी महाराज की बनाई हुई जन्मलीला नामक ग्रंथ से अनुभव कर सकते हैं कि आप कैसे प्रभावशाली गुरुभक्त अद्वितीय तेजोमयी दिव्य मूर्ति थे ।

उसी जन्मलीला का यहां उद्धृत किया जाता है ।

॥ अथ जन्मलीला ॥

हरिरामा रामा नमो, चालयाल मुझसाम ।
मन बच क्रम करिये सादा, पूजे ताहि प्रणाम ॥ १ ॥

दोहा ।

बंदन भी परमेश को, पुनि गुह को परणाम ।
राज रत्नों गिर भाय हूं, शान्तराजद गुलाम ॥ १ ॥
रामदास महागुरु के, चाल शिरोमणि शिष्य ।
जन्म सुलीला पाणि हूं, निज गुण का प्रत्यक्ष ॥ २ ॥
दयालु धरि प्रणते, पूजे के शिरताज ।
जीव भवेक उधारणे, प्रणत किये यह राज ॥ ३ ॥

छन्द ।

विगुण विज विरक्त रहि करुं मुष्टि न आवे ।
अदम्यभार भयेन नैनि निहि निगमगुणारि ॥
जोतप्रदण धर ध्यान कर प्रयास कोरे ।
पुण्यन पुण्यन करिनि ताहि दत्तन मर्ति होरे ॥
अथ अथ भवतार धर चाल अथनि प्रणते प्रत्यक्ष ।
बेभो न कोरे देवयो अथ देवयो दीनदयालु इह ॥ १ ॥
अथदण अथदणो प्रणत मन मन्दी कीजे ।
बालीबालीदणप्रणत ताहिचो शिक्षा दीजे ॥
बाली कुरिनि कुञ्जक अथय अथलामी गारा ।
हो अथी उथेरा राज निज मंत्र हमारा ॥
हृद अथय निज पर धारिनि चाल इह अथकार इह ।
अथदण इह अथ धिज अथय अथी कृम अथ ॥ २ ॥

घड़ू गाँव शुभ वास जहाँ एक सदन कहीजै ।
नमो घाल तहाँ जन्म प्रथम परचो सु लहीजै ॥
सुरपति घन वरसाय गढ़ा जहाँ पड़या अपारा ।
सदन निकट ही नाँहि दूर धरनी दल गारा ॥
घरणासृत गुटकी दई महाप्रसाद गुणदेव मल ।
घाल जन्म उच्छय भयो नर सुर कीरति करत फल ॥ ३ ॥
समत अठारह जान वरप पौडश परवानो ।
तामघ सिगसर भास शुकु एकादशि जानो ॥
भृगू वार परसिद्ध रेवती नपत भणीजै ।
अमृत पुल तिधिजोग गुरू लगनेश गिणीजै ॥
सय सोम प्रह शुभ टौरपर घाल लिप अवतार तय ।
काहुँ सुशम स्थूल जिय चर अचर हर्ष मान हुय मुदित सय ॥ ४ ॥
भानैद भगम अपार अनत जहाँ पाजा पाजे ।
अनत उदित भंकूर सकल शुभ मंगल साजे ॥
सर तरु नदी निवान यनी परवत घन धारा ।
यापी कूप तड़ाग अमी अमृतरस सारा ॥
उद्योतकार जीयां सकल संत प्रगट अयतार हरि ।
नरवेद धन्यां यिन हरिदुने संत भये नरवेद धरि ॥ ५ ॥
भरतरांड परसिद्ध दीप जांबू सुप्रबंदन ।
दंड मुरधरा नमो गाँव रौड़ापो बंदन ॥
गांमधणी पति नाम पदमसिद्ध मोहित राजे ।
विजयसिद्ध नरनाथ वार परताप सदा जे ॥
नर नारि सकल धरधाम यिन तहाँ संत अयतार धर ।
भानैद अपार उच्छय अनत मंगल परम विनोद कर ॥ ६ ॥
ज्यो वृशारथ के राम गूर कदयपके राजे ।
परनुताम जमदग्नि कपिल करदनके पाजे ॥
कृष्णजन्म पसुदेव व्यासके शुक मुनि त्यागी ॥
उद्दालकके प्रगट नागकेन सु पडभागी ॥
दंगरूप दंडा धरे भिप्रभेद मदि सार है ।
परमपूरणकला रामे भंडा अयतार है ॥ ७ ॥
उदित वंश मध गूर मिटे भवान भंधारा ।
कमलरूप निजदार उतम सिग ककया सारा ॥
निमुच कमोदनि जान इन्द्रि उदगन गय गुरां ।
वाइ उजू भम भूत चंद्रमन तामे उरहं ॥

(श्रीदयालुदासजी महाराज)

श्रीदयालुदासजी महाराज की अगाध महिमा का वर्णन करना अशक्य है। आप ब्रह्मवेत्ता अनुमवी बड़े ही सच्चरित्र महात्मा हुए। श्रीपूर्णदासजी महाराज की बनाई हुई जन्मलीला नामक ग्रंथ से अनुभव कर सकते हैं कि आप कैसे प्रभावशाली गुरुमक्त अद्वितीय तेजोमय दिव्य मूर्ति थे।

उसी जन्मलीला का यहां उल्लेख किया जाता है।

॥ अथ जन्मलीला ॥

हरिरामा रामा नमो, घालवाल मुझसाम ।
मन बच क्रम करिये सदा, पूर्ण ताहि प्रणाम ॥ १ ॥

दोहा ।

बंदन थी परग्रह को, पुनि गुरु को परणाम ।
सब संतों तिर नाथ हूँ, गानाजाद गुलाम ॥ १ ॥
रामदास महाराज के, घाल शिरोमणि शिखल ।
जन्म सुलीला घणै हूँ, निज गुन रूप प्रत्यक्ष ॥ २ ॥
दयारूप धरि प्रगटे, पूरण के शिरताज ।
जीय अनेक उधारणे, प्रगट किये यह साज ॥ ३ ॥

छप्पय ।

निगुंन निज निरकार दृष्टि कहुँ मुष्टि न आयै ।
अपरमपार अलेग नेति तिदि निगमसुगायै ॥
जोगधारणा धार ध्यान कर ध्यायत कोई ।
दुरलभ दुष्कर कठिन ताहि दरदान नहिं होई ॥
स्वयं प्रद्व अयतार धर घाल अयनि प्रगटे प्रत्यक्ष ।
पगो न कोइ देख्यो अयर देख्यो दीनदयाल हक ॥ १ ॥
अविगत आशाकरी प्रगट मम भक्ती कीजे ।
बलीघालपिकवाल ताहिको शिखा दीजे ॥
कामी कृटिल बुजान अधम भयगामी भाय ।
दो भक्ती उपदेश राम निज मंत्र हमारा ॥
तब भादसु शिर पर धारिके घाल त्रिप अयतार हल ।
रामदास पितु पाय धिन सुंदर माना कृम भल ॥ २ ॥

यह गाँव शुभ वास जहाँ एक सदन कहीजै ।
 नमो घाल तहाँ जन्म प्रथम परचो सु लहीजै ॥
 सुरपति धन वरसाय गढ़ा जहाँ पड़्या अपारा ।
 सदन निकट ही नांदि दूर धरनी दल गारा ॥
 घरणासृत गुटकी दई मद्दाप्रसाद शुद्धदेव मल ।
 घाल जन्म उच्छय भयो नर सुर फीरति करत कल ॥ ३ ॥
 समत धरारह जान धरय पोडदा परवानो ।
 तामघ मिगसर मास गुरु एकादशि जानो ॥
 शृगू धार परसिद्ध रेयती नपत भणीजै ।
 अमृत पुल सिधिजोग गुरू लगनेश गिणीजै ॥
 सब सोम प्रह शुभ टौरपर घाल लिए अयतार तय ।
 कहुं सुशम स्थूल जिय चर अचर हर्ष मान हुय मुदित सब ॥ ४ ॥
 आनंद अगम अपार अनत जहाँ घाजा याजे ।
 अनत उदित धंकूर सकल शुभ मंगल साजे ॥
 सर तय नदी नियान धनी परयत धन धारा ।
 घापी कूप तड़ाग अमी अमृतरस सारा ॥
 उघोतकार जीयां सकल संत प्रगट अयतार हरि ।
 नरदेह धन्यां यिन हरिहुते संत भये नरदेह धरि ॥ ५ ॥
 भरतसंड परसिद्ध द्वीप जांयू सुरकंदन ।
 देश सुरधरा नमो गाँव रौद्रापो बंदन ॥
 गांमधणी पति नाम पद्मसिंह प्रोदित राजे ।
 विजयसिंह मरनाथ धार परनाथ सदा जे ॥
 गर मारि सकल धरधाम धिन तहाँ संत अयतार धर ।
 आनंद अपार उच्छय अनत मंगल परम यिनोद कर ॥ ६ ॥
 ज्यो द्दारथ के राम गूर कश्यपके राजे ।
 परगुराम जमशुति कापिल करदमके छाजे ॥
 हृष्यजन्म यमुदेय ध्यागके गुरु मुनि स्वामी ॥
 उहालकेके प्रगट नागकेन जु पदभागी ॥
 हंकरूप हंसा धरे भिप्रभेद गदि गार टि ।
 परकल्पपूरकाला रागे भंश अयतार टि ॥ ७ ॥
 उदित संत मध गूर मिटे अज्ञान भंधारा ।
 कमलरूप मित्रहार उतम गिरा एकधा गारा ॥
 विमुच कमोदनि जान हगि उदगन सब गुरां ।
 वाद उदू धम भूत चंद्रन तामे उरखे ॥

शिशुमारचक्र प्राणसु प्रगट काम क्रोध मोह चोर है ।
 वेद पहरवा सोय रहे संत सूर बड जोर है ॥ ८ ॥
 सतजुग सतवत सार तप्प धेताजुगमांही ।
 द्वापर दान विशेष क्रिया कर्म सब वरताही ॥
 तीन जुगनको धर्म प्रगट सारे घरतायो ।
 कलीकाल धिकराल नीति गति माग दुरायो ॥
 अवसान कोइ एको नहीं कलीराज थाना थपे ।
 तब चाल संत करुनाअयन नीशान भक्तिनिश्चलरूपे ॥ ९ ॥

दोहा ।

ठौर ठौर सब ठांम पर, भक्ति प्रगट परभाव ।
 चकवे राज नरेश पद, गुरुधर्म सुमरण चाव ॥ १ ॥

छंद पद्वरी ।

मृष भए चक्रवर्ती सुजान । जिन प्रगट कन्यो गुरुधर्म ज्ञान ।
 उपदेश जीव दे मुक्तिदान । धिर भक्ति राज अविचल निशान ॥ १ ॥
 कलि रह्यो नाहि कहुं ठाँ प्रवेश । शुभ जाग माग ज्ञानोपदेश ।
 तब भगे चोर जारान मार । तपतेज नीति धिर थपे वार ॥ २ ॥
 मुख अग्र आन कोउ जुन्यो नाहिं । परमानंद उपज्यो आप माँहिं ।
 महाज्ञान ध्यान धीरज अपार । गम अगम बचन आगम उचार ॥ ३ ॥
 गुरुधर्म टेक धारण सधीर । गिरिगोम व्योमगंगा गंभीर ।
 सोभायमान गुरुगुराँमांय । सब ग्रंथ अर्थ निरणै घताय ॥ ४ ॥
 अरि मित्र सग्रे धिन धिन उचार । कर नाम संज्ञा साथे प्रकार ।
 कहुं नैना नहि देये दयाल । सब नप चय देखो दास घाल ॥ ५ ॥
 जिन बचन घाल तन मन दयाल । चखधयन हृदय बाहु विशाल ।
 सोभायमान शिर उतुंग माल । कप्योल पूर विम्यौष्ठ लाल ॥ ६ ॥
 भूषंक अंक नक्र तीय जान । चियुक अंय कंबूमान ।
 उर बड विशाल नामी गंभीर । कटि जंघ जानु गुरुफौं अमीर ॥ ७ ॥
 पदकंज रज्र अलि शिप सुचाय । रज चरन परस मिल मोक्ष माँय ।
 अनुभव प्रकाश उद्योतकार । अग्निरल अनुप नहिं धार पार ॥ ८ ॥
 घन धारा पदुमी रह न पार । यौ अनुभव धाणी तस्य सार ।
 उदक्यो पयाल गरज्यो समंद । फाट्यो अकारा बरप्यो सु छंद ॥ ९ ॥
 घन छिनये क्रोड़ाँ मेघमाल । गिरि मेढ शङ्खी अमृत रमाल ।
 कृपो अकारा हनुमंत वीर । उडुपो खगेरा कन चक्रधीर ॥ १० ॥
 मूटो पञ्जाक कटो मदेश । फीनो ध्रम रांडन काम देश ।
 गूटो रघुपतिकर बान पानि । सोख्यो सर मोहा आदि मानि ॥ ११ ॥

उचक्यो डढाल मुचक्यो मराल । सुचक्यो सुरेश रसना घयाल ।
 उछल्यो शिरोद ह्याल्यो समीर । घन घटा घोर भादों गंभीर ॥ १२ ॥
 फर वेद चार निरणै विवार । दश अठ पुराण पट भाष सार ।
 व्याकरण अष्ट निरताय सोय । पट शास्त्र भिन भिन लिये जोय ॥ १३ ॥
 रस रामायण शिर मोर सार । भागवत वचन भगवत उचार ।
 भारत भगवद्गीता विशेष । सो सार सार सब लिया देख ॥ १४ ॥
 फरि प्रश्न दियो निर्णय वताय । अनधन नहि ऊणत रखी काय ।
 दत्त दान मान करुणादि आधि । दुखिया दे औपध भेट व्याधि ॥ १५ ॥
 जाके शिर कर घर फहौ सोय । अजरामर आनंद तुरत होय ।
 दैत्यादि भूत डाकिनी नारि । मरजाद सींच नहि पाँच धारि ॥ १६ ॥
 हिङ्गक्यो तन मिरगी अबुध होय । फीयो लिप बहुविधि रोग कोय ।
 नर नारि पशु जो शरण आय । जल पियाँ तृपा ज्युँ रोग जाय ॥ १७ ॥
 जाच्यौ नहि ऊणत रखी कोय । लघु दीरघ भिन्न न भेद होय ।
 अनवी जुय लागे आन पाय । कर दरशन चरचा पोष थाय ॥ १८ ॥
 उपदेश राम निज मंत्रसार । दशहं दिशि सिपसाखा अपार ।
 कर रामत मालासर मँझार । नृप गूढ देश दक्षित सुदार ॥ १९ ॥
 गुर्जर घर पावन करी सोय । धलवट मुरधर धिन धन्य होय ।
 दिग्विजय अगंजी भक्ति साज । कहुं जगत मेख तप तेज राज ॥ २० ॥
 निःशंक सदा आनंद सोय । औघट विन घाटी विकट होय ।
 सुख दुख हरप न शोक मान । शत्रूज मित्र सब एक जान ॥ २१ ॥
 निज धर्म सनातन सारसार । गहिलयो हंस ज्युँ खीर वार ।
 अज पींठी कुंजर एक जान । फहुँ हानि वृद्धि नहि भेद मान ॥ २२ ॥
 सब विश्व प्रह्लामय दृष्टि देख । उर उपज महा उद्योत एक ।
 रत प्रह्लयाद विद्या प्रकाश । मद मोह द्रोह कर फाम नाश ॥ २३ ॥
 रद प्रसन्न सदा सम भाव दास । विज्ञान ज्ञान पूरण प्रकास ।
 मत अद्विग सदा फूटस्य जान । मिथ्या धम ग्रंथी हृदय मान ॥ २४ ॥
 मन पाच काप पीयुष प्रवीन । त्रय भवन सब उपकार फीन ।
 सब बृह साधुपद गमन फीन । पापान मान मद सजा दीन ॥ २५ ॥
 मान्या न मान संत सेव फीन । अति दुखी दरिद्री सार लीन ।
 दूले कहुं पंगू मूक सोय । चपहीन यधिर पुनि वृद्ध होय ॥ २६ ॥
 कहुं ठीक ठौर ताके न काय । यल विना नियल चाल्यो न जाय ।
 निरधारि आधार जान । सबहीके रक्षक ढाल मान ॥ २७ ॥
 बुधि मल क्षम मति चित उक्तसार । धानी दियेक अविरल उचार ।
 अनुभव रस छोलाँ जुगति जोर । नित यपे पंचाटीपीर कोर ॥ २८ ॥

शीरघ घणु दरशन दीपमान । उद्योग कार ज्यों प्रगट मान ।
 सोमंत समाको रूप सार । मोहंग करत गरुचा उचार ॥ २९ ॥
 काव्य जु बंध कविता छंदसार । ततकाल कहन नहि लहन पार ।
 सरस्वति गनपति शुक्र वैश्याम । शिष्य बालमीकि कवि शुक्र जास ॥ ३० ॥
 यह भए कधी आगे प्रत्यक्ष । देणयो दयाल संशय न चिह्न ।
 नहिं हुते प्रगट पद्दुमी दयाल । कलि दाय देन भर्ता पयाल ॥ ३१ ॥
 निज राममंत्र प्रगट प्रताप । घटघट प्रति व्यापक ग्रह भाप ।
 कुन जानत निर्गुन सगुन जोत । कलि काल घाल संत नाहि होत ॥ ३२ ॥
 दधि मध कर काढ्यो घृत्तसार । लीनो तत छोई दई डार ।
 फल कतक करत करदम पिछोर । निरमल जल करिहि शक्ति जोर ॥ ३३ ॥
 गुनमयी ज्ञान भक्ती पिरोल । यों भिन भिन फीन्दा तोल तोल ।
 सय जुक्ति चेटाप जठर जीव । मिट गये दोष सुखिया सदीय ॥ ३४ ॥
 फटि गये करम सब भरम भाज । दूयत ले तारे नाम ज्याज ।
 तिर आप और तारे कितान । तरणी दृष्टान्त गुण साच मान ॥ ३५ ॥
 कर भजन प्रथम निर्मल शरीर । रसना रस अमृत लहे सीर ।
 परकार चार सुमरण विधान । अघ मध उतम अति उतम जान ॥ ३६ ॥
 मुखकमल पंखड़ी चार भास । फँड कमल पंखड़ी पट प्रकास ।
 खुल अष्ट पंखड़ी उरमँहार । नामी खुल पोडश पंच सार ॥ ३७ ॥
 मन पवन मिले दोनों प्रकार । हुय धुव हुय मेला कर गुँजार ।
 फिर शब्द गमन आगे चलाय । भिद मूलचक्र पाताल जाय ॥ ३८ ॥
 उलटा सु पलट यह अगम खेल । जीता गढ बंकी मेर पेल ।
 मिणिया इकधीसुं छेद जाय । निकसे गज नाके सुई माँय ॥ ३९ ॥
 यहाँ कमल पंख बत्तीस होय । शत्रु सब मित्री भया सोय ।
 आगे चल त्रिकुटी तख्त माँय । तहाँ जीव शिष्य मिल एक घाय ॥ ४० ॥
 सहस्रादि पंखड़ी कमल भास । जहाँ जन्ममरणकी मिटी घास ।
 जहाँ सुरत शब्द मिल करत केल । मिल हंस परमहंस अगम खेल ॥ ४१ ॥
 नवधाम परे अपरम अपार । सो सता समाधी संत सार ।
 महामाया ज्योती प्रकृति सार । शुन आतम इच्छा भावपार ॥ ४२ ॥
 पर भावे केवल ग्रह होय । जहाँ जीव शीघ्र मिल नहीं दोय ।
 माया जहाँ मिलिया संत जाय । कर केवल भक्ती मुक्ति माँय ॥ ४३ ॥
 कर विष्णुउछव वैकुण्ठमाँहि । मम प्राण बलभ लीजे घघाँहि ।
 लक्ष्मी ले परकर सर्व साथ । धन धन्य करत वैकुण्ठनाथ ॥ ४४ ॥

कर भक्ति प्रगट मम नाम सोय । वंशोधर सुत सम नहीं कोय ।
 यों उर्ध्व लोक उच्छ्रय अपार । यहाँ घाल आप निज सुरत धार ॥ ४५ ॥
 वे सैन प्रथम सबको जनाय । एक पद फरमायो राग भाँय ।
 हम हैं परदेशी लोक साध । कय आन मिलेंगे मेदि व्याध ॥ ४६ ॥
 ततकाल दई पत्री लिखाय । निजगुरुद्वारेसुं मईत आय ।
 सब भाई धाई मिले जाय । करदरशन परसन पोष पाय ॥ ४७ ॥

दोहा ।

इह प्रकार निरधार करि, आदि अंत मध सोय ।
 दीन दयाल दयालु विच, मित्र भेद नहीं कोय ॥ १ ॥

छंद गीतक ।

धिन घाल सतगुरु प्रगट इल पर मनुज तन धर आयिया ।
 अंकुर जीयाँ उदय कारन भूरि मोसर पायिया ॥
 अद्य समत एके धाठ ऊपर वर्ष पोइदा सारही ।
 पुनि मास मिंगसर तिथि उजाली अग्यारस भृगुवाही ॥
 ता दियस धर अथठार नर तनु जगत सारो जीतिया ।
 मदा अगंजी दिग्विजय करिके यएर गुनतर पीतिया ॥
 एक मास ऊपर प्रगट पुनि ता दियस पनरे पर मय ।
 तय करी इच्छा मोक्ष की निज लोक की चितपन टय ॥
 तहाँ माघ पद तिथि भई दशमी मध्यदिनमणि आयियो ।
 तय रंपनोन उर्ध्व रीचिके निज सुरत शब्द मिलायियो ॥
 सब भये विलखे रामजन किमु दर्श यितुरन सदि सके ।
 यिन नीर मण्ठी कमल यिन दिन यचन पानी सब थके ॥
 हे नैन सहजल दियो भरभर रुदन कर कर उचरे ।
 एक घेर घाल हृषानु दरशन देहु सब संकट टरे ॥
 पुनि रामामंडन भमें गंडन तार भंयाँ कुन करे ।
 एपाग सर तय मारि नर अद्य सकल दुख दूर भरे ॥
 निज जान अनुचर हृषा कर कर हाथ शिर धर दारियो ।
 यरदान पूरणदाग मांगे सदा यरणाँ दारियो ॥ १ ॥

सोरठा ।

रटके मनके माँदि, चित मटके दनाट्टे दिना ।
 किनके घटके नाँदि, घाल तथा दुख दरद की ॥ १ ॥

तटके तूटो नाँहि, फटके नहि फूटो हिया ।
 अटके किम उरमाँहि, लटके लोह लंगर जड़घो ॥ २ ॥
 शरणागतकी लाज, आन परी है आपकूं ।
 ले बहियो महाराज, पतती पूरणदास कूं ॥ ३ ॥

दोहा ।

लीला जन्म दयालुकी, को फरि सके विचार ।
 बुधि प्रमाण वर्णन करी, सतगुरु अगम अपार ॥ १ ॥

॥ इति ॥

इस उक्त जन्मलीलाग्रंथसे निश्चय होता है कि, आप साक्षात् भगवत् अवतार ही थे । आपके अनेक परचे हुए और आपने जगद्धितार्थ बहुतसी अनुभववाणी प्रगट की ।

आप की सिंहथलधाममें जो गुरुमक्ति थी वह तो गुरुप्रकर्ण और वाणीसे स्पष्टही प्रगट हो रही है । सम्बत् १८५५ आपाढ शुक्ला ८ गुरुवार को श्रीहरदेव दासजी महाराज के आम्रहसे आप गादी विराजे ।

और सबसे पहिले दर्शनार्थ गुरुधाम सिंहथल पधारकर फिर रामत बगेरह में पधारे । बीसोंहीवार खेड़ापे तथा अन्य मेलों में महन्त महाराज श्रीरघुनाथदासजी महाराज को पधराए । सम्बत् १८८० में मालवा व गूंडवाणे की बड़ी रामत तथा सम्बत् १८८३ में गुजरात की बड़ी रामत साथ ही में करवाई ।

कहाँतक आपका गुरुधाम में प्रेम वर्णन किया जाय? धामपधारने के समय श्रीगुरुधाम सिंहथल पत्रिका भेज महन्त महाराज श्रीरघुनाथदासजी महाराज को पधराय दर्शन कर फिर परलोक पधारे ।

(श्रीपूर्णदासजी महाराज)

आपने मालवा प्रान्त ग्राम मेलकी में सम्बत् १८२८ वैश्व कृष्ण २ को वैश्यकुल में जन्म धारण किया । सम्बत् १८३८ के

१—देसादर । त्रिगुणतन्त्रे सं० १८८३ फागुन शु० १३ को दोनों महन्त महाराज पीठे खेड़ापे पधारे ।

२—संवत् १९०९ में एक सिंहथल महन्त महाराज कीही मालवा और गूंडवाणे की रामत हुई ।

सैड़ापा फूल डोलके मेलेपर दीक्षा धारण की और सम्बत् १८८५ में गादी विराजे ।

आप बड़े अद्वितीय योगिराज महात्मा हुए । आपका बनाया हुआ गुरुमहिमा नामक ग्रंथ अत्यंत सुंदर और दर्शनीय है ।

श्रीदयालदासजी महाराज की तरह आपने भी गुरुधर्म पूर्णरीतिसे निमाया, परंतु खेद की बात है कि आप सात ही वर्ष गादी विराजे ।

(श्रीअर्जुनदासजी महाराज)

आप बड़े तेजस्वी राजा पृथुके समान मर्यादी प्रख्यातकीर्ति राजमान्य सत्पुरुष हुए । और योगियों में एक अग्रगण्य योगिराज थे । आपने सैड़ापे ठिकाना और मेख की बहुत ही उन्नति की ।

आपकी सिंहथलधाम में गुरुभक्ति थी वह अलौकिक ही थी । आपका नियम था कि हर साल नही पधार सकें तोभी तीजे वर्ष तो सब संतों को साथ लेकर दर्शनार्थ गुरुधामको अवश्य पधारना ही, साथ में आये हुए सब साधुवोंसे पहिले गुरुधामकी भेट करवाकर फिर स्वयं करना, देखिये महीनेमें पांच दफेही क्यों न हो जितनी बार श्रीसिंहथल महन्तमहाराज का दर्शन करना तो भेट करकेही करना ।

श्रीमहंत महाराज संध्यावंदन दंडवत आरती करवाते उतने आप चरणों भाल रहते ।

कहांतक आपके गुरुधर्म की मर्यादा वर्णन करें? श्रीसिंहथल महन्तमहाराज के सामने कोईभी साधु आपको महन्त महाराज कह देता तो उसको झिडक कर फरमाते अरे मूर्ख! बोलने का खयाल नहीं है, सिंहथल महन्त महाराज के सामने मेरेको किन लफ्जों में बतला रहा है ।

देखिये खुद आप सैड़ापाके महन्त महाराज थे परंतु सिंहथल महन्त महाराज के सामने आप इतनी भी बेअदबी का बरताव करना नहीं

चाहते थे । और कितनी भावना य नम्रता के साथ आप गुरुधाम को विनयपत्र लिखाया करते थे ।

१ विनयपत्रः—

॥ श्रीरामजी ॥

स्वस्ति श्रीसिंहवल राम मोहला शुभस्थाने ऋद्धि वृद्धि जयो मंगल रामधाम साकेत-धाम परम पुनीत सप्त श्रोत रांगा अक्षय तीर्थ आनन्दधाम सार २ स्थान रमणीक मजनानन्द विराजतम् त्रिषिषताप जन्माजन्म कल्मष पाप हरता ऐसी २ अनेक ओपमा गुरु दयालु विराजे जिणदिश हमारो प्रणाम धारम्बार श्रीगुरुदयालजी बाणी निहाल कारण कृपालु बन्दी छोड़णा महारवान महाराज परबपकारी सिधकारी सचिदानन्द आनन्दधन श्रीगुरुसाहिब भक्तिपुंज अज्ञानहरणकारण करण ज्ञानमूर्ति ध्यानमूर्ति जत घत साच शील संतोष दिव्य भक्तिप्रकाशक भण्डार ज्योतिरूप महन्त भगवन्त पूर्ण फलाजीवम मुक्तिगामी निर्धारो आधार अशुचो शुचि अनाथो सनाथ कर्ता विप्रहर्ता गुरु इष्ट भगवन्त गुरुप्रेम दाता दशदोषहर्ता ज्ञान वैराग्य भक्ति के दाता सर्व सिद्धिकारी आत्मशान्ति मनभावन सिद्धस्वरूपी शरणप्रतिपालक श्रीगुरुमहाराज श्रीगुरुभ्यो प्रणम्य नमस्तु ते शिष्यके साधारणसुरतके ज्योति मन उमेदताके सुधानक मीनके नीर आधार खगके पर आधार प्राणके श्वास आधार प्रजाके राज प्रतिपालक आधार राजाके तपस्या सदपुनीत आधार सर्पके मणि आधार पंडितके विशा आधार कृपाणके कृपि-आधार कमलके सूरज आधार चकोरके शशि आधार जोगी के जोगबल आधार तर-वरके जल आधार शिष्यके श्रीगुरुदेवजी महाराजको आधार हृदभावना आधार श्रीमह-न्तामहाराज चरणकमलायनूं पद सरोज प्रकाशन चरणारविन्द आनन्दकन्द श्रीगुरु-दयालजी जीवोरी जहाज तरणतार मुक्तिके दाता महाराज राजनके राजा हो ।

चन्द्रायणा ।

ओपम और अनेक मंडमें कहत है तमकुं सवही शोभ बढ़ागुण महन्त है ।
धीरज मेरुसमान तरणिज्युं भास हो हरिहो शीतलचन्द समान शीलकी रास हो ॥१॥
नीर क्षीर निरताय हंसमतिज्ञान है सोच सूड करमित्त सर्व विधि जान है ।
धीरज ध्यान समाधि इन्द्रिमन जीतही हरिहो निराकार निलेप ब्रह्म अद्वैत ही ॥ २ ॥

अहो महाराज श्रीदयालु पूर्णब्रह्म कृपानिधान स्वयं ब्रह्म सचिदानन्द श्री श्री श्री श्री १०८ एति श्रीशोभितम् देहरूप नाम महाराज श्रीमहन्तमहाराज श्रीचेतन-दासजी महाराज के हजूर लिखितम् खैदापा राममोहलाखूं खानाजाद गुलाम पदरक पन्दै उठावणहार चरणोरे अनुचर दासानुदास अर्जुनदास दामोदरदासका दंडवद परिक्रमा विनतीसहित रामराम मालूम होषी ।

श्रीमहन्त महाराजके सामिल आपने तीन चौमासे जोधपुर करवाए । राजामहाराजाओं में कई पधरावणियों साथ में हुई । और कई राममें सामिल करवाई । और भेलोंपर साथमें पधारनेकी तो गिनती ही क्या है ।

आपने सम्बत् १९४६ में जीवित महोत्सव (मेला) करवाया जिसमें श्रीगुरुधाम सिंहथल महन्तमहाराज श्रीचेतनदासजी महाराजका हाथी होदे वधावणा, मुहर मोतीयोसे तिलक, आरती, जरी पग मंडा भेट पूजा, शाल दुशाला ओढ़ावणी आदिसे कितने सत्कार के साथ स्वागत किया उस समय के उत्सव आनन्दको वही जान सकते हैं जिन्होंने दर्शन कीए हैं । सम्बत् १९५० में आप धाम पधारे ।

सोरठा ।

यहों सदा सुख ऐन, प्रसिद्ध आपरे तेजही ।

वहों सदा सुखचैन, सदाधणाभल चाहिए ॥ १ ॥

तमतो करुणानिधान, ज्योतिरूप जगदीश हो ।

कागदमोंहि विधान, हमको लिखियो चाहिए ॥ २ ॥

कागद लिखत समाज, आप कृपानित राखजो ।

बाँह गशोंकी लाज, निरद रावरो जानिके ॥ ३ ॥

अहो महाराज ! आपरे शरीर रो जल प्रसाद सुखवास सुख पोदन सुख असवारी आनन्द रा परम जतन रेखावसी । जतन तो थीरामगुरुदयालजी करण समर्थ छै । परन्तु दासरो बोही परापरी धर्म छै सु हाथ जोड़ अर्ज माळम करी चाहिजे । अहो महाराज ! जे साध धानारामजी रतनदासजी जेसारामजी भुगारामजी लछौरामजी मगनीरामजी दयारामदासजी पीतमदास निर्भराम नेतराम हीरदास मोहनदास निथलदास आशाराम जैतराम जगुराम रतिराम जुगठिराम छोटिवो आशाराम आदि राम परिवार में सर्वेने राम राम फरमावसी । और अठे साध ब्रह्मदासजी खरूपदासजी तुलसीदासजी प्रन्हाददास जसारामजी जगजीवनदासजी जैतराम रामरतन आत्माराम हरलाल नगराम दूजो आत्माराम दूजो तुलसीदास भगवानदास कोमलदास खरूपराम विरछ श्यामदास चतुर्दास ज्ञानदास मुकुन्ददास आशाराम मोहनदास केशवदास सेवादास रामजीदास मगनीराम रामशुणादास गजाराम रामप्रताप दुर्गदास शिवरामदास नानगदास हिम्मतराम और हाली विघनो देवो चतुरो रूपाराम आदि सर्वेका दंडवत् परि-कमासहित रामराम माळम होवी । कृपा अनुग्रह पणी रेखावसी और मेह पाणी मोकला छै । शाखां बाढ़ी छोटकी छै और समाचार आत्माराम माळम करवी जो जगवावसी सम्बत् १९१३ भाद्रपामुदि १ बार अदितवार.

(श्रीहरलालदासजी महाराज)

आपभी गुरुमहाराजके समान प्रभावशाली शुद्धान्तःकरण मुशील महात्मा हुए । आप दयालुता वात्सल्यता औदार्यता की तो मानो मूर्ति ही थे । आपके अहंकाराभिमान का तो नाम निशान ही नहीं था । सम्बत् १९५० में आप गादी विराजे । साधुओंपर आपका अगाध प्रेम था । देशी परदेशी दर्शनार्थ आए हुए कोई भी साधु पीछा जानेके लिए आज्ञा मांगता तो आप फरमाते भाई ! जाने का नाम मतलो, जानेके नामसे ही मेरा चित्त दुखित होताहै । मेरी आज्ञा तो यही है कि इसी घाम में मेरे पास निवास करो यों फरमाते २ ही प्रेमसे गद्गद बाणी हो जाते । जब कि आपका ऐसा माईतपणा स्पर्ण हो आता है तो हृदय यॉमने के लिए सिवाय आँखों में से पानी निकालने के दूसरा उपाय ही क्या है ।

गुरुधर्मी भी आप पूर्ण थे । गुरुधाम सिंहथलमें आपकी पूरी गुरुभावना थी । श्रीमहन्ताँ महाराज के चरणाबिंदोंमें जिसकदर आपका प्रेम था वह लेखनीसे लिखना अशक्य है ।

आपका प्रेम था वैसाही श्रीमहन्ताँ महाराज का आपपर प्रेम था । प्रायः आप दोनों साथ ही विराजे । साथही मेलोंपर पधारते । साथही रामंत करवाते । जोधपुर चातुर्मासा करवाया तो साथ ही करवाया । यहाँ-तक प्रेम था परलोक पधारते समय भी सिंहथल से श्रीमहन्ताँ महाराज को पधराय दर्शनकर परलोक पधारे ।

(श्रीलालदासजी महाराज)

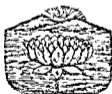
देश डूँडाड़ घाड़नामक ग्राममें सोलंखी सरदारके घर आपका । जन्म हुआ । सम्बत् १९६८ में गादी विराजे । आपभी बड़े बैराग्यवान् भजनानन्दी महात्मा हुए । गुरुधर्म और नित्यनियमके धारण करने में तो आप जैसे आप ही थे । हर समय ईश्वरचिन्तवनमें लवलीन रहा करते थे ।

करुणासागरका पाठ तो आपके मनहीमनमें होताही रहताथा ।

श्रीगुरुधाम महन्ताँ महाराज श्रीरामप्रतापजी महाराजके चरणारविंदोंमें जो आपका प्रेम था वह प्रशंसनीय था । साथहीमें मेले महोत्सव जोधपुर राममहोले चातुर्मास आदि करवाए बूंदी रतलाम आदि रजवाड़ों की पधरावणीमें साथ ही पधारे ।

श्रीअर्जुनदासजी महाराजके समानही आपने सम्बत् १९८१ में जीवित महोत्सव (मेला) किया जिसमें गुरुधाम सिंहथल महन्ताँ महाराज श्रीरामप्रतापजी महाराजकूं पधराय हाथी होदेवघावणा, मुहर मोतियोंसे तिलक, जरीपगमंडा, भेट पूजा आदि उत्सव कर गुरुद्वारा सिंहथल के साधुसन्तों को अपने हाथसे चादर, ओढावणी ओढाकर मेलेमें देशी परदेशी सब साधु रामकेही भावसेही आयेथे तिन सबको दर्शन दे पाँच महीनेवाद जोधपुर विष्णुदासजीके चातुर्मासकी पधरावणीमें सं० १९८२ भाद्रपद कृष्णा ४ को मध्यान्हके २ बजे श्रीसिंहथल महन्ताँ महाराजके चरणारविन्दोंमें मस्तक रख जिस तरह परगाम जाते हों इसतरह परलोक जानेकी आज्ञा मार्ग तत्क्षण परलोक पधारगये ।

ज्योंही महन्त महाराज अपने हस्तकमलसे आपका मस्तक उठातेहैं तो आप सबमुचही इस लोकसे विदा होगए । धन्य है गुरुमक्त हो तो ऐसेही हो ।



(श्री १०८ श्रीकेवलरामजी महाराज)

वर्तमान समयमें आप गादीपर धिराजमान हैं । आपकी जितेन्द्रियता और दयालुता तो बढ़ीही सराहनीय है । आप पर्याप्तानिष्ठा हैं । आपके धर्मोपदेशकी कथाकी छटाकी पटाका आनंदमग्न बरसाना तो अनूरीही है । आपका श्रीगुरुधाम सिंहथलमें जो प्रेम है वह अनहद है । सिंहथल पधारना, श्रीमहन्तों महाराजको पधारना परंपरासे जो सनातन गुरुधर्म बडा आरहा है उसको आप अछी तरहसे निभा रहे हैं और निभाते रहेंगे ।

सिंहथल खैड़ापाके गुरुशिष्यभावका जहां इतना घनिष्ठ संबंध है जहां परस्पर इतना प्रेमभाव है तो मजा दो कैसे कहेजाय "गिरा अर्थ जलवीचि सम फहियत भिन्न न भिन्न" "अर्यान् जैसे बाणी और अर्थ ये दोनों जल और उसकी तरंगके समान कहने में जुदे हैं किंतु यथार्थमें जुदे नहीं हैं" इसीलिए थाँभायत खालशाही ठिकानोंके संत महात्मा मेलेमहोत्सव चातुर्मास आदिमें सिंहथल खैड़ापा गुरुधामके दोनों आचार्योंको जैसे पहिले पधारते थे तैसेही आजदिनपर्यंत पधारते हैं ।

सिंहथलधाममें तो आप सबका यहांतक प्रेम है भेलेपर सिंहथल महन्तों महाराजको पधारनेके वास्ते खुद आप तो विनयपत्र देतेही हैं परंतु अवश्य पधारनेके वास्ते खैड़ापा महन्त महाराजके हस्तकमलसे भी दिरवाते हैं ।

फिर देखिये कैसी गुरुधाममें भावना है अधिकारीसहित हाजरीमें सात सात मूर्तियोंसे छड़ीसवारी श्रीमहन्तों महाराजाओंको पधारनेमें हमेशाह धामकी टहल बंदगी करनेवाले साथ नहीं आसकते तो वे ऐसा न समझलें कि हमको मूल गए इसलिये उन बड़भागी बन्दगीदारोंको प्रसन्न रखनेके लिये धर्ममर्यादानुसार प्रत्येक मेलेकी चार चार चदरें वहीं भेज देते हैं । धन्य है साधुओंमें परस्पर प्रेम हो तो ऐसाही हो ।

श्रीरामगुरुदेवजी महाराज ! आप सब महात्माओंकी गुरुधाममें निरंतर ऐसी ही अटल मक्ति बनाए रखें ।



Sri Kewal Ramji Maharaj
(Khedapa).

श्रीपरमात्मासे यही प्रार्थना है कि कठिन कुटिल कलिकालकी कुचालसे अनाक्रान्त हमारे इस रामखेहधर्मको सिंहयल खैडापेके आचार्य अपनी छत्रछायामें प्रथमतः जिसप्रकार सुरक्षित रखते आएहैं उसीप्रकार सुरक्षित रखतेहुए सुखी समृद्धिशाली और चिरंजीवी हों ।

इन गुरुधामठिकानोंमें साधुसेवा, शिष्टाचार, सद्धर्मोपदेश, विद्याध्ययन, अतिथिसत्कार, अनार्थोंका पालन, रोगियोंको औपधिप्रदान, गरीबोंको सदावर्त, गौरक्षा, पक्षियोंको चूण आदिके प्रबंधकी परंपरासे जैसी पर्यादा चली आरही है और उदारबुद्धिसे जिसका पालन हो रहा है इसी प्रकार प्रभु सदाकाल इसको निभाते रहें ।

शान्तिः पुष्टिसुष्टिवास्तु ।

विनीत

राम नारायण वैद्य.

ॐ श्री रामाय नमः ।

रामानन्दमहं घन्दे श्रीरामांशायतारकम् ।
आचार्य्याणां शिरोरत्नं मंत्रराजप्रचारकम् ॥ १ ॥

अथ श्री १०८ श्रीरामानन्दजी महाराजकृत मानसी सेवा ।

शालग्राम शब्द करि सेऊं तन तुलसी कर लीजै ।
आत्म चंदन घसि घसि चरचूँ इस विधि सेवा फीजै ॥ १ ॥
ज्ञानजनेऊ ध्यानघोषती शुचि का अँचला फीजै ।
काया कुंभ प्रेम का पानी हरिदरिया भर लीजै ॥ २ ॥
व्या आचार विवेक मुचौका उर अछान करीजै ।
इच्छा पुहुप चढाऊं पूजा मनसा सेवा फीजै ॥ ३ ॥
त्रिगुणी त्रिकुटी मन करि अर्घा संपुट ध्यान धरीजै ।
पांचों वाती जोय करेने इच्छा सेवा फीजै ॥ ४ ॥
कलह कल्पना धूप अंगारी ब्रह्म अग्निकर खेऊं ।
उलटी घास गगन कूं लागी इस विधि सेवा सेऊं ॥ ५ ॥
गुरु गम मंतर जाप अजप्पा हिरदा पुस्तक फीजै ।
अनुभव कथा कहूँ भाइ साधो इस विधि पाठ पढीजै ॥ ६ ॥
अनहद घंटा झालर वाजै अलख पुरुष की सेवा ।
पुहप निरंतर बैठा साधो रोम रोम में देवा ॥ ७ ॥
गंगा जमुना बहै सरस्वती जहँ जाय ध्यान धरीजै ।
त्रिकुटि मँदिर में बैठा साधो वहाँ जाय दर्शन फीजै ॥ ८ ॥
सहज सिद्धासन निर्भय सेऊं चित की चंवरी फीजै ।
चध्मा मांदि चंग ढलकाऊं धीरज बैठारीजै ॥ ९ ॥
फोई एक साधो मिलिया आई सब संतनका मेला ।
सतगुरु मेरे शिरपर ठाढा मुँहडा आगै चेला ॥ १० ॥
या मेरि सेवा या मेरि पूजा पेसी आरति फीजै ।
आत्मा तत्त्व विचारी लीजै ध्यान निरंतर फीजै ॥ ११ ॥
जल पापाण भरम की सेवा भूल भटक नहिँ मरना ।
सतगुरु मेरे जुकि बतार्हुँ तब भवसागर तिरना ॥ १२ ॥
बाहिर भरम कयहु नहि जाऊं अंतरासेवा जागी ।
रामानंद गंगा निर्भय आणी पारज्जालिय लागी ॥ १३ ॥

दोहा ।

लिबलागी परधहासुँ, रतीनखंडे तार ।
रामानंद आनंदमें, गुरुगोविंद आधार ॥ १ ॥

इति ।

अथ ज्ञानलीला ।

चौपाई ।

मूरख तन धरि कहा कमायो । रामभजन विन जन्म गमायो ॥
रामभक्ति गति जानी नाहीं । भोंदू भूल्यो घंघा माहीं ॥ १ ॥
मेरी मेरी करितो फिरियो । हरि सुमरण तो कबहु न करियो ॥
नारी सेती नेह लगायो । कबहु हृदय राम नहि आयो ॥ २ ॥
सुखमाया सुं खरो पियारो । कबहु न सुमन्यो सिरजन द्वारो ॥
ओवन मद मातो अभिमानी । पर घर भटकत शंक न आनी ॥ ३ ॥
स्वार्थ माँहिं चहुँ दिशि ध्यायो । गोविंद को गुण कबहु न गायो ॥
ऐसे ऐसे करत व्यवहार । आया साहिव का हलकारा ॥ ४ ॥
यांध्यो काल कियो चौरंगा । सुत बेटी नारि न कोइ संग ॥
जे तैं कर्म किया है भारी । सो अब संग सु धलै तुम्हारी ॥ ५ ॥
जम आगै ले टाढो कीनो । धर्म राय वृक्षणकुं लीनो ॥
कीया कौल किया तुम कर्मा । सिरजनहार न भज्यो निशर्मा ॥ ६ ॥
जिन पाणी सुं पैदा फीयो । नर सो रूप तोहिकुं दीयो ॥
तो तूं विसन्यो मूरख अंधा । तो तूं आयो जम के घंघा ॥ ७ ॥
हरि की कथा सुणी नहिं काना । तो तूं नाहीं जम सुं छाना ॥
आधुसंगति में कबहु न रह्यो । मुख सुं राम कबहु नहिं कछो ॥ ८ ॥
हरिकी भक्ति करो नर नारी । धर्मराज यों कहै विचारी ॥
मोकुं दोष न दीजो कोई । जैसा कर्म भुगताजुं सोई ॥ ९ ॥
गाप पुण्यकुं न्यारा ठाणुं । जो तुम कर्म करो सो जाणुं ॥
मुरा कर्म तुम्हैं भुगताजुं । आदिपुरुष की आज्ञा पाजुं ॥ १० ॥
साहिव की आज्ञा है मोकुं । महा कसोटी देहुं तोकुं ॥
घड़ी घड़ी का लेखा लेजुं । कर्मादिक तेरा भरि देजुं ॥ ११ ॥
हरि विना कौन रख्यारो । चित दे सुमिरो सर्जनद्वारो ।
कटते हरि लेहि उयारी । निशिदिन सुमिरो नाम मुरारी ॥ १२ ॥
राम निकैयल सब तैं न्यारा । रटत अघट घट होय उजारा ॥
रामानंद यों कहै समझाई । हरि सुमिरे जमलोक न जाई ॥ १३ ॥
इति ।

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

अथ स्वामीजी श्री १००८ श्रीजैमलदासजी महाराज की
अनुभववाणी ।

राग काफी ।

पद १

दीस रह्या दिलमाँहि दर्शन साँईदा
साँईदा साँईदा झिगमिग झाँईदा ॥ टेर.
दून्यमंडलमें सुण रह्याये, वाजै अनहद धेणं ।
भया उजाला गैथेका ये, सहजां मिलिया सेण ॥ १ ॥
निगम खोज पावै नहीये, जपतप लहे न कोय ।
सो साँई तनमें घसेये, निमप न न्यारा होय ॥ २ ॥
साचा साँई यूँ खडा ये, संताँही सुखदैण ।
साँसाँ न्यारा करदियाये, देख्या नैणा नैण ॥ ३ ॥
जैमलदास थयसर मिल्याये, सन्मुख सिरजणहार ।
भरमज भागा जीवका ये, दरदया हे दीदार ॥ ४ ॥

पद २

लागिरह्या निजनेह दशरथे द्दारीदा
द्दारीदा द्दारीदा औघट वारीदा ॥ टेर.
घटमें औघट यूँ घसे ये, जैसे तिलमें तेल ।
नैडा जघही जानियाये, शब्दां लागा सेल ॥ १ ॥
दशिमें रूर समाहया ये, भागा हे अंधकार ।
दीपक दृया निर्मलाये, यिनयाती अंगार ॥ २ ॥
रत्न प्रदान प्रकाशिया ये, मिटिया संशय मोह ।
किंचिन् सौं जिन जानियाये, तिन सहज पिछान्या सोह ॥ ३ ॥
अरसे परस हे माँदिसमाणा, मनमिलिया उलटा उरसे ।
जैमलदास जुगे जुग तेरा, आतम राम सदा दरसे ॥ ४ ॥

पद ३

दशरथे द्वार मंशार सुरली वाजे मोहणी ।
सोहणीरे मुनमाँदि मुनियर मोहणी ॥ टेर.
अंधन पर कर धारिके ये, सम आगण चितलाय ।
विरतधरे निज नासिकाये, मुनमें मुनक समाय ॥ १ ॥

संत गुणै सरधापणै बे, छिनही विसरै नांहि ।
 सुरनर मुनिजन रीक्षिया बे, लागिमगन धुन मांहि ॥ २ ॥
 पांसविहणी पांसली बे, बोलै अमृत दीण ।
 नितही नैडी बाजही बे, अंतर लागा नैण ॥ ३ ॥
 जैमलदास धुन ध्यानमें बे, ऊगा निर्मल सूर ।
 मुरली मांहि अगोचरी बे, ऊपर अनहद तूर ॥ ४ ॥

पद ४

मेरी जिन्द कुरवाण साईंदी सूरत पर वारी हो ॥ टेर.
 साईंदी सूरत मेरे दिलविच बसदी लागै मोहि पियारी हो ॥ १ ॥
 दर्शन तेरो जीवन मेरो मेटौ भरम अंधारी हो ॥ २ ॥
 आसन तेरो सहज सिंहासन पाँचूं प्रेम पुजारी हो ॥ ३ ॥
 जैमलदास करै अरदासा राखो शरण तुम्हारी हो ॥ ४ ॥

पद ५

कदै न उतरै खुमांर हरि रंग यूं लागो ।
 यूं लागो यूं लागो यो तो ध्रम यूं भागो ॥ टेर.
 चित्तमें चेतन ठाढ़न्या बे, परम तेज प्रकास ।
 वेद पुराणां गम नहीं बे, दरशन पावै दास ॥ १ ॥
 दूर ध्यजा धुन में खड़ीबे, घुरै दमामौ घोर ।
 मुरली बाजे सोहणी बे, लागि रखा है टोर ॥ २ ॥
 मन ही में मनजानिया बे, कह्ये कूं कछु नाहिं ।
 मूरख भूल्या भरम में बे, बाहिर बूढ़ण जाँहिं ॥ ३ ॥
 गगन मंडल वादल झरेबे, बूढा नाम निरास ।
 पाँवस तूटा पेमका बे, भीना जैमलदास ॥ ४ ॥

पद ६

राम भजन में मन लावै संतो अनहद तार बजायै ॥ टेर.
 आतम मांही आप विचारै शब्द सुणै सुख रासी ।
 निरख निरख हिरदै में हरखै थाय मिले अविनासी ॥ १ ॥
 साँचा ज्ञान ध्यान धरि हिरदै गगनमंडल मठ छावै ।
 निर्मल नूर नैन रह लागी बिन रसना गुण गावै ॥ २ ॥

१ घुरीका बाजा । २ छाड । ३ बाजा विशेष जिसको भजनेसे दमामी कह्यते
 दमामा=ताया वा नगरा । ४ बर्षा । ५ तेज ।

भगम निर्गम गति जाय न जानी परमणहार न कोई ।
जैमलदास भंतर जिन शोज्या देखै भचरज सोई ॥ ३ ॥

राग गूनी ।

पद ७

राम रट्यो गलतान भयो ॥ टेर.
सारको सार सकल ते ऊँचो सो या तनमें साधि लयो ॥ १ ॥
आदि बनादि किता जन धीन्दो ताको सांसो दूरि भयो ॥ २ ॥
वेद पुराण सकल में योलै भक्ति मुक्ति विधाम लयो ॥ ३ ॥
जैमलदास लग्यो चित निधै दीपक ज्युं परकास भयो ॥ ४ ॥

पद ८

मन रहै लागो मनसुं ॥ टेर.
अंतर मांहि अगम घर देखै वेद लहै परघर सुं ॥ १ ॥
चेतन में चित जाय समाये विरच रहै विपया धन सुं ॥ २ ॥
त्रिकुटी ध्यान लगावै ताली तोडि चलै तांतो तन सुं ॥ ३ ॥
जैमलदास सांईके शरणे ऐसो वेद लहै जन सुं ॥ ४ ॥

पद ९

देखो निरंजन की छविताई ॥ टेर.
ज्यों ज्यों प्रीति लगी निशियासर त्यों ही भई है ज्योति सचाई ॥ १ ॥
जोग विरोध विमोहको नातो याकों छेद रही निज पाई ॥ २ ॥
अवगति परस भया जे ऐसा लागै नहीं शुभाशुभ फाई ॥ ३ ॥
जैमलदास चरण चित लागा या विधिमें सतगुह हीतै पाई ॥ ४ ॥

पद १०

मेरो नेह लग्यो निर्मल धुन सुं ॥ टेर.
तेज प्रकाश भयो या तनमें रीझरह्यो मनही मन सुं ॥ १ ॥
अंतर ज्योति जगी क्षिणामिग चित लग्यो उनही उन सुं ॥ २ ॥
दिल मांही दीया निज दर्शन क्या कहूं किनही किन सुं ॥ ३ ॥
जैमलदास परस पिउ प्यारा आतम भिन्न सदा तनही तनसुं ॥ ४ ॥

पद ११

तुझे आय मिलेंगे रसना राम पुकाररी ॥ टेर.
तन मन लाय लाय चित घरणै सोहि करैगा पार ॥ १ ॥

सुमरण साक्षि उदास उलटि धुनि है सारं निज सार ॥ २ ॥
 सत करि मान असत करि कानै करगहि दैगा तार ॥ ३ ॥
 जैमलदास हरि भक्ति विह्वणी बाजी चणी असार ॥ ४ ॥

पद १२

अबधि सिदाणी रे तेरी हरि सुमरै फ्यों नाँहि ॥ टेर.
 आव गई चेतै तूं नाँहीं अबसर वीतो जाँहि ॥ १ ॥
 नरपति भूपति ऐसे जानै संपति स्वपूने माँहि ॥ २ ॥
 हृष दल हस्ती दास घणा संग ऊठि अकेलो जाँहि ॥ ३ ॥
 झूठे सुखमें राचि रह्यो है हरि सुख विसरै फाँहि ॥ ४ ॥
 जैमलदास भय नीर तिरन को राम नाम घट माँहि ॥ ५ ॥

पद १३

अजहूँ चेतै नाँही आव घटंती जाय ॥ टेर.
 ज्यों तब छाया तेरी काया देखत ही घटि जाय ॥ १ ॥
 ऐसो दाव बहुरि नहीं लाभै पीछे ही पछिताय ॥ २ ॥
 जैमलदास काच करि कानै तंतही लेणा ताय ॥ ३ ॥

पद १४

सोझि रे घट माँहि तोसे साँर नैदारे ॥ टेर.
 राम संभाल शब्द करि सोधो मधसागर में बेड़ा रे ॥ १ ॥
 सूक्ष्म स्पूल सकल में व्यापक त्योही है घट तेड़ा रे ॥ २ ॥
 जैमलदास शरण सुख पाया नित चरणों का बेड़ा रे ॥ ३ ॥

पद १५

ठग बाजी संसार दुनिया सब भूली मोछा है हृद ऊली ॥ टेर.
 लागि भरम चित मोहिया चेतन विसन्या जाय ।
 निर्मल मूरति माँहिली ताकों देखै नाँहि ॥ १ ॥
 इन विधि साँई माँहि है ताहि न देखै कोय ।
 सार विचान्या शब्द का नैड़ा ही निज होय ॥ २ ॥
 सादिव शब्द समाइया जे कोर लेयै खोज ।
 येम पियाला भरि पियै अब लागै मनमें भोज ॥ ३ ॥
 जैमलदास भय नीर तिरणकुं आतमराम आधार ।
 परिग्रह हूवा पार्खती अनुभव हूवा पार ॥ ४ ॥

१ अथ । २ आयु । ३ साँग । ४ तत्त्व । ५ घेर । ६ चेर । ७ श्रीपुत्रघनादि ।
 ८ अथ ।

पद १६

क्या परदेशीहारी प्रीति जावतो धार न लावै ॥ टेर.
 आत न देख्या जात न जाण्या क्या कहियाँ घन आवै ॥ १ ॥
 काया विनसै जीव परदेशी झूठा नेह लगावै ॥ २ ॥
 ऐसे घास फूलनते विल्लुरे माँहों माँहि समावै ॥ ३ ॥
 जैसे संग सराय को दिन ऊगाँ उठि जावै ॥ ४ ॥
 जैमलदास धगम रस घटमें जो खोजै सो पावै ॥ ५ ॥

पद १७

बटाऊ रे लोक तूँतो मारग भूलो रे ॥ टेर.
 निर्मल नूर शरीर समाणा मनही माँहि महोलो रे ॥ १ ॥
 साचा राम सोई संग तेरे और झूठ सुख ऊलो रे ॥ २ ॥
 पाँच पचीस मोह मच्छर मक् या संग सुं तू झूलो रे ॥ ३ ॥
 रहता रूप सही करि राखो वहता देख न भूलो रे ॥ ४ ॥
 जैमलदास भव भ्रम बंधन तजि कोइक हरिजन खूलो रे ॥ ५ ॥

पद १८

विदेसी जीव यो जग झूठको जोय ॥ टेर.
 दिना च्यारका लिया बसेरा निधै चलणा तोय ॥ १ ॥
 सुमर सनेही ज्युं सुख होई फिर फिर मरण न होय ॥ २ ॥
 तन घन तेरा पीछे रहेगा जाँहि अकेलो रोय ॥ ३ ॥
 पाणी माँहि पतासा जैसे युं तन छीनो जाय ॥ ४ ॥
 जैमलदास भजो हरि निधै येगा धार न लाय ॥ ५ ॥

इति ।

ॐ नमः श्रीमद्हरियानंदेभ्यः ।

अथ श्री १००८ श्रीहरिरामदासजी महाराज की अनुमद-

गिरा उद्योतकार ।

ब्रह्मस्तुतिः ।

छंद गीतक ।

परम बंधन परम क्षेया परम दीन दयाल तू ।

परम आतम परम याती परम स्वर्ग पपाळ तू ॥

नमो निर्गुण नमो नाथू नमो देव निरंजनम् ।
 नमो समर्थ नमो स्वामी नमो सकल सिरंजनम् ॥
 नमो अविर्गत नमो आपू नमो पार अपरंपरम् ।
 नमो महारम नमो न्यारा नमो पद परमेश्वरम् ॥
 नमो चेतन नमो तैारी नमो निज निराशनम् ।
 नमो आदि न नमो अंता नमो ब्रह्म प्रकाशनम् ॥
 नमो प्रीतिम नमो प्यारा नमो नाम निकेवलम् ।
 नमो कायैम नमो कर्ता नमो राम निरमलम् ॥
 नमो निकलंक नमो नकुला नमो नित्य नरायनम् ।
 नमो अमर नमो अघर नमो पीय परायनम् ॥
 नमो हरदम निराकारं नमो निगम निरूपनम् ।
 नमो अविचल नमो अणभै नमो एक अनूपनम् ॥
 नमो साहिय नमो सद्वजां नमो काल निकंदनम् ।
 दास हरिया नमो दाता नमो तम निर्द्वन्दनम् ॥

अथ श्रीगुरुदेवजी को अंग ।

साखी ।

पद्मस्र सतगुरु प्रणम्य पुनि सब सन्त नमोय ॥
 हरिरामा मुर मधन में या पद समान फोय ॥ १ ॥
 प्रथम सेव गुरुदेव की पीछे हरि की सेव ।
 जन हरिया गुरुदेव विन भक्ति न उपजै भेव ॥ २ ॥
 गुरु सेवा कै राम की या तुल नांही और ।
 गुरु तो भाजै भरम छूं राम मुक्ति की ठौर ॥ ३ ॥
 पहिली दाता हरि भया तिनते पाई जिंद ।
 पीछे दाता गुरु भया जिन दाखे गोविंद ॥ ४ ॥
 पहिली गुरु आदर दिवै तो हरि आधा लेह ।
 हरिया गुरु आदर विना हरि ही मान न देह ॥ ५ ॥
 हित न सतगुरु सारिखा मुझ दीया मुँझि ज्ञान ।
 हरिया में तैं मेठिकै अघर धराया ध्यान ॥ ६ ॥
 हित न सद्गुरु सारिखा अर्थ यताया एक ।
 हरिया तन मन बचन का अनरथ मिट्या अनेक ॥ ७ ॥

१ अनिर्वचनीय अथवा जो जाना न जाय । २ अपरंपार । ३ मेदका जाननेवाला ।
 ४ टालनेवाले । ५ अचल । ६ नित्य । ७ जो विचल न हो ।

हरि है दाता वेद का तारें भया सकाम ।
 गुरु है दाता ज्ञान का मनका मेदि विराम ॥ ८ ॥
 जब सैं उर अज्ञानता हरि सुख उपजै नाँहि ।
 जन हरिया गुरु ज्ञान दे किया निदुरा मन माँहि ॥ ९ ॥
 सतगुरु जो मिलता नहीं हरिया होते रीछ ।
 आपो आप न ओलरै औरां ईछे पलीछ ॥ १० ॥
 सतगुरु जो मिलता नहीं आती नाहि सुमति ।
 हरिया हरि सँ आंतरो करते काय कुमति ॥ ११ ॥
 सतगुरु जो मिलते नहीं होती तनकी हानि ।
 ज्युं पासो चोपड़ तणो हरिया दाय न जानि ॥ १२ ॥
 हरिया पासो हाथ को होय न अपने दाय ।
 सतगुरु केरे शब्द विन मन आवै नहीं हाथ ॥ १३ ॥
 जन हरिया चोपड़ तणा आवै दाय अनेक ।
 सतगुरु केरे शब्द सों औसर मिलैए एक ॥ १४ ॥
 सुरति सारी निरंत चौपड़ सतगुरु दाव दिखाय ।
 हरिया पासो पेम का खेलज हरि सँ लाय ॥ १५ ॥
 ऐसे दिनेकर मेटियाँ निशिकर गण नसाय ।
 जन हरिया गुरुमेटियाँ अघ अंधारा जाय ॥ १६ ॥
 जन हरिया गुरु मेटिया मेट्या अघ अंधार ।
 ज्ञान गुरु प्रकासिया देख्या दिल दीदार ॥ १७ ॥
 घर घर में दीपक जगै दुनियाँ देखै नाँहि ।
 सतगुरु विन भाजै नहीं पढ़दा अंतर माँहि ॥ १८ ॥
 लखचौरासी नगर में कोड़ी घज कोइ साह ।
 लखां हजारों एक सौ जग माँही बहुताह ॥ १९ ॥
 सतगुरु साहूकार है शिप सौदागर जान ।
 जन हरिया राखै नहीं रती न अंतर कान ॥ २० ॥
 हरिया सौदो साह को लेसी सिरदे मोल ।
 विन तोलां विन ताकड़ी तत्त तराजू तोल ॥ २१ ॥
 सौदा सतगुरु सँ किया राम नाम धन काज ।
 लाम न कोई छेहेंडो तोटा सबही भाज ॥ २२ ॥
 सतगुरु विन सौदा किया जन हरिया बेकाम ।
 साकट ऐसे सूकरा हाँडै घर घर जाम ॥ २३ ॥

सतगुरु संग सौदा किया गार्हिक ज्ञान विचार ।
 जन हरिया जय जाणिये पूंजी पार उतार ॥ २४ ॥
 राम नाम सौदागरी करि करि लीजै लाह ।
 जन हरिया हक साहके ना कोइ अनहक राह ॥ २५ ॥
 हरिया सौदा शब्द का दूजा सौदा नाहि ।
 दूजा सौदा सो करै खांड परे मुखमांहि ॥ २६ ॥
 राम नाम सौदा किया दूजा दौण चुकाय ।
 जन हरिया गुरु ज्ञान का ताँडा देह लदाय ॥ २७ ॥
 ताँडे नार्यक नाम निज गुण की गुण भराय ।
 लड़े पलाणै सुरति मन ज्ञान बलधिया थाय ॥ २८ ॥
 भाडा पड़दा दूर करि अगम दिखाई घाट ।
 जन हरिया गुरु महार तैं लंघिया अबघट घाट ॥ २९ ॥
 अबघट घाटी नीसच्या देख्या देव अपार ।
 जन हरिया शिर ऊपरै सतगुरु सिरजन हार ॥ ३० ॥
 सतगुरु मिलियाँ बाहिरो होती हाँसा खेल ।
 फूवै गोसी कोस ज्युं हरिया पाछो ठेल् ॥ ३१ ॥
 जयरो गोसी कूप जग वारो आवै जाय ।
 हरिया गुरु बाँही गहे आत जात अटकाय ॥ ३२ ॥
 सतगुरु मोकुं धीरदे एकजदाखी सीख ।
 जन हरिया गुरु सीख विन भळुं न दूजी वीखें ॥ ३३ ॥
 सीख सुनाई सुध भई तन आपो विसराय ।
 जन हरिया मन गंके हुय तर्क फंके नहिं थाय ॥ ३४ ॥
 सतगुरु बाह्या शब्द सर भूष्याँ हृदय मँझार ।
 भोंदुं था सो भाजिग्या मेदी रह्या विचार ॥ ३५ ॥
 सतगुरु बाह्या शब्द सर सनमुख लागा आय ।
 सुगुरा सोई खेतसी निशुंरां गम्म न काय ॥ ३६ ॥

१ सांख्य अंग है अर्थात् धूह । २ कर । ३ बालक, सोबत । ४ मुखिया । ५ छटिया ।
 ६ निना । ७ बहस होलनेवाला । ८ धकादेना । ९ डग । १० अपनापन । ११ मम ।
 १२ बादविवाद । १३ छोडा । १४ अज्ञानी ।

१५ गुरु उपदेश कहाकरै दुराराध्य संसार ।

वधै सदा जाके उदर जीव पंचपरकार ॥ १ ॥

१६ ईषा प्रभु चूषा चट्टर सँषा रोचक शुद्ध ।

ऊषा दुर्बदी विकठ घूषा घोर अबुद्ध ॥ २ ॥

हरिया सतगुरु शब्द की मुखमर घाँह मूठ ।
 आगै शिष सामा खड़ा दियाँ जगत कूँ पूठ ॥ ३७ ॥
 जन हरिया गुरु सूखा करै शब्द की घोट ।
 सिख सूरा तन जो लहै आनि धरै नहि ओट ॥ ३८ ॥
 सतगुरु का सिख सूखाँ त्यागै तन मन प्रान ।
 हरिया सालै रैन दिन शब्द लगाया वान ॥ ३९ ॥
 भागाँ सूर न बज्जई भागाँ गुरु नै गाल ।
 मणियाँ एकल मल लहै दोऊ दलाँ विचाल ॥ ४० ॥
 सतगुरु बाछा मूठ भर शब्द सताणा एक ।
 जन हरिया उर धीच में करिग्या लेक अनेक ॥ ४१ ॥
 पर उपकारी गुरु मिन्या भक्ति बताया भेव ।
 योही सुमरण हरि कथा याही सहजाँ सेव ॥ ४२ ॥
 जन्म जन्म के धीसरे अब फ्युँ आवै ठाय ।
 जन हरिया गुरु आपना पलमाँही समझाय ॥ ४३ ॥
 जन हरिया गुरु आपना लेपहुँचे पर गाँव ।
 जिन गुरु शब्द न जानिया घका धीचमें चाँव ॥ ४४ ॥
 फीड़े खाई लकड़ी ज्युँ काया कूँ काल ।
 गुरु बिन कोइ न ऊरै मध्य स्वर्ग पाताल ॥ ४५ ॥
 प्रह्न अग्नि तन धीच में मथकरि काटै कोय ।
 उलटि काल कूँ खात है हरिया गुरु गम होय ॥ ४६ ॥
 सतगुरुती संसा मिठ्या भया निसंसे जीय ।
 जन हरिया मुष्टि प्रामिया आदि अंतका पीय ॥ ४७ ॥
 सतगुरु जो मिलता नहीं तो लेते कुल खोज ।
 जन हरिया सतगुरु मिन्या हसोन आवै रोज ॥ ४८ ॥
 जन हरिया सतगुरु हसा जिसा कैमागर होय ।
 शब्द मसकला केर करि दाग न राखै कोय ॥ ४९ ॥
 जन हरिया सतगुरु हसा जैसा होय छोहार ।
 तन छोहा ज्युँ ताप दे काट न राखण हार ॥ ५० ॥
 जन हरिया सतगुरु हसा जिसा सरैकरा होय ।
 मन तरकस्त का सीर ज्योँ पाँक न राखै कोय ॥ ५१ ॥

हृषा सिद्ध करै सब शोऊ मूँसा कैंपा मूरख शोऊ ।

हृषा केर मिठख संघरी हृषा जीव शोऊ अभिघारी ॥ १ ॥

१ मुनिभार । २ शोखे । ३ विघ्नगीर । ४ घाल । ५ बालकननेवाला ।

जन हरिया सतगुरु प्रसा जैसा होये भृंग ।
 कीट परांसे पोखदे करै आप से रंग ॥ ५२ ॥
 जिन गुरु ती हरि प्राप्तियाँ भरम न राख्या कोय ।
 जन हरिया फया अरपियै दीजै तन मन दोय ॥ ५३ ॥
 जन हरिया भव जुगन में सतगुरु करी सहाय ।
 आदू अपना जानिके द्वाध लिया विलमाय ॥ ५४ ॥
 लोह पलट कंचन भया पारस का परताप ।
 जन हरिया सतगुरु करै आप सरीपा आप ॥ ५५ ॥
 जन हरिया सतगुरु करै ऐसा है इकतार ।
 जैसे कूँ तैसा करै ज्यों दरपन दीदार ॥ ५६ ॥

इति ।

अथ गुरु शिष्य को प्रसंग ।

शिष सतगुरु पै जायके चरण नवाप शीश ।
 जन हरिया सतगुरु किया चेला राम धेरीश ॥ १ ॥
 शिष सेती सतगुरु कहै परा परीकी रीत ।
 और भरम कूँ छाँडि दे राम नाम सँ प्रीत ॥ २ ॥
 शिष मन को नारेल करि ले गुरुचरणां चाडि ।
 हरिया सतगुरु देत है अपना अंतर काडि ॥ ३ ॥
 अंतर जिसकूँ दीजिये हरिया अंतर देह ।
 आपा अंतर बाहिरो जासूँ किसा सनेह ॥ ४ ॥
 हरिया भेद न दीजिये बाके अंतर खोट ।
 तन तै नान्हा हुय मिलै मन तै बडिँममोट ॥ ५ ॥
 हरिया तन का फया दिया जो मन दुबिँधा आनि ।
 तन मन भीतर एक है ताहि दिया सब जानि ॥ ६ ॥
 ताहि दिया सब जानिया बाके अंतर साच ।
 हरिया कपडूँ मुख ते अस्त न आसै वाच ॥ ७ ॥
 मुख तै मीठा बोलणा अंदर भरिया खार ।
 बाके कूड़ र कपट का हरिया बहुत व्योहार ॥ ८ ॥
 हरिया तन हरि का दिया मन हरि कै नहिँ द्वाध ।
 मन कूँ गुरु परयोधिके दई नाम सी आध ॥ ९ ॥

१ शिष । २ धारीश=समुद्र । ३ छोटा । ४ बरपन । ५ भेदभाव । ६ छोट ।
 ७ प्रयोधिके=घनेतर । ८ संपत्ति ।

पा गुरु कूं क्या दीजिये दीजे अपना मत्त ।
 मन के पूछे राध द्रिया हरिया तनद बनध ॥ १० ॥
 मन को नेयो तुलम हि जो कोइ मन कूं देत ।
 जन हरिया मन देत है तन करि जाने रेत ॥ ११ ॥
 मन मेरा सेधग भया लग्या शब्द गुरु कान ।
 रोम रोम में भिद् गया हरिया किपून जान ॥ १२ ॥
 दास भाय राध ही किया दीया मन अरु तप्त ।
 हरिया पीछे क्या रहा गुरु दरशन परसप्त ॥ १३ ॥
 हरिया गुरु दरशन कियों कटे कोटि अपराध ।
 सोई निशि दिन धिन घड़ी होय समागम साध ॥ १४ ॥
 साधु समागम सफल है हरिया तन मन जानि ।
 जैसा धाद्वे बीज कूं तैसा तुणसी आनि ॥ १५ ॥
 हरिया गुरु का सत शब्द सांचे मनखूं धारि ।
 भवसागर में डूयतां लेसी पार उतारि ॥ १६ ॥
 जन हरिया गुरु आपनै शब्द कहा समझाय ।
 वृजा भ्रम अरु कर्म कूं पल में देह बहाय ॥ १७ ॥
 हरिया जैमलदास गुरु राम निरंजन देव ।
 काया देवल देहरो सहज हमारे सेव ॥ १८ ॥

चंद्रायणा ।

सतगुरु का शिष्य जानि विचारै ज्ञान कूं ।
 तन मन सौंपै सीस धरे उर ध्यान कूं ॥
 निशि दिन सुमरै राम कबू नहि भूलरे ।
 हरिदां दास कहै हरिराम ताहि नहि तूलरे ॥ १९ ॥
 इति ।

अथ उपदेश को अंग ।

तन मन का अर्पण करै, धाचा सूर नरेश ।
 जन हरिया हरिनाम का, ऐसा है उपदेश ॥ १ ॥
 कारन कारनवंत कै, उर आपस में आन ।
 जन हरिया यों ब्रह्म है, सही हृदय करि जान ॥ २ ॥
 तेरु जल तिर नीसरै, का बेरै सिर बेठि ।
 जन हरिया जग क्यूं तिरै, बिना ज्ञान गुरु पैठि ॥ ३ ॥



राम नाम निशि दिन भजो, तजो विद्वान्नी तात ।
 जन हरिया नर देह सो, औसर वीतो जात ॥ २० ॥
 राम भजो रे प्राणियाँ, मन परतीति लगाय ।
 जन हरिया परतीति विन, जन्मभकारंथ जाय ॥ २१ ॥
 इन औसर भजि राम कूं, करि करि मन में ख्यांति ।
 हरिया पेम पियास विन, चढे न चोली भांति ॥ २२ ॥
 बंदा करिये बंदगी, आतम सूं आधीन ।
 जन हरिया दम दम घटै, यो तन होसी छीन ॥ २३ ॥
 सहजां साईं सुमिरिये, आलस ऊंघ न आन ।
 जन हरिया तन पेखणो ज्यों जलपंडरै जान ॥ २४ ॥
 हरिया राम संभारिये, दूजी चिंत निवार ।
 दूजी चिंता जो करै, तो तन जासी द्वार ॥ २५ ॥
 इति ।

अथ ज्ञान संजोग विरह को अंग ।

दीपक पाचक तेल भरि, विच घाती संजोय ।
 जन हरिया जय एकटा, पड़े पतंगा जोय ॥ १ ॥
 तन दीपक मन तेल भरि, जीय पतंगा जेम ।
 पाचक रूपी राम है, हरिये लाया पेम ॥ २ ॥
 विरहा आया ज्ञान का, आपो अंतर भेट ।
 जन हरिया जय विरहिनी, पिउ परमानंद भेट ॥ ३ ॥
 विरह सजोका ज्ञानका, सुधि बुधि गुणां गंभीर ।
 जन हरिया अज्ञान कूं, फाड़ि निकासै तीर ॥ ४ ॥
 और विरह किस काम का, विना विचान्यां ज्ञान ।
 जन हरिया विरह जाणिये, अंतर उपजै ध्यान ॥ ५ ॥
 विरहा मेरे तिरघणी, छड़ैत छाँड़े नाँहि ।
 जन हरिया विरह लेचले, सुपानागर के माँहि ॥ ६ ॥
 इनको प्याणो दुलभ है, ज्यों सांझ की धार ।
 हरिया सरवर नीर कूं, विरही पीयन द्वार ॥ ७ ॥
 जन हरिया वन वन फिरी, साँई कारण तुज्जि ।
 विरहा ज्ञान प्रकाशिया, भंदर पाया गुज्जि ॥ ८ ॥
 हरिया मेरे को नहीं, तमसा आतम राम ।
 सूं घट घट में रमि रता, सारत है सब काम ॥ ९ ॥

विरह स तीरा तन वहै, सो जाणै तन पीर ।
 जन हरिया तन पीर विन, क्या जाणै बेपीर ॥ १० ॥
 पीर पराई सो लहै, ता तन पीरा होय ।
 जन हरिया बेपीर तन, पीर न वूझै कोय ॥ ११ ॥
 विरह सतीरा वहिगया, हरिया अंतर माँहि ।
 लागत ही सूं गिर पन्या, ऊठण की सुधि नाँहि ॥ १२ ॥
 विरह भाल जाके लगी, अंग अंग में एक ।
 जन हरिया तन बीचमें, करिगी छेक अनेक ॥ १३ ॥
 विरह भालका वहि गया, करिग्या देह दुसारै ।
 का लागी सो जाणसी, का ऊ घाहण हार ॥ १४ ॥
 विरह भाल सूं मरिगया, सूर संत सुजाण ।
 जन हरिया सेजीवता, पढ़या तलफै प्राण ॥ १५ ॥
 भली करी तैं आवतैं, विरहा मेरे अंग ।
 एक रामैयो रमि रह्यो, लगै न दूजा रंग ॥ १६ ॥
 विरहा सूं आयो भलाँ, हरिया अंतर माँहि ।
 राम दिवानी करि गयो, और किसी की नाँहि ॥ १७ ॥
 विरहनि मारी विरह की, सुधि बुधि विसरी सार ।
 हरिया सिर सूं डारिया, हीर चीर सिणगार ॥ १८ ॥
 जन हरिया जोवन गयो, तनतैं जरजर होय ।
 मारी मरुं न विरह की, राम निजर भरि जोय ॥ १९ ॥
 पाँयां सेती पंगली, कर सूं काम न होय ।
 घाहण वहिग्यो विरह को, हरिया अंग थकोय ॥ २० ॥
 जन हरिया विरह परजल्या, धूआं निकसै नाँहि ।
 का हल लाई सो लहै, का जिसके घट माँहि ॥ २१ ॥
 विरहा मोकुं ले चल्या, गंग जमुन की तीर ।
 जन हरिया जल विच अगनि, अय कहँ जाऊं बीर ॥ २२ ॥
 प्रह्न अगनि जलमें जगै, जहाँ विरह का खेल ।
 जन हरिया जहाँ विलंबिया, जाल न मच्छी खेल ॥ २३ ॥
 जहाँ शींवर का जाल है, विरहा कदे न जाय ।
 हरिया घट विरहा यसै, जाकुं काल न राय ॥ २४ ॥
 मुँदरेड़ी आया भलाँ, विरहा घान विचार ।
 जन हरिया अय आवसी, सुतसागर भरतार ॥ २५ ॥

इति ।

अथ परचै फो अंग ।

प्रथम ध्यान पूर्य दिसा, गगन गरजिया जाय ।
 ठाम ठाम पाताल कुं, पछै पंछिम कुं थाय ॥ १ ॥
 सुरति चली आकास कुं, दे जालंधर यंध ।
 जन हरिया जहँ जाणिये, हृद घेहृद की संघ ॥ २ ॥
 घीच मेरु तें गिर पड़्या, धरणी धरे न पाय ।
 जन हरिया जब सूर कुं, खरे रोतै का दाय ॥ ३ ॥
 लगी चोट मन मरम की, खूला ब्रह्मकपाट ।
 मेवासा सब जीत कै, घस्या नगर घेराट ॥ ४ ॥
 घाट विकट घेराट की, पोहँचेगा कोई सूर ।
 हरिया फायर थकि रखा, दरगै रहिया दूर ॥ ५ ॥
 दृष्टि देख सकको कहै, सुपनेऊ कह सोय ।
 जन हरिया गम अगम कुं, ताहि यतावै कोय ॥ ६ ॥
 सुरति यतावै ब्रह्म कुं, कहै अगम की यात ।
 जन हरिया जहँ की कहै, तहां नहीं दिन रात ॥ ७ ॥
 सुरत घसी अमरा पुरी, घरत ब्रह्म की आण ।
 विन चाणी हरियो पढै, जहँ नहि वेद पुराण ॥ ८ ॥
 तीन पोलें तर्किया सिरै, बीच मँडे मैदान ।
 जन हरिया घर शून्य में, सहज घुरै नीसान ॥ ९ ॥
 जीव सीव की संघ में, लगे पात उंचान ।
 जन हरिया जहँ होत है, केती विधि का तान ॥ १० ॥
 झालर ताल मृदंग डफ, घन अनहृद की घोर ।
 हरिया एक अखंड है, रंकार की टोर ॥ ११ ॥
 शब्द एक रंकार की, महिमा कही न जाय ।
 जन हरिया विन देखियां, और न को पति आय ॥ १२ ॥
 शब्द एक रंकार की, महिमा कोटि अनंत ।
 कहि कहि थाके मुनि जना, हरिया आदि न अंत ॥ १३ ॥
 अखंड एक रंकार की, रोम रोम धुनि होय ।
 जन हरिया जा विच लगी, ता तन जानै सोय ॥ १४ ॥

१ पथिमतान । २ त्रिकुटी । ३ सुद । ४ सुपुष्पाक्षर । ५ गद । ६ लंबा चौडा,
 विस्तृत । ७ मुख हृदय बंकनाल । ८ आधयलेनेका स्थान । -९ योगसाधन की एक
 मश । १० उनचास तानोंसे ८३०० कूटतान निकलेहैं ।

- देखत ही दिल परचिया, मिठ्या अपरचा मध ।
 जन हरिया विन देखियाँ, ताहि न परचै तन्न ॥ १५ ॥
 विन पाँवाँ जहाँ नाचियो, विन कर ताल बजाय ।
 विना राग रीझाययो, विना कंठ सुर गाय ॥ १६ ॥
 विना ज्ञान गुण वृद्धियो, विना सीख समझाय ।
 विना दृष्टि जहाँ देखियो, हरिया ध्यान लगाय ॥ १७ ॥
 विना नीच जहाँ देहरो, विना पूज जहँ देव ।
 विन वाती दीपक जगै, विन मूरति जहँ सेव ॥ १८ ॥
 विना पेड़ जहाँ बुझ है, विना फूल फल लाय ।
 विना पंख जहाँ भँवर है, अधर विलंबे आय ॥ १९ ॥
 विना नीर जहाँ कमल है, विन बरपा बरसाल ।
 विना मास विन रूत है, मात पिता विन बाल ॥ २० ॥
 विना जात विन बरण है, विना भ्रात विन बैन ।
 हरिया ऐसा ब्रह्म है, सुन्या न देख्या नैन ॥ २१ ॥
 हरिया बाल न वृद्ध ऊ, ना तरणा ऊ तन्न ।
 निरालंब सुन में रमै, निराकार निरँजन्न ॥ २२ ॥
 विन तीरथ जहँ न्हाइयो, विना घाट विन घाट ।
 जहँ कोई शहर न सोयती, हरिया विणज न हाट ॥ २३ ॥
 घहँ कोई भर्म न कर्म है, घहँ कोई लिपे न लेस ।
 जन हरिया जहँ की कहै, तहँ नहि देस न वेस ॥ २४ ॥
 जहँ कोई जोग न जुगति है, जहँ नहि देग न तेग ।
 हरिया दवा न वेदवा, जहँ नहि पौन न वेग ॥ २५ ॥
 घहँ नहि राग न दोष है, घहँ नहि राज न तेज ।
 घहँ नहि नारि न पुरुष है, हरिया लेज न देज ॥ २६ ॥
 घहँ कोई रिद्धि न सिद्धि है, घहँ नहि पुण्य न पाप ।
 हरिया विषय न वासना, घहँ उत्थप नहि थाप ॥ २७ ॥
 घहाँ न हृद वेदह है, घहाँ नाद नहि बिद ।
 जन हरिया घहाँ ब्रह्म है, जरा न व्यापै जिद ॥ २८ ॥
 घहँ कोई चंद्र न सूर है, घहँ नहि धर भाकास ।
 हरिया एको अधर है, ब्रह्मानंद विलास ॥ २९ ॥
 तीन लोक चवदे भयन, उत्पति परलै होय ।
 हरिया एको अमर है, मरै न जीवै कोय ॥ ३० ॥

यहँ कोर ऊंच न नीच है, यहँ नहि नाम न डाम ।
 हरिया आपो आप है, मंतन का रिधाम ॥ ३१ ॥
 बंधन हैं निर्बंध भया, गिन्या गून्व घर जाय ।
 हरिया सुरति न शब्द का, निर्भय प्यान लगाय ॥ ३२ ॥
 लगी सुरति सत शब्द मं, कथहुं मंटे नांदि ।
 जन हरिया मन मिल रखा, आर पार पद मांदि ॥ ३३ ॥
 अध ऊरध के बीच में, हरिया शिलमिल जोत ।
 सुरति शब्द परचा भया, मिले भोत अग पोत ॥ ३४ ॥
 सुरति समाणी ब्रह्म में, ब्रह्म निरंतर पास ।
 जन हरिया जहँ फाल का, जोर जपर नहि जास ॥ ३५ ॥
 जन हरिया दिल भीतरे, दोसत भपना राम ।
 करुं न दूजा दोसती, या जग जाया जाम ॥ ३६ ॥
 आतम का सुप्र जाणिया, भया परम संतोष ।
 जन हरिया जय जाणिये, याही जीवतमोष ॥ ३७ ॥
 पारब्रह्म के देस का, दो राहों विच राह ।
 जन हरिया मन संचरे, भेटण दिल दरगाह ॥ ३८ ॥
 पारब्रह्म के देसड़े, अदल नको फदलाह ।
 हरिया जामण भरणका, भेट्या दुइ चदलाह ॥ ३९ ॥
 जन हरिया उन देसड़े, धारह मास वसंत ।
 सदा फलैगी धनस्पति, यिलंध्या जीव न चित ॥ ४० ॥
 जन हरिया उन देसड़े, वारै मास सुकाल ।
 भूख ल्या नहि व्यापई, दुर्भख पड़े न फाल ॥ ४१ ॥
 जन हरिया उन देसड़े, मास दिवस नहि रिक्त ।
 है जहँ गाज न बीजरी, सरवर भरिया निक्त ॥ ४२ ॥
 जन हरिया उन देसड़े, अघिनासी की आन ।
 और किती का डर नहीं, हिंदु न मुस्सलमान ॥ ४३ ॥
 जन हरिया उन देसड़े, आतम एको यार ।
 दानव कोइ न देवता, निरदावै संसार ॥ ४४ ॥
 लख चौरासी नगर का, हरिया ब्रह्म नरेश ।
 है जहँ चूक न चाकरी, पटा न पलटै देश ॥ ४५ ॥
 हरिया पाटन पुर नगर, राव रंक नहि भूप ।
 अलख अभंगी आप है, नारि न पुरुषारूप ॥ ४६ ॥

इंसाफ । २ गैर इंसाफ । ३ प्राचीन बड़ा शहर । पुर, पुरी, नगर, नम
 पटन, पदमेदन, निगम, कटक, स्थानीय, पट, इनमें कुछउछ मेद है ।

हरिया हरिजन एक है जीव सीव नहिं दोय ।
 नीर मिलाना नीर में, फिर न्यारा नहिं होय ॥ ४७ ॥
 जन हरिया मन मेरु करि, चढ़या त्रिवेणी गंग ।
 गंगा जमुना गोमती, नाहत है अण भंग ॥ ४८ ॥
 उलटा चढ़ असमान कूं, मिले त्रिवेणीतट ।
 जन हरिया जहँ मंडिया, सुरति शब्द का मट्ट ॥ ४९ ॥
 सुरति शब्द के मट्ट की, है अजरायल वाट ।
 जन हरिये जहँ घर किया, लोक वेद सूं फाट ॥ ५० ॥
 सुरति शब्द मिल एकठा, ता बिच रही न काण ।
 जन हरिया सुन सेह का, सहजाईं सुख माण ॥ ५१ ॥
 तट तिरवेणी नीर की, चलै सीर चहुँ ओर ।
 जन हरिये सो चखिया, चिखै न रखी कोर ॥ ५२ ॥
 पड़े पुड़ंग तहँ पेम की, एक अखंडी धार ।
 हरिया हरिजन पीवसी, दुनिया सुधी न सार ॥ ५३ ॥
 यादल बूटा पेम का, नख लिख भीना रोम ।
 हरिया सो सुख जाणसी, जिन पाईं पर भोम ॥ ५४ ॥
 अरघ कमल में बैस करि, भँधरो रह्यो लिपट ।
 जन हरिया जव जीवको, सांसो गयो सिमट ॥ ५५ ॥
 भँधरो वास विलंबियो, फूल न आयो गट्टि ।
 हरिया आशा छाड़िके, रह्यो निराशा मट्टि ॥ ५६ ॥

इति ।

अथ चेतावनी को अंग ।

मेर नगारा आरवी, केते गये यजाय ।
 जन हरिया किन बहुरि के, घात न वृक्षी आय ॥ १ ॥
 घात बटाऊ देसकी, कहै सुनै सय कोय ।
 जन हरिया उन देसकी, कहै सुनै नहिं कोय ॥ २ ॥
 नैणा नेह निहारती, न्यारी निमित्त न होय ।
 जन हरिया तन भीतरै, पढ़या दिनंतर जोय ॥ ३ ॥
 पान संयोली घायते, मसी कयोड़े दंत ।
 जन हरिया दिन एक में, मुख धूडी धूंकत ॥ ४ ॥
 जन हरिया फर कंपिया, डोलण लगा शीर ।
 तोर न भंघा चेतही, आपनपी जगदीश ॥ ५ ॥

निसि दिन दोड़े धन कौर, सहे घाम सिर सीत ।
 जन हरिया नर डाँडिग्यो, खाँट खटाऊ भीत ॥ ६ ॥
 खाँटी दाँटी रहगई, कुछी न चाली साथ ।
 जन हरिया जग दीन विन, हाल्यो रीते हाथ ॥ ७ ॥
 ओछे पाणी मच्छली, किसी जिदकी आस ।
 हरिया सास सरीर में, वसै किता दिन चास ॥ ८ ॥
 ऊँचा नीची सकल में, एक किसी में नाहिं ।
 जन हरिया जामण मरण, लख चौरासी माहिं ॥ ९ ॥
 लप चौरासी जीवड़ा, सबै काल की चारि ।
 जन हरिया जय ऊँचै, सत का शब्द सँभारि ॥ १० ॥
 सब जग बंध्या जेवैडी, निर्वधन नहिं कोय ।
 हरिया सो निर्वध है, राम सनेही होय ॥ ११ ॥
 जग माँही केता धका, टान्या केम टरंत ।
 जन हरिया गहु राम कूं, पड़ि पड़ि भी ऊँतंत ॥ १२ ॥
 पाँच सात पच्चीस में, चरप एकसो बीस ।
 घरँटी ऊँच्या अन्न ज्यों, कै पीसा कइ पीस ॥ १३ ॥
 पछितावेगो प्राणिया, हरिसुं पड़ि से दूर ।
 जन हरिया मन चेतलै, है तन सास हजूर ॥ १४ ॥
 कुल के मारग जग चलै, ज्यों कीड़ी कुल नाल ।
 हरिया टलै त ऊँचै, नदि तो लूटै फाल ॥ १५ ॥
 पान पड़ते यूँ कह्यो, सुण तरवर की टाल ।
 मेरो तो दिन पूँजिग्यो तेरो आयो फाल ॥ १६ ॥
 डाल पुकारै डाल कूं, सुणो हमारी यात ।
 मेरी ऊँमर सुदिगा, तेरी आई घात ॥ १७ ॥
 डाल पुकारै मूल कूं, पारी आई मुजिह ।
 जन हरिया अय चेतलै, जगमें मरणो मुजिह ॥ १८ ॥
 पारो पारी ऊँडिगे, काली काल के लोग ।
 हरिया पूँडे पुंगड़े, उनका भाया जोग ॥ १९ ॥
 हरिया राग न रीसियो वेद न रिघा पाट ।
 बापा जामी पकली, साथै ककण फाट ॥ २० ॥

१ छोट खटेक, २ बरग बंरिया, ३ दुर्बलीका समान । ४ कीडुई बमई । ५ १
 । ४ खटी । ५ एटी । ६ बरी । ७ छोटी टहरी । ८ भातु लूट गई । ९ कीरे
 • बर बरी ।

- पलंग पधरणे पौढ़ते, लेले सीरख सौड़ ।
 सोवे सीढ़ी साथरे, दौड़ि सके तो दौड़ ॥ २१ ॥
 मीठा मेवा जीमते, बहु भोजन बहु भांत ।
 तासुं तन छेती पड़े, जन हरिया कर ख्यांत ॥ २२ ॥
 अमल कटोरा गालते, मावा भरि भरि लेह ।
 जन हरिया दिन दस्तके, का कोइ घरस करेह ॥ २३ ॥
 प्याला भरि भरि पद्मणी, पिवै पिलावै पीच ।
 जन हरिया जब क्या करै, जम लेजासी जीव ॥ २४ ॥
 पैड़ी पैड़ी पाँच दे, सूते मन्दिर माहिं ।
 जन हरिया तोइ जीवकी, घात टरैगी नाहिं ॥ २५ ॥
 कनक महल ता बीच में, ढोले अंगन काच ।
 हरिया एकै नाम विन, नाच गये बहु नाच ॥ २६ ॥
 खोसा कपड़ा पहरते, सोंधा अंग लगाय ।
 जन हरिया वे मानवी, मिले खाक दरै जाय ॥ २७ ॥
 आढे तेढे चालते, खांगी पाघ झुकाय ।
 हरिया छाया निरखते, सेभी गये विलाय ॥ २८ ॥
 ऊंचा मंदिर बीच घर, जहँ करते घरवास ।
 दोसी घोरं बीच घर, लेण नदै इक सास ॥ २९ ॥
 सुंदरि विना न सारते, निशि दिन करते नेह ।
 से जंगल में पोड़िया, हरिया एकल देह ॥ ३० ॥
 कुल भरजाद न लोपते, मरते लोका लाज ।
 नागा करि करि काड़सी, हरिया कालक आज ॥ ३१ ॥
 माटीका देवल किया, काची कली लगाय ।
 नहीं भरोसा रहनका, हरिया धार न लाय ॥ ३२ ॥
 मांड्या सो दूह जायगा, माटी तण्ड मँडण ।
 जन हरिया जमरायका, आवैगा फरैमाण ॥ ३३ ॥
 पार्टण मंडैप पुर नगर, ढहि ढहि दोसी डेर ।
 जन हरिया जग जायसी, जे कोइ लावै घेर ॥ ३४ ॥
 देवल ढहता देखिया, देख न भया उदास ।
 जन हरिया उन मूढ़को, हृदो न खलै जास ॥ ३५ ॥
 नहीं गरीबी दीनता, साहिय को डर नाहिं ।
 जन हरिया तन लूटसी, गाम गली के माहिं ॥ ३६ ॥

हरिया साँई सुमरिये, परहरिये पर निंद ।
 साचे साँई याहिरो, झूठी तेरी जिंद ॥ ३७ ॥
 जब लग साँई याद कर, तब लग पिंजर सास ।
 हरिया पाणी ओस का, पेसी तन की भास ॥ ३८ ॥
 घाल पण नहीं चेतियो, तन तरुणापोधाय ।
 जन हरिया घृद्धि भयो, तोइ न चेत्यो जाय ॥ ३९ ॥
 हाथ पाँव सिर कंपिया, आंख्या भयो अंधार ।
 कालाँ ती पंडर भया, हरिया चेत गियार ॥ ४० ॥
 मात न तात न धात सुत, सगा न सुंदरि साथ ।
 हरिया जासी एकलो, करि घोलीऊ हाथ ॥ ४१ ॥
 घाट घटाऊ सब चले, विड़में घासो होय ।
 जन हरिया साँई विना, यार न तेरा कोय ॥ ४२ ॥
 जन हरिया संसारमें, देख पाँख मत भूल ।
 तेरा सज्जन को नहीं, नारायणसे तूल ॥ ४३ ॥
 घाट विड़ोणी लोक विड़, विड़ही विड़में घास ।
 हरिया हरि विन दूसरा, ताहि किसो विश्वास ॥ ४४ ॥
 हरिया संगी राम विन, या फलि माँहि न कोय ।
 काल पकड़ि ले जायसी, ऊभा देखै लोय ॥ ४५ ॥
 हरिया संगी राम है, का सतगुरु की सीख ।
 जिन पैँडे दुनियाँ चले, भरुं न काई बीख ॥ ४६ ॥
 चंगों थका न चेतिया, मंदा क्या पछिताय ।
 हरिया लागी लाय ज्युँ, भार न काढ़्या जाय ॥ ४७ ॥
 राय रंक बड़ भूपती, वासो वसे सराय ।
 आये ज्युँ सब ऊठिगे, हरिया धिर नहिं थाय ॥ ४८ ॥
 खंड खंड हुय जाहिंगे, नाना नव परकार ।
 जन हरिया निरकार धिर, और अधिर आकार ॥ ४९ ॥
 रामनाम चेत्यो नहीं, गाफिलपणै गँवार ।
 हरिया रहिसी पारकै, हँाली घर घर बार ॥ ५० ॥
 रामनाम नहिं चेतियो, करि करि मनकी डील ।
 जन हरिया सर जल भख्यो, प्यासा मरै पिपीलै ॥ ५१ ॥

१ साथी । २ पराया । ३ पशु । ४ तुल्य । ५ विराना । ६ कर
 ७ निरोध, तंदुल्ल । ८ मुल्ल, मूर्ख । ९ नव प्रकारके खंड । १० नौद
 ११ बिउँदी ।

रामनाम नहिं चेतियो, करी विद्याणी आस ।
 हरिया से घर गोरवें, सरंफ्यां सेती घास ॥ ५२ ॥
 रामनाम चेत्यो नहीं, आलस करि करि अंग ।
 हरिया से रीता रहा, शूर्य कृकर संग ॥ ५३ ॥
 रामनाम नहिं जाणियो, कीया और कलौप ।
 हरिया जा घर संपदा, होसी साँडा साप ॥ ५४ ॥
 रामनाम नहिं जाणियो, हाल्यो अवसर हारि ।
 बंध्यो वार नरेश के, गज सिर धूरी डारि ॥ ५५ ॥
 गज पाँवाँ सिर चंपियो, करि अंकुसकी मार ।
 हरि अंकुस मान्यो नहीं, हरिया सहसी भार ॥ ५६ ॥
 रामनाम विन जाणिया, घासो बसै बंबूल ।
 जे पागोथे पग धरूँ, हरिया भाजै सूल ॥ ५७ ॥
 रामनाम विन जाणिया, घात विणंठी मूल ।
 हरिया जय होसी कहा, अंत भयो अस्थूल ॥ ५८ ॥
 या जगमाँही जीवणो, ज्युँ तरवर का फूल ।
 जन हरिया इन जीव का, तन कर पहिली सुल ॥ ५९ ॥
 रूप रंग ज्यों फूलड़ा, तन तरवर ज्यों पान ।
 हरिया होलो काल को, झड़ि झड़ि हुयै झँफान ॥ ६० ॥
 हरिया होलौ फालको, सबही निकसै माँहि ।
 कोइक हरि जन ऊवरै, जाके दिशा न जाँहि ॥ ६१ ॥
 हरिया कलिमें आयके, कहा करत है कूर ।
 आसी विरिया अंतकी, मुखौ परैगी धूर ॥ ६२ ॥
 धकाधकीमें दिन गया, सूतां रैन विहाय ।
 हरिया हरि की भक्ति विन, कहा कियो नर आय ॥ ६३ ॥
 सूती सपनै रैन के, पाय बिलंबी सैन ।
 हरिया जानूं उठि मिलूं, ऊपरि आये नैन ॥ ६४ ॥
 सूती सपनै ओसैंकी, योली अटपट सैन ।
 जन हरिया घर आंगनै, सही पघारे सैन ॥ ६५ ॥
 जेयूं सपना साँच है, साँचा सैन मिलाय ।
 जय नहिं देखूं नैन भरि, तब कैसे पति आय ॥ ६६ ॥

१ गोवका किनारा । २ सरकनेकी छपरी । ३ कियाकलाप, समूह । ४ नाच ।
 भला । ५ बोली । ६ बनस्पतिको नाश करनेवाली हवा । ७ समय । ८ बिल-
 ना । ९ समन । १० चोकना ।

सपने ही साँई मिले, सो साँई का मित ।
 जन हरिया सो चितधै, सोई आय मिलंत ॥ ६७ ॥
 जा दिन राम न जाणियो, ता दिन भयो अकाज ।
 जन हरिया संसारमें, आय मुवा नहिं लाज ॥ ६८ ॥
 जन हरिया कार्यम किया, मानव तेरा मुख ।
 मुखते करता ना भजे, कैसे होय निदुःख ॥ ६९ ॥
 साँचा मुख मानव तणा, जा मुख निकसे राम ।
 जन हरिया मुख राम विन, सोई मुख बेकाम ॥ ७० ॥
 सोई मुख पसुवै दिया, सोई मुख नरदेह ।
 गुरुमुख सुमरै रामकूं, पसया खाय मरेह ॥ ७१ ॥
 चरन पिचनकूं मुख दिया, उदर भरनके काज ।
 हरिया राम न संचरै, सो मुख जाणि अकाज ॥ ७२ ॥
 अधम उधारण याद करि, नर तेरा निस्तार ।
 हरिया अधम उधार विन, और किसो आधार ॥ ७३ ॥
 अधम उधारण याद करि, तन मन राखि निचित ।
 जन हरिया कुण भेटसी, साँई विना सचित ॥ ७४ ॥
 अधम उधारण एक है, दूजा ऊर्यप थाप ।
 हरिया थापी थापना, जाका जपियै जाप ॥ ७५ ॥
 एक रामकूं सुमरियै, दूजा धरो न चित्त ।
 जन हरिया नहिं राम विन, तो रखवाला निस्त ॥ ७६ ॥
 राम विना कुण राखसी, ज्युं खेती किरसान ।
 नहि तो चिहै विगाढ़सी, हरिया चेत अजान ॥ ७७ ॥
 हरिया निज मन चेतलै, जो परवंछै ठौर ।
 एकै साँई बाहिरो, घणी न दूजा और ॥ ७८ ॥
 घणी विहूणा घबलेंहर, ढहि ढहि डेर घियाह ।
 हरिया पाछा आयके, वास न को बसियाह ॥ ७९ ॥
 हरिया तन को गीरयो, कहा करै नर देख ।
 घेईमाता दाणो दलै, औरां लिखती लेख ॥ ८० ॥
 इन कायाको गीरयो, मूढ करो मति कोय ।
 हरिया रायणके घरां, हुई जिका नर जोय ॥ ८१ ॥

- हकाँ बेली हक है, वे हकाँ वे हक ।
 हरिया एकै हक विन, सब दिन जाहि अनहक ॥ ८२ ॥
- पता सुख संसार का, जेता सुख न जानि ।
 जन हरिया सोइ सुख है, जो कोइ विरला जानि ॥ ८३ ॥
- सब कोइ चाहै सुख कूं, दुःख न कोई चाहि ।
 हरिया दुख सुख सिरजिया, सोई ले निरवाहि ॥ ८४ ॥
- हुनिया रोवै रोवणा, देखि विढ़ाणी खाल ।
 हरिया नाम सनेह विन, यो तन होय विहाल ॥ ८५ ॥
- हरिया रोयज रोवणा, किसके आगे जाय ।
 मात पिता सुत बंधवा, सबही जाँहि विलाय ॥ ८६ ॥
- हुनिया रोवै रोवणा, रोय रोय करै पुकार ।
 हरिया ऊ भाँजै घड़े, ज्यूँ भांडा कुंभार ॥ ८७ ॥
- आयण जायण आदि का, आज काल का नाहिं ।
 हरिया क्या पछिताइये, मौत सकल के माहिं ॥ ८८ ॥
- घर घर लागो लायणो, घर घर धाँह पुकार ।
 जन हरिया घर आपणो, राखै सो हुशियार ॥ ८९ ॥
- यो भिनखा तन पाइके, भज्यो नहीं भगवान ।
 जन हरिया तन मानखो, मिलै नहीं औसान ॥ ९० ॥
- यो तन जोवन देख नर, क्या परफूलत होय ।
 जन हरिया जलवाहला, बहतां वार न कोय ॥ ९१ ॥
- तू क्यों सूतो नींद भरि, कदा निचिंतो होय ।
 हरिया जगमें जीवका, साथी सैण न कोय ॥ ९२ ॥
- कुण बेली संसारमें, जीव एकलो जाय ।
 हरिया हरि विन दूसरा, स्वारथ केरत थाय ॥ ९३ ॥
- रामनाम विन दूसरा, संग न कोई धर्म ।
 हरिया तन जोवन धके, फरो जीवका दंग ॥ ९४ ॥
- सबही स्याणा हुय रया, नहीं अयाणो कोय ।
 स्याणो सोई जाणिये, अलख ओलखै सोय ॥ ९५ ॥
- राज पाठ सुत वित सबै, सुंदरि महल विलैस ।
 जन हरिया हरि सुख विना, ज्यों जंगल का घास ॥ ९६ ॥

हरिया जंगल घासकूँ, ह्रिया देख मति भूल ।
 दिष्टि गहै दिन च्यार का, जाय जङ्गल सँ खूल ॥ ९७ ॥
 जन हरिया जग जात है, रहता कोऊ नाहिं ।
 रहता एको राम है, न्यारा सब घटमाहिं ॥ ९८ ॥
 हरि थोड़ो करि जाणियो, इन औसर नर आय ।
 हरिया घणौ चितारसी, पर हथ पढ़सी जाय ॥ ९९ ॥
 हाथ पढ़े जब और के, वीचैगी तन माँहि ।
 हरिया दोली पालि जल, पहलं यंघी नाँहि ॥ १०० ॥
 हरिया पाल तलाव की, फाटी जब क्या होय ।
 पहल किया सो खूब है, पीछे दाँव न कोय ॥ १०१ ॥
 हरिया तन जोबन धके, किया दिया जो जाय ।
 फीजे सुमरण रामको, दीजे हाथ उठाय ॥ १०२ ॥
 हरिया दीया हाथ का, आडा आसी तोय ।
 राम नाम कूँ सुमरतां, पार उतारै सोय ॥ १०३ ॥
 हरिया राम संभारिये, झील करो मति कोय ।
 सांझां पीच सवेरमें, क्या जानू क्या होय ॥ १०४ ॥
 हरिया राम संभारिये, जब लग पिंजर सास ।
 सास सदा नहिं पाहुणा, ज्युं सायण का घास ॥ १०५ ॥
 जन हरिया राड़े सांयणुं, सदा न हरियो होय ।
 पैसे सास सरारमें, धिर नहिं दीसै कोय ॥ १०६ ॥
 हरिया हरिसो को नही, सज्जन तेरे और ।
 भेटे आमल मरण कूँ, है अमरापुर टौर ॥ १०७ ॥
 हरिया अट्ट अमरापुरी, तहँ हरि भक्ति मुदाय ।
 से भर हरि की भक्ति विन, दौड़या जमपुर जाय ॥ १०८ ॥
 हरिया हरि सुमरण रहो, दालो अपने हज ।
 पदिटी तन का बल धरुं, पीछे रसाना धरुं ॥ १०९ ॥
 हरिया घाटे जीमई, जामी सुमरण छूटि ।
 बिपा जाय सो फीजिये, लेगी तन धन छूटि ॥ ११० ॥
 तन कूँ जमरो छूटगी, छूट घनकूँ लोक ।
 आम्हो करि करि बालमी, हरिया हाड टंडोर ॥ १११ ॥
 भावव पावन छोड़िया, छोड़या घर घर वाम ।
 हरिया यरनी छाँडिबे, बरामी जंगल बाग ॥ ११२ ॥

हरिया सास सरीरमें, वास किता दिन होय ।
 सासो सासा घटत है, कहा निचिंतो सोय ॥ ११३ ॥
 हरिया दोली कीजिये, राम नाम की वाढ़ ।
 नहि तो जैमरो आइके, वाड़ी जाय विगाड़ ॥ ११४ ॥
 हरिया वाड़ी घीगड़े, सिरपर धणी न होय ।
 चिड़ियां खाया खेतड़ा, होंकल करै न कोय ॥ ११५ ॥
 जन हरिया सिर पर धणी, खड़ा खेतके माहिं ।
 करि टोहौली नामकी, विगड़न कुं कुछ नाहिं ॥ ११६ ॥
 इति ।

अथ ज्ञानविचारको अंग ।

तिमिर गया रवि तेज तें, तेज गया निशि पास ।
 हरिया ज्ञान विचार तें, होय कर्म का नास ॥ १ ॥
 नाम लिया गुण ना मिथ्या, तिमिर न भागा तेज ।
 हरिया ज्ञान विचार विन, रही जेज की जेज ॥ २ ॥
 गुरु पै ज्ञान न वृक्षिया, वृक्ष न किया विचार ।
 हरिया कर दीपक दिया, अंधे के अंधार ॥ ३ ॥
 उर अंधारो जहँ नराँ, सतगुरु कुं नहि भेट ।
 आये थे हरि मिलन कुं, लगी और ही फेट ॥ ४ ॥
 कहियाँ माया संपजै, मनसुं जाण्या ब्रह्म ।
 हरिया होये मुफखतें, उदकियां सेती धर्म ॥ ५ ॥
 कहाँ न माया संपजै, जाण्याँ ब्रह्म न होय ।
 हरिया मुख तें उदकियां, धर्म न हूवा कोय ॥ ६ ॥
 माया दत्तैवतें भई, राम भज्या सुं ब्रह्म ।
 जन हरिया कुछि होत है, कर सुं दीया धर्म ॥ ७ ॥
 कहा सुण्या तो फया भया, विना सुद्धुंध सार ।
 हरिया आपो उलटि के, आतमज्ञान विचार ॥ ८ ॥

इति ।

१ तिथित । २ घेर । ३ मृत्यु, काल । ४ होंक मारना । ५ किलकारी ।
 ६ अंधेरा । ७ रात्रि । ८ पूछा । ९ झरत । १० दान । ११ मुपबुध=
 शेष हवास ।

अथ शून्य सरोवरको अंग ।

साँसा सोग संताप तज, आपा होय अंबीह ।
 शून्य सेजमें पाइया, हरिया अविनाशीह ॥ १ ॥
 हरिया मन साँसे पड़यो, कहि समझायै कौन ।
 हसतो रमतो योलतो, ऊ कहँ करिग्यो गौनै ॥ २ ॥
 हरिया सब साँसा मिट्या, गुन मिलग्या निर्गुन ।
 आयन जावन रहित हुय, सुरति समाणी सुन ॥ ३ ॥
 सुन सरवर चहुं फेरमें, सुख सीतलता सीर ।
 हरिया एक अखंडमें, घ्यान घरुं ता तीर ॥ ४ ॥
 दिल दरिया मन मच्छली, नीर सिरजन द्वार ।
 हरिया सबसुं हूँकड़े, विरला जाणै सार ॥ ५ ॥
 जन हरिया मन जहँ किया, सुन सरवरमें वास ।
 भेले न जामण भरण की, घरै न हंसो आस ॥ ६ ॥
 जन हरिया सरवर सबै, ठाम ठाम भरपूर ।
 जहँ पायो तहँ परम सुख, दुखी रद्या से दूर ॥ ७ ॥
 अपने घरकी गम नहीं, परघर धाँगै काँय ।
 हंस हंस की गर्म चले, काग काग की पाय ॥ ८ ॥
 हंस गयो उडि आप घर, करि सायर की सुद्धि ।
 हरिया सरवर सुद्धि दिन, बूडो काग कुबुद्धि ॥ ९ ॥
 जन हरिया जल पंछियै, पीयो चंचु भराय ।
 पेसा कोइ न देखिया, सब सरवर पी जाय ॥ १० ॥

इति ।

अथ माया ब्रह्म निर्णयको अंग ।

ज्यों माया सुं ब्रह्म है, त्यों काया से जीव ।
 जन हरिया जय अंतरै, पाया जीव रु सीव ॥ १ ॥
 माया ओलै ब्रह्म है, आकारे निरकार ।
 हरियै देख्या जुगति सुं, न्यारा दिल दीदीर ॥ २ ॥
 माया जय काया खड़ी, काया जय लग जीव ।
 हरिया जीव रु सीव का, मेला कैसे धीव ॥ ३ ॥

१ निर्णय । २ शय्या । ३ गमन । ४ पानीका सोता । ५ नज
 ६ फिर । ७ सोजता है । ८ राह । ९ ब्रह्म । १० खोट । ११ ६
 १२ होवे ।

काया माया कारंवी, जैसे करंवा जान ।
 जन हरिया भागाँ पछे, चाक न चढ़सी आन ॥ ४ ॥
 जिन जलती भांडा किया, करत न छाई चार ।
 हरिया पाकुं सुमरिये, सब का सिरजनहार ॥ ५ ॥
 काया छाया एकठी, ज्यों माया से ब्रह्म ।
 हरिया न्यारा जाणसी, जिन पाई गुरु गम्म ॥ ६ ॥
 जन हरिया घाल्यां चलै, बिर सेती बिर होय ।
 काया बंधी कर्म सुं, छाया लिपै न कोय ॥ ७ ॥
 माया जोड़ो ब्रह्म सुं, छाया जोड़ो देह ।
 काया माया जावसी, हरिया देखंतेह ॥ ८ ॥
 शस्तर सुं नहिं छेदिये, पावक लगै न शीत ।
 हरिया कहिये ब्रह्म की, पेसी अद्भुत रीत ॥ ९ ॥
 रहता नारि न को पुरुष, रहे न तेऊं लोर्य ।
 रहता एको ब्रह्म है, हरिया सब घट सोय ॥ १० ॥
 रहता सोई जाणिये, रहता सुं मिल जाय ।
 हरिया रहता राम बिन, काल गिरासे आय ॥ ११ ॥
 इति ।

अथ वेहदको अंग ।

हरिया हृद आसामुखी, ताहि न करिये हेत ।
 घेहद पास निरास घर, ताकुं अंतर देत ॥ १ ॥
 केर घावों केर दाहणा, हृद घट्टु मारग होय ।
 जन हरिया इन बीचमें, भटक मुवा तिहुं लोय ॥ २ ॥
 हरिया हृद का जीव कुं, घेहद की गम नाहिं ।
 फीड़ी केरे नाल ज्युं, कर आवे कर जाहिं ॥ ३ ॥
 हरिया हृद कुं छाँडि के, घेहद पहुँता जाय ।
 दिल हरगा दीवान में, घका न धूमी काय ॥ ४ ॥
 हृद छाँडी घेहद भया, हरिया राम हुंजूर ।
 अखंड उजाला गैये का, निरा न जगै खूर ॥ ५ ॥
 हृद का रत्ता हृद में, घेहद का घेहद ।
 हरिया घेहद पावके, हृद भई सब रद ॥ ६ ॥

हृद सुं हरि दूरै यती, बेहद हाँयो ठीक ।
 हृद बेहद की पाद सुधि, हरिया राम मजीक ॥ ७ ॥
 हरिया बेहद के घरां, नहीं हृद की आस ।
 संसा सोग न ताप तन, नाम निरासा यास ॥ ८ ॥
 जन हरिया बेहद घरां, धन अनहद की घोर ।
 याजा राग अखंड धुनि, एक अखंडी टोरै ॥ ९ ॥
 जन हरिया हृदमें घणा, सुख दुख भरम सनेह ।
 बेहद काम न कल्पना, अति आनंद अछेह ॥ १० ॥
 बेहद कौंठे घर किया, निज सुख पाया नाम ।
 हरिया भागी भरमना, मया सकल सिध काम ॥ ११ ॥
 चित घंचल निश्चल भया, पूरी मनकी आस ।
 हरिया हृद फूं छांडिके, बेहद कीन्हा यास ॥ १२ ॥
 हृद बैठा हृद की फट्टै, वेद पुराना बाँचि ।
 हरिया बेहद चावरा, रछा राम सुं राचि ॥ १३ ॥
 जन हरिया बेहद कथा, किन सुं कहियै बोल ।
 महैरम आगै दाखियै, दिल का पुस्तक खोल ॥ १४ ॥
 वचन सुन्या बेहद का, हृद न आवै दाय ।
 हरिया सुनमें साँइयां, तासूं ध्यान लगाय ॥ १५ ॥
 सुरत यती बेहद में, हरिया एक अभंग ।
 पढ़ै पुढ़ंगा पेम की, भीना नख सिख अंग ॥ १६ ॥
 हरिया अनहद शब्द की, तार कबू नहीं तूटि ।
 घोर सुनत है गगनमें, सुर बाहिर नहीं फूटि ॥ १७ ॥
 हरिया हृद का जीवड़ा, ताकूं धका अनंत ।
 जहँ गुरु पाया बेहदी, ले निरवाणें चढ़ंत ॥ १८ ॥
 जन हरिया हमकूं कहा, सतगुरु पेसा दाव ।
 हृद का पासा छांडि दे, बेहद साम्हा आव ॥ १९ ॥
 हरिया हृद सागर तणो, र्थग थोड़ो थहरेह ।
 जग सारो तिसियो फिरै, जल बूठो धारेह ॥ २० ॥
 बेहद सुख सागर भखो, पंथ न पग पारेह ।
 हरिया हरिजन पीवती, हृद सुं हुय न्यारेह ॥ २१ ॥

१ स्थान, ठिकाना । २ चाल । ३ किनारै । ४ भेरी, मरपी । ५ मोह ।
 ६ याह । ७ कम । ८ पाहरा=जोगहरा न हो । ९ परेवा=तेज चढ़नेवाला पक्षी ।

बेहद कूँ पहुँचै नहीं, हरिया हृद के लोग ।
तन तो माटीमें मिल्यो, मन गयो साँसे सोग ॥ २२ ॥
इति ।

अथ अमनिश्चयको प्रसंग ।

हरिया घट में घड़त है, केताई नर घाट ।
भाडा पड़दा भर्म का, ब्रह्म न दरसै वाट ॥ १ ॥
हरिया आतम एक है, दूजा कौज नाहिं ।
मनकी मैं तैं भेटि करि, पद पाया घट माहिं ॥ २ ॥
घट में तारा चन्द्र रवि, घट माहीं ब्रह्मंड ।
हरिया घट में राम है, जाकी ज्योति अखंड ॥ ३ ॥
हरिया आये देखमें, ए तो माया रूप ।
आतम दृष्टि न मुष्टि है, अनुभव अकल अरूप ॥ ४ ॥
हरिया घट में अघट है, याकी ठोड़ विकट ।
बिन गुदगम खूँही नहीं, भर्म कर्म का पट ॥ ५ ॥
भर्म भूत भागा बिनां, कर्म कटै नहीं काहि ।
हरिया पड़ल आँपि में, ताका तिमर न जाहि ॥ ६ ॥
दत्तव ते धन पाइये, धर्म दया से होइ ।
हरिया हरिजन औरका, भर्म गमावे सोइ ॥ ७ ॥
हरिया तन मन धवन से, आतम निश्चय जानि ।
याकों नित्य आनन्द है, शोक न संशय आनि ॥ ८ ॥
जन हरिया निश्चय मया, भर्म दूसरा नाहिं ।
आस पास फी भिट गई, आतम आपा माहिं ॥ ९ ॥
जल छाने घटि भीसरे, हरिया तेरु होइ ।
घटिग्यो छाने भर्मके, हाथ पड़े नहीं कोइ ॥ १० ॥
हरिया भाँजे भर्मकूँ, सतगुरु मिले राघीर ।
भयसागर में डूयतां, पार उतारे तीर ॥ ११ ॥
इति ।

अथ निर्गुणगुणको प्रसंग ।

निर्गुण तें गुण ऊपजे, गुण तें निर्गुण ताहिं ।
जन हरिया फल बेल तें, फल बिन बेली नाहिं ॥ १ ॥
हरिया निर्गुण मूल है, सगुणजु साखा पान ।
भक्ति बीज फल मुक्ति है, और धर्म सब आन ॥ २ ॥

सोरठा ।

फूल डाल तजि पान, एक पकड़ रद्द पेड कूँ ।
ऊँचा घड़ असमान, हरिया निज फल चाहिये ॥ ३ ॥

साखी ।

बेक पाना फूलझाँ, केई विलंग्या डाल ।
हरिया मूल विलंगिया, फल पाया असरोल ॥ ४ ॥
चढ़ि ऊँचा फल चाहिया, हाथ पांच दिन मूँह ।
हरिया निर्गुण रूखड़ो, कह गुण माँहि किमूँह ॥ ५ ॥
सगुणां में सगुणो मिरै, रूखां माँहि न रूंग ।
जन हरिया फल चाहियां, फेर न आवै कूर ॥ ६ ॥
गुण में औगुण अनंत है, आपा भुगतै आय ।
जन हरिया निर्गुण वसै, जग में आय न जाय ॥ ७ ॥

इति ।

अथ ब्रह्मसमाधिको प्रसंग ।

चित मन पवना धिर करै, उलटि पंचे कूँ साधि ।
जन हरिया जय जाणियै, याही ब्रह्म समाधि ॥ १ ॥
मन पवना मिल एकठा, शब्दे सुरति मिलाय ।
हरिया ब्रह्म समाधि का, जय सहजां घर पाय ॥ २ ॥
हरिया ब्रह्म समाधि को, है सुख सहज अनंत ।
काम न ऊठै कल्पना, तन की सुधि विसरंत ॥ ३ ॥
जन हरिया मुख द्वार ती, चली शब्द की सीर ।
जाय मिली सुख सहज में, गंग जमुन की तीर ॥ ४ ॥
गंगा जमुना सरस्वती, नितको न्हावन होय ।
जन हरिया जहँ न्हाइया, घाट वाट नहिँ कोय ॥ ५ ॥
सीरां छूटी चहुं दिसाँ, अंत न कोई पार ।
जन हरिया पी भगन हुय, तन की सुधी न सार ॥ ६ ॥
रसना नख सिख बीच में, रोम रोम ररँकार ।
जन हरिया सुख ब्रह्म का, होत नहीं मरँकार ॥ ७ ॥
इडा पिंगला बीचमें, सुखमण हंदा घाट ।
हरिया ब्रह्म समाधि की, सहजां पाई घाट ॥ ८ ॥

चंद्र विना जहां चाँदणा, सूर विना अहंवास ।
 जन हरिया घर ब्रह्म का, तेजपुंज परकास ॥ ९ ॥
 पवन न पाणी चंद्र रवि, जहँ नहिँ धरा अकास ।
 जन हरिया घर ब्रह्म का, आस न पास निरास ॥ १० ॥
 सुरति चढ़ी असंमान कूँ, जाय मिली निरकार ।
 जन हरिया घर ब्रह्म का, ओधि नहीं आकार ॥ ११ ॥
 हरिया धुँ धुँ धुनि उठै, तैनक थैइततकार ।
 याजै पिंड ब्रह्मंड में, एक अखंडी तार ॥ १२ ॥
 इला दुहारी पिंगला, पोरुंश द्वादश गाय ।
 जन हरिया मति मट्ट की, लिया तत्तकूँ ताय ॥ १३ ॥
 संतन की गति संत कूँ, दुनियन की दुनियाँह ।
 जन हरिया अविगैत की, गैत न को सुनियाँह ॥ १४ ॥
 पाँव विना जहँ चालियो, राह विना जहँ राह ।
 जन हरिया घर ब्रह्म का, सुर नर सकै न जाह ॥ १५ ॥

श्रुति ।



१ अकास=पर । २ आकाश । ३ वहाँ । ४ नगारेखा शब्द । ५ मेघ-
 रागनी रागिनी । ६ ततकारसहित बेई अर्थात् तवतायेई=वृत्तका शब्द, नाचका
 शैल । ७ दोहनेवाली । ८ अंशुता । ९ एतच्छब्द । १० अविगत=विद्याकाशपाय ।
 ११ गण=वाद्य ।

निसाणी का भूमा ।

यह निसाणी नामक ग्रन्थ योग के विषय का है । योग शब्द संस्कृत के युज घातु से बना है (युजिद् योगे) जिसका अर्थ जोड़ना है । अपने मनको एक ध्येयसे जोड़ना अर्थात् मनको स्थिर करना ही योग है । भगवान् पतंजलि ने ऐसा कहा है "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" । एकाग्रता योग का शरीर है, जिसमें केवल एकाग्रता ही हो वह व्यावहारिक योग, और जिसमें अहंता ममता का नाम लेश भी न हो वह पारमार्थिक योग है । गीताके साम्यगर्भित कर्मयोग में यही कथन है । ज्ञानयोग ही श्रेष्ठ है, बिनाज्ञानका योग निष्फल है । योग के पहले का ज्ञान अस्पष्ट होता है इसलिये गीता में ज्ञानी से योगी को ही अधिक कहा, वास्तव में सच्चा ज्ञानी वही है जो योगी है इसी का गीता में वर्णन है । ब्रह्मविशोपनिषद्, छुरिकोपनिषद्, चूलिकोपनिषद्, नादविन्दु, ब्रह्मविन्दु, अमृतविन्दु, ध्यानविन्दु, तेजोविन्दु, योगशिखा, योगतत्त्व, हंस आदि उपनिषद् भी इसी का वर्णन करती हैं । अतएव ज्ञानकी एक मात्र कुंजी योगही है । योगवाशिष्ठ में लिखा है कि योग बिनाका ज्ञानी ज्ञानवन्धु है अर्थात् ज्ञानियों

- १ योगस्यः कुरु कर्माणि सर्वं स्वकला धनत्रय ।
शिद्वपशिद्वपोः समो भूता समलं योग उच्यते ॥
(गीता अ० २-४८)
- २ तपस्विभ्योऽपि चो योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः ।
कर्मिभ्यश्चापि चो योगी तस्माद् योगी भवान्जुन ॥
(गीता अ० ६-४६)
- ३ साक्षात्स्वैः प्राप्यते स्थानं तपोमैरपि गम्यते ।
एवं साक्ष्यं च योगं च यः परयति स परयति ॥
(गीता अ० ५-५)
- ४ व्यक्तो यः पतति च साक्षं भोगात् क्षिप्रियद् ।
वदते न सतुङ्गने ज्ञानवन्धुः स उच्यते ॥ १ ॥
अल्पज्ञानमनासाप ज्ञानान्तरालेन ये ।
वन्धुः स तपोमैः ते स्तुता ज्ञानवन्धवः ॥ २ ॥
(योगवाशिष्ठ निर्वाणप्रकरण उत्तरार्ध सर्ग २१-)

में अधम है। ज्ञान और योग का बहुत अधिक सम्बन्ध है इसीलिये "ज्ञान-क्रियाभ्यां मोक्षः" ज्ञान और क्रियासेही मोक्ष होना कहा गया है। इसी योग का वर्णन भिन्न भिन्न शास्त्रकारोंने भिन्न भिन्न प्रकार से किया है। भगवान् पतंजलिविरचित "पातंजलयोगदर्शन" तो खास योगकाही अन्य ठहरा अतएव इसमें तो सांगोपांग वर्णन होना ही चाहिये। और दूसरे शास्त्रकारोंने भी योग के विषय में विशेष जानने के लिये योगदर्शन

- १ ज्ञान क्रिया करि कृतरे हरिया हरिजन पार ।
ऐसे अन्धे कन्ध करि, पंगो आन उतार ॥ १ ॥
पंगा छोई ज्ञान है, किरिया अंधी जान ।
जन हरिया मिल एकठा, मुक्ति भई आसान ॥ २ ॥
ज्ञान बिना किरिया न कुछ, किरिया बिना न ज्ञान ।
हरिया किरिया ज्ञान बिन, यो ही आतमप्यान ॥ ३ ॥
ज्ञान ब्रह्म की दृष्टि है, किरिया प्यान स्वरूप ।
जन हरिया मिल एकठा, आतम तप्य अनूप ॥ ४ ॥
ज्ञान सद्धित किरिया भई, मोक्ष मोहि पद जान ।
हरिया किरिया ज्ञान बिन, भक्ति भई आसान ॥ ५ ॥

(श्री हरि० वाक्यम्)

- जो बिन ज्ञान क्रिया अषगाई, जो बिन क्रिया मोक्षपद चाई ।
जो बिन मोक्ष कहै मैं सुखिया, सो अज्ञान मूडन में सुखिया ॥ १ ॥

२ व्यासदर्शनः—

धामाधिविशेषाभ्यासात् ४-१-३८ । अरप्यगुहापुठिनारिषु योगाभ्यासोपदेशः
४-१-४१ । तस्यै समनियमाभ्यासात्मवैस्कारो योगाभ्यासात्मविशुद्धयैः ४-२-४६ ॥
वैशेषिकदर्शनः—

अभिषेकनोपवास-ब्रह्मचर्यगुहकुलवास-जानप्रस्थ-ब्रह्मदान-प्रोक्षण-दिग्गजान्न-मंत्र-काक-
नियमाधारहाय ६-१-१ अथतस्य शुचिभोजनादभ्युदयो न भिद्यते नियमामासात्,
भिद्यते वाड्यन्तरसात्-यमस्य ६-२-८

शांकरसूत्रः—

रागोपशुक्तिर्मानम् ३-३० । इतिनिरोधात् तत्त्वितिः ३-३१ । धारणाद्यनसकर्मणा
तत्त्वितिः ३-३२ । निरोधात्तद्विधिवारणाभ्याम् ३-३३ स्थिरयुक्तमासनम् ३-३४ ।

ब्रह्मसूत्रः—

आसीनः सप्यसात् ४-१-७ । प्यासात् ४-१-८ । अवरुद्धं चापेक्ष्य ४-१-९
अरन्ति च ४-१-१० । यत्रैकमठा तत्राभिदेसात् ४-१-११

देखने की आज्ञा दी है । जिस योग का वर्णन उपनिषदों में व श्रुतों में भलीप्रकार किया गया है उसीका श्रीमद्भगवद्गीता के तीनों पद्यों में कर्म, भक्ति और ज्ञान के साथ श्रीभगवानने समावेश कर दिया है, समावेश क्या करदिया है, गीता के छठे और तेरहवें अध्याय में तो योग के सारे मौलिक सिद्धान्त और प्रक्रियायें ही वर्णन करदी हैं ।

योगवाशिष्ठ तो बस "यथा नाम तथा गुणः" स्वयं योग का ग्रन्थराज ही है । श्रीमद्भागवत के स्कन्ध ३ अध्याय २८ । स्कन्ध ११ अध्याय १५-१९-२० में योग का ही वर्णन है । इतना ही नहीं इसके उपरांत योगवृक्ष इतना फैला कि उसकी कई शाखायें बन गईं और उनके अलग ही ग्रन्थ बनगये जैसे तंत्रशास्त्रमें "महानिर्माणतंत्र" और "पद्मकनिरूपणतंत्र" बहुत ही उत्तम योग के तांत्रिक ग्रन्थ हैं । इनके सिवाय और भी कितने ही योग के ग्रन्थ बनगये हैं, हठयोगप्रदीपिका, शिवसंहिता, घेरण्डसंहिता, गोरक्षपद्धति, गोरक्षशतक, योगतारावली, विन्दुयोग, योगबीज, योगकल्पद्रुम, योगनिबन्ध आदि अनेक योग के ग्रन्थ हैं ।

योग यहाँतक नहीं बढ़ा किन्तु देशी और विदेशी महात्माओंने अपने अपने अनुभव के अनुसार लोगोंको ज्ञान कराने के लिये महाराष्ट्री, गुजराती, बंगला, तैलंगी, तामिली, औत्कली, द्राविडी और इंग्लिश आदि अलग अलग भाषाओंमें योगका वर्णन किया । कबीर साहब, नानकसाहब, दादूजी, हरिदासजी, सुन्दरदासजी, जनतुरसीजी, चरणदासजी, सेवादासजी, सन्तदासजी, दरियासाजी आदि महात्माओंने हिन्दी साहित्यमें उसी योगवाणी का वर्णन किया कि जिनसे मुमुक्षुओं को बड़ा ही लाभ पहुँचा और पहुँच रहा है ।

जिस योग की मुक्तकंठ से प्रशंसा की गई और जिस योग की प्राप्ति महापुरुष परब्रह्मराम के उपदेश द्वारा श्रीजैमलदासजी महाराज को हुई-

१ योगशास्त्राचार्यात्मविधिः प्रतिपत्तव्यः (न्यायद० ३-४-४६ भाष्य)-

२ सुनरे बालक बात हमारी, तोकूँ दाखं सुंज्ञ हवारी ।

गोटे में गुरु ज्ञान सुणाया, जोग सहित निजनाम बताया ॥

॥ श्रीः ॥

प्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम् ।

मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा ॥ १ ॥

घघरं निसांणी प्रारंभः ॥



पैत्रापूजितपादपद्मयुगलं रामं दधंतं हृदि
 रागद्वेषकरालजालमखिलं वृंदं रिपूणां हरम् ।
 याता ये शरणं विशुद्धमनसस्तेषां प्रबोधादिदं
 वंदे श्रीहरिरामदासमनिशं रामाय सन्मंत्रदम् ॥ १ ॥
 हरिरामं गुरुं नत्वा कृत्वा चारुप्रदक्षिणाम् ।
 निसानीनामग्रन्थस्य भाषाटीकां करोम्यहम् ॥ १ ॥

साखी ।

हरिया सम्बत् सत्रहसे वर्षे सईको जान ।
 तिथि तेरस आपाड घदि सतगुरु पड़ी पिछान ॥ १ ॥

१ घटपट । २ चिह्न । ३ पं० दिगंबरेण रचितमिदं पद्यम् । ४ रामदासाय ।

५ सद्गुरुलक्षणः—

श्रीगुरुः परमेशानि शुद्धवेशो मनोहरः ।
 सर्वलक्षणसंयुक्तः सर्वावयवशोभितः ॥ १ ॥
 सर्वांगमार्यतरुवज्ञः सर्वमंत्रप्रधानवित् ।
 लोकसंमोहनकरो देववत्प्रियदर्शनः ॥ २ ॥
 सुमुखः सुलभः स्वच्छः शुद्धांतरिक्षप्रसंशयः ।
 इंगिताकारतत्त्वज्ञो दूरतः कृतदुर्जनः ॥ ३ ॥
 अंतर्मुखो बहिर्दृष्टिः सर्वज्ञो देवकालवित् ।
 व्याज्ञासिद्धिस्त्रिकालज्ञो निग्रहानुग्रहक्षमः ॥ ४ ॥
 वेदवेदांतविच्छांतः सर्वजीवदयापरः ।
 स्वाधीनेन्द्रियसंचारः पद्मर्गविजयक्षमः ॥ ५ ॥
 अग्रगण्योऽतिगंभीरः पात्रापात्रविशेषवित् ।
 निर्मलो नित्यसंतुष्टो निर्द्वंद्वो नित्यशक्तिमान् ॥ ६ ॥
 सद्गुरुवत्सलो धीरः कृपालुः स्मितपूर्ववाक् ।

श्रीहरिरामदासजी महाराज स्वयं अपने सुखारविंद से अपने को ही संबोधित कर वर्णन करते हैं कि, संवत् सत्रह सौ का सईका वर्ष अर्थात् अठारहवीं शताब्दी के आपाद कृष्णा त्रयोदशी के दिन मेरे को सहुरु की पहिचान पड़ी ॥ १ ॥

छंद निसानी ।

सतगुरु पहिचानी परचे प्राणी सब सिध काम सरंदा है ॥ १ ॥

संदगुरु की पहिचान होने से सर्व कार्य सिद्ध होगये ऐसा परना (मत्स्यबोध) जीवकी होगया अर्थात् अनुभव प्राप्त होगया ॥ १ ॥

सतगुरु से मिलिया अंतरभिलिया सरंदाब्द भोलखंदा है ।

भक्तिप्रियः सर्वसमो दयालुः शिष्यराजिता ॥ ७ ॥

शेखदेवगुरुः प्राप्ते भिनयी पूजनोत्तुष्टः ।

निले नैमित्तिके काग्ये रतः कर्मभ्यनिरिते ॥ ८ ॥

रागद्वेषमयद्वेषदंभाहंकारवर्जितः ।

छद्दिदानुष्ठानरतो विदानी च प्रकाशकः ॥ ९ ॥

सरण्यलामसंगुशो गुणदोषविभेदकः ।

श्रीःप्रभिवेषनासुषो कुःसंगभ्यषनोऽभिनः ॥ १० ॥

अलोडुगोऽहंकारकारशपाटी विवक्षणः ।

वित्तमिदादिनिर्मयं प्रसंगप्रदाभिच्छदी ॥ ११ ॥

निःसंकल्पो निर्विद्वल्पो निर्णतामात्रिभर्मिकः ।

गुण्यनिदानुष्ठिमीनी निजसोऽतिनियामकः ॥ १२ ॥

रत्नसिद्धशरीरैतः धीगुरुः कपिः प्रिये ।

(बुलानर)

१ छारछार—

एक शब्द में कहि समझाके, गुनहो सब संगरा ।

एकनाय हो छारछार है, और कबर है छार ॥ १ ॥

(श्रीरि० बाबरन्)

कहै कहीर गुनो हो सभो, वरगट कहूं बरहै ।

एकनाय हो छारछार है, और कबर सब कहै ॥ १ ॥

(कहीर)

कामनाः सरंशोऽतिः सतगुरुः शिष्यमहाः ।

शेख देवदेवस्य सद्गुरुः सत्परः सत्तः ॥ १ ॥

अर्थदेवदेवदेवदेवस्य सद्गुरुः सत्परः ।

(सतगुरुः)

धुप्रकैतैर्गुभिरिर्विस्तिष्ठिन् दशद्विर्वर्णैरभिराममस्यात् ।

अर्थः—रामं कृष्णवर्णं शर्व्वैरं तमः अभ्यस्यात् सायं होमकाले अभिभूय विठति इति तद्भाष्ये सायणाचार्याः (जिनका उत्तराधममें विद्यारण्यस्वामी नाम है) ।

(ऋग्वेद १० अ. ३ व. ३)

गाणपत्येषु शैवेषु द्वाफसौरेष्वमीष्टदः ।

वैष्णवेष्वपि मंत्रेषु राममंत्रः कलाधिकः ॥ १ ॥ (भीदयशीर्षपर्व्वरात्र)

शतकोट्यो महामंत्रो उपमंत्रात्रयोदश ।

एक एव महामंत्रो रामनाम परात्परम् ॥ १ ॥

(शिवतंत्र)

गाणपत्यादिसौराक्ष हरिः शेषः शिवः शिवा ।

तेषां प्राणो महामंत्रो रामेति चाक्षरद्वयम् ॥ १ ॥

गणेशे भास्करे चैव शिवे शक्तौ हरावपि ।

राममंत्रप्रभावेण सामर्थ्यं जायते ध्रुवम् ॥ २ ॥

(भारद्वाजसंहिता)

विना शक्तिं कथं कार्यं किं कर्तव्येन वा बलम् ।

तदाकाशाद्भवेद्वाणी रामनाम हृदं कुरु ॥ १ ॥

तदासंसरति विश्वं लयं याति मुमुक्षुभिः ।

तस्माद्गम महामंत्र, आदिमंत्र उदाहृतः ॥ २ ॥

(जैमिनि)

श्रीरामेति परं मंत्रं तदेव परमं पदम् ।

तदेव तारकं विद्धि जन्ममृत्युमयापहम् ॥ १ ॥

(हिरण्यगर्भसंहिता)

श्रीरामेति परं जाप्यं तारकं ब्रह्मसंज्ञकम् ।

ब्रह्महत्यादिपापघ्नमिति वेदविदो विदुः ॥ १ ॥

(सनत्कुमारसंहिता)

यथा घटश्च कलशः पदार्थस्याभिधायकः ।

तथैव ब्रह्मरामश्च नूनमेकार्थतत्परः ॥ १ ॥

(अगस्त्यसंहिता)

रमन्ते, योगिनो यत्र निल्यानंदे चिदात्मनि ।

इति रामपदेनासौ परं ब्रह्माभिधीयते ॥ १ ॥

(रामतापिनी)

राम एव परं ब्रह्म राम एव परं तपः ।

राम एव परं तत्त्वं श्रीरामो ब्रह्म तारकः ॥ १ ॥

(हनुमत्पनिषद्)

श्रीराममंत्रराजस्य माहात्म्यं गिरिजापतिः ।

जानाति भगवान्ठंभुर्ज्यैल्लपावकलोचनः ॥ १ ॥

(बृहद्ब्रह्मसंहिता)

मंत्रराजं प्रवक्ष्यामि शृणु नारद तत्परः ।

रकारादिर्मकारांतो मंत्रः पदूर्णसंयुतः ॥ १ ॥

अकारः प्रथमाक्षरो भवति उकारो द्वितीयाक्षरो भवति अकारस्तृतीयाक्षरो भवति अर्धमात्राश्चतुर्थाक्षरो भवति बिंदुः पंचमाक्षरो भवति नादः षष्ठाक्षरो भवति तारकता-
त्पारको भवति तदेव रामेति तारकं ब्रह्म त्वं विद्धि ।

प्रणवं केवलमकारोकारोर्धमात्रासहितं तस्मात्प्रणवस्याकारस्योकारस्य च रकारः मकार-
वार्धमात्रस्य इति । (रामोपनिषद्)

अंशांशे रामनाम्नश्च त्रयः सिद्धा भवन्ति हि ।

बीजमोकारः सोहं च सूत्रसूक्तमिति श्रुतिः ॥ १ ॥

रामनामः समुत्पन्नः प्रणवो मोक्षदायकः ।

रूपं तत्त्वमसेधात्तौ वेदतत्त्वाधिकारिणः ॥ २ ॥ (महाप्रभुसंहिता)

रकारश्च परब्रह्म नादमोकारसंयुतम् ।

ॐ विदुश्च मकारोयं जातं रामाक्षरद्वयम् ॥ १ ॥

रकारस्तत्पदं ज्ञेयं खंपदाकार उच्यते ।

मकारोऽपिपदं ज्ञेयं तत्त्वमसि सुलोचने ॥ १ ॥

विद्वाचको रकारः स्यात्सद्वाच्याकार उच्यते ।

मकारानन्दवाच्यं स्यात्सच्चिदानन्दमन्वयम् ॥ २ ॥ (श्रीमहारामायण)

प्रणवं केचिदाहुर्वै बीजश्रेष्ठं तथापरे ।

तत्त्वतो रामवर्गाभ्यां सिद्धिमाप्नोति मे मतम् ॥ १ ॥ (महाशंभुसंहिता)

ॐ मृगुर्वै वारुणिः । वरुणं पितरमुपसतार । अधीहि भगवो ब्रह्मेति । सोऽब्रवीद्राम
एव परे ब्रह्म रामादन्यन्न किञ्चन यत् एते रामोऽेवा उत्पद्यंते राम एव विलीयंते राम
एव स्थिति वसंति तस्माद्राम एव विभुरिति तैत्तिरीयश्रुतिः (रामतापनी)

यथैव वटपीजस्थः प्राकृतोऽस्ति महाद्रुमः ।

तथैव रामबीजस्थं जगदेतच्चराचरम् ॥ १ ॥ (याज्ञवल्क्य)

रकाराज्जायते ब्रह्मा रकाराज्जायते हरिः ।

रकाराज्जायते शंभू रकारात्सर्वशक्तयः ॥ १ ॥ (रघुयामलक)

ब्रह्मविष्णुमहेशाद्या अंशांशा लोकसाधकाः ।

तं रामं सच्चिदानन्दं नित्यं रामेश्वरं भजेत् ॥ १ ॥ (हनुमत्संहिता)

रामनाम परं आप्यं ज्ञेयं ध्येयं निरंतरम् ।

कीर्तनीयं च बहुधा समुत्तुभिरहर्निशम् ॥ १ ॥ (ज्ञानात्मिसंहिता)

अद्यापि रघुः काश्यां वै सर्वेषां लक्ष्मीविनाम् ।

दिशत्येतन्महामंत्रं तारकं ब्रह्मनामकम् ॥ १ ॥

धिनैव वीक्षां विप्रेन्द्र पुरश्चर्यां धिनैव हि ।

धिनैव न्यासविधिना जपमात्रेण सिद्धिदम् ॥ २ ॥

तस्मात् सर्वात्मना रामनामरूपं परं प्रियम् ।

भंत्रं जपेत्सदा भीमान् संविहायान्यसाधनान् ॥ ३ ॥ (हारीतस्मृति)

जपतः सर्ववेदांश्च सर्वमंत्रांश्च पावति ।

तस्मात्कोटिगुणं पुण्यं रामनामैव लभ्यते ॥ १ ॥

योगिनो ज्ञानिनो भक्ताः शुद्धमनिरगाश्च मे ।

रामनामि रताः सर्वे रघुनीडा त एव मे ॥ २ ॥

(वसुपुत्र)

रामेलस्यरुग्मं हि सर्वमंत्राधिकं द्विज ।

यदुषारणमात्रेण पापी मासि परां गतिम् ॥ १ ॥

(क्रियायोगप्रर)

धरया हेनया नाम बर्दति मनुजा मुधि ।

सैवां मासि भयं पार्थ रामनामप्रसादनः ॥ १ ॥

प्रमादादपि संशुष्टो ययानलकपो दहेत् ।

सपौष्टपुष्टेष्टं रामनाम दहेदपम् ॥ २ ॥

(भास्तिपुरण)

रकारोऽनलपीजं स्याद्ये सर्वे ब्रह्मादयः ।

कुला मनोमतं सर्वं भस्म कर्म शुभाशुभम् ॥ १ ॥

आकारो भानुपीजं स्यात् वेदशास्त्रप्रकाशकः ।

नाशयस्त्रेव घो वीत्या इत्यमशानजं तमः ॥ २ ॥

मकारधंशपीजं स्याद्यदपां परिपूरणम् ।

त्रितापं हरते नित्यं शीतलत्वं करोति च ॥ ३ ॥

वैराग्यहेतुः परमो रकारः कथ्यते बुधैः ।

अकारो ज्ञानहेतुश्च मकारो मक्तिहेतुकः ॥ ४ ॥

आकृष्टिः कृतचेतसां सुमहतामुच्चाटनं चांइसा-

भाचांढालममूकलोकसुलभो ब्रह्मश्च मोक्षधियः ।

नो वीक्षां न च दक्षिणां न च पुरक्षर्यामनागीश्वते

मंत्रोयं रसनास्पृगेव फलति श्रीरामनामात्मकः ॥ ५ ॥

(श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण)

छत्ररूपो रकारोऽस्ति अनुस्वारः शिरोमणिः ।

राजराजाधिराजेति तस्माद्रामः शिरोमणिः ॥ १ ॥

(वसुपुत्र)

निर्वर्णं रामनामेदं केवलं च स्वर्णधिकम् ।

सर्वेषां मुकुटं छत्रं मकारो रेफव्यंजनम् ॥ १ ॥

यन्नाभसंसर्गवशाद्विवर्णो

नष्टस्वरो मूर्ध्निगती खराणाम् ।

तद्रामपादौ हृदये निधाय

देही कथं नोर्ध्वगतिं प्रयाति ॥ २ ॥

रेफोच्चारणमात्रेण बहिर्निर्व्याति पातकम् ।

पुनः प्रवेशसंदेहात् मकारश्च कपाटवत् ॥ १ ॥

(नारदचरण)

तुलसी राके कहत ही, निकसत पाप बहार ।

फिर आवन पावत नहीं, देत मकार किवार ॥ १ ॥

तावदेव हृदं तेषां महापातकदाहनम् ।

यावन्न श्रूयते रामनामपंचाननध्वनिः ॥ १ ॥ (शिवसंहिता)

कल्याणानां निधानं कलिमलमयनं पावनं पावनानां

पाथेर्यं यन्मुमुक्षोः सपदि परपदप्राप्तये प्रस्थितस्य ।

विभ्रामस्थानमेकं कविवरवचसां जीवनं सञ्जनातां

धीर्जं धर्मद्वयस्य प्रभवतु भवतां भूलये रामनाम ॥ १ ॥ (हनुमन्नाटक)

रामरामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।

सहस्रनाम तज्जुत्वं रामनाम वरानने ॥ १ ॥

(पद्मपुराण उत्तरखंड ६ अध्याय श्लो० ५१)

य एतत्कारकं ब्रह्मणो निरुद्धमधीते स पाप्मानं तरति स मृत्युं तरति स ब्रह्महत्यां तरति स भ्रूणहत्यां तरति स वीरहत्यां तरतीत्यादि द्रष्टव्यम् ।

(रामतापिनीयो० द्वि० कंडिका० मंत्र० ४)

अंतःकरणसंशुद्धिर्नान्यस्राधनतो भवेत् ।

कलौ श्रीरामनामैव सर्वेषां सम्मतं परम् ॥ १ ॥ (मार्कण्डेयसंहिता)

जपे यस्य लाभोऽजपे यस्य हानिः

सदा सर्वथा सर्वसिद्धान्ततत्त्वम् ।

शिवो नारदो व्यासमुष्या वदति

कलौ केवलं राजते रामनाम ॥ १ ॥ (इति)

शुण्व्य मुख्यनामानि यथै भगवतः प्रिये ।

विष्णुनारायणः कृष्णो वासुदेवो हरिः स्मृतः ॥ १ ॥

नाम्नामेव च सर्वेषां रामनामप्रकाशकः ।

प्रहाणां च यथा भानुर्नक्षत्राणां यथा राशी ॥ २ ॥ (इति)

नारायणारिनामानि कीर्तितानि बहुन्यपि ।

आत्मा तेषां च सर्वेषां रामनामप्रकाशकः ॥ १ ॥ (इति)

सप्तश्लोदिमहामंत्राधिकविभ्रमकारकाः ।

एक एव परो मंत्रो राम इत्यक्षरद्वयम् ॥ १ ॥ (इत्यनुस्मृतिः)

धीरामाय ममो द्वैतत्कारकं मङ्गलनामकम् ।

मार्गं विष्णोः सहस्राणां तुल्य एव महामनुः ॥ १ ॥ (शरीरस्मृतिः अ० ४)

अहं भवभ्रमं शून्यं वृत्तार्थं

ब्रह्मणि ब्रह्मयामनिर्घं भवान्वा ।

सुशुभ्रं वाचस्य विमुच्येऽहं

रिचामि मंत्रं तव रामनाम ॥ १ ॥ (अष्टांगरामायण)

योगिनो ज्ञानिनो भक्ताः सुकर्मनिरताश्च ये ।

रामनाम्नि स्ताः सर्वे रमुकीडा त एव वै ॥ २ ॥

(पञ्चपुराण)

रामेख्यक्षर्युग्मं हि सर्वमंत्राधिकं द्विज ।

यदुच्चारणमात्रेण पापी याति परां गतिम् ॥ १ ॥

(क्रियायोगचन्द्रिका)

श्रद्धया ह्येव नाम वदन्ति मनुजो भुवि ।

तेषां नास्ति भयं पार्थ रामनामप्रसादतः ॥ १ ॥

प्रमादादपि संस्पृष्टो ययानलकणो दहेत् ।

तथौष्ठपुटसंस्पृष्टं रामनाम दहेदधम् ॥ २ ॥

(आदिपुराण)

रकारोऽनलबीजं स्याद्ये सर्वे ब्रह्मादयः ।

कुला मनोमतं सर्वं भस्म कर्म शुभाशुभम् ॥ १ ॥

आकारो भानुबीजं स्यात् वेदशास्त्रप्रकाशकः ।

नाशयत्येव सो वीर्या इत्यथमज्ञानजं तमः ॥ २ ॥

मकारध्वंशबीजं स्याद्यदपां परिपूरणम् ।

त्रितापं हरते नित्यं शीतललं करोति च ॥ ३ ॥

वैराग्यहेतुः परमो रकारः कथ्यते युधेः ।

अकारो ज्ञानहेतुश्च मकारो भक्तिहेतुकः ॥ ४ ॥

आकृष्टिः कृतचेतसां सुमहतामुच्चाटनं चांहसा-

माचांडालममूफलोऽसुललो ब्रह्मश्च मोक्षधियः ।

नो वीक्षां न च दक्षिणां न च पुरक्षर्यामनागीसते

मंत्रोयं रसनास्पृगेव फलति श्रीरामनामात्मकः ॥ ५ ॥

(श्रीमद्वाल्मीकीयउपाख्यान)

छत्ररूपो रकारोऽस्ति अनुस्वारः शिरोमणिः ।

राजराजाधिराजेति तस्माद्रामः शिरोमणिः ॥ १ ॥

(पञ्चपुराण)

निर्वर्णं रामनामेदं केवलं च स्वराधिकम् ।

सर्वेषां मुहुटं छत्रं मकारो रेफव्यंजनम् ॥ १ ॥

यन्नामसंलग्नेवशाद्विग्नौ

नष्टस्वरी मूर्ध्निगती स्वराणाम् ।

तदमशादौ हृदये निषाय

देही कथं नोर्ध्वगतिं प्रयाति ॥ २ ॥

रेफोच्चारणमात्रेण बहिर्निर्गतिं पातकम् ।

पुनः प्रवेरधदेहान् मकारश्च कण्ठवन् ॥ १ ॥

(नारदचरितम्)

मुण्डी राके ब्रह्म ही, निचसत पात्र बहार ।

इति षोडशकं नाम्नां कलिकल्मषनाशनम् । नातः परतरं प्रायः सर्ववेदेषु दृश्यत इति
षोडशककलकृतस्य पुण्यस्यावरणविनाशनं । ततः प्रकाशते परं ब्रह्म भेषापाये रविरदिम-
मंडलीवेति । पुनर्नारदः पत्रच्छ भगवन्कोऽस्य विधिरिति । तच्छ्रुत्वा च नास्य विधिरिति ।
सर्वदा शुचिरशुचिर्वा पठन् ब्राह्मणः सलोकतां समीपतां सरूपतां सायुज्यतामेति । यदास्य
पोषकस्य सार्धत्रिकोटिर्जपति । तदा ब्रह्महत्यायास्वरति । स्वर्णस्त्रेयात् पूतो भवति ।
श्रीगमनात्पूतो भवति । सर्वधर्मपरित्यागपापात्सद्यः शुचितामामुयात् । सद्यो मुच्यते
यो मुच्यत इत्युपनिषत् । हरिः ॐ सहनाववत्विति शांतिः शांतिः शांतिः । हरिः ॐ
कलिसंतारणोपनिषद्)

- (राम एव परं ब्रह्म परमात्मामिधीयते ।
रामात्परतरं नास्ति यत्किञ्चित्स्वूलसूक्ष्मकम् ॥ १ ॥ (पराशरस्मृति)
रामाशास्त्रि परो देवो रामाज्ञास्त्रि परं व्रतम् ।
नहि रामात्परो योगो नहि रामात्परो मखः ॥ १ ॥
राशब्दो विश्ववचनो मक्षापीश्वरवाचकः ।
विशेषामीश्वरो यो हि तेन रामः प्रकीर्तितः ॥ २ ॥ (पद्मपुराणे)
पदध्ववणकराननवाणी लभयननातिकाटीन्द्रियविषयाधीशैः ।
विवर्जितो रामः साक्षात्परब्रह्मविग्रहः सच्चिदानंदात्मकः स्वयम् ॥ १ ॥
(शिवस्मृतिः)

- (रकारार्थो रामः सगुणपरमैश्वर्यजलधिः
मकारार्थो जीवः सकलविधैर्कर्यनिपुणः ॥
तयोर्मध्याकारो युगलमय संबंधप्रमुखः
अनन्याहो ब्रूते त्रिनिगमसरूपोऽयमत्रुलः ॥ १ ॥ (आचार्यवाक्यम्)
श्रीरामं ये च हिला खलमठिनिरता ब्रह्मजीवं वदन्ति
ते मूढा नास्तिकास्ते शुभशुणरहिताः सर्वदुःखातिरिक्ताः ॥
पापिष्ठा धर्महीना गुहजनयिमुखा वेदशास्त्रविरुद्धा-
स्ते हिला गांगमंभो रविकिरणजलं पातुमिच्छन्ति प्रस्ताः ॥ १ ॥
(शिववाक्यम्)

धीमद्भानुमुतातटे प्रविलसदिव्यं महत्पतनं

- तत्कंसस्य जगत्रयेऽपि विदितं वर्णः शुभैर्वह्निभिः ।
अन्त्यादौ विबुधाः स्मरन्ति भुवि ये धन्याः कुलं पापितं
तौ तेषां न भजन्ति स्याच्च वदने मध्यस्थितं चाशरम् ॥ १ ॥
पठति सकलशास्त्रं वेदपारं गतोपि
यमनियमपरो वा धर्मशास्त्रार्थवेत्ता ।
भटति सकलतीर्थं राजिता वा हुतामि-
र्यदि भजन्ति न रामं सर्वमेतदुपा स्यात् ॥ २ ॥

पेयं पेयं ध्वणपुटके रामनामाभिरामं

(ध्येयं ध्येयं मनसि सततं तारकं ब्रह्मरूपम् ।

जल्पं जल्पं प्रकृतिविकृतौ प्राणिनां कर्णमूले

वीथ्यां वीथ्यामटति जटिलः कोऽपि काशीनिवासी ॥१॥ (काशीखंड)

रामनाम परं ब्रह्म सर्वदेवप्रपूजितम् ।

(महेश एव जानाति नान्यो जानाति वै मुने ॥ १ ॥

(जैमिनि० व्यासवाक्यम्)

रामेति ह्यक्षरं नाम यत्र संकीर्त्यते बुधैः ।

तत्राविर्भूय भगवान् सर्वदुःखं विनाशयेत् ॥ १ ॥ (लोमशसंहिता)

यस्य नामप्रभावेण सर्वेहोऽहं वरानने ।

(रामनामः परं तत्त्वं नास्ति किञ्चिज्जगत्रये ॥ १ ॥ (शिववा०)

रामेति वर्णद्वयमादरेण सदा स्मरन्भक्तिमुपैति जंतुः ।

(कलौ युगे कल्मषमानसानामन्यत्र धर्मं खलु नाधिकारः ॥ १ ॥

कवले कवले कुर्वन् रामनामानुकीर्तनम् ।

यः कथित्पुण्योऽधाति सोऽप्रदोपैर्न लिप्यते ॥ २ ॥

सिक्थये सिक्थये लभेन्मर्लो महायज्ञादिकं फलम् ।

यः स्मरेद्रामनामाख्यं मंत्रराजमनुत्तमम् ॥ ३ ॥ (वैष्णवस्थोती)

देवाच्छूकरघावकेन निहतो म्लेच्छो अराजर्जरो

हा रामेति हतोस्मि भूमिपतितो जल्पंस्तनुं सफवान् ।

तीर्णो गोप्पदवद्गवार्णवमहो नाम्नः प्रभावात्पुनः

किं चित्रं यदि रामनामरत्निकाले याति रामासदम् ॥ १ ॥ (बरहपुण्य)

द्विजो वा राक्षसो वापि पापी वा धार्मिकोऽपि वा ।

स्यत्रन्दलेवरं रामं स्युक्ता याति परं पदम् ॥ १ ॥ (अष्टात्मरामायण)

ॐ अथाह भारद्वाजो याज्ञवल्क्यं राहोवाच श्रीराममन्त्रस्य माहात्म्यं नो ब्रूहि भगवन्
एह उवाच याज्ञवल्क्यः तारकतातारको भवति तदेव तारकं ब्रह्म तं विद्धि तदेवोपास्यं
म एतत्तारकं ब्रह्मणो नित्यमधीते स पाप्मानं तरति स मृत्युं तरति स ब्रह्महत्यां तरति
स भ्रूहत्यां तरति स वीरहत्यां तरति स सर्वहत्यां तरति स संघारं तरति स विमुक्तमा
भवति स महान् भवति सोऽमृतसं स गच्छतीति (सामवेदपिण्डपायनशाखा)

हरिः ॐ इत्युक्त्वा नारदो ब्रह्मणं जगाम कथं भगवन् गां पर्वतन् कठिरसंतरेव-
दिति । सरोरुच ब्रह्मा सानु पृथोसि सर्वं श्रुतिरहस्यं गोप्यं तप्यन्तु । येन कठिसंघारं
हरिभक्ति मपन्नं अतिपुण्यस्य बरहपुण्यस्य नामोच्चारणमात्रेण निर्धूतकठिर्भवति । नारद
पुनः ब्रह्म । एतन्म विमिति । स होवच द्विष्यममः—

हरे एम हरे एम एम एम हरे हरे ।

हरे ह्रम हरे ह्रम ह्रम ह्रम हरे हरे ॥

इति षोडशकं नाम्नां कलिकल्मषनाशनम् । नातः परतरं प्रायः सर्ववेदेषु दृश्यत इति षोडशकलावृतस्य पुरुषस्यावरणविनाशनं । ततः प्रकाशते परं ब्रह्म मेघापायै रविरदिम-
मंडलीवेति । पुनर्नारदः पप्रच्छ भगवन्तोऽस्य विधिरिति । तच्छब्दोवाच नास्य विधिरिति । सर्वदा शुचिरशुचिर्वा पठन् ब्रह्मणः श्लोकांतां समीपतां सरूपतां सायुज्यतामेति । यदास्य षोडशकस्य सार्धत्रिकोटिर्जपति । तदा ब्रह्माहत्याशास्वरति । स्वर्णस्त्रेयात् पूतो भवति । पृथ्वीगमनात्पूतो भवति । सर्वधर्मपरित्यागपापात्सद्यः शुचितामामुयात् । सद्यो मुच्यते सद्यो मुच्यत इत्युपनिषत् । हरिः ॐ सहनाववविति शांतिः शांतिः शांतिः । हरिः ॐ (कलिवृत्तारणोपनिषद्)

- (राम एव परं ब्रह्म परमात्मभिधीयते ।
रामात्परतरं नास्ति यत्किंचित्स्थूलसूक्ष्मकम् ॥ १ ॥ (पराशरस्मृति)
रामाश्रस्ति परो देवो रामाश्नास्ति परं व्रतम् ।
नहि रामात्परो योगो नहि रामात्परो मखः ॥ १ ॥
राशब्दो विश्ववचनो मधापीश्वरवाचकः ।
विश्वेयामीश्वरो यो हि तेन रामः प्रकीर्तितः ॥ २ ॥ (पद्मपुराणे)
पद्मश्रवणकराननवाणी लभयननासिकावीन्द्रियविषयाधीशः ।
विवर्जितो रामः साक्षात्परब्रह्मविग्रहः सधिदानंदात्मकः स्वयम् ॥ १ ॥
(शिवस्मृतिः)

- (रकारार्थो रामः सगुणपरमैश्वर्यैजलधिः
मकारार्थो जीवः सकलविधकैर्कर्येनिपुणः ॥
तयोर्नभ्याकारो युगलमय संबंधप्रमुखः
अनन्याहो ब्रूते त्रिनिगमसंज्ञोऽयमनुलः ॥ १ ॥ (आचार्यवाक्यम्)
श्रीरामं ये च हिला खलमतिनिरता ब्रह्मजीवं वदन्ति
ते मूढा नास्तिकास्ते शुभगुणरहिताः सर्वबुद्धपातिरिक्ताः ॥
पापिष्ठा धर्महीना गुहजनविमुखा वेदशास्त्रविद्वान्-
स्ते हिला गांगमंभो रविकिरणजलं पातुमिच्छन्ति प्रस्ताः ॥ १ ॥
(शिववाक्यम्)

ध्रीमद्गान्मुतातटे प्रविलसद्दिव्यं महत्परत्नं

तत्कंसस्य जेगज्रयेऽपि विदितं वर्णैः शुभैर्वह्निभिः ।

अन्याथौ विबुधाः स्मरन्ति भुवि ये धन्याः कुलं पावितं

- (तौ तेषां न भजन्ति स्याच्च यदने मध्यस्थितं चाशरम् ॥ १ ॥

पठति सकलशास्त्रं वेदपारं गतोपि

- (यमनियमपरो वा धर्मशास्त्रार्थवेत्ता ।

शटति सकलतीर्थं राजिता वा हुताभि-

- (र्थेदि भजति न रामं सर्वमेतद्गुणा स्यात् ॥ २ ॥)

- कपीर कसौटी रामची, इडा टिकै न होय ।
 राम कसौटी सो सहे, जो मरजीवा होय ॥ १ ॥
 कपीर कहताहूँ कहजातहूँ गुणता हूँ सब होय ।
 राम कस्यो मल होयगां, नहिंतर भला न होय ॥ २ ॥ (कपीर०)
 गुरत तन घर कहा कमायो ।
 राम भजन बिन जग्न गुमायो ॥ (श्रीरामानन्दजी०)
 रसना राम उचार रे सुखे भायमितेगे ।
 अर्धनाम उच्चार करेगो, नहिं तो फिरिफिरि जग्न धरेगो ॥
 (श्रीजैमलदासजी०)
 रामनाम निजगूल है, और सकल विहार ।
 जन हरिया फल मुखि कूं, छीत्रे चार संभार ॥ १ ॥
 (भीहरि० वाक्यम्)
 राम कस्यो सबही रासा, सबहि राम के माहि ।
 रामदास इक राम बिन, दूजा कोऊ नाहि ॥ १ ॥
 बिन साधू संसार में, सुमरावे निजनाम ।
 रामदास छत शब्द दे, पहुंचावे सुन गाम ॥ २ ॥
 बडा बडेरा मंडका, ब्रह्मा विष्णु महेश ।
 रामदास उन भी कस्यो, राम सर्व उपदेश ॥ ३ ॥ (श्रीराम० वाक्यम्)
 एक राम के नाम बिन जिवकी जरनि न जाय ।
 दादू केते पचि मरे करि करि बहुत उपाय ॥ १ ॥
 रामनाम गुरु शब्द सूं, रे मन पेल भरम्म ।
 निहकरमी सूं मन मिल्या, दादू काट करम्म ॥ २ ॥ (दादू दयाळ)
 राम नाम अपिबो थवनन सुनिबो, सलिलमोहमें बहि नहिं जइबो ।
 (नामदेव)
 रे मन राम नाम संभार, माया के भ्रम कहा भूलो चलेगो कर झार ।
 (रैदासजी)
 दया बोधमोहीं कही, करि करि ऊंची बाँह ॥
 दयावंत जिनके बसै, राम राम उरमोह ॥ १ ॥ (गोरखनाथजी)
 सुंदर कहत एक दियो जिन राम नाम ।
 गुरुयो उदार फोठ देख्यो नौहि सुन्यो है । (सुंदरदासजी)
 रजब भिनखा देह धूक, आतमराम न जानियो । (रजबजी)
 हरिहां बाजीद रामभजन में, देह गले तो गालिये । (बाजीदजी)
 रसना रटै न रामकूं, आन कया मुख थोड़ ।
 जन हरिदास बे मानवी, काग बिलाई थोड़ ॥ १ ॥ (हरिदासजी)

मृगतृष्णा ज्युं अजरचना, यह देखो हृदय विचार ।
 कह नानक भज रामनाम, नित जातें हो उद्धार ॥ १ ॥ (गुरनानक)
 माया त्याग भजै नित राम, सो अरिहंत हते सब काम ।
 जैनशास्त्र दशलाख गरथ, तिनमें भाख्यो यही अरथ ।
 राम राम सो अरि हंत कहिये, ताही भज अरिभनकूँ गहिये ॥ १ ॥
 (जैनमत समयसारनाटक)

राम राम सब कोइ कहै, प्रद्वारा विष्णु महेश ।
 राम चरण सावा गुरु, देवे सो उपदेश ॥ १ ॥
 राम चरण शिव धर्म कूं, जानत नोंहीं कोय ।
 शिव गुमरे ताकूं भजे, सो शिव धरमी होय ॥ १ ॥
 (श्रीमद्वीतराज रामशेही पूज्यपादाचार्य रामचरणजी महाराज)

को काहू के शब्द से, फाट जाय आकाश ।
 संत नमाने संतदास, बिना राम विश्वास ॥ १ ॥
 पाई न गति केहि पवित पावन, राम भज सुनु शठ बना ।
 गलिका अजामिल शृंग्र व्याध, गजादि खल तारे घना ॥
 आभीर श्वन किराल खल, श्वपचादि अति अपरूप जे ।
 कहि नामवारक तेपि पावन, होत राम नमामि ते ॥ १ ॥
 न मिटै भव संकट दुर्घट है, तपतीरथ जन्म अनेक अथे ।
 कलिमें न विराय न ज्ञान कहुं, सब लागत फोकट छूट जठे ॥
 नट ज्यों अनि पेट कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक छठ छठे ।
 तुलसी अ सदा सुख चाहिये तो, रसना निशि वासर राम रठे ॥ १ ॥
 राका रजनी भक्ति तव, राम नाम सोइ सोम ।
 अपर नाम उद्भगण विमल, वसहु भक्त उर व्योम ॥ १ ॥
 यद्यपि प्रभु के नाम अनेका । श्रुति कह अधिक एकते एका ॥
 राम सकल नामनते अधिका । होउ नाथ अपसगगणवधिका ॥ (रामायण)

राम नाम मणिलीपधर, जीह देहरी द्वार ।
 तुलसी भीतर बाहिरे, जो चाहि उजियार ॥ १ ॥
 हिय निर्गुण नैनन सगुण, रसना राम सुनाम ।
 मनहु पुरट छंपुट किये, तुलसी ललित लज्जाम ॥ २ ॥
 जन मन धन नहिं कर सकै, कलिमल राज पैचार ।
 समय सिंह गरजत सदा, नाथ रकार मकार ॥ ३ ॥ (तुलसी)
 आ घट चौकी रामकी, विप्र धरै नहिं चौर ।
 ज्यों सूरज मंडल विधे, नहीं तिमिर को ठौर ॥ १ ॥

सद्गुरु के मिलने से (साक्षात्कार हो जाने से) जीवात्मा में जो भेदभाव का अंतर था यह सब मिटगया और अभेद (अद्वैत) भाव होकर सारशब्द जो ब्रह्मवाचक राम नाम है जिसकी श्रुति, स्मृति, उपनिषद्, इतिहास, पुराण, आसचाक्य (महापुरुषवाक्य) संस्कृत प्राकृत सर्व ग्रंथों में मुक्तकंठ से प्रशंसा की है उस रामनाम की ओलखान ही गई।

तन मन कर देती रसना सेती रामदि राम रटंदा है ॥ २ ॥

तब तन मन उसी में तल्लीन होगया और अनन्य प्रेमपूर्वक रसना (जिह्वा) से राम ही राम शब्द की रटना अहर्निश (दिनरात) होने लग गई ॥ २ ॥

१ रसना से राम नाम रटन—

राम नाम को कीजिये, आठों पहर उचार ।

हरिया बंदीवान ज्यों, करिये कूक पुकार ॥ १ ॥ (धीहरि० वाक्यम्)

रसना सों रटिवो करे, आठों पहर अभंग ।

रामदास उण संत को, राम न छांटे संग ॥ १ ॥ (धीराम० वाक्यम्)

कबीर राम राम कहि कृकिये, ना सोह्ये असरार ।

रात दिवस के कूकने, कबहुक लगे पुकार ॥ १ ॥

राम नाम जपते रहो, जब लग घटमें प्राण ।

कबहुक चीन दयालके, मनक परेगी कान ॥ १ ॥

रामनामको नित भजो, रसना होट समेत ।

हरिया जोग रु जुगति विन, सहज न को सिबरेत ॥ १ ॥

राम नाम रसना रटे, सोई जग में साध ।

हरिया सुमिरन सहज का, वांका मता अगाध ॥ २ ॥

स्मरण के स्थान—१ रसना २ कंठ ३ हृदय ४ नासी ।

स्मरण के भेद—१ अधम २ मध्यम ३ उत्तम ४ अत्युत्तम ।

प्रथम राम रसना सुमरि, द्वितिये कंठ लगाय ।

तृतिये हिरदै ध्यान धरि, चौथे नाभि मिलाय ॥ १ ॥

प्रथम सो प्रथम अध नाम रसना लिया, दूसरे नाम मध कंठ धारा ।

तीसरे उत्तम सो नाम हिरदै कया चतुररै नाभि अतिउत्तमयारा ॥

(धीहरि० वाक्यम्)

तुरसी अध सुमरिण धीं एह, रसना राम राम जपिलेह ।

यह खालंबन सोलौ करे, मध सुमिरण की सोझी परे ॥ १ ॥

परस्या हे प्रेमा हरस्या नेमा कंठ कमल फूलदा हे ।

भँवरा गुंजारु गुह्या वारु मुरली टेर सुणंदा हे ॥ ३ ॥

और प्रेम की वर्षा होने लगी, जिससे स्वयं ही (आपोआप) योगदा-
स्रोक्त पद्मक भेदन तथा क्रमानुसार राम नाम रटने (जपने) के नियम
(विधि) जान पड़ने लग गये और राम नाम की रटना अर्हर्निश अखंड
होती रहने से प्रथम ही प्रथम कंठस्थ कमल का विकास हो गया (कंठ-
कमल फूलगया), जब कंठ में स्मरण होने से कंठ कमल फूल तब जैसे
अमर (भँवरा) शब्द करता है उसके समान कंठ में (राम नाम रटन)
गुंजार शब्द होने लगा और कंठ कमल का द्वार खुल गया जिससे उस
नाद की टेर बांसुरी की टेर के सदृश सुनाई पड़ने लगी ॥ ३ ॥

श्वास व उच्छ्वासा हिरदैवोसा सुमिरंण ध्यान धरंदा हे ।

मोभी घर आया नाच नचाया सईजाँ मुप सुमरंदा हे ॥ ४ ॥

दुरसी मध सुमिरण जु यह, कंठ कमल अस्थान ।

राम नाम उचार हुय, धायल करै सो प्रान ॥ १ ॥

उत्तम सुमिरण हिरदा में, आरंभै धरि प्यान ।

भासोच्छ्वास रथो करे, दुरसी नाम निर्धान ॥ २ ॥

दुरसी अति उत्तम भजन, कापें वरण्या जाय ।

लख्यो ज कापे परे, भाग हुवे तो पाय ॥ १ ॥

(जन दुरसी)

आठ पहर चौसठ धरि, रहै राम से रत ।

जब जाय फाटे संतदास, चौरासी का खत ॥ १ ॥

(संतदासजी)

१ विष्णुद्विचक्र ।

२ गदगद सुमरण कंठ में, अमृत की सी धार ।

एक अखंडी होत है, भवर पंच भणकार ॥ १ ॥ (श्रीहरि० वाक्यम्)

३ रसना कंठ और हृदय इन तीन स्थानों में स्मरण क्रम से पहुँचने में श्रीहरि-
रामदासजी महाराज को ७ वर्ष और २ मास की अवधि लगी थी ।

राम राम रसना क्रिया, मास दोय विधाम ।

हरिया हिरदै कंठ विच, सागर वर्ष सुकाम ॥ १ ॥ (श्रीहरि० वाक्यम्)

४ गुण तारे माया विमिर, शीत भरम मन चन्द ।

रजव सुमिरण सुरतें, सहज पड़े सब मन्द ॥ १ ॥

५ हरि प्राणो गुदेऽपानः समानो नाभिमंडले अर्थात् हृदयमें प्राणवायु, गुदमें
अपानवायु और नाभिमें समानवायु रहता है एवम् उदानः कंठदेशे स्यात् च्यानः

तदनंतर हृदयस्थान (अनाहत चक्र) में श्वास और उच्छ्वास की गति का ठहरना हुआ और मन ही मनमें स्मरण का ध्यान करने लगा, हृदय में स्मरण होने के पश्चात् नाभिस्थान (मणिपुरचक्र) में स्मरण करता हुआ प्राणवायु समानवायु में आकर मिला (प्राणवायु समानवायु के घर में अर्थात् नाभिस्थान में जब आया) तब अनेक प्रकार के नाच नचाने लगा और सहज में ही आपसे आप मुखसे रामनाम का स्मरण होने लग गया ॥४॥

रग रग आरंभ भया अचंभा छुच्छंभ वेद भणंदा है ।

और व्यानवायु जो सर्व शरीर में व्यापक हो रहा है उससे प्राण और समानवायु का योग होनेसे रग रग में (नस नसमें) आश्चर्यजनक एक क्रिया का आरंभ हुआ जिसका भेद वर्णन करना बड़ा सूक्ष्म है ।

ओऊँ अरु सोऊँ देख्या दोऊँ पारब्रह्म परसंदा है ॥ ५ ॥

ऐसी स्थिति होने के पश्चात् ओऊँ=हंसः और सोऊँ=सोहं इन दोनों

सर्वशरीरगः इति अर्थात् कंठ में उदानवायु और सर्व शरीरमें व्यानवायु निवास करता है ।

१ नाभि स्थान में जब स्मरण होने लगता है तब सहज स्मरण होता है ।

रंकार गुमरण सहज, नाभि कमठ अस्थान ।

हरिया पच्छिमदेशको, पहुंचन का परमान ॥ १ ॥

उयुं अल सेरी विपुका, बाधा घाह न कोय ।

हरिया गुमिरन सहजका, निशिदिन घटमें होय ॥ २ ॥

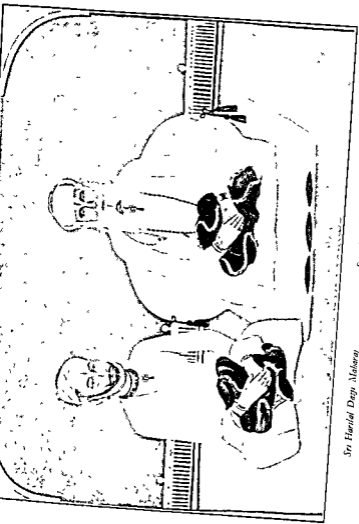
सोरठा ।

हरिया मुख ममघर, जब सहजों गुमिरन नहीं ।

मरे धरे आकार, मेला जीव ह सीव विन ॥ १ ॥

अर्थात् सहज गुमिरन नाभिस्थान में जब रंकारका स्मरण होने लग जाय तो पश्चिम देश को पहुँचने का प्रमाण समझना । सहज गुमरण में मंकार का स्मरण बंद होकर केवल रंकार शब्द की उलट लिख रटना होने लग जाती है तभी जीव और शिव एक हो जाते हैं ।

१ गुणम वेदः—यह महात्माभोंका सांकेतिक शब्द है त्रिषुमें गुणम वेद (बर्तुंभों) का वर्णन है अथवा सर्ववेद गुण को भी कहते हैं अथवा भगवानके शक्तेश्चक्र का वेदको भी कहते हैं अथवा संशयि बल्ल वर्णनि मर्त वेद ह वेदविद रूपको भी करते हैं ।



Sri Harilal Dasgupta Maharaj
(Khetlapa).

Sri Aryadasgupta Maharaj
(Khetlapa).

मग्ना द्रुय पापै कामन् नि कामै अर्धं नाम भागंदा है।

ऊ नामज केयन् यदे महापन् रोम रोम उचरंदा है ॥ १ ॥

जिससे राम राम शब्द जो मैं जनताथा उसमें से नकार बोलना
होगया अर्थात् माया से रहित अद्वैतरूप अर्धनाम जो केवत्र रक्त
उसी रकार का (रों रों रों रों रों रों) स्वरूप होने लग गया ननिम्न
का विकास होगया जिससे शुद्ध निर्गुण (माया रहित) पर परब्रह्म
दर्शन हुवा तब महाबलशाली अर्धनाम रकार जो अद्वैतरूप है केवत्र रक्त
का उच्चारण रोम रोम में होरहा है ऐसा मान्य होने लगा ॥ ६ ॥

रहता से रत्ता है निज तत्ता न्याय द्रुय निरखंदा है।

ऐसा अविनाशी भाप न जाती भाग पंडे मेरंदा है ॥ ७ ॥

यह रकार का स्वरूप इस शरीर में रहनेवाले आत्मानें रत्त (स्वर्जन)
होने से निज तत्व रूप होजाने के कारण न्याय होकर देखने लग गये
अर्थात् द्रष्टा होकर अपने आपको देखने लगा, जिस परब्रह्मको ब्रह्म
होकर देखने लगा वह परब्रह्म ऐसा अविनाशी है जो न तो कहीं से
आता है न कहीं जाता है अपने में ही सदा सदैव विराजमान रहता है
उस परब्रह्म की भेट बड़े महामान्य होते हैं तब ही होती है ॥ ७ ॥

ओजं सोजं शब्द धी, सहजो मुनी बवाज ।

जन हरिया इन करे, ररेकर का राज ॥ १ ॥

ओजं सोजं शब्द धी, तीन लोक लग सोय ।

जन हरिया ररेकरका, कार पर नई सोय ॥ २ ॥ (भीरते • शस्त्र)

अजराजनिष्कृष्ट सज्ञान—

मन पवना अरु सुरति से, भावन पढे कार ।

रज्य लावे सुरति सो, एहै अजराजार ॥ १ ॥

(रज्यवी)

अजराजाय लगावे हेत, नीरसीर म्यारा करिदेत ।

विष छंटे अमृत कूं पीवे, समस पिछापै मुनरिप साव ।

अन्तर एक राम मुख राखे, और सकत मुख मानै काव ॥

(भीरतेलदासजी महाराज)

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चित्ति सिद्धये ।

यतजामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥ १ ॥

बहूनां जन्मनामंठे ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।

वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ॥ २ ॥

(टीका)

के "हंसः सोहं सोहं हंसः" इस अजपा नाम गायत्री के जप का ज्ञान प्राप्त होने से परब्रह्म परमात्मा के दर्शनकी प्राप्ति होतीहै वह हुई ॥ ५ ॥

१ अजपा के जप से परब्रह्म परसता है—

ओंजं सोंजं जाप अजपा, घटमें कीया संघ असंपा । (श्रीहरि० वाक्यम्)
ओंजं सोंजं अर्थात् हंसः सोहं अजपा जप है इसने घट में असंप (जीव ब्रह्मका मेद) का संघ (अमेद) करदिया ठीक वाच्यार्थ सफल कर दिया ।

बलदा अजपा जाप जपाया । हृद को जीत वेहृदमें आया ॥

(श्रीराम० वाक्यम्)

नासापयसमाकृष्टः पवनः फुस्फुसं गतः ।

शोधयेच्छोणितं दुष्टं येन जीवन्ति जंतवः ॥ १ ॥

सोहंसन्देन जीवानां श्वासोच्छ्वासौ निरंतरम् ।

स्यातां वा हंसशब्देनोच्छ्वासश्चासौ विपर्ययात् ॥ २ ॥

इत्ययं ब्रह्मरो मंत्रो जीवब्रह्मोऽजपा मता ।

जपारंभो हि जननं मरणं तत्समापनम् ॥ ३ ॥

इसी अजपा मंत्र को अजपा गायत्री कहते हैं ।

एकविंशतिसाहस्रं षट्शताधिकमीश्वरि ।

जपते प्रसहं प्राणी सान्द्रानन्दमयीं पराम् ॥ ४ ॥

विना जपेन देवेशि जपो भवति मन्त्रिणः ।

अजपेयं ततः श्रेष्ठं भवपाशनिर्कृतनी ॥ ५ ॥ (दक्षिणामूर्तिसंहिता)

अजपा नाम गायत्री जीवो जपति सर्वदा ।

षट् शतानि दिवारात्रौ षट्सायुष्येकविंशतिः ॥ १ ॥

एतत्संख्यान्वितं मंत्रं हंसः सोहं कमेण वै ।

(कुलार्णव)

जातः स इति वैशब्दमुच्चार्यारभते जपम् ।

महाप्रयाणसमये हनुश्चार्यं समापयेत् ॥ १ ॥ (दक्षिणामूर्तिसंहिता)

यह अजपा जप तो साभाविक सीला अहर्निश होता ही रहता है, परंतु यही अजपा जप राममंत्र के सहित जपने से फलदायक होता है ।

ओंजं सोंजं ऊंचरा, दोऊं खाली ओंज ।

नाम बिना ऊंचे नहीं, पच पच भरो करोइ य

(रजबनी)

ओंजं सोंजं देह लग, निशि दिन आवे जाय ।

एक अंसी शब्द में, हरिया सुरति समाय ॥ १ ॥

अर्थात् हंसः सोहं यह श्वासोच्छ्वास शब्द, शरीर है उबतक रात दिन आता जाता रहता है, इसी के द्वारा एक अंसी शब्द जो ररेकार आत्मा स वाचक शब्द है उसमें शक्ति समाप्त हो सानी समानेष्ट करो—

मम्मा हुय पासै कमल विकासै अर्ध नाम आर्यंदा हे ।

ऊ नामज केवल बडे महापल रोम रोम उचरंदा हे ॥ ६ ॥

जिससे राम राम शब्द जो मैं जपताया उसमें से मकार बोलना बंद होगया अर्थात् माया से रहित अद्वैतरूप अर्धनाम जो केवल रकार है उसी रकार का (रॉ रॉ रॉ रॉ रॉ रॉ) स्मरण होने लग गया नाभिकमल का विकास होगया जिससे शुद्ध निर्गुण (मायारहित) पार परब्रह्म का दर्शन हुवा तब महाबलशाली अर्धनाम रकार जो अद्वैतरूप है केवल उसी का उच्चारण रोम रोम में होरहा है ऐसा मालूम होने लगा ॥ ६ ॥

रहता से रत्ता हे निज तत्ता न्यारा हुय निरखंदा हे ।

ऐसा अविनासी आय न जासी भाग पंडे भेटंदा हे ॥ ७ ॥

यह रकार का स्मरण इस शरीर में रहनेवाले आत्मामें रत (लवलीन) होने से निज तत्व रूप होजाने के कारण न्यारा होकर देखने लग गया अर्थात् द्रष्टा होकर अपने आपको देखने लगा, जिस परब्रह्मको मलग होकर देखने लगा वह परब्रह्म ऐसा अविनाशी है जो न तो कहीं से आता है न कहीं जाता है अपने में ही सदा सर्वदा विराजमान रहता है उस परब्रह्म की भेट बड़े महाभाग्य होते हैं तब ही होती है ॥ ७ ॥

ओळं सोळं शब्द की, सहजों सुणी अवाज ।

जन हरिया इन ऊपरे, ररंकार का राज ॥ १ ॥

ओळं सोळं शब्द की, तीन लोक लग सोय ।

जन हरिया ररंकारका, आर पार नहिं कोय ॥ २ ॥ (श्रीहरि० वाक्यम्)

अजपाजपनिष्कृष्ट लक्षण—

मन पवना अरु सुरति से, आतम पकडे आप ।

रज्जव लावे सुरति सो, एहे अजपाजाप ॥ १ ॥

(रज्जवजी)

अजपाजाप लगावे हेत, नीरक्षीर न्यारा करिदेत ।

बिप छांटे अमृत कुं पीवे, समझ पिछाणे सुमरिण साच ।

अन्तर एक राम मुख राखे, और सकल मुख माने काच ॥

(श्रीजैमलदासजी महाराज)

१ मनुष्याणां सहस्रेषु कथिचतति सिद्धये ।

यततामपि सिद्धानां कथिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥ १ ॥

बहूनां जन्मनामंते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।

वागुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ॥ २ ॥

(गीता)

रेचक अरु पूरक कर विन कुंभक आप उलटि पलटंदा है ।

विना हाथ की सहायता के जब आपसे आप स्वयं बाँये से दहिना और दहिने से बाँई तरफ उलट पुलट रेचक पूरक होकर कुंभक होने लगता है, अथवा रेचक और पूरक के करे विना “केवल कुंभक” ही होने लगे ।

१ प्राणायामः—

प्राणायामलिधा प्रोक्तो रेचपूरककुंभकैः ।

सहितः केवलश्चेति कुंभको द्विविधो मतः ॥ १ ॥

यावत्केवलसिद्धिः स्यात्सहितं तावदभ्यसेत् ।

रेचकं पूरकं मुखत्वा मुखं यद्वायुधारणम् ॥ २ ॥

न रेचको नैव च पूरकोऽत्र नासापुटे संस्थितमेव वायुम् ।

मुनिधलं धारयते क्रमेण कुंभाख्यमेतत्प्रवदंति तज्ज्ञाः ॥ ३ ॥

(हठयोगप्रतीपिका)

अर्थात् जबतक “केवल कुंभक” सिद्ध न हो तबतक रेचक पूरकादि किया करके कुंभक का अभ्यास करता रहै, जब रेचक और पूरक के विना ही स्वयं वायु नासापुट में ही मुनिधल स्थिर होकर कुंभक होजावे उसको केवल कुंभक कहते हैं, यह जिसके सिद्ध हो जाता है उसको—

कुंभके केवले सिद्धे रेचपूरकवर्जिते ।

न तस्य दुर्लभं किंचिद्विषु लोकेषु विद्यते ।

शक्तः केवलकुंभेन यथेष्टं वायुधारणात् ॥

राजयोगपदं चापि लभते नात्र संशयः ।

कुंभकात् कुंडलीबोधः कुंडलीबोधतो भवेत् ॥

अनगंला सुपुत्रा च हठसिद्धिश्च जायते ।

हठं विना राजयोगो राजयोगं विना हठः ॥

न सिध्यति ततो युग्ममनिष्पत्तेः समभ्यसेत् ।

हीन लोक में कुछ भी दुर्लभ नहीं होता है । जो केवल कुंभक करने को समर्थ हो जाता है और जो यथेष्ट वायु धारण कर सकता है वह राजयोग के पदको प्राप्त होता है इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं । कुंभक से कुंडली का प्रबोध होता है और कुंडली के प्रबोध होनेसे सुपुत्रा सरल हो जाती है जिसमें हठयोग की सिद्धि हो जाती है ।

१ सर्वाङ्गुला बहिर्गोष्ठाद्यधुधैवांतरे ध्रुवोः ।

प्राणायामौ समौ कृत्वा नासाभ्यंतरचारिणौ ॥

यतेंद्रियमनोबुद्धिर्मुनिमोक्षपरायणः ।

विगतच्छाभयक्रीभो यः सदा मुक्त एव सः ॥ (भीमद्भगवद्गीता)

प्राटक हुय ध्यानू चात विज्ञानू आपा पट खूलंदा है ॥ ८ ॥

प्राटक (विना पलक क्षणकाये एक सरीखे नेत्र किसी सूक्ष्म लक्ष्य की ओर जमाकर एकाम्र अनन्य भाव का चित हो) ध्यान करने से विज्ञान (भूतभविष्यवर्तमानज्ञान) प्राप्त होता है तब अपने आपका पड़दा खुल जाता है और अपने आपको पहिचानने लग जाता है । अर्थात् "अहं ब्रह्मासि" ज्ञान होजाता है ।

सुखमण की घाटी चढियावाटी अरसघरां ठहरंदा है ।

उपरोक्त प्रकार से प्राण वायु का कुंभक एकाम्रता से रकार रटण पूर्वक होता हुवा सुपुष्णा की महाघाटी के पय में जब प्राणवायु अपानवायु के

१ प्राटक:—

निरीक्षेनिधलदशा सूक्ष्मलक्ष्यं समाहितः ।

अधुसंपातपर्यंतमाचार्यैश्चाटकं स्मृतम् ॥ १ ॥

मोचनं नेत्ररोगाणां तंदायीनां कषाटकम् ।

यज्ञतश्चाटकं गोप्यं यथा हाटकपेटकम् ॥ २ ॥ (हठयोगप्रतीपिका)

अर्थात् इपर उधर नहीं देखते हुए विना पलक क्षणकाये निधल दृष्टि से किसी लक्ष्य को एकाम्र चित होकर जब तक नेत्रों में से पानी टपकने न लगजाय तब तक देखते रहने को आचार्यों ने प्राटक कहा है । यह प्राटक नेत्र के सर्व रोग को और तंदा आदि को मिटाने वाला यज्ञपूर्वक गुप्त रहनेयोग्य है ।

दुर्बो देसे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः ।

नामुत्थितं ननिनीयं भेदाजिनदुशोतरम् ॥ ११ ॥

तत्रैकार्प्यं मनः कृत्वा यत्चित्तोद्दिपक्रियः ।

उपरिदयसुखे सुंज्ययोगनामविद्वदये ॥ १२ ॥

एतं कायदिशेयैः धारयन्नचलं स्थिरः ।

संश्लेष नानिकार्प्यं संश्लेषान्नसोऽयम् ॥ १३ ॥

प्रशांत्याया भिगतमींद्रियविरिजते स्थितः ।

मनः संश्लेष मन्दिनो युक्त आसीत् मत्तरः ॥ १४ ॥

सुंज्येसं सद्यमनं योगी नियतमादसः ।

एतं निर्वाणरतां मार्गस्यमधिगच्छति ॥ १५ ॥

(महाभारत अथवा १)

२ सुपुष्णा:— दृष्टा और निराला नदी के मध्य में सुपुष्णा है ।

३ अन्तरेक लकट देखने प्रथम शिरोच करने को भी प्राटक करते हैं ।

दोहा ।

इला चंद्र रवि विंगला, मध सुखमण का घाट ।

हरिया गुरु परसाद ते, खूला सहज कपाट ॥ १ ॥ (श्रीहरि० वाक्चम्र)

इडा भगवती गंगा, विंगला यमुना नदी ।

तयोर्मध्ये प्रयागस्तु मस्तं वेद स वेदवित् ॥ १ ॥ (बृहत्सामब्राह्मण)

सुपु इत्यव्यक्त शब्दं ज्ञायति ज्ञा-कः मेरुदंड बाह्ये इडा विंगला नाडी मध्यस्थ नाडी-
विशेषः ।

मेरोर्बाह्यप्रदेशे अग्निमिहिरशिरे सब्यदक्षे निषण्णे ।

मध्ये नाडी सुपुत्रा त्रितयगुणमयी चंद्रसूर्याभिरुपा ॥ १ ॥

(शब्दकल्पद्रुम)

मेरुबाह्ये इडा नाडी विंगला या समन्विता ।

सुपुत्रा भानुमार्गेण ब्रह्मद्वारावधिस्थिता ॥ १ ॥

(योगसूत्रोदय)

नाडीदंश विजुस्तासु मुख्यास्त्रिसः प्रकीर्तिताः ।

इडा वामे सनोर्मध्ये सुपुम्णा विंगला परे ॥

मध्या तासपि नाडी स्यादभिसोमस्वरूपिणी ॥ १ ॥

अत्रेडा वामहृद्बाधःस्था धनुर्वका वामनासापर्यंतपता, एवं विंगला दक्षिणांदाधःस्था
धनुर्वका दक्षिणनासांतं गता, पृष्ठवंशीतर्गता सुपुम्णा इत्यर्थः । (शारदातिलक)

तात्पर्य यह है कि, मेरुदंड के बाहर के बाँये भागमें इडा नाम की नाडी वामे अंड
के मूलधे निकलकर धनुष के समान टेढ़ी होकर वामनासा के अंतपर्यंत गई है, एवं
दक्षिण अंडके मूलधे निकलकर धनुषके समान टेढ़ी होकर मेरुदंडके दक्षिणभागमें
रहकर विंगलानामकी नाडी दक्षिणनासिका के अंतपर्यंत गई है, और इन दोनों (चंद्र-
सूर्यस्वरूपिणी) इडा विंगला नाडी के मध्यमें (मेरुदंड के बीचमें) अर्थात् मेरुदंड के
भीतर के मध्यभागमें अत्रिरूपिणी सुपुत्रानाडी मूलाधार से निकलकर ब्रह्मद्वारपर्यंत
गई हुई है, यह नाडी त्रिगुणात्मिका चंद्रसूर्याभिरुपा है । मेरुदंड को ही पृष्ठवंश कहते
हैं । इसी पृष्ठवंश के भीतर के भागमें सुपुम्णा नाडी रहती है और बाहर के भागमें
बाँये ओर इडा दहिनी और विंगला नाम की नादियें आनु बाजु मिली हुई रहती हैं ।
इसी तीनों नादियों को गंगा यमुना और प्रयाग भी कहते हैं ।

सुपुम्णा को पथिमद्वार वापका बंकलाल अत्रिरूपिणी भी कहते हैं । इसके और
भी कई नाम शास्त्रों में इस प्रकार कहे हैं—

सुपुत्रा सत्यादधी ब्रह्मरीप्रं महापथः ।

रमरानं शोभवी मध्यमार्गधेदेववाचकाः ॥ १ ॥

इस सुपुम्णा नाडी के विषय में विशेष विवेचन इस प्रकार है—

मस्तिष्क का स्वरूप कतुए की रोपरी के समान है, इस में श्वेत रई के समान चरबी की गिल्टियां बारीक गिल्टियों में लिपटी हुई भरी हैं जिनको मेजा कहते हैं। इसके चौड़ाई में दो भाग नारंगी की फांकों की समान हैं और लम्बाई में भी दो भाग हैं। सामने का भाग पेशानी की तरफवाला डाक्टरीमें (CEREBRUM) सेरीब्रम कहलाता है और पिछला भाग (CEREBELLUM) सेरीब्रम कहलाता है। यह पिछला भाग पतला होता हुआ बारीक सूतकी तरह रीड की हड्डी में फैला हुआ है। जिसको हराम मगज कहते हैं। इस रीड की हड्डीमें शरीर की सम्पूर्ण शक्तियों और प्रत्येक प्रकार के स्रावुओं के केंद्र हैं। सम्पूर्ण केंद्रों में गांठ लगी हुई है, जिससे मनुष्य अपनी शक्ति को प्रयोग में नहीं ला सकता। कुंडलिनी नाम केंद्र यदि जगाया जावे तो यह जोर में भरकर इन गांठों को तोड़ सकता है, क्योंकि जीवात्मा इसी में लिपटा हुआ अचेत रहता है, जो इच्छाओं की व कर्मोंकी जंगीर में बंधकर शरीर के अंदर केंद्र है। शरीर में ऐसे आत्मिक केंद्र तो चौदह हैं परन्तु इनमें से छः अधिक विख्यात हैं जो पदचक्र कहलाते हैं। डाक्टरों की सम्मति में ये वे स्थान हैं जहां किसी प्रकार के स्रावु के छुंड आकर इकट्ठे होते हैं, और जहां अत्यंत अधिक बल दूसरे अंगों की अपेक्षा इकट्ठा रहता है और इनमें प्रतिसमय शक्ति भरी और बहती रहती है।

रीड की मेरुदंड (SPINAL CORD) स्पाइन्ल कोर्ड में जो हराम मगज भरा है उसके नीचों बीच बालके बराबर बारीक नाली मस्तिष्क से लेकर नीचे गुदातक चली गई है जिसको अंग्रेजीमें (CANAL OF STRING) केनाल आफ स्ट्रिंग और संस्कृत में सुपुत्रा कहते हैं, यह रंग तेजी से भरी हुई है, और यही स्थान शक्ति व जिंदगी का घर है। और जिस प्रकार वेंट में गांठ होती है इसी तरह इस में पदचक्रों का स्रावु केंद्र है और इनके स्थान की ठीक पहिचान यह है कि, इस स्थान के सामने शरीर में जरासा गद्दा व खाली स्थान अवश्य होता है। (पदचक्रों का विशेषवर्णन पदचक्रवर्णन के प्रसंग में आगे लिखने में आयगा)। इहा नाम की नाडी सुपुत्रा के बाईं तरफ होती हुई आज्ञाचक्र तक आती है, फिर वहां से मुड़कर सीधे नयने में पहुंचती है। और विंगला सुपुत्रा के सीधी तरफ लिपटी हुई आती है फिर वहां से मुड़कर बाँये नयने में जाती है। सुपुत्रा रीड के भीतर होकर जाती है। इसके मध्यमें खाली स्थान है जिसको चित्रा कहते हैं इसी में आत्मा रहता है। इस नाडीके छः दरजे हैं जिनमें केवल पांच साधारणतया प्रगट किये जा सकते हैं। डाक्टरी मत से तो नाडियों दधिर से जानेका काम करती हैं परंतु योगशास्त्र में ऐसा माना है कि ये वायु और शक्ति भी ले जाती हैं। यह गिनती में सब चौदह हैं, परंतु इनमें से उपरोक्त (इहा विंगला सुपुत्रा) तीन अधिक विख्यात और आवश्यकीय हैं। यह नाडियां बारीक सूतके समान स्रावु हैं जो कि हड्डीयों से निकलती हैं। योगी का अमीश यह होता है कि रीड की नाडी अर्थात् सुपुत्रा को स्वच्छ रखे जिससे तेजी की लहर बराबर जारी रहे और सम्पूर्ण केंद्र स्वतंत्र और दृढ़ रहे जिससे इच्छानुसार काम दे सके।

साथ मिलकर सुपुष्पा नाड़ी के मार्ग में चढ़ा तब अरसघर (शून्यस्थान) में जाकर ठहरा।

फिरिया मन पूरय चले अपूरय ठाम ठाम ठमकंदा है ॥ ९ ॥

तत्पश्चात् पूर्व से मन फिरकर कंठ हृदय नाभि में क्रमसे ऊपर से नीचे स्थान २ पर श्वास ठहरता हुआ (स्थिर होता हुआ) पश्चिम के तरफ याने सुपुष्पा मार्ग के द्वार की ओर चलने लगा ॥ ९ ॥

जालंधर बंधा उरधे कंधा मन अरु पवन मिलंदा है।

उलट्या है आसण पलट्या घासण सुरत शब्द परसंदा है ॥ १० ॥

कंधे के ऊपर का जालंधर बंध करने से प्राणवायु की ऊर्ध्वगति रुक जाती है और पश्चिमतानसे ब्रह्मनाड़ी में जाने लगता है। तथा मूलबंध करने से अपानवायु उलटकर ऊर्ध्व गामी होता है एवं जालंधरबंध और मूलबंध करने पर प्राण अपान वायु के आसन उलट पुलट होने के कारण दोनों मिलजाने से सुरत शब्द का स्पर्श हुआ।

इस प्रकार सुपुष्पा के स्वरूप का वर्णन योगशास्त्र में किया हुआ है। इस परसे सुपुष्पा का मार्ग कितना अधिक कठिन है यह सहज ही ध्यान में नहीं आसकता है। इसी अति कठिन मार्ग की घाटी को अर्थात् गांठों बीच बीचमें जो आडमारनेवाली हैं उन को लांघ के छेदन करके प्राण की गति जब सुपुष्पा में होती है तब शनैः शनैः ठहरता हुआ ब्रह्मद्वार पर त्रिवृटी में पहुंचता है।

प्रथम ध्यान पूरव दिशा, गणन गर्जिया जाय।

ठाम ठाम पाताल कुं, पछे पिछन कुं थाय ॥ १ ॥

१ बंध तीन प्रकार के होते हैं जालंधर, मूल, और उग्रिस्थान।

१ जालंधर बंधः-

कंठको सिद्धो कर मजबूती से चिबुक अर्थात् ठोड़ीको हृदय में जमा के सीधा बैठने को जालंधर बंध कहते हैं।

कंठमाकुंच्य हृदये स्थापयेचिबुकं हृदम्।

बंधो जालंधराख्योऽयं जरामृत्युविनाशकः ॥ १ ॥

है जालंधर बंध में, मन पवना की गांठ।

हरिया मित्वा उतान में, सुरत शब्द की सांठ ॥ १ ॥

सुरत चली आकाश कुं, दे जालंधर बंध।

जब हरिया जहाँ जालिये, हृद बेहृद की संघ ॥ २ ॥

यद्यती चैकनाडी खुली क्रियाही भँवरगुफा मणकंदा है ।

उडंण्या मेरा सुरमिलचेरा चहुँ चकडोल फिरंदा है ॥ ११ ॥

चलती हुई बंक नाड़ी (सुपुन्ना) की क्रियाही खुल गई (सुपुन्ना नाड़ी का द्वार खुल गया) जिससे भँवर गुफा (ब्रह्मरंभस्थान) में पहुंचने का

हरिया शब्द पयात को, चल्या गगनतें होय ।

जब जालंधर बंध को, विरला जाने होय ॥ ३ ॥

(धीरि० वाक्यम्)

२ मूलबंध:-

एही से योनिस्थान को दबाकर गुदाको संकोचकरे और नीचे जाने वाले अपान वायु को बलपूर्वक ऊपर खींचके चढाते रहने को मूलबंध कहते हैं ।

पार्णिभागेन संपीड्य योनिमाकुंचयेद्बुद्धम् ।

अपानमूर्ध्वमाकृष्य मूलबंधोऽभिधीयते ॥ १ ॥

अधोगतिमपानं वा ऊर्ध्वं कुच्छते बलात् ।

आकुंचनेन तं प्राहुर्मूलबंधं हि योगिनः ॥ २ ॥

३ उड्डियानबंध:-

नाभी के ऊपर के भागको पीठ की ओर खींचके चिपका रखने को उड्डियानबंध कहते हैं ।

उदरे पश्चिमं तानं नामेूर्ध्वं च कारयेत् ।

उड्डियानो ह्यसौ बंधो मृत्युमातंगकेसरी ॥ १ ॥

मूलस्थानं समाकुंच्य उड्डियानं तु कारयेत् ।

इडां च पिंगलां बध्ना वाहयेत्पश्चिमे पथि ॥ २ ॥

बंधत्रयमिदं भेष्टं महासिद्धैश्च सेवितम् ॥ ३ ॥

इन तीनों बंधों के करने से सुपुन्नामार्ग में दोनों वायु का गमन होजाता है ।

मूलबंधादपानस्य गतिरूर्ध्वं प्रजायते ।

जालंधरात्तथा प्राणस्त्वधोगामी भवेत्पुनः ॥ १ ॥

प्राणापानी मिलित्वाऽधः सुपुन्नावदनांतरे ।

उड्डियानेन बंधेन विशते नात्र संशयः ॥ २ ॥

एवमभ्यासतो नित्यं कुंभकस्य निरंतरम् ।

ब्रह्मरंभं प्रविश्याथ प्राणो भवति निश्चलः ॥ ३ ॥

(मोक्षगीता)

मूलबंधसे अपान वायु की ऊर्ध्वगति होती है और जालंधरबंधसे प्राणही अधोगति होती है एवं दोनों प्राण अपान मिलके सुपुन्ना के मुखके भीतर उड्डियान बंध के करने से निःसंशय प्रवेश होते हैं । इस प्रकार नित्य कुंभक करने का अभ्यास निरंतर करते रहने से प्राण ब्रह्मरंभ में प्रवेशकर निश्चल होजाता है ।

ज्ञान होगया । तत्पश्चात् जालंधर बंध और मूलबंध के करने से प्राणवायु अपानवायु से मिलके उद्धियान बंधद्वारा सुपुष्पा नाडी के खुले हुए द्वार में प्रवेश करगया । उद्धियानबंध के अभ्यास से प्राण को कहीं जाने का मार्ग नहीं मिला अतः वह पीठ की तरफ से मेरुदंड मध्यस्थित सुपुष्पा के मेरु को उलंघ कर गुरु चेला दोनों (प्राण अपान वा प्राण मन) मिलके च्यारी तरफ चक्रडोल (नीचेसे ऊपर ऊपरसे नीचे) चक्र के समान फिरने लगे । अर्थात् तीनों प्रकार के बंधनों के साधनद्वारा कुंडलिनी जागृत हो जो अपने मुखसे सुपुष्पा के मार्ग को रोक रखा है उस को खुला करदेती है और प्राण अपान दोनों मिलके उस सुपुष्पा के विवर में प्रवेश कर नीचे से ऊपर और ऊपरसे नीचे फिरने लगते हैं ।

पंचककर भेदा भवदुख छेदा साँसा शोक नसंदा है ॥

गरजत है गेणूं वरजतवेणूं सरवर शून्य यसंदा है ॥ १२ ॥

१ पदकः—

१ मूलाधार २ उपस्थ ३ नाभिमूल ४ हृदय ५ तालमूल ६ ललाट इन छः स्थानों में एकत्रित हुए आयुसमूह मूल के केंद्रों को पदक कहते हैं ।

आभारे लिंगनाभी प्रकटितहृदये तालमूले ललाटे

द्वे पत्रे पौडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्धे चतुष्के ।

वापांते बालमध्ये दफकठसहिते कंठदेशे खराणां

दंष्ट्रंतस्वार्धपुके सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि ॥ १ ॥

पदकों का कोष्टक ।

संख्या	नामचक्र	स्थान	पदपत्र- संख्या	ह्र	संके	मंत्रांतर
१	मूलाधार	मूलाधार	४	ष से रा पर्यंत.	उत्पत्तिशक्ति.	अधःशक्ति.
२	साधिष्ठान	लिंग	६	ष से ल	मद्गा	रिष
३	नाभिपुर	नाभि	१०	ड से क	विष्णु	
४	अनहद	हृदय	१२	क से ठ	महादेव	मद्गा
५	विशुद्ध	तालमूल	१६	खर शोलह	दुर्गा	सुपुष्पा
६	आज्ञा	ललाट	२	ह ख	शून्यस्थान	

षष्ठपदक (सहस्रदल) यह सातवां चक्र है इसका मन्त्रोप स्थान है इसके पदपत्र १००० दल हैं और परमपद इसकी शक्ति है । इनके उपरंत किसी किसी ने सर्वचक्र और मनचक्र नामक ९ चक्र और माने हैं ।

शरीरस्थ पद्माकार पद्मप्रकारचक्रम् ।

- सप्त पद्मानि तत्रैव सन्ति लोका इव प्रभोः ।
 १ गुदे पृथ्वीरसं चक्रं हरिद्वर्णं चतुर्दलम् ॥ १ ॥
 २ लिङ्गे तु पद्दलं चक्रं स्थाधिष्ठानमिति स्मृतम् ।
 त्रिलोकवह्नितयं तप्तचामीकरप्रभम् ॥ २ ॥
 ३ नाभौ दशदलं चक्रं कुंडलिण्या समन्वितम् ।
 नीलांजननिभं ब्रह्मस्थानपूर्वकमन्दिरम् ॥ ३ ॥
 मणिपुराभिधं स्वच्छं जलस्थाने प्रकीर्तितम् ।
 ४ उदयादित्यसंकाशं हृदिचक्रमनादृतम् ॥ ४ ॥
 कुंभकाख्यं द्वादशारं वैष्णवं वायुमन्दिरम् ।
 ५ कंठे विशुद्धिशरणं षोडशारं पुरोदयम् ॥ ५ ॥
 शांभवी षरचक्राख्यं चंद्रविंशतिभूषितम् ।
 ६ पद्मशाख्यं चक्रं द्विदलं श्वेतमुत्तमम् ॥ ६ ॥
 पद्मचक्राणीह भेषानि नैतद्रेयं कथंचन ।
 राधाचक्रमिति ख्यातं मनःस्थानं प्रकीर्तितम् ॥ ७ ॥
 ७ सहस्रदलमेकार्णं परमात्मप्रकाशकम् ।
 नित्यज्ञानमयं सत्यं सहस्रादित्यसन्निभम् ॥ ८ ॥

पहिला:—मूलाधार चक्र=यह रीठ की हड्डी के आखीर या सबसे नीचेवाला स्थान है जो गुदा का कमल भी कहलाता है, इसको अंग्रेजी में SACRAI PLEXUS सेक्रेटेक्सस कहते हैं। योगी लोग इसको सूरज का स्थान कहते हैं। इसमें सत-रज-तम तीनों का भंडार समझते हैं। इसीपर संपूर्ण जीवन निर्भर मानते हैं। इस स्थान पर कुंडलिनी देवी साढे तीन आंटे देके लिपटी है जो उत्पत्ति की शक्ति रखती है। इसका चक्र पृथ्वी के समान हरे रंग का है, इसमें चतुर्दल कमल है, उनमें व, श, घ, स, ये चार वर्ण हैं इसको ब्रह्मचक्र भी कहते हैं।

दूसरा:—स्थाधिष्ठान नाम का चक्र है=यह उपस्थ इंद्रि के ऊपर दबाने से जो खाली स्थान ज्ञात होता है इसके ठीक सामने रीठ की हड्डी में है, यह कमल छः दल का है, इसमें व, भ, म, य, र, ल, ये छः व्यंजनाक्षर हैं, इसको ब्रह्मा का स्थान बतलाते हैं। कोई कोई शिव का स्थान भी कहते हैं। यह संपूर्ण संसार का उत्पन्न करनेवाला है और यही त्रिलोक में अग्नि का स्थान है और तपाये हुए सुवर्ण के समान रंगवाला है।

तीसरा:—मणिपुर नाम का चक्र है=यह नाभि के मुकानले में है, इसको अंग्रेजी में SOLAR PEXUS सोलर पेक्सस कहते हैं। इसमें दशदल का कमल चक्र है। जिनमें ङ, ङ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ये दस अक्षर क्रम से विरजमान हैं।

मह विष्णु का स्थान है और नील कमल के समान घनराम वर्ण का है इस को ब्रह्मजल का स्थान और ब्रह्मस्थान भी कहते हैं ।

चौथा:—अनाहल नाम का चक्र है—इसको अंग्रेजी में CARDIAC PLEXUS कहते हैं । यह छाती के मध्यमें जो गूदा कीही कहलाता है उसके मुकामिले में है और महादेव का स्थान है, इस में द्वादश १२ दल का कमल है, बारहों दलों में क्रमसे क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ये बारह वर्ण हैं, इसका रंग उदय होते हुए सूर्य के समान है. और इसको क्रमक स्थान वायु का स्थान तथा विष्णु का स्थान भी कहते हैं । कितनेक इसको ब्रह्मा का भी स्थान कहते हैं ।

पाँचवाँ:—विशुद्धि नाम का चक्र है यह गले में हँसली की हड्डी के ऊपर जो गूदा है इसके मुकामिले में है । इसमें सोलह १६ दल का कमल है जिनमें क्रमसे सोलह ही सर अनुस्वारयुक्त विराजमान हैं (अं, आं, इं, ईं, उं, ऊं, ऋं, ॠं, लं, एं, ऐं, औं, औं, अं, अः,) इसको दुर्गाका स्थान कई पार्वतीपति का स्थान तथा सुपुत्राका स्थान भी कहते हैं । यह महत्प्रथम धूम्रवर्ण का है, कितनेक शुरु वर्ण का भी कहते हैं । यह जीव की विशुद्धि करने वाला है । कंठ में सुपुत्रा, इडा, पिंगला इन तीनों नाडियों का बैठन, मनुष्यों के रहता है । यह धट्टेण आकृतिका और छः अंगुल प्रमाण का है ।

छठा:—आशा नाम का चक्र है—यह दोनों ध्रुवों के मध्यमें नाक की जड़ के स्थान पर है । यहाँ इडा, पिंगला, सुपुत्रा इन तीनों नाडियों का प्रांत आकर मिला है इस कारण इस को त्रिपथ स्थान कहते हैं । यह पदकोणाकृति चार अंगुल का रक्तवर्ण है । इसमें दो दल का उत्तम श्वेतवर्ण का कमल है इसमें ह और स इन दो अक्षरों का निवास है । इसको राधाचक्र तथा मनका स्थान व शून्य स्थान अथवा शून्य सरोवरभी कहते हैं । इसका ध्यान करने से वायु, जल, अग्नि पर अधिकार होता है, भय जाता रहता है और कर्म के बंधन से छूट जाता है ।

सातवाँ:—सहस्रदल कमल चक्र का स्थान यह है—जो ईश्वरी ज्ञान से संबंध रखता है जिसका वर्णन करना जिज्ञा और लेखनी से बाहर है, परंतु कुछ योगीजन ऐसा कहते हैं । कि तालू के ऊपर एक सहस्रदल का कमल है जिसमें चन्द्रमा का स्थान है और जो सुपुत्रा की जड़ है, इसीके ऊपर ब्रह्मरोध है इस चंद्रमा से प्रतिघमय अमृत वर्षा होती रहती है, जिसकी दो धार होकर नीचे सूरज के स्थान तक आती है, एक रीढ़ की बाँई ओर को जो इडा कहलाती है, दूसरी रीढ़के अंदर होकर को सुपुत्रा कहलाती है । रीढ़ के नीचे का केंद्र जो सूर्यस्थान कहलाता है, इसमें से एक आतशी किरण निकलती है जो सीधी होकर ऊपर चढ़ती है मानों आयु धाँख की तरह बाँई ओर से सीधी ओर को प्रतिघमम आती और बकर लगाती रहती है । मूलपार कमल से एक प्रकार का विष निकलता है । जो सीधे नयने में आता है और कायकारी है, परंतु उसको चंद्र का अमृत प्रभावित करता रहता है इसीसे उसका

अधर जाता रहता है। सहस्ररत्न पद्म एक महासागर के समान है इनमें परमाणु तारव का प्रकाश हो रहा है जो गिला ज्ञानमय सत्यस्वरूप एक हजार सूर्य के प्रकाश के तुल्य प्रकाशवाला है यही ब्रह्मस्थान है, इसी को परमपद स्थान कहते हैं, इसमें जो योगी अपनी योगसाधन क्रियाद्वारा पहुँचजाता है वह परमपद को प्राप्त होजाता है और जन्म मरण से रहित होजाता है। "यद्रता न निवर्तते तद्ब्रह्म परमं मन"।

इस प्रकार के ये पदचक्र हैं, इनको भेदकर जो सातवें ब्रह्मरूप चक्र में पहुँच जाता है उसको कुष्ठमी कष्टसाध्य नहीं रहता है।

मूलाधार चक्र की विवेचना:—पीछे कह आये हैं कि छःस्थानों में एकत्रित हुए सायुसमूह गूलके केन्द्रों को पदचक्र कहते हैं।

सायु (नाडी) समूह ७२००० बहत्तर हजार हैं उनमें से २४ मुख्य हैं। उनमें से भी १० मुख्य हैं।

नाडीनां संवहो देवि कप्रयोनिः स्रगांढवत् ।

तत्र नाड्यः समुत्पन्नाः सहस्राणां द्विसप्ततिः ॥ १ ॥

प्रधाना दशवाहिन्यो भूयस्तत्र दश स्मृताः ।

इडा च पिंगला चैव सुपुत्रौ च तृतीयका ॥ २ ॥

गार्धारी हस्तिजिह्वा च पूषा चैव यशस्विनी ।

अलंबुर्षा कुहूश्चैव शंखिनी च दश स्मृताः ॥ ३ ॥

एवं नाडीमयं चक्रं विज्ञेयं शक्तिचक्रके ।

इडायाः पिंगलायाश्च मध्ये या सा सुपुत्रिका ॥ ४ ॥

इयं च त्रिगुणा ह्येसा ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका ।

रजोगुणा च वर्जिता ह्यत्रिणि सत्त्वसंयुता ॥ ५ ॥

तमोगुणा ब्रह्मनाडी कार्यभेदकमेण च ॥

(निरुत्तरतंत्र)

सात्पर्य यह है कि बहत्तर हजार नाडियों में इडा १ पिंगला २ सुपुत्रा ३ गार्धारी ४ हस्तिजिह्वा ५ पूषा ६ यशस्विनी ७ अलंबुषा ८ कुहू ९ शंखिनी १० ये दश नाडियाँ हैं, इनमें इडा पिंगला के मध्य में त्रिगुणात्मिका सुपुत्रा रहती है, यह ब्रह्म-विष्णु-शिवात्मिका है। सुपुत्रा के मार्ग को रोक के कुंडलिनी नाडी स्थित है। ब्रह्मा इसी के पास में और त्रिणिणी (त्रिगुणा) सुपुत्रा के मध्यमें खाली स्थान में रहती है। इन नाडीसमूहों में जब तक कुंडलिनी नाडी जागृत न हो तब तक सब योगसाधन कृपा के समान ही है। जब यह कुंडलिनी नाडी जागृत होकर सुपुत्रा के द्वार को खोल कर सरल हो सुपुत्रा में प्रवेश करती है तब योगसाधन होता है। इसलिये प्रथम मूलाधार जो पदचक्र का प्रथम चक्र है उसमें कुंडलिनी का निवास रहता है उस कुंडलीका वर्णन इस प्रकार है—

कुंडली को कुंडलिनी, कुंडली, कुटिलांगी, भुजंगी, नागन, बालरंडा, शक्ति, ईश्वरी, और अरुंधती नाम से भी पुकारते हैं ।

गुह्यालिंगयोर्मध्ये अंगुलिद्वयमितस्थानं । तच्च शरीरस्थसकलनाडीनां मूलस्थानं । अत्र व-श-व-साक्षरयुक्तं स्वर्णवर्णं चतुर्दलपद्ममस्ति । तन्मध्ये इच्छा-ज्ञान-क्रिया-स्वरूपं त्रिकोणं वर्तते । तन्मध्ये कोटिसूर्यसमप्रभस्वयंभूलिंगमस्ति । अत्र पृथिवी वर्तते । तत्रैव मृणालसूत्रवत् सूक्ष्म-सार्धत्रिवलयकार-स्वयंभूलिंगवेष्टितविद्युत्तुल्यप्रभ-कुल-कुंडलिनी वर्तते । यथा—

मूलाधारे त्रिकोणाख्ये इच्छाज्ञानक्रियात्मके ।

मध्ये स्वयंभूलिंगं तु कोटिसूर्यसमप्रभम् ॥

तद्दक्षे हेमवर्णाभं वसवर्णं चतुर्दलम् ॥ १ ॥ (इति तंत्रसारः)

अथाधारपद्मं सुषुम्नाख्यलभं ध्वजाधो गुदोर्ध्वं चतुःशोणपत्रम् ।

अधोवक्त्रमुद्यत्सुवर्णाभवर्णैर्वैकरादिसातैर्युतं वेदवर्णैः ॥ १ ॥

अमुष्मिन्धरायाश्चतुष्कोणचक्रं समुद्भासि श्लाघकैरावृतं तत् ।

लघत्पीतवर्णं दडित्कोमलांगं तदंतः समास्त्रे धरायाः स्वर्दीजम् ॥ २ ॥

वज्राख्या वक्त्रदेशे विलसति सततं कर्णिकामध्यसेस्थम्

कोणं तत्रैपुराख्यं सडिदिद्व विलसत्कोमलं कामरूपम् ।

कन्दर्पो नाम वायुर्निवसति सततं तस्य मध्ये समंतात्

जीवेशो बंधुजीवप्रकरमभिहसन् कोटिसूर्यप्रकाशः ॥ ३ ॥

तन्मध्ये लिंगरूपिद्वतकनककलाकोमलः पश्चिमास्यो

ज्ञानध्यानप्रकाशः प्रथमकिसलयकाररूपः स्वयंभूः ।

विद्युत्पूर्णेदुर्विचप्रकरकरचयस्त्रिभुधसंतानहासी

काशीवासी विलासी विलसति सदिवावर्तेरूपः प्रकारः ॥ ४ ॥

अस्योर्ध्वे विपतंतुसोदरलसत् सूक्ष्मा जगन्मोहिनी

मद्गद्गारमुखं मुखेन मधुरं साञ्छादयंती सयम् ।

शंखावर्तेनिभा नवीनचपला माला विलासासदा

शुभा सर्पसमा शिरोपरिलसत् सार्धत्रिवृत्ताकृतिः ॥ ५ ॥

(तरवर्चितामणिः)

इत्यादि वचनों के भावार्थ पर से कुंडली मूलाधारस्थान में अर्थात् गुहा और लिंगके मध्यमें दो अंगुल प्रमाण का भगस्थान है, वह शरीरस्थ सकल नाडियों का मूलस्थान एक दालिस्त लम्बा और चार अंगुल चौड़ा शुभ्र और कोमल चेतनांबर (लपेटनेके पत्र) के समान (कंद) है । यहाँ चतुर्दल की आकृति का एक पद्म है उसमें चारों तरफ हैं उनमें व, श, स, ये चार वर्ण स्वर्ण के तुल्य देखीयेमान हैं । उद्य चतुर्दल पद्म में इच्छा ज्ञान क्रिया स्वरूप एक त्रिकोण है और वह पश्चिममुखी है अर्थात् पीछे

को मुख है ऐसे बंधनास में ही से ऊर्ध्वगमन होता है । इसी कर्णिका में शक्त मन नाबी रहती है और त्रिकोणमें शोडिशसंज्ञक शरभू त्रिग है यही कृष्ण है इसी पर कमल के तंतु के समान सूक्ष्म त्रिगुणसुखप्रमाणागी कुंडलिनी शरभू त्रिग को और सब नाडियों को घेरकर घाटे तीन आंठि देकर कुण्डिन आइति से आने मुख में पूं को दबाकर ब्रह्मद्वार (सुषुम्ना का द्वार) को आच्छादित करके बैठी हुई है । इसके जाग्रत करने पर जब यह सुषुम्ना के मार्ग से आना मुँह हटाती है तब ब्रह्मद्वार का कपाट खुलजाता है इसी कारण योगियों को इसके जानने और जगाने का प्रयत्न करते रहना चाहिये ।

अथवा यह कुंडलिनी नाबी सब नाडियों के ऊपर स्थित होकर मनिरूढ़ सब कर्णिका को आवृत करके ब्रह्मरूप के द्वारको सर्वदा रोके रहती है और सुषुम्ना के द्वार को बन्द किए रखती है । इसलिये प्राणवायु और अपानवायु को थोड़नेवाला अर्धवत् उत्तेजित करनेवाला जो पुरुष है वह उठ प्राण और अपानवायु की एकता से उत्तेजित हुई अग्नि से आवृत होकर मन और प्राण वायुसहित सुषुम्ना को सूचिततुन्याय से ऊपर लेजाता है, इनके ऊपर जाने से वह अपने इच्छित परमानंद को प्राप्त होजाता है ।

अथवा कुंडलिनी नाबी सोते हुए सर्प के समान है उसको जाग्रत करने के लिये पहिले अपानवायु और प्राणवायु से विधिपूर्वक धीवकी अग्निओं के स्वरूप को तैव करे उनकी तेजी से उसे जगाकर वह पुरुष व्योतिर्मय स्वरूप होकर सुषुम्ना मार्ग से आला में लय होजाता है ।

अथवा ब्रह्मासन (सिद्धासन) लगाकर हाथों से पावों की एही पकड़ कर कन्दसान को हठतासे दबावे और ब्रह्मासन से ही धोक्नी को कुंभक वायु से प्रचलित करे उसके प्रचलित होने से अग्नि प्रज्वलित होता है । उसकी गरमी से वह बालरंदा मुख फैला देती है उस समय में सुषुम्नाद्वारा ही योगीश्वर अपने स्वरूप के आनंद को पाते हैं ।

अथवा नाभिदेशमें सूर्य रहता है । उस का आकुंचन कर चार पद्मोपबंध मिल निर्भय होकर शक्ति (कुंडली) का चालन करे तो कुंडली कुछ ऊपर को खिचती है जिससे प्राणवायु स्वयं (आपही) सुषुम्ना में प्रवेश कर जाता है ।

सुप्ता गुरुप्रसादेन यदा जागर्ति कुंडली ।

(३३) तदा सर्वाणि पद्मानि भिद्यन्ते भ्रंशयोपि च ॥ १ ॥

(हठयोगप्रदीपिका)

क्रिया करने से गुरु की कृपासे जब सोती हुई कुंडली जाग्रत हो जाती (संपूर्ण पद्मक) मेदित होकर ब्रह्मभ्रंशि, विष्णुभ्रंशि, रुद्रभ्रंशि, ये तीनों भिद्यन्ते होजाती हैं ।

जैसे सूर्य में बार-बार शिरोया हुआ हो तो वह सूर्य कपड़े के अनेक स्तों में से तंतु ऊपर को निकल आता है उसको सूचिततुन्याय कहते हैं ।

उपरोक्त प्रकार से सुषुप्ता मार्ग में प्राण अपान दोनों मिलके प्रवेश करने के बाद, मेरुदंड के मध्य जो पट्टचक्र के स्थान की गाँठें सुषुप्ता में पहिले बता आये हैं उन ही पट्टचक्र की गाँठों को शनैः शनैः क्रमसे भेदते (छेदते) हुए (प्राण अपान मिलके) जब ब्रह्मरंध्रमें पहुँच गये तब सर्व भवसागर का दुःख छेदन (नाश) होगया और संशय तथा शोक नष्ट होगया और जिस शून्य सरोवर में अकथनीय गगन गर्जना का अलौकिक गंभीर नाद होरहाहै उसमें वास (निश्चल निवास) प्राप्त होगया ।

हंसा सुन होती मंझे मोती मुख बिन चूण चुगंदा है ॥

आतम ब्रह्मंडा एक अखंडा बिन रसना गावंदा है ॥ १३ ॥

अंबर घर आये ब्रह्म बधाये अनहद नाद घुरंदा है ॥

नोबत नीसाणा दिल दीवाणा याजा मेरि बजंदा है ॥ १४ ॥

१ नादकी चार अवस्था—

आरंभ घटथैव तथा परिचयोऽपि च ।

निष्पत्तिः सर्वयोगेषु स्यादवस्थाचतुष्टयम् ॥ १ ॥

१ आरंभावस्था—

ब्रह्मप्रत्येर्भवेद्भेदो ह्यानंदः शून्यसंभवः ।

विचित्रः कणको देहेऽनाहतः श्रूयते ध्वनिः ॥ १ ॥

हृदय स्थान के द्वादशदल अनाहत चक्र में ब्रह्मप्रति है । जब प्राणवायु के अभ्यास से सुषुप्ता मार्गद्वारा इस प्रंथी को प्राण भेदन करता है तब शून्य हृदयाकाश में आनंद हो जाता है और उस हृदाकाशोत्पन्न आनंद में विचित्र (नानाविध) प्रकार का आभूषण का नाद अर्थात् स्त्रियों के पाँव में पहनने के आभूषणों की मधुरध्वनि प्रवण होने लगती है इस को आरंभावस्था कहते हैं । जब आरंभावस्था प्राप्त हो जाती है तब वह पुरुष दिव्य देहवाला, तेजस्वी (प्रतापवान्) उत्तम मुग्धिवाला और रोगरहितदेहवाला होजाता है । और जब हृदाकाश में नाद का आरंभ होजाता है उस समय हृदाकाश, विशुद्धाकाश, और भ्रूमध्याकाश को योगीजन शून्य, अतिशून्य और महाशून्य पद के नाम से मानते हैं और उनके नाद का ध्वनन क्रमसे करते जाते हैं ।

२ घटावस्था—जब प्राणवायु हृदाकाशस्थ ब्रह्मप्रति को भेदन कर प्राण, अपान और नादबिंदु से मिलकर कंठस्थान के षोडशदल विशुद्धिनामक चक्र को जिसको मध्यचक्रगी कहते हैं और जो विष्णुप्रति का स्थान है इसको भेदन करता है तब परमानंद (ब्रह्मानंद) सूचक अतिशून्य नामक आकाश में अनेक प्रकार के नादों की

ध्वनि को समर्पन करनेवाली मेरीधीसी ध्वनि गुनाई देने लगती है और वह योगी द्वासन और पूर्व की अवस्था विशेष हानी देव के समान दिव्यदेहवाला हो जाता है। यह मध्यचक्र षोडशाधार का बंधक है

मध्यचक्रमिदं क्षेत्रं षोडशाधारबंधनम् ॥

जो पद्मक, षोडशाधार, द्विलक्ष्य और पंचाकारको नहीं जानता उसको योगसिद्धि कैसे हो सकती है—

पद्मकं षोडशाधारं द्विलक्ष्यं व्योमपंचकम् ।

खदेहे यो न जानाति कथं योगी स सिध्यति ॥ ३ ॥

इतनी बातें योगी को अवश्य जान लेना चाहिये—

पद्मक—१ मूलाधार, २ स्वाधिष्ठान, ३ मणिपुर, ४ अनाहत, ५ विशुद्ध, ६ आज्ञाचक्र ।

सोलह आधार—१ पग का अंगुष्ठ, २ मूलाधार, ३ गुह्याधार, ४ वज्रोली, ५ उरि-यानबंध, ६ नाभिमंडलाधार, ७ हृदयाधार, ८ कंठाधार, ९ द्रुमर्कंडाधार, १० जिह्वा-मूलाधार, ११ जिह्वा का अधोभागाधार, १२ अर्धदंत मूलाधार, १३ नासिकाप्राधार, १४ नासिकामूलाधार, १५ भ्रूमध्याधार, और १६ नेत्राधार ।

मतांतर से सोलह आधार—१ मूलाधार, २ स्वाधिष्ठान, ३ मणिपुर, ४ अनाहत, ५ विशुद्ध, ६ आज्ञाचक्र, ७ बिंदु, ८ अर्धेन्दु, ९ रोहिणी, १० नाद, ११ नादांत, १२ शक्ति, १३ व्यापिका, १४ शमनी, १५ रोहिणी, १६ ध्रुवमंडल ।

द्विलक्ष्य—१ बाह्यलक्ष्य (भ्रूमध्य तथा नासिकाग्र) २ आभ्यंतरीयलक्ष्य (मूलाधार-रिपद्मकों को अंतर्दृष्टि से देखना)

पांच प्रकार के आकाश—

पहिला—श्वेतवर्ण ज्योतीरूप आकाश ।

दूसरा—पहिले के भीतर धूम्रवर्ण ज्योतीरूप महाकाश ।

तीसरा—दूसरेके भीतर नीलवर्ण ज्योतीरूप महत्तत्त्वाकाश ।

चौथा—तीसरेके भीतर पीतवर्ण ज्योतीरूप महाशून्याकाश ।

पांचवाँ—चौथे में विजलीके वर्ण ज्योतीरूप सूर्याकाश ।

उपरोक्त प्रकार से शरीर में ६ चक्र १६ आधार २ लक्ष्य और ५ आकाश हैं इनको जो योगी नहीं पहिचानता उसको योगकी सिद्धि नहीं होती है ।

३ परिचयावस्था—जब प्राण ब्रह्मप्रथि और विष्णुप्रथि को मेदन कर भ्रूमध्यमें द्विदल आज्ञाचक्र को जो सर्वेश्वर का पीठस्थान है जिसमें रुद्रप्रथि है इस रुद्रप्रथि मेदन करता है तब भ्रूमध्याकाश (महाशून्याकाश) में प्राण पहुंचता है । कहते हैं । इसमें एक विशेष जानने योग्य मर्दल (एक प्रकार का पदती है, इस अवस्था में सहजानंद और सर्व सिद्धियों की

जब पट्टचक्रों को भेदन करता हुआ प्राणरूपी हंस शून्य सरोवर पर (त्रिकुटी में) पहुंच जाता है, तब वह सुन (निश्चल तथा शून्य स्थिति का) होजाता है और उस शून्य सरोवर में ब्रह्मानंदरूपी मोती का चून मुख के विना ही हंसरूपी प्राण चुगने लगता है (आनंदसादन करने लगता है) जिस से आरमा और अखिल ब्रह्मांड एकही मात्राम होने लगता है, इसलिये "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" "एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म" इत्यादि महावाक्यों का जो अर्थ है उसका ज्ञान प्राप्त होजाता है और विना जिह्वा के ("यतो वाचो निर्वर्तते अप्राप्य मनसा सह") "प्रज्ञानमानंदं ब्रह्म" इस प्रकार आनंददायक पद के गुण गाने लग जाता है ॥ १३ ॥

ऐसी स्थिति होने के पश्चात् जब प्राणरूपी हंस अंबर घर (ब्रह्मरूपी महा आकाश) में प्रवेश करता है और ब्रह्मसे साक्षात्कार होने में तत्पर होता है तब मानों उसको परब्रह्म की ओर से तदाकार वृत्ति करने को बधाने के लिये अनहदनाद बजने लगता है। जिसमें नोबत, निसाण, दिल, दिवाण, मेरी, मृदंग आदि अनेक बाजों का नाद सुनाई पड़ने लगता है ॥ १४ ॥

मन शिखर मिलिया त्रयगढ मिलिया पद चोथा पायंदा है ॥

अध मिल उर्धा पवन निरुच्छा ध्यान समाधि लगंदा है ॥ १५ ॥

अनाहतस्य शब्दस्य ध्वनिर्य उपलभ्यते ।

ध्वनेरंतर्गतं ज्ञेयं ज्ञेयस्यांतर्गतं मनः ॥ १ ॥

मनस्त्वत्र लयं याति तद्विष्णोः परमं पदम् ॥

(हठयोगप्रदीपिका प्र० उप० ४)

१ ध्यान और समाधि के लक्षणः—

ध्यान—

१ तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम् ।

माभि आदि देशों में ध्येय का जो ज्ञान होता है वह ध्यान है ।

२ ध्यातृ-ध्येय-ध्यान-कलना वद् ध्यानम् ।

ध्यान करनेवाला और जिसका ध्यान किया जाय तथा ध्यान इन तीनों का

प्रमेद जिसमें प्रतीत हो वह ध्यान कहलाता है ।

३ धारणयोग्यदेशे अर्चकतैलधारणवद् प्रवाहो ध्यानम् ।

और सूखे काष्ठके समान करवा होकर सर्व इंद्रियों को अपने वायु (वय) में करके नेत्रों को अचल दृष्टि से मुकुटी के मध्य में लगाकर बैठने को सिद्धायन करते हैं। यह सिद्धायन मोक्षद्वार के कपाट को भेदन करनेवाला (मुक्ति को देनेवाला) कहा है।

योगशास्त्र में इस ध्यासन का नाम सिद्धायन कहा है और इसको ही वज्रासन, गुप्तासन, गुप्तासन आदि कई नामों से पुकारते हैं। और फलसुप्ति में भी "मोक्ष-कपाटभेदनकम्" यह वाक्य कहकर "नारायण सिद्धसदृशम्" परमावधि लिखा है इससे प्रमाणित होता है कि इस के समान कोई अन्य ध्यासन नहीं है, परंतु इसकी जितनी महिमा वर्णन की है उतना उसका कारण नहीं बताया गया। यदि कारण बताया जाता तो इसकी महत्ता हृदयंगम होने से सिद्धायन की सिद्धियों का पता चल जाता। इसको परमोत्तम बताने का कारण जानने योग्य है इसका समिस्तर वर्णन नहीं मिलता है अत एव यहाँ उस का वर्णन करना आवश्यक जानकर किया जाता है।

"योनिस्थानकमंघ्रिमूलघटितं" इस पूर्वोक्त श्लोक में सिद्धायनसाधन की ५ बातें मुख्य मानी गई हैं—

१—योनिस्थान को हृदय से एड़ी से दबाना।

२—ठोड़ीको हृदयसे ४ अंगुल ऊपरवाले स्थानमें सुस्थिर (दृढ़) जमाना।

३—स्पाणु (काष्ठ) के समान सीधा कर्वा होकर बैठना।

४—संयमितेंद्रिय अर्थात् इंद्रियों को दमन करना।

५—नेत्रों को अचलदृष्टि से भ्रुकुटि के मध्यमें जमाना।

इन पांच बातों के करने से सिद्धायन होता है। इनका क्रमानुसार वर्णन इस तरह है।

पहिली—योनिस्थान को एड़ी से दबाने का प्रयोजन सुषुम्ना को जागृत करने का है। योनिस्थान (सीवन) में सुषुम्ना का ठीक विवरस्थान है। सुषुम्नाको सिद्ध करना ही योग का पर्यवसान है। इस ग्रंथ में श्रीहरिरामदासजी महाराजने फरमाया है—“सुषुम्ना की घाटी चढ़िया वाटी भरस घरों ठहरंदा है” तथा “सुषुम्ना शून्यपदवी मझरंभ्र-महापथः” इत्यादि वाक्यों से सुषुम्ना ही मोक्षपदवी है इसी सुषुम्ना के द्वारा पथिम योग ध्यानसाधक योगी का बंकनाल से ऊर्ध्वगमन होता है। सुषुम्ना के विवर में कुंडलिनी नाड़ी साढ़े तीन आंटे लगाकर कुटिलाकृति से सर्पिणी के समान अपने मुख में पूँछको दबाकर सुषुम्नामार्ग के द्वार (छिद्र) को रोके बैठी है जो योगीको सुषुम्नातक जाने देती नहीं है इसीलिये बाँये पाँव की एड़ी से योनिस्थान को हृदय दबाने से मूल-बंध होगा और अगान वायु की ऊर्ध्वगति होगी जिससे एक प्रकार की प्रबल ऊर्मा उत्पन्न होती है उसी के कारण वह योनिस्थानस्थ कुंडलिनी जागृत होकर सुषुम्नामार्ग को अपना मुख हटाकर रास्ता दे देती है। जिससे योगीलोग सुषुम्नामार्ग में प्राण अगान को प्रवेशकर अपने स्वरूप के आनंद को प्राप्त होते हैं।

दूसरी—हृदय में चिबुक को हृदय से जमाने की है—उससे जालंधरबंध होता है। जालंधरबंध होने से प्राण वायु की गति अयोगामिनी होती है और प्राण अगान

वायु से मिलकर सुषुम्ना के द्वार में प्रवेश करने योग्य हो जाता है इस कारण हृदयमें चिबुक (टोरी) को दबता से जमा के बैठने के लिये लिखा है ।

तीसरी—स्थाणु के समान सीधा बैठना=उत्सका प्रयोजन है, कि सीधा अकड़ कर बैठने से श्वासोच्छ्वास की गति बराबर सीधी आने जाने से सुषुम्ना में प्रवेश होने में कठिनाई नहीं पड़ती, तथा अन्य किसी नाड़ी में प्राण अपान प्रवेश नहीं कर सकते अगर (ऋजुकाय नहीं बैठने से) अन्य नाड़ी में वायु प्रवेश हो जावे तो मृत्यु तथा महाव्याधियों का उत्पन्न होना संभव है ।

सर्वं कायशिरोशीवं धारयन्नचलं स्थिरः ।

संप्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन् ॥ १ ॥

प्रशांतात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिप्रते स्थितः ।

मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत् मत्परः ॥ २ ॥

श्रीमद्भगवद्गीता के उक्त श्लोकों में भी ऋजुकाय (सीधा अकड़कर) बैठकर योगाभ्यास करने के लिये लिखा है जिससे कुंभकादि साधन अच्छी तरह से हो जाय ।

और प्राण अपान वायु दूसरी नाड़ियों में प्रवेश न करे इसी कारण स्थाणु पद देकर भी सिद्धासन में बैठना लिखा है । सब पूछो तो एक सिद्धासन ही सर्व योगसाधन की कुंजी है । इसीलिये सिद्धासन मोक्षद्वार के किवाड़ तोड़ने का बड़ा मन्त्रासन है ।

चौथी—इंद्रियों को कायू में रखकर बैठने की है । अगर इनको स्थापित न की जाय तो मन स्थिर नहीं होगा और इसके स्थिर न होने से योग की सिद्धि प्राप्त करना भी असंभव है । अतः इंद्रियों का दमन करना ही पहिला काम है ।

यततो ह्यपि शीतेय पुरुषस्य विपथितः ।

इंद्रियाणि प्रमाथीनि हरेति प्रसभं मनः ॥ १ ॥

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत् मत्परः ।

वसे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ २ ॥ (श्रीमद्भगवद्गीता)

इंद्रियों के दमन करने के लिये प्रयत्न करनेवाले सिद्धान्त के नी मन को हे कुंतीपुत्र । ये प्रबल इंद्रिया बलात्कार से मनमानी और खींच ले जाती है । अतएव इन सब इंद्रियों का संयमन कर युक्त अर्थात् योगयुक्त और मत्परायण होकर रहना चाहिये । इस प्रकार जिसकी इंद्रिया अपने स्थापित हो जाय (बहना चाहिये) उस की बुद्धि स्थिर होगी ।

ऐसा स्थिर बुद्धि होकर बैठने के लिये ही "संयमितेन्द्रिय" यह पद सिद्धासन में दिया है ।

इतना तो साहस हो ही गया है कि इंद्रियों का बेग बना ही बलवान् होता है परन्तु इनमें भी सिद्ध और रहना दो इंद्रियों बड़ी प्रबल हैं प्रायः इन्हीं से संशान्ति

और चपलता होती है। इन नाभियों का स्थान पोंव के पीछे बाहर की तरफ टखने और नट्टे के बीच में है। जो यहाँ से ये नाड़ियों पिछली और जंघा में से ऊपर चो जाती हैं। और इन्हीं से इन्द्रियों को प्रबलता प्राप्त होती है। (बाह्यरोग भी सैतान आदमियों की इन नाभियों को काट देते हैं जिससे उनकी ये इन्द्रियाँ विकम्पी हो जाती हैं) योगमें इसके लिए बहुत ही सरल उपाय बताया गया है। जिससे किसी प्रकार की तकलीफ न हो और वे प्रबल इन्द्रियें स्थायी हो जाती हैं। योगिपुत्र श्रीजैमलदासजी महाराज ने सिद्धासन में भी एक नया लक्षण दिखाया है जिससे ये प्रबल इन्द्रियाँ स्वयं बिना कठिनाई के स्थायी हो जाती हैं—

“जंपनपर कर धारि के वे सम आसण चितलाय”

अर्थात् हठयोगप्रवीणिका के अनुसार ही सिद्धासन कर के बैठे परंतु दोनों हथेलियों के तलवों को जाँघोंपर धारणा करो। तात्पर्य यह है कि हथेली तलके दबाव से एक प्रकार की विद्युत् शक्ति उत्पन्न होती है यह सर्व शरीर में अपने प्रभाव का प्रसार कर उन प्रबल इन्द्रियों के वेग को दमन कर अपने स्थायी कर लेती है। अतएव सिद्धासन से बैठकर सर्व इन्द्रियों का दमन और मन को समाहित करने के लिये दोनों हाथों की हथेलियों को जोर से जाँघों पर जमा कर बैठना चाहिये।

पाँचवीं—नेत्रों को अचलदृष्टि से झुकुटी के मध्य जमाकर बैठने की है। ऐसा करने का मुख्य प्रयोजन मन की चंचल वृत्ति को स्थिर करना और ध्येय में तन्नीतता प्राप्त कर समाधि अवस्था प्राप्त करना है।

भ्रूमध्यस्थान में नेत्रों को अचल दृष्टि से जमा कर बैठने से खेचरी नामकी मुद्रा होती है।

सूर्याचन्द्रमसोर्मध्ये निरालम्बांतरं पुनः।

संस्थिता व्योमचके या सा मुद्रा नाम खेचरी ॥ १ ॥

(हठयोगप्रवीणिका)

अर्थात् इका विंगला नाडी के बीच में निरालम्ब भ्रूप्रदेश (आकाशस्थान) में मनो-वृत्ति स्थित हो जाने को खेचरी मुद्रा कहते हैं।

इस खेचरी मुद्रा के अभ्यास से उन्मनी अवस्था स्वयंसिद्ध हो जाती है।

“अभ्यस्ता खेचरी मुद्राप्युन्मनी संप्रजायते”

इसलिये खेचरी का एक भेद उन्मनी है ऐसा कह सकते हैं।

शंखदुंदुभिनादं च न शृणोति कदाचन।

काष्ठवजायते देह उन्मन्यावस्थया ध्रुवम् ॥ १ ॥

उन्मनी अवस्थामें असंप्रज्ञात निर्विकल्प समाधि के लक्षण हो जाते हैं इससे चतुर्थपद की प्राप्ति होती है।

चतुर्थ पद के लक्षण—

ध्रुवोर्मध्ये शिवस्थानं मनस्तत्र विलीयते ।

शातव्यं तत्पदं तुर्यं तत्र कालो न वियते ॥ १ ॥

भ्रूमध्यस्थान में शिव का स्थान है उसमें जब मन विलीन हो जाता है तब तुर्य पद (चतुर्थपद) प्राप्त हो जाता है ऐसा जानो । इसमें कोई कालकी (समयकी) अवधि नहीं है । क्योंकि भ्रूमध्यस्थानमें अचलदृष्टि जमाके मनको उसमें विलीन करनेसे ही चतुर्थपद की प्राप्ति होती है । इसीलिये सिद्धासन में अचल दृष्टिसे भ्रूमध्यको देखना बतलाया है ।

रामकेशिचंद्रप्रदायके आदि योगिराज श्रीजैमलदासजी महाराज ने मी चाचरी अगोचरी मुद्रा को इंगितकर यही बात कही है—

“निरत धरे निजनासिका वे मुनमें सुरत समाय”

अर्थात् निज नासाग्रभाग पर दृष्टि जमा के स्थिर होने को चाचरी मुद्रा कहते हैं । गीताजी में मी इसीको जमानेका लिखा है—

“संप्रेक्ष्य नासिकामं स्वं दिशस्थानवलोकयन्”

तथा “मुनमें सुरत समाय” इस पदसे चौथी अगोचरी मुद्रा बताई है ।

मुद्रा पांच होती हैं—

चाचरि, भूचरि, खेचरी, और अगोचरि नाम ।

उन्मनि मिल यह मुद्रिका, पंच लखहु मुखधाम ॥ १ ॥

अब मुन मुद्रा पंचविध, प्रथम खेचरी होय ।

मुखमें सास निवास है, बडवे जीम विलोय ॥ २ ॥

दूसरि मुद्रा भूचरी, नासा आसु निवास ।

प्राणापान जुयी जुयी, पर देवे इक पास ॥ ३ ॥

तीसी मुद्रा चाचरी, वसे हगन विच सोपि ।

नासा आगे दृष्टि धरि, देखे अचरज कोपि ॥ ४ ॥

चौथी मुद्राऽगोचरी, करत धवणमें बाय ।

हान सुरत इक होत है, अनहद शब्द प्रकारा ॥ ५ ॥

पांचवी उन्मनी मुद्रा है जिसका स्थान दशमद्वार है, इसकी सिद्धिके लिये ही तो सब कुछ करना पड़ता है । समाधि की सिद्धि इही से ही होती है । यह स्वयं समाधिकरूप है । इस प्रकार पांचों मुद्राओं का साधन सिद्धासन से सिद्ध होता है । ये पांचों मुद्रा निखल दृष्टि से नासांत (भ्रूमध्यभाग) वा नासाग्रभाग में दृष्टि जमाने से सिद्ध होती है । अतएव भ्रूमध्यमें निखल दृष्टि जमा के सिद्धासन में बैठने से सर्व मुद्रा सिद्ध होना बतलाया है । उपरोक्त पांचों बातों को लक्ष्य में रखकर देखा जाय तो सिद्धासन कोई साधारण नहीं है, क्योंकि योगशास्त्रमें साश्रुत और मोक्षशर के कण्ठ का मेरु कर सिद्धिदा दाता यही कहा है, इसलिये ऐसा विश्वास है कि जिसको

केवल यह सिद्ध हो जाता है, यह परमपदका भागी होता है। इस प्रकार सिद्धान्त लगाकर पश्चिमध्यानाभ्यासी योगी बैठे और मुग्धसे राममंत्र का जा करता हुआ रचना १ कंड २ हृदय ३ नाभि ४ इन चार स्थान में क्रम से प्राणों का निरोध करे। प्रथम पूर्व ध्यान जो नाभि से छीधा हृदयादि स्थान में होकर त्रिकुटीदेश में जाता है वहीं प्राटक ध्यान होता है।

पूरब ध्यान ममा जब ताटक ।

रूला राहज गगन का फाटक ॥

धूमध्य में प्राण के रकने को प्राटक कहते हैं, यह होने के पश्चात् क्रम से त्रिन जिन स्थानों में होता हुआ ऊपर गयाया उन्हीं स्थानों में से होता हुआ नीचे नारी में धाकर पाताल में (आधार चक्र से नीचे के अंगों की पातालसंज्ञा मानी है, जैसे कटिप्रदेश को अतल, लिंगप्रदेश को वितल, गुह्यप्रदेश को सुतल, अंधाप्रदेश को तलातल, गुल्फप्रदेशको रघातल, पादप्रदेश को मह्यतल, पादतल को पाताल माना है) जाकर फिर बंक्रनाल में पृष्ठ वंशांतरगत सुपुत्रा में प्रवेश होकर नेरुदंड में जो २१ प्रंथियाँ हैं उनकी छेदन करता हुआ पृष्ठ त्रिकुटी में पहुँच कर सुपुत्रा नारी के द्वारा दशमद्वार (ब्रह्मरंध्र) में प्रवेश करता है। तब योगी जीवन्मुक्त हो जाता है। त्रिकुटी तक तो माया तथा मृत्यु है।

त्रिकुटी तौई रामदास, पड़े काल की पात ।

त्रिकुटी पहुँता सुन गया, जाकी पूरण बात ॥ १ ॥

मन मनसा का रामदास, त्रिकुटी तौई सूत ।

आगे केवल ब्रह्म है, जहाँ माया नहीं भूत ॥ २ ॥

रामदास वीसोवरण (१८२०), तामें काती मास ।

ता दिन छौंढी त्रिकुटी, किया ब्रह्म में वास ॥ ३ ॥

(श्रीरामवाक्यम्)

इस प्रकार ध्यान करने को पश्चिमध्यान कहते हैं इस ध्यान को करनेवाले मुक्त हो जाते हैं। एवं ध्येय का ध्यान करते करते जब ध्याता की वृत्ति अमेदात्मक स्थिर हो जाती है तभी समाधि अवस्था प्राप्त होती है।

२ समाधि—

१ तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः ।

२ धातु-ध्येय-ध्यान-कलनाषद् ध्यानं तद्रहितं समाधिः ।

ध्यान अर्थ मात्र रहजाय और स्वरूप शून्यसा प्रतीत हो उसे समाधि कहते हैं। ध्येय में एकाग्रचित्तवृत्ति की स्थिति को समाधि कहते हैं। इस स्थिति में ध्याता (योगी) ध्यान (चितवन) ध्येय (वस्तु) इन त्रिपुटी की कल्पना जिसमें हो वह अविकल्प तथा संप्रज्ञात समाधि कहाती है। और जिसमें ध्यातु आदि त्रिपुटी का

स्फुरण तक नहीं हो वह निर्विकल्प समाधि तथा असंप्रज्ञात समाधि कहाती है । उसके लक्षण योगशास्त्र में ये हैं ।

सलिले सैधवं यद्वत् सात्म्यं भजति योगतः ।

तथात्ममनसोरैक्यं समाधिरभिधीयते ॥ १ ॥

अर्थात् जिस प्रकार जलमें सैधव (नमक का टुकड़ा) एकरूप हो जाता है इसी प्रकार योगी समाधि अवस्थानमें आत्मा और मनकी एकता को प्राप्त हो ब्रह्ममें लीन हो जाता है । और उसको देहसंबंधी कुछ भी ध्यान नहीं रहता उसी को समाधि अवस्था कहते हैं ।

यह समाधि दो प्रकार की होती है ।

एक जड़समाधि, दूसरी चेतनसमाधि.

चेतनसमाधि के दो भेद हैं.

एक पिपीलिकामार्ग, दूसरा विहंगममार्ग.

विहंगममार्ग के भी दो भेद हैं—

एक युंजानयोगी, दूसरा युक्तयोगी.

परंतु ये सब भेद संप्रज्ञात तथा असंप्रज्ञात समाधिके अंतर्गत आचुके हैं । अतएव मुख्य समाधि दो प्रकार की ही हैं

समाधि के पर्यायवाचक शब्द १५ हैं—१ राजयोग २ समाधि ३ सन्मनी ४ मनउन्मनी ५ अमरल ६ लय ७ शून्याशून्य ८ परंपद ९ अमनस्क १० अद्वैत ११ निरालंब १२ निरंजन १३ जीवन्मुक्ति १४ सहजावस्था १५ तुर्या ।

समाधि का दूसरा क्रम स्कंदपुराण में इस प्रकार लिखा है ।

एकधासमयी मात्रा प्राणायामे निगच्छते ।

प्राणायामद्विषद्वेन प्रत्याहार उदाहृतः ॥ १ ॥

प्रत्याहारद्विषद्वेन धारणा परिचीर्तिता ।

भवेदीश्वरसंगतौ ध्यानं द्वादशधारणम् ॥ २ ॥

ध्यानद्वादशकेनेव समाधिरभिधीयते ।

यत् समाधौ परं पयोतिरनंतं स्वप्रकाशकम् ॥ ३ ॥

प्राणायाम में एक श्वास की मात्रा ।

बारह प्राणायाम का एक प्रत्याहार ।

बारह प्रत्याहार करने से एक धारणा ।

बारह धारणा का साधन करने से एक ईश्वर से संगति प्राप्त करनेवाला ध्यान प्राप्त होता है ।

इस प्रकार के ध्यान बारंबार करने से एक समाधि होती है । इस समाधि अवस्थामें परमगन्धि अनंत स्वप्रकाशमय परमद्वय परमात्मामें लडयना प्राप्त हो जाती है ।

धारणा पंचनाडीभिर्घ्यानं पट्टिकनाडिकम् ।

दिनद्वादशकेन स्याद्यमाधिः प्राणसंयमान् ॥ १ ॥ (गोरक्षरदिति)

निर्गुणो ध्यानसंपन्नः समाधिं च ततोऽभ्यसेत् ।

दिनद्वादशकेनैव समाधिं समवामुयात् ॥ १ ॥ (मार्कंडेयपुराण)

पद् भ्रासा की एक पल, इत्ता साय रो साय ।

छठे महीने खेतली, मुरति मेह खड जाय ॥ १ ॥ (खेतलीयोगीराज)

ऐसी दशा प्राप्त होने का मुख्य साधन योग है। इस विषय के संबंध में पढ़िये बहुत कुछ लिखा जा चुका है उससे जो कुछ अवशिष्ट रह गया है वही का दिग्दर्शन संक्षेप से यहां कराया जाता है।

योग का सब खेल यथावत् मन और वायु के ऐक्य होनेसे ही सिद्ध होता है। क्योंकि जब इनकी एकता होगी तब चित्त एकत्र होकर जिस काम में लगेगा तो वह कार्य अवश्य ही सफल होगा। भगवान् पतंजलि ने भी योगदर्शन में लिखा है।

१ योगक्षिप्तवृत्तिनिरोधः ।

२ मुज्यतेऽसौ योगः ।

चित्त की वृत्ति के निरोध को योग कहते हैं । १ ।

जो युक्त किया जाय उसको योग कहते हैं । २ ।

योग दो प्रकार का होता है—

एक हठयोग और दूसरा राजयोग ।

हठयोग में आसनाभ्यास की तथा आप्तहयुक्त और हठयुक्त नियमों की प्रधानता होती है ।

राजयोग में ध्यानधारणाद्वारा मनःसामर्थ्य बढानेका महत्त्व विशेष है तथा आत्मशक्ति का अनुभव लेना मुख्यतया होता है इन दोनों में से राजयोगकी प्रशंसा अधिक की है। राजयोग को ही सहजयोग, सहजावस्था और समाधि कहते हैं। सर्व हठयोग के उपाय राजयोगकी सिद्धि के लिये ही किये जाते हैं जब राजयोगसिद्ध हो जाता है तो पुरुष मृत्यु को भी जीत लेनेवाला हो जाता है।

सर्वे हठलयोपाया राजयोगस्य सिद्धये ।

राजयोगसमारूढः पुरुषः कालवंचकः ॥ १ ॥

अतएव राजयोग ही योगों में प्रधान माना गया है ।

योग के अष्टांग

१ यम, २ नियम, ३ आसन, ४ प्राणायाम, ५ प्रत्याहार, ६ धारणा, ७ ध्यान, ८ समाधि ।

यम—१ अहिंसा २ सत्य ३ अस्तेय ४ ब्रह्मचर्य ५ अपरिग्रह ।

नियम—१ शौच २ संतोष ३ तप ४ स्वाध्याय ५ ईश्वरप्रणिधान ।

ऐसे अनहद नाद को श्रवण करता हुआ मन जब ब्रह्मरंभ में प्रवेश कर परब्रह्म से मिलजाता है तब त्रिगद अर्थात् हृदय, कंठ, ब्रूमध्य, स्थानस्य तीनों प्रबल अंथिरूप गद (किले) को भेदकर ब्रह्मपद, विष्णुपद और रुद्रपदरूपी तीनों पदसे भी पर परब्रह्मरूपी चौथे परमानंद पद को प्राप्त हो जाता है । इस प्रकार से जब अपानवायु प्राणवायु से मिलकर कुंभकद्वारा निरुद्ध होता है तब चित्तका ध्यान उस परब्रह्म परमाला की ओर लगने और ध्येयाकार वृत्ति प्राप्त होने से समाधि लगाने की अवस्था प्राप्त हो जाती है ।

अष्टादशसु यद्वायोर्मर्मस्थानेषु धारणम् ।

स्थानात् स्थानात् समारूष्य प्रत्याहारो निगद्यते ॥ १ ॥

धारणा—एक लक्ष्य पर वा ध्येय पर चित्तवृत्ति स्थिर करने को कहते हैं । यह धारणा ५ प्रकार की है—१ संमनी २ दाहिनी ३ दाहिनी ४ शोषणी ५ भ्रामणी । ये पृथिव्यादि पंचभूतों की है । शरीर में इनके ये स्थान हैं

१ पादादिजातुपर्यंत पृथिवीस्थानमुच्यते ।

२ आक्रानोः पायुपर्यंतमपांस्थानं प्रकीर्तितम् ॥ १ ॥

३ आपायोर्हृदयान्तं यद्रहिस्थानं तदुच्यते ।

४ हृन्मध्यात्तु भ्रुवोर्मध्ये यावद्वायुकुलं भवेत् ॥ २ ॥

५ आग्रमध्यात्तु मूर्धान्तमाकाशस्थानमुच्यते ॥

इन पांचों स्थानों में पांच पांच घटिकापर्यंत प्राण रोक कर मन्नादि देवता का ध्यान करने से भूमि आदि पांच तत्वों का जब हो जाता है ।

ध्यानः—तत्र प्रत्ययैकानना ध्यानम् ।

समाधिः—तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपद्रव्यमित्थं समाधिः । इनके विनाय नेत्री, शोली, ब्रह्मरंतव, गजहर्म, नाडी, बली, गणेशकिया, कर्गीचर्म, शंखारानी, शरक आदि साधन तथा १ महासुश २ बंधसुश ३ महापेसुश ४ खेवरीसुश ५ उषिसुश ६ मूलबंधसुश ७ जातंधरसुश ८ विग्रीतकरणीसुश ९ बज्रोलीसुश १० र्ध्वंसीसुश ये दस महासुश हैं । इनका साधन करने से विनमो छाति प्राप्त होती है । और कदाकदा भी छीप प्राप्त होती है इनका विस्तारपूर्वक वर्णन "सोरसाद्री" "हृत्कोणरिक्त" "रिक्तोन्निर्ह" आदि योग के ग्रंथों में देखिये । इन पूर्वोक्त साधनोंके अन्तर्गतसे कदाकदा प्राण होती है ।

आज कल के भूत शोली पत्नी शरीरदुर्दिर्द्वैक आत्मनुभव के त्रिने नदी सिद्ध कोषमध्याय के त्रिने केवल नेत्री, शोली, ब्रह्मरंतव, उषिसुश, शरक आदि विना

धरिया नहीं धारुं अधर आधारुं सहजाँ सेवकरंदा है ।
 दशमें मिल द्वारी छाई तारी अम्भर धींद परंदा है ॥ १६ ॥
 मनधा धिर पचना पांचूं दमना प्याला अजर पिबंदा है ।
 निरमल जहां नूरा उदय अंकुरा परमानंद परसंदा है ॥ १७ ॥
 तिरवेणी छाजे ब्रह्म विराजे निरभै राज करंदा है ।
 शिलमिह्रा जोती ओत रु पोती जीव रु शीय मिलंदां है ॥ १८ ॥

जब समाधि अवस्था प्राप्त होती है उस समय नाम रूप धारण करने-
 वाले सगुण ब्रह्म की ध्यान धारणा मिटजाती है । और नाम रूप रहित
 निरंजन निराकार परब्रह्म परमात्मा का आश्रय (अवलंबन) प्राप्त कर
 स्वतः स्वाभाविक रीति से ही (आपसे आप) सेवा करने लगता है । एवं
 दशम द्वार (ब्रह्मरंभ्र) में मन और प्राण मिलकर अमर बीद (परम पुरुष

दिखाकर योगकी बढी बढी झीमें मारते हैं । उन फरीं बाजोंको योगी मत समझो, ये
 तो पैटभराई का रस्ता इन्होंने निकाल लिया है । इन धूर्तचालाक योगियों के फन्दे में
 आगये तो जर और जान दोनों से ही हाथ धो बैठोगे, विषाय लोकमान्यताके खाली
 इन दिखाने की क्रियाओं में क्या पड़ा है—

मनकी सिटी न वासना नवतत कियो न भास ।
 तुलसी केते पचिमरे देदे तनकों प्रास ॥ १ ॥
 पाणीमांही परगटी पावैक एक प्रचंड ।
 सातै द्वीप सावत रखा दरभभया नर्वखंड ॥ २ ॥

यदि आपको इसकी चाट लग गई है अभ्यास करना चाहते हैं तो चेटकमेटक बातें
 बनानेवाले पुष्टपुष्टियों के कथन को छोड़कर अच्छे भजनानंदी योगिराज सद्गुरु की
 तलाश करो कि जिस गुरु के पास अभ्यास करने से अपना जन्म सफल कर आप
 कृतकृत्य होजाय ।

(टिप्पणीकार)

१ जाप न अजपा जई नहीं, तहँ नहीं सास उसास ।
 हरिया जीव रु शीव का, एक अखंभी वास ॥ १ ॥

(हरि० वाक्यम्)

इसी अवस्था को निर्विकल्प समाधि कहते हैं ।

परमात्मा) का करमेलन करता है। मानों मन प्राणरूपी स्त्री ने परब्रह्म-रूपी वरसे कर मेलन (हथ लेवा जोड़) कर विवाह किया है ॥ १६ ॥

मन की गति स्थिर होजाती है तब पांचों ही पवन (प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान नाम के वायु) दमन (वशीभूत अथवा काबूमें) होजाते हैं। और अजर प्याला (ब्रह्मानंद रूपी प्याला) पीने लगजाते हैं। जहाँ निर्मल निर्विकार शुद्ध सच्चिदानंद स्वरूपी नूर (ज्योति) के दर्शन का अंकुर उदय होता है तहाँ परमानंद परब्रह्म की प्राप्ति होती है ॥ १७ ॥

जहां त्रिवेणी (त्रिकुटी स्थान) पर परब्रह्म विराजमान होकर निर्भय राज्य करता है उसी की झिलमिलज्योति (प्रकाशमानज्योति) में जीव और शिव (ब्रह्म) तिलमें तैल के समान ओतप्रोत होकर मिल जाते हैं ॥ १८ ॥

हरि हीरा पाया विणज हलाया तोल न मोल लहंदा है।

हरि हीरा होती पारख कोती थोट न चोट चढंदा है ॥ १९ ॥

मन पंचे रहता मुखा न कहता अंतर लिय लावंदा है।

मुघ धुध को विसरी सुरत न निसरी पूरण ब्रह्म अनंदा है ॥ २० ॥

जीयत जहाँ मुक्ती शिचमिल शक्ती जन्म न फेर मरंदा है।

अम्मी रस पीया जुगजुग जीया खालिक मिल खेलंदा है ॥ २१ ॥

हरिरामदासजी महाराज ने फरमाया कि मैंने ध्याता ध्यान ध्येय इस त्रिपुटी के ऐक्यतारूपी अनमोल हीरे को पाया फिर उसका विणज (व्यापार) शुरू किया तो न तो तोल ही ज्ञात हुआ और न मोल ही ज्ञात हुआ (अर्थात् अतुल अमूल्य है) इस हीरे की परीक्षा कठिन है। यह हीरा ऐसा प्राप्त हुआ कि जो न तो कमी खोटा होवे न कमी थोट ही चढने का प्रसंग आवे ॥ १९ ॥

पंच=पंचायत में बैठकर निर्णय करनेवाला विचार करता जैसे मध्यस्थ पुरुष होता है वैसे ही इस शरीर में अंतःकरण का अगुया मन-

रूपी पंच है उस हीरे की परीक्षा करनेवाला रहते हुए भी वह (मन) अपने मुखसे कुछमी वर्णन नहीं कर सका और भीतर ही भीतर लो लगादी और सब सुध बुध भूलगया, परंतु जो सुरत पूरण ब्रह्म आनंदरूप में बस गई थी वह नहीं निकली ॥ २० ॥

शिव और जीव का योग (मेल) सुपुत्रा में जहाँ हुआ बस यही जीवन्मुक्ति है और इसीसे जन्म मरण का फेरा मिट जाता है और अमृत-रस का पान कर युगोयुग जीवित रह अखिल ब्रह्मांड के स्वामी सच्चिदानंद आनंदकंद पूरण परब्रह्म परमात्मा से मिलकर खेलता रहता है ॥ २१ ॥

द्वंसा परद्वंसा एको अंता सुन पर सुन सोद्वंदा है ।

उड़े विन पंखा मिले असंखा पार न को पावंदा है ॥ २२ ॥

जाहर जुग जोगी है अणभोगी ओघट घाट रमंदा है ।

नाथन के नाथू मस्तक हाथू शिव प्रह्ला सेवंदा है ॥ २३ ॥

हरिजन हरि जाणी वेद बखाणी शेष विष्णु ध्यावंदा है ।

धरिया अवतारू अनंत न पारू रहता एक रहंदा है ॥ २४ ॥

जब आत्मा और परमात्मा दोनों एकरूप होकर परम शून्य स्थानमें विराजमान (सुशोभित) होते हैं अर्थात् आत्मा परमात्मा में तदाकार हो जाता है तब उसको विना पंख के उड़नेकी सामर्थ्य प्राप्त हो जाती है । ऐसे अनगिनत आत्मा इस प्रकार लय होजाते हैं जिनका कोई पार नहीं है ॥ २२ ॥

जाहिरात में (प्रकटरूपमें) योगाभ्यासी योगी जान पड़ता है, परंतु अभोक्ता होकर वह औषट घाट में रमता रहता है । जिस के मस्तक पर ईश्वर के भी ईश्वर परमेश्वर का हाथ होजाता है । (परब्रह्म परमात्मा की जिसपर पूर्ण कृपा होजाती है) उसकी शिव ब्रह्मादि सर्व देवता सेवा करने लगजाते हैं ॥ २३ ॥

पेद कहते हैं जिनका शेष और विष्णु ध्यान करते हैं उन मगवान् को हरि के जनों ही ने जाना है । जिसने अनेक अवतार धारण किए जिसका न आदि है और न अंत है और जो सर्वदा एकही रहता है ॥ २४ ॥

भंतः नदि करणू घाल न तरणू गूद न को घरपंदा है ।
 पापाण न पाती छाप न ताती धान न भान घपंदा है ॥ २५ ॥
 भणघड़ भज्जातू मात न तातू निराकार निर्देवा है ।
 हाट न कोइ शहरू विणज न घोहोरू शरख न को गूदंदा है ॥ २६ ॥
 सूर नदि सती जोग नं जती जरा न जम पूजंदा है ।
 तीरथ नदि घरतू आम न धरतू अकल कला आपंदा है ॥ २७ ॥
 नारि न को पुरुषा चतुर न मूरगा येइ न चार चचंदा है ।
 अनुभव पद घोल्या अंतर घोल्या विधि विरला घूसंदा है ॥ २८ ॥

जिसके अंतःकरण (मन, बुद्धि, चित, अहंकार) नहीं हैं। और जो न बालक, न तरुण, (जवान) न वृद्ध है न आयुवाला है। और जो न पापाण न पत्ता है और तप्तमुद्रा भी जिसके नहीं है और न जिसके कोई स्थान है न आन है ॥ २५ ॥

वह अनपढ़ (आकाररहित) अजात (अजन्मा) माता-पिता-रहित है। जो निराकार निर्देवस्वरूप है। उसका न कोई शहर है न कोई दुकान है। न वाणिज्य करनेवाला है न लेन देन करनेवाला वोहरा है। न उसके खरच है न कभी उसके खूट ही आती है ॥ २६ ॥

न वह शूर है न सती (दानादि देनेवाला) है, न वह जोगी है न जती है, और जिसके पास न कभी जरा (बुढापा) और जम (मृत्यु) पहुंच सकते हैं। न वह तीर्थ है न कोई व्रत है। न आकाश है और न धरती (पृथ्वी) है अर्थात् निरंजन निराकार निर्विकल्प निर्गुण आदि-मध्यांतररहित वह अजन्मा और अकल है और कला का देनेवाला है ॥ २७ ॥

न स्त्री है न पुरुष है न चतुर है न मूरख है और चारों वेद भी जिसकी महिमा नहीं बांच सकते हैं और नेति २ कहते हैं। यह अनुभव की वार्ता जो गुप्त थी उस को पदों में और छंदों में प्रकट की है जिसकी विधि कोई विरला ही समझ सकता है ॥ २८ ॥

मिलिया शुरु भादू पाय अनादू पूरघले लेखंदा है ।

जाण्या ह्रम जैसा कहिये कैसा कहु इक मन सरमंदा है ॥ २९ ॥

कायम कुरवाणी कर आसाणी तुहि तुहि काम कमेंदा है ।
तुही हे रामा तु ही रहीमा जन हरिराम जपंदा है ॥ ३० ॥

पूर्व जन्म के लेख से आदिगुरु मिलगये और उनकी कृपा से अनादि रूप को पाया (जाना) जैसा हमने जाना है उसको कैसे वर्णन किया जाय ? क्योंकि वह अवर्य है इसलिये मन बतलाने में कुछ संकोच करता है ॥ २९ ॥

यदि उपरोक्त विधि से स्थिर होकर अपने को इस पर कुर्बान कर-
दोगे तभी आसानी से सफलता प्राप्त करोगे । ग्रंथ की समाप्ति में श्रीहरि-
रामदासजी महाराज ईश्वरके प्रति प्रार्थना करते हैं कि हे भगवन् ! आपही
राम हो आपही रहीम हो और जो कुछ हो सो आप ही आप हो ॥ ३० ॥

॥ इति श्रीहरिरामदासजी महाराजकृतनिष्ठानी संपूर्णा ॥

पद.

- १ भाई नाम ससहीने बैसी रहिये आत्मा चीन्हीने मनमा भगन घईये । टेक
रामने रहिमान तमे एक कर जानज्यो कृष्ण ने करीम एक कहिये ।
विष्णु विस्मिता में भेद नथि भाई अलख अलख एक लहिये ॥ १ ॥ भाई० ॥
- गहूर गोविंद तमे एक कर जानज्यो मोलाने भाषव गुण गहिये ।
हरि हक ताला नो भेद तमे जाण्यो हवे खोरासी मार नव सहिये ॥ २ ॥ भाई० ।
- परवरदिगार प्रभु एक कर जानिये नरूपी नारायण चीन्हीने हदये ।
बाबल ने खोरा पण टांगर छे एक एखुं समसे तेना घई रहिये ॥ ३ ॥ भाई० ।
- छाट्टे नाम पाछे प्रभु नो बीजो नापाक सब कहिये ।
जे जे छापन बीषा तेमा पडे छे छाँसो एरी ब्रह्मज्ञान नित न्दरये ॥ ४ ॥ भाई० ।

अथ ग्रंथ नाम परचा प्रारंभः ।

सत गुरु के सत शब्द तें, उपज्यो मन विश्वास ।
 राम नाम छाँड़ू नहीं, धरूं न दृजा पास ॥ १ ॥
 प्रथम राम रसना सुमर, द्वितिये कंठ लगाय ।
 तृतिये हिरदै ध्यान धरि, चौथे नाभि मिलाय ॥ २ ॥

चौपाई ।

अध मध उत्तम प्रथ घर ठानू । चौथे अति उत्तम अस्थानू ॥
 यह चहुँ भिन देखे आसरमा । रामभक्ति को पावै मरमा ॥ १ ॥
 अध सुमरन जू ऐसैं कहिये । रसना राम राम कूं रहिये ॥
 निशिदिन रसना राम उचारा । ज्यों देर बंदीवान पुकारा ॥ २ ॥
 ज्यों रसना तन यों तृण बेली । तन तृण संग तंतु वा मेली ॥
 बेली पान फूल फल लागा । रसना राम सुमिरि भव भागा ॥ ३ ॥
 अध सुमरन रसना से करिया । करताई मुझि पार उतरिया ॥
 रसना राम सुमर अध तालू । मध सुमरन की आया नालू ॥ ४ ॥
 मध सुमरन जू पेसा भाई । सुख सुमरन हालत रह जाई ॥
 गद्गद कंठहि कमल विकासा । पाया प्रेम भया परकासा ॥ ५ ॥
 ज्यों घायल उर सालैपीरा । त्योँ त्योँ व्यापे राम सरीरा ॥
 घायल की घायल सो जानै । राम भजै सोई मन मानै ॥ ६ ॥
 निश्चय रामनाम लिय लागी । भ्रमना कंठ कमल की भागी ॥
 मध सुमरन की ये परतीति । अथ उत्तम सुमरन की रीति ॥ ७ ॥
 उत्तम सुमरन हृदय स्थानू । माँहो माँहि भया धरि ध्यानू ॥
 रसना लेत राम का नामा । उर भीतर पाया विधामा ॥ ८ ॥
 सहजाँ सासा शब्द पिछानी । रसना सहत नाम निर्यानी ॥
 उत्तम सुख सुमरन हिरदामें । यूँ नारी पुढगा मन कामें ॥ ९ ॥
 उत्तम सुमरन की सुधि आई । ठुकि इक ध्यान रसा ठहराई ॥
 अध मध उत्तम सुमर सुजाना । अति उत्तम के माँहि मिलाना ॥ १० ॥
 अति उत्तम सुमरन जू पेसा । या उपमा घरनूं मैं कैगा ॥
 अति उत्तम सुमरन परकारा । रोम रोम लागा ररकारा ॥ ११ ॥
 अति उत्तम नाभी भष्यान् । मन संकष्य विकष्य न टानू ॥
 अति उत्तम सुमरन गरवंगा । अक्षर एक भया अणभंगा ॥ १२ ॥

साखी ।

सुमरन भारग संतका, ताते भरम नसाय ।
हरिरामा हरि बंदगी, करिहों चित्त लभाय ॥ १ ॥

छंद प्रयात भुजंगी ।

नाम चेतन कूं चेत भाई । नाम तें चित्त चौथे मिलार्ई ॥ १ ॥
नाम तें केवला होय भजना । नाम तें सहज सुमिरन रसना ॥ २ ॥
नाम तें अज्ञपा जाप ओऊं । नाम तें सास उस्सास सोऊं ॥ ३ ॥
नाम तें हक है एक अह्वा । नाम महमान की आखि गह्वा ॥ ४ ॥
नाम तें चंद सुरा समेला । नाम तें करत मन सुफख केला ॥ ५ ॥
नाम तें खोलि कण्याट गैणूं । नाम तें ध्यान ताटक नैणूं ॥ ६ ॥

साखी ।

नाभी परचा नामका, गुरु तें पाया ज्ञान ।
हरिया पूत्य एक पल, धन्या गगनमें ध्यान ॥ १ ॥

छंद प्रयात भुजंगी ।

पलटि पूर्व अपुरव्य व्याणा । करि बंकरनाली लिये मेरु थाणा ॥ ७ ॥
ध्यान आकास धरि अधर छाजै । सुरति अरु शब्दका एक राजै ॥ ८ ॥
मन बुद्धि चित अरु अहंकारा । पाँच पञ्चीस मिल एक यारा ॥ ९ ॥
नाद अनदह जहाँ तूर याजै । विन वादलों बीज विन अंबुं गाजै ॥ १० ॥
विन गंग जमुना बहै नीर पारा । चलै सुपमणा सीर अमृत धारा ॥ ११ ॥
झिलमिला होत जहाँ अरंड ज्योती । निर्मला नूर तहाँ ओत पोती ॥ १२ ॥
अगम अप्पार अवगत यारा । मिला मुद्दहमें मुद्दह पीतम्म प्यारा ॥ १३ ॥
फदल कूं जीत पति अदल साँई । सुन्य का सहर निरभै बसाँई ॥ १४ ॥

साखी ।

हंसा सुन सरवर मिह्या, सरवर हंस मिलाय ।
हरिया पैर सर खेलताँ, सहजाँ रहे समाय ॥ १ ॥

छंद प्रयात भुजंगी ।

सहज तन मय करि सहज पूजा । सहज सा देव नहि और दूजा ॥ १५ ॥
सहज का जोग साशत्र पचना । सहज धिर नाद अरु विद् गगना ॥ १६ ॥
सहज तीर्थ जप तप ध्यानु । सहज पट्टकर्म सेया सनानू ॥ १७ ॥
सहज कछ काछ कीर्तन काजा । सहज का शब्द सुर याय याजा ॥ १८ ॥

सहज में नाच के नृत्य ताली । गहज भाकाश पर भोम भाली ॥ १९ ॥
 धंयना सहज करि शीत धरिया । गहज हरिनाम यकसीस करिया ॥ २० ॥
 सहज का भेद सोइ भेद भेद । सहज विन भंर पूजा न खेद ॥ २१ ॥
 सहज का भेद सोइ रंत जाणे । द्द कूं जीत येदद माणे ॥ २२ ॥
 सहज भासण किया सहज घाना । सहज में खेल अर्जात पासा ॥ २३ ॥
 सहज का खेलणा खूय भाई । सहज सम्माधि सहजां मिलाई ॥ २४ ॥

सारसी ।

सहजाँ मारग सहज का, सहज किया विधाम ।
 हरिया जीव र सीव का, एक नाम अरु टाम ॥ १ ॥

छंद प्रयात भुजंगी ।

जीव अरु सीव मिल एक राई । पूरणा ब्रह्म जहाँ सुख दाई ॥ २५ ॥
 आदि अरु अंत ना मध्य कोई । जीव जहाँ शिव मिल एक होई ॥ २६ ॥
 जीव अरु सीव का ओधि घासा । ना आभ धरती न होते निरासा ॥ २७ ॥
 जीव अरु सीव करि एक जाणी । मिले सिंधु सिंधौ जिमि वृंद पाणी ॥ २८ ॥
 ब्रह्म निरपाय गुण गर्भ गलिया । जरा नाहिं हंफं भय कंफ टलिया ॥ २९ ॥
 ब्रह्म भवतार भय रहत होई । ब्रह्म अवगत्त आनंद सोई ॥ ३० ॥
 ब्रह्म निर्वध निर्वोण निरुं । ब्रह्म पी अपी परमा निरुं ॥ ३१ ॥
 ब्रह्म अनहद अनवी नवीसा । ब्रह्म अघाथ के नाथ ईसा ॥ ३२ ॥
 ब्रह्म विदेह देवघ्न देवा । ब्रह्म निरपाप निरुपुण्य लेवा ॥ ३३ ॥
 ब्रह्म अडोल भय नाहिं डोलै । ब्रह्म अव्योल ता नाम बोलै ॥ ३४ ॥
 ब्रह्म अत्तोल नहि मोल माया । ब्रह्म अप्पार किन पार पाया ॥ ३५ ॥
 ब्रह्म निरंजन निर्गुण न्यारा । ब्रह्म परमात्मा आतम्म प्यारा ॥ ३६ ॥
 ब्रह्म अग्गाध कोइ साधु जाणी । और खुर घीस सिर नाक ताणी ॥ ३७ ॥

सारसी ।

जीव सीव मिल एकठा, रहे निरंतर छाय ।
 हरिया ब्रह्मानंद में, ना कोइ और समाय ॥ १ ॥

छंद भुजंगी ।

न को रस भोगी । न को रहत न्यारा ॥
 न को आप हरता । न कर्तु व्यवहारा ॥ १ ॥

१ नाशरहित । २ शान्त । ३ लेखक, कवि, नमनेवालोंके ईश है । ४ जिसकी उत्पत्ति मातापितासे न हो ।

न को विष्णु ब्रह्मा । न कोई नगेशं ॥
 न को आदि शक्ती । न कोई महेशं ॥ २ ॥
 न को नाद बिंदु । न को जीव जिंदा ॥
 न को आम धरती । न कोई गिरिंदा ॥ ३ ॥
 न को मोह माया । न को काम क्रोधं ॥
 न को वृद्ध तरुणा । न को घाल बोधं ॥ ४ ॥
 न को खाणि च्यारे । न को च्यार घाणी ॥
 न को छंद सूरा । न को पौन पाणी ॥ ५ ॥
 न को मास पक्षं । न को तिथिथ धारा ॥
 न को राति दिघं । न को अंधियारा ॥ ६ ॥
 न को सात द्वीपं । न को नव्य खंडा ॥
 न को तेज तारा । न को ब्रह्म अंडा ॥ ७ ॥
 न को सिंधु सरिता । न को द्वारं भारुं ॥
 न को तीन लोका । न को जुग च्यारुं ॥ ८ ॥
 न को ऋद्धि सिद्धं । न को मान धाता ॥
 न को थाय जाथै । न को नेह नाता ॥ ९ ॥
 न को नारि पुरुषा । न को जाति पाँती ॥
 न को ऊंच नीचा । न को छोति झँती ॥ १० ॥
 न को लोक लज्जा । न को कुटुंब धर्मा ॥
 न को पित्त मातं । न को भर्म कर्मा ॥ ११ ॥
 न को धान मानं । न को पान पाती ॥
 न को देव दोसं । न को जग जाँती ॥ १२ ॥
 न को शुचि किरिया । न को वेद पाठं ॥
 न को मुख घाणी । न को मौनं फाठं ॥ १३ ॥
 न को तत्र ल्यागी । न को गृह चारा ॥
 न को नव्य नाथुं । न को पंथं धारा ॥ १४ ॥
 न को जोग जुगता । न को जस्तर्जापा ॥
 न को सात मुखं । न को दैश दोषा ॥ १५ ॥

१ सुमेरु आदि । २ अठारह भार बनसति । ३ एक चक्रवर्ती राजा । ४ जात
 देनेवाला । ५ बाहुबन् मोन । न बोले न चेत्य करे । ६ नवनाथ=भादिनाथ, परमानन्दनाथ,
 प्रद्युम्नानन्दनाथ, बाकुलेधरानन्दनाथ, शोलेधरानन्दनाथ, भुगानन्दनाथ, सहजानन्दनाथ,
 शगवानन्दनाथ, विमलानन्दनाथ । ७ नाथोंके तथा नामनाथोंमें १२ पन्थ हैं । बारहवाट
 अठारह पेदा । ८ जलकोशा=ईरियदमनका हित्ताब=नवशाह यथा—

न को मन्न वाचा । न को खाल शब्दी ॥
 न को हह भाही । न को वेह हही ॥ १६ ॥
 न को राग दोपं । न को वंध मोपा ॥
 न को घाटि वाधं । न को आघ ओपा ॥ १७ ॥
 न को राज तेजं । न को देश पत्ती ॥
 न को महल छाजा । न को रूप रत्ती ॥ १८ ॥
 न को खवास दासी । न को आसपासं ॥
 न को साथ संगी । न को सास वासं ॥ १९ ॥
 न को राग वागं । न को पैट्ट भाया ॥
 न को हालै मौली । न को लख पापा ॥ २० ॥
 न को खूर सत्ती । न को खग धारा ॥
 न को आगि लागै । न को जूझ मारा ॥ २१ ॥
 न को शाख सौई । न को दूज दाखै ॥
 न को जाति जूई । न को पख राखै ॥ २२ ॥

त्रियलबास त्रैमरुचि निरखन दे परिच्छ भालन मधु वन
 पूर्वभोग केळिरस चितन गुरुअ अहार लेत चित चैन ।
 करि शुचि तन शंगार वनावत त्रिय परपंक मध्यमुखसेन
 मन्मथकथा उदर भरि भोजन ये नववाङ्ग जानमत जैन ॥ १ ॥

अथवा यतिशेखा दशनामका हिराव नही है । दशनाम=तीर्थ आश्रम वने अरण्य गिरि
 पर्वत सागर सरस्वती भारती पुरी ये दशनाम शंकराचार्य स्वामीके चार प्रधान शिष्योंके
 बला है जिन चारोंके नाम=पद्मनादाचार्य हस्तामलकाचार्य मण्डनाचार्य तीर्थकाचार्य ।

स्वामी पद्मनादके २ शिष्य तीर्थ, आश्रम ।

„ हस्तामलकके २ शिष्य वन, अरण्य ।

„ मण्डनके ३ शिष्य गिरि, पर्वत, सागर ।

„ तीर्थकाके ३ शिष्य सरस्वती, भारती, पुरी ।

स्वामी शंकराचार्य के स्थापन किये हुए चार मठोंमें इन दस प्रशिष्योंकी शिष्य-परंपरा
 चली जाती है ।

मठ ४:—शुंगेरीमेंठ चारदामठे गोवर्द्धनमठे जोशीमठे पर्याय (बदिकाश्रम करवीर-

पुरी तीर्थ वन गिरि पीठे द्वारकापीठे चारदापीठे)

भारती आश्रम अरण्य पर्वत

सरस्वती सागर

१ प्रथममुख तिरोनी काया आदि । १० काचित् काचित् मानगदि ।

१ संतुली । २ संतुन प्रतुन शंकेनेनी मार्गेपी यार्नेनी आश्रंरत । ३ परित्थिनी ।

४ बालदार अर्थात् भारती हाठन । ५ सुद । ६ मना, माग । ७ सम्बन्ध, बही । ८ सुदी ।

न को ध्वज मेजा । न को तूरवाजै ॥
 न को मेघ घरपा । न को बीज गाजै ॥ २३ ॥
 न को देख देवा । न को दसावतारा ॥
 न को खेल जूवा । न को जीत हारा ॥ २४ ॥
 न को भक्ति नवधा । न को पट्ट घेरनूं ॥
 न को फान्ह गोपी । न को कीरतनूं ॥ २५ ॥
 न को मूर्ति सेवा । न को देव द्वारा ॥
 न को भोग चाढ़े । न को खाण द्वारा ॥ २६ ॥
 न को तीर्थ घञ्चू । न को असनाना ॥
 न को होम जापू । न को तप्य दाना ॥ २७ ॥
 न को पिंड पोहरा । न को चोर लागै ॥
 न को रैण सुता । न को दिघ जागै ॥ २८ ॥
 न को च्यार वेदं । न को हे पुराना ॥
 न को हे कतेशा । न को हे कुराना ॥ २९ ॥
 न को अचल हिंदु । न को कोलं मुह्ला ॥
 न को दाय पालं । न को मेह रसुह्ला ॥ ३० ॥
 न को राह पीरां । न को तेग मरदां ॥
 न को हक मूयां । न को हक कंरदां ॥ ३१ ॥
 न को सुनत काजी । न को थंग न्याजा ॥
 न को ईद रोजा । मका नाहिं स्वाजा ॥ ३२ ॥
 न को राय रेफू । न को सुहृत्ताना ॥
 न को खाकू पाकं । न को मस्सताना ॥ ३३ ॥
 न को भूत भेतं । न को जक्षजूणा ॥
 न को फाल जालं । न को तत्त दूणा ॥ ३४ ॥
 न को खन्न जागै । न को सुफय पत्ती ॥
 न को पद्द तुरिया । न को मोक्ष मुक्ती ॥ ३५ ॥

साखी ।

ज्यों देख्या स्यों में कहा फाणं न राखी काय ।

हरिया परचा नाम का तन मन भीतर पाय ॥ १ ॥

१ निगल । २ तुरी, नगरा । ३ ओंगो जंगमै रोबहा संख्योखी दरवेध । छव्ये दर्शन
 विधेया जामे मीन न मेघ ॥ १ ॥ ४ म्लेच्छशक्ति । ५ मुहम्मद । ६ रसूल=पैगंबर ।
 ७ तुरी । ८ बादशाह, सम्राट । ९ मर्यादा ।

द्वारं कर्म पायक घरी गूं भातम घट माहि ।
हरिया पपमें घूत है विन गणियाँ कानु माहि ॥ २ ॥
इति नाम परचा ।

अथ पदपत्तीसी ।

चरण ।

एक शब्द में कहि समझाऊँ, सुनिहो सय संसारा ।
रामनाम सो सारशब्द है, और कथन है छारा ॥ १ ॥
आपा भेद विना सोह सुरता, कहे सुणे सो झूठा ।
जबलग अनुभव तथ न दरसे, मरि मरि भाये पूठा ॥ २ ॥
मनको उलटि गहे जो गाढ़ा, पकड़े पाँचू छांना ।
तीन गुणां फी माया त्यागै, पद पाये निरखाना ॥ ३ ॥
माया मोह विषय संसारा, दुस्तर मारग दूरा ।
फायर ताहि पीचमें गडिया; डाकि परे सो सूर ॥ ४ ॥
सूर मद्दातम सझि संग्रामा, स्वामि काम इक धारा ।
खाग त्यागि दोऊं तइ जोड़े, मोड़े खल दल मारा ॥ ५ ॥
जोग जश जपतप अस्त्राना, ये सय आशा बंधी ।
पूरण ब्रह्म सकल ते न्यारा, दुनी न जानै अंधी ॥ ६ ॥
निगुण पद का भेद नियारा, कहा सुण्या नहिं पावे ।
आपा उलटि आपमें देखै, जब ते मन पतियावे ॥ ७ ॥
भाव हीण करि पृथिवी होसी, पूजा दांभिक चाड़ा ।
नानाविधि का मारग होसी, रामनाम घटवाड़ा ॥ ८ ॥
मैं नहिं कहत कहत परखाना, सुनिहो सवे सयाना ।
मैं तैं रागद्वेष जग बंधे, ये कलि के अहनाना ॥ ९ ॥
दुनियाँ दुष्ट बुद्धिता होसी, मनमुख ज्ञान समर्था ।
घतां कों कतां करि जाने, अर्थों करे अनर्था ॥ १० ॥
घका घेद घकै घहुतेरा, सहजाँ सुद्धि न आवै ।
नाटक चेटक करिकरि ऊला, पेला पार न पावे ॥ ११ ॥
घाबू पलटि नाम धरि बाबा, बहुरँग भसी लाया ।
देहदशा करि भया दिगंबर, मन वैराग्य न पाया ॥ १२ ॥
बाहिर हेम रामका चाना, भीतर भरा भँगरू ।
या तनको कारी नहिं लागै, मनवा भरा विकारू ॥ १३ ॥

तनके काज घरा बहु घाना, मन स्थिर करि नहिं लीया ।
 चंचल चित्त चहुँ दिशि डोलै, पकड़ि फाल घस कीया ॥ १४ ॥
 देखा देखि सकल जग भरम्या, पखा पखी के सरमा ।
 आशा तृष्णा भई अखंडी, लोक लाज कुल करमा ॥ १५ ॥
 दुइ अधर का सकल पसारा, यामें कौन सनेहा ।
 एके लागि सकल जग मोह्या, एक रहा निरछेहा ॥ १६ ॥
 तन मन वचन ज्ञान दृढ़ करिके, एक शब्द गुंझि आखूं ।
 जाताकों जावनदे भाई । रहताकों गहि राखूं ॥ १७ ॥
 सुमरण सार सकल का सौदा, रामनाम निज एकू ।
 अलख पुरुष आत्म अविनासी, माया और अनेकू ॥ १८ ॥
 माया तीन लोक मुंति पाया, सुरनर नाग नरेसा ।
 याकों जीति चले कोइ साधू, सहृद के उपदेसा ॥ १९ ॥
 रामनाम गुरु शब्द हमारे, सो सवते सिरताजू ।
 और शब्द गुरु मेरे भावे, कहन सुनन के काजू ॥ २० ॥
 रामनाम परताप सदाई, तारे पतित अनेका ।
 शिब सनकादिक ऋषि नारद से, पाया ज्ञान विवेका ॥ २१ ॥
 अधः ऊर्ध्व को किया पयाना, जाने विरला जोगू ।
 मन पचना पश्चिम की घाटी, आया नाम तिरोगू ॥ २२ ॥
 सुधि बुधि पलटि गया गुण देहा, रंकार रस पीया ।
 ऐसा अछक छफ्या अवधूता, जुग जुग अनभय जीया ॥ २३ ॥
 ऐसी अकथ कथा औरन से, कहिये कौन विवेखी ।
 आपा अजर जरे अवधूता, सो जन विरला देखी ॥ २४ ॥
 अजरामर का मारग औला, सौला सन्त पिछाणै ।
 घंफनाल में भेरु सँचरि के, भँवर गुफा सुल माणै ॥ २५ ॥
 इला पिंगला नाड़ी मिल करि, सुपमण किया पिछानी ।
 अरस परस पीया से खेलै, मग्ना भई दिवानी ॥ २६ ॥
 घर अँवर के बीच कलाली, बिन कर प्याला पावै ।
 मट्टी अधर पिये मतवाला । रोम रोम रुचि आवै ॥ २७ ॥
 तीनू पेल खेल घर चोये, दिल अंदर मिल यारा ।
 पाँचू उलटि एक घर आया, पाया दशमद्वारा ॥ २८ ॥
 पोटंश द्वादश गऊ मिलाई, अजपा मही जमाया ।
 तन मदकी मन किया शेरणा, मुक्त जु माखण आया ॥ २९ ॥

शुन्य सुभर में बालक जाया, त्वचा हाड नहीं माँसू ।
जाति पाँति घरण नहीं बाके नाम ज धरिये काँसू ॥ ३० ॥
अगम निगम विच खेल हमारा, जहँ एको निरवासा ।
रूप रेख नख शिख नहीं बाके, देह न गेह न सासा ॥ ३१ ॥
जैमलदास गुरु परतापे, तोड़घा भर्म कियारू ।
जन हरिराम कहत है सन्तो, पदवत्तीस विचारू ॥ ३२ ॥

साखी ।

पदवत्तीस विचारिके, उपज्यो आतम ज्ञान ।
आपा ले उन्मन रहै, लहै परम निज ध्यान ॥ १ ॥

इति ।

अथ प्रश्नोत्तरी ।

चौपाई ।

प्रश्न ।

कहो कौन घर प्रेम निवासा । कहो कौन घर ध्यान प्रकासा ॥
कहो कौन घर मन मिल पयना । कहो कौन घर सहज सुमरना ॥ १ ॥
कहो कौन घर अमरा भरि है । कहो कौन घर नीशर हरि है ॥
कहो कौन घर अनहद तूरा । कहो कौन घर परसत नूरा ॥ २ ॥
कहो कौन घर उन्मनि लाई । कहो कौन घर सुरति समाई ॥
कहो कौन घर पीय मिलावे । कहो कौन घर आय न जाये ॥ ३ ॥

उत्तर ।

फँड कमल घर प्रेम निवासा । हृदय कमल घर ध्यान प्रकासा ॥
नामि कमल घर मन मिल पयना । रोम रोम घर सहज सुमरना ॥ ४ ॥
बंक नाल घर अमरा भरि है । अधः ऊर्ध्व घर नीशर हरि है ॥
सून्य शिखर घर अनहद तूरा । दशम द्वार घर परसत नूरा ॥ ५ ॥
ललाट घर उन्मनि लाई । सुरत निरत घर माहिँ समाई ॥
तिरबेणी घर पीय मिलावे । शिघसत्ता घर आय न जाये ॥ ६ ॥
जन हरिराम जहाँ घर पाया । जन्म मरण सन्देह मिटाया ॥
बिन गुरुगम देखे नर दूरा । ब्रह्म वताया आप हनूरा ॥ ७ ॥

साखी ।

गुह हमारी जो करै, सोई हमारा वार ।
हरिरामा हूँ दुर्गा दुर्गा, जाकीँ ऊम सुदार ॥ ८ ॥

इति ।

अथ रेखता ।

(१)

जिंदगी भीतरै अजब जोगी घसे । जुक्ति विन जाणिया नाहिं जाई ।
 प्रथम गुरुदेवकी आय सस्तुति करि । मग्न अरु तमकूं घेत भाई ॥
 रस्सना राम कूं सुमरि नहिं डीलकरि । एक विन दूसरी आस नाहीं ।
 पाट हिरदा खुले कमल नाभी फुले । योलता पुरुष कूं देख माहीं ॥
 आप गुरु देवका दस्तं राखै नहीं । और कूं ज्ञान उपदेश देवै ।
 आठही पहर हरिनाम जो उचरै । साच नहिं जानि गुरुविमुख सेवै ॥
 आघता एक अरु एक ही जात है । अंध अज्ञान बहु करत मोहा ।
 दास हरिराम निज भेद पायाँ विना । हाथ कंचन गह्या होत लोहा ॥

(२)

प्रथम गुरु ज्ञान अरदास तन बंदगी । शील संतोष लघु दीन यारा ।
 राग अरु द्वेष तिहुं ताप मनतें तजे । झूठ अरु कपटसूं रहत न्यारा ॥
 एक अभ्यास दिल आस नहिं दूसरी । ब्रह्मका ध्यान मन सुरत सेती ।
 जोग जिग दान तप नेम व्रत तीरथा । तुल्य तिहुं लोक नहि नाम जेती ॥
 भर्म कूं भांजि कछु कर्म कूं काटिकरि । साहि शर्मशेर सत शब्द सूर ।
 दास हरिराम कहै दिल दीवानमें । राज सोद करत है संत पूरा ॥

(३)

आपकूं खोज पर ज्ञान की खबर करि । अलख आराध मन साधि प्यारा ।
 जीव अरु जिंदकी झूठ यारी तजो । भेष भगवान करि देख न्यारा ॥
 अणक्षरी वेद कूं निरख निरतायले । अगम अरु निगमका भेद वाचै ।
 तन मन घचन तें दोष निर्दोष रहि । साम सूं सरपेह संत साचै ॥
 सौंझ सबेर क्या करत नर बावरे । बेग भजि बेग अब दाव आई ।
 दास हरिराम तन खाक मिल जाहिंगे । चूक मत जानि जग चतुराई ॥

(४)

भरम अज्ञान की भीत कूं दाहि के । ज्ञान चोगान में खेल सूर ।
 झूठ अरु कपट की झपट कूं छाँडिदे । त्रिगंड सिर धाय अनहद सूर ॥
 पांच पचीस गनीमकूं साझिले । मग्न कूं जीत महरम्म होई ।
 आदि जुग्गादि ले नाम निरर्म भया । भरे सय संत वा साख सोई ॥

१ हाथ । २ तलवार । ३ समुख । ४ हृदय, कंड, भ्रूमध्य । ५ वजाना ।
 ६ दुस्मन । ७ महरम=भेरी ।

मद्य कूं भेद फरु कर्म कूं छेद करि । वेद फत्तेय से निरत न्यात ।
दास हरिराम कहै उलटि आपा विचै । परस ले परम दीवार प्यात ॥

(५)

मद्य की भूँट पदलूण गाढ़ी गहो । तत्त का तीर करि हाथ साहो ।
ज्ञान फम्पाण कर ध्यान घोरा धरो । आन अज्ञान का द्विगं टाहो ॥
अरस का अथ पर नृप्य नीकां चढ़ो । नाम नीसाण सिर डंक लायो ।
एक असवार अरु पंच प्यादा पुलै । लारि ललकार हरि वेग ध्यायो ॥
तद्य की नालि करि चित्त दारु भरो । सुरति की जामकी शब्द गोला ।
भूमिया भरम कूं मारि मुजरा करो । पांच परधान कूं पालि पोला ॥
सत्त का सेल करि खाग क्षम्मा तणी । दोय दल मोड़ि गढ़ तीन तोड़ो ।
दास हरिराम सय राज एको भया । साम सम्मूद मिल हाथ जोड़ो ॥

(६)

तद्य का तखत पर मद्य राजा भया । मान गुमान के महल माहीं ।
पाँच परधान पचीस चीरांगरी । करत है काम किहोल चाहौं ॥
जाणिरे जाणि जग माहिं जन सूरमा । दोय दल बीच में रोळ घालै ।
निरति असवार अरु सुरति घोड़ा लियां । काम अरु क्रोध कूं दवाँटि पालै ॥
ज्ञानकी गुरज ले पाणि आघाधसै । तत्त तरवार करि हाथ साहै ।
पाँच परधान मन मारि राजान कूं । मान गुमान का महल ढाहै ॥
नाम नृप कोट सिर चाडि ताबै किया । नखल अरु सिफख विच एक राई ।
दास हरिराम सब राज अबिचल भया । दशम द्वार नौबत्त याई ॥

(७)

समझि रे समझि मन मूढ मेरा कहा । कुडुँव परिवार फद कौन केरा ।
सकल संसार सराय की सोवती । एक पल माहिं हुय कूच डेरा ॥
एक मन चित्त नित नाम निरभै भजो । तुजिह सिरकाल नहिं करत जोरा ।
वेद फत्तेय सब जानि काची कथा । देखि भूलै मतै मन्न मोरा ॥
तप्य तीर्थ ब्रत साझि एकादशी । सातही द्वीप नव खंड डोलै ।
जोग जिग जाप पट्कर्म खाली रहा । आपकूं उलटि आपा न खोलै ॥
आदि अरु अंत सतशब्द कूं ध्यायले । पायले दशम द्वार सोई ।
दास हरिराम तहाँ मुकि संसा नहीं । जीव अरु सीव मिल एक होई ॥

(८)

खबर करि खबर गाफिल तुमसे कहूँ । यहुरि नहिं पाय नरदेह धारी ।
सिर धारि दूजा नहीं । मानि मेरा कहा पुरुष नारी ॥
१ २ डिगा । ३ अरसनाम है महल का जहाँ राजा बैठे । ४ बत्ती ।
५ भूमि का अगल मालिक । ६ मसालचन । ७ दाढ़ ।

लोभ लालच मद मोह लगा रहै । आपदा पासि पडपंच ठाणै ।
 आन उप्पाधि बहु ताप हिरदै उठै । राग अरु द्वेष मनमान ताणै ॥
 काम अरु क्रोध भय जोध जोरावरी । जहर अरु कहर जग माहिं जाडा ।
 फाल कव्वाण कसी सिर ऊपरै । मारसी जोय नहिं कोष आडा ॥
 मात अरु तात सुत भ्रात भूत भामिनी । कुटुंब परिवार की प्रीति झूठी ।
 दास हरिराम कहै खेल वीतां पछै । मेल सोइ ऊठिगयो झाड़ि मूठी ॥

(९)

सत्तगुरु देव की गम्म कैसे लहै । कान गुरु फूंकिया मान लीया ।
 भाव निज भक्तिकी गम्म कैसे लहै । सेव कृत्रिम कुल काज कीया ॥
 साधु सतसंग की गम्म कैसे लहै । जगत जंजालमें फिरत हूला ।
 ज्ञान विज्ञान की गम्म कैसे लहै । आन अज्ञानमें जात भूला ॥
 अज्ञपा जाप की गम्म कैसे लहै । जुगति से जाप नहिं करत जाणी ।
 आतमा देवकी गम्म कैसे लहै । वेद कत्तेव की देखे पुराणी ॥
 रोम ररंकार की गम्म कैसे लहै । शब्दके संग ममकार होई ।
 दास निर आस की गम्म कैसे लहै । आस दुनियांकी करत सोई ॥
 नाम निर्गुण की गम्म कैसे लहै । ताप तिर्गुण के पंच पुँलिया ।
 उन्मनी ध्यान की गम्म कैसे लहै । नाम कूं लेत है कान सुणिया ॥
 सुरति अरु निरत की गम्म कैसे लहै । विषय मन दासना रहत माहीं ।
 अथः अरु ऊर्ध्व की गम्म कैसे लहै । कंठ रसना हृद ध्यान नाहीं ॥
 विंड ब्रह्मंड की गम्म कैसे लहै । खंड फिर मंडका देख देखे ।
 नाम निर्वाण की गम्म कैसे लहै । घाद धक्कावद के राग धेखे ॥
 घात विदेह की गम्म कैसे लहै । हृद में रातदिन रहत राता ।
 ब्रह्म आनंद की गम्म कैसे लहै । मोह माया तणै मद माता ॥
 जाण विज्ञाण की गम्म कैसे लहै । शुद्ध बुधि आपणी सार चूका ।
 दास हरिराम सिर भार कैसे मिटे । भर्म अरु फर्म के दिग्ग दूका ॥

(१०)

गुरु परचै विना ज्ञान कैसे गहै । नाम परचै विना टाम नाहीं ।
 जीव परचै विना पीव कैसे मिले । आप परचै विना फ्यूँ न काहीं ॥
 मन परचै विना ध्यान कैसे धरे । त्याग परचै विना शान्ति नाथे ।
 अथः परचै विना ऊर्ध्व कैसे चरे । नाद परचै विना विंद जाये ॥
 अरांड परचै विना अनहद कैसे धुरे । अगम परचै विना निगम थोले ।
 सांच परचै विना झूठ कैसे मिटे । दास हरिराम कहै दिह सोले ॥

(११)

सुख का शब्द विन सखज दूरसे नहीं। तब दूरसाँ विना मन् होने
 सुरति उन्नी विना प्रह्ल मेई नहीं। दिल दूरसाँ विना साले कौ
 देम करवा विना नाम विगने नहीं। आत्मा देव विन सेव दूते।
 भाव उन्नी विना मक्ति भाये नहीं। साधु दूरसाँ विना सिद्ध दूते।
 बुक्ति जानी विना जोग दूरसे नहीं। एक दूरसाँ विना अर्धन पाते।
 ॥२॥ दूरसाँ विना पार कैसे लहे। दास हरिराम सब रंज सौते।

छप्पय ।

राम पद्याने वेद राम कूं दाख पुराने।
 राम शारदा स्मृति राम शास्त्र सुजाने ॥
 राम गीता भागवत राम रामायन गावै ॥
 राम विष्णु शिव शेष राम ब्रह्मा मन भावै ॥
 राम नाम तिहुँलोकमें ऐसा और न कोय ॥
 जन हरिया गुर गम विना कहा सुण्याँ क्या होय ॥ १ ॥
 प्रथम गुरु शिव जानि नाम पार्वती दीया ॥
 तासेती नारद नाम तन मन करि लीया ॥
 दे नारद उपदेस नाम सनकादिक जान्यो ॥
 गुरुतेँ जनक विदेह पीय उर माहिँ पिछान्यो ॥
 सतगुरुतेँ शुकदेव सुनि किया भर्म सब दूर ॥
 जन हरिया गुरुगम अगम ताहि लहे कोई सुर ॥ २ ॥

छंद इंदव ।

अंग सुकोमल पेम सरोवर चूप सबै चित रंग चितारो।
 साधु सती जति राग रसायन सुरक्षमा कवि दास इतारो ॥
 ज्ञान विज्ञान ये जानि सबै विधि रूप तपो मन मोह धुतारो ॥
 दास कहै हरिराम विना हरि होय नहीं नर को निस्तारो ॥ १ ॥
 राग न द्वेष न कोप कहूँ पुनि संशय शोक न विद प्रकामे ॥
 तेँ मान अमान न को उर फूड़ कपट कौ दूरि निजामे ॥
 खबपा पासि न और धरे दिल सुरति लगी सतशब्द प्रकामे ॥
 र ति कहे हरिराम भजो हरि ज्ञान दियो गुरु होय नैकामे ॥ २ ॥

१ विष्णु या शास्त्रज्ञान तोडना । २ आहारविहारदिनेय । ३ इच्छा
 ४ भूमि हारनेधर, रास । ५ सदासत=सभीय ।

शील संतोष सदा तन शीतल आनंदरूप रहै जहँ ताहीं ।
 प्रेमे प्रयाह भये जर अंतर और विकार लिये नहिँ काहीं ॥
 द्वंद्व न को सुख दुःख न दिसा कृद् कपट दिशा नहिँ जाहीं ।
 दास कहै हरिराम यसो घन भावे बैसि रहो घर माहीं ॥ ३ ॥
 तूँ कहा चित करै नर तेरी हि तो करता सोइ चित करैगो ।
 जो मुख जानि दियो तुझि मानय सो सबहनको पेट भरैगो ॥
 फूकर एक ही टूकके कारण नित्य घोघर पार फिरैगो ।
 दास कहै हरिराम बिना हरि कोई न तेरो काज सरैगो ॥ ४ ॥

मनहर छंद ।

राजी राय रंक भूप नारी ही पुरप राजी
 झूठी सी बनाई याजी खुसी सब पाल में ।
 संन्यासी दुहाई दंत जोगी आदिनाथ जानी
 जतीही यखाने जैन रता मता हाल में ॥
 भोपना शक्ति सेवै वैष्णव अघतार प्यावै
 बंधना के वेद पाठ चतुराई चाल में ।
 पछाई पखी में लोक निरापखी जन कोई
 हरिया के राम एक नहीं लाल पाल में ॥ १ ॥

राग विलावल ।

पद १

एकै माहिँ अनंत है अनंता में एको ।
 मन महरम फूँ पायके हूया एक मेको ॥ १ ॥
 अछती माहीं छति है छति माहीं अछती ।
 बसती माहीं शून्य है शून्य माहीं बसती ॥ १ ॥
 या जल सेती लूण हुय लूणा फिर नीरा ।
 सतगुरु सेती सिख भया सिखसूं गुरु पीरा ॥ २ ॥
 पाणी तें पाला हुवा पाला फिर पाणी ।
 यूँ सीव हुता जीव हुवा जीव सीव समाणी ॥ ३ ॥
 सासामाहिँ उसास है उसास में सासा ।
 हरिरामां हरि मुझि में हरि में हरि दासा ॥ ४ ॥

१ भक्ति कल्पतरु पात गुण, कथा फूल बहु रंग ।

नारदगण हरि प्रेमफल, चाखत सन्तविहंग ॥ १ ॥

२ दत्तात्रेय ।

पद २

ता घर सतासमाधि है दम सो घर लहिया ।
 एक अरुंघ घट भीतरे बकहा जु कहिया ॥ डेर ॥
 रहता से रहता रहे जाता नहिं जाणी ।
 रोम रोम रंकार हुय ताही सुरमाणी ॥ १ ॥
 उलंघ मेर आकाश में घाए अनहदा ।
 निर्दांचे निर्द्वंद्व हुय घसिया घेददा ॥ २ ॥
 पद परमानंद परतिके जीवत ही मूया ।
 अपना आपा पलटिके निजमनवा ह्या ॥ ३ ॥
 दृष्टि न आवै मुष्टि में नहिं रूप न रेखा ।
 हरिरामा पर शून्य में मुक्ति मिल्या अलेखा ॥ ४ ॥

राग आशा ।

पद ३

संतो दोनूं राह हरामी खून करै विन यामी ॥ डेर ॥
 हिंदू घात करै अंजका हरि सुं बेफरमाणी ।
 मुख सुं स्वाद करै मनसेती जीव दया नहिं जाणी ॥ १ ॥
 पहली तरपण करै गऊको पुण्य दे पाप नसाई ।
 पीछे धन धाड़ो करि लावै दुष्ट दया नहिं आवै ॥ २ ॥
 सहजे जीव जिंद कुं छाँडै ताकुं कहत हराँमा ।
 काजी करंद गऊ सिर सारै विना दोस विसरामा ॥ ३ ॥
 मुई हराम कहै हक मारी पसुवो करत पुकारा ।
 काजी जाव कौनसा देसी साँई के दरबारा ॥ ४ ॥
 मुहम्मद पीर जर्ह गउ फीन्ही वा फिर मारि जियाई ।
 होनहार मिटै नहिं जिव की तूं सिर लै क्यों भाई ॥ ५ ॥
 मूई मटिया मुरदार कहत है मारै हक निवाँला ।
 देख देख दुनिया कर भूली काजी कौन हवाला ॥ ६ ॥
 हिंदू के पण जाणि गऊ को सो सूअर तुरफाणै ।
 दोऊ मारि भखै मुख माँसा घट बधि कौन बखाणै ॥ ७ ॥
 विषय कर्म कुं सब फोड आधा हरि धर्म सेती पाछा ।
 जन हरिराम राम रस पीजै छाडि सुअर गउ पाछा ॥ ८ ॥

१ असंप्रज्ञातसमाधि । २ बकरे का । ३ विनो हुकम । ४ विधिबिरुद्ध । ५ बरा
 । ६ कुरवानी, हलाल । ७ प्रास, लक्ष्मा ।

एव लेरी ।

पद ४

संतो ऐसे लोक निपूती ।

अपनी सोई याद न भाने भौरां जानि मपूती ॥ १ ॥

घर घर देखस्थान थापना भरनारी मिल पूजे ।

भाप सार्थ करे ईउना परमारथ मूं नृजे ॥ १ ॥

गदली दुनिया ज्ञान विद्वणी गोगा पापू गाये ।

पंचपीर पाखंड से राती राम भक्ति नहि भाये ॥ २ ॥

चाँयड भागे भैसा चाटे भलो थापणो मार्ये ।

झूठे तन का जतन करत हे जीव दया नहि भाये ॥ ३ ॥

आन देव कूं करे ईउना पिता पूत के सोई ।

जिन पे जीव सकल कूं सिरज्या गो रूमे नहि सोई ॥ ४ ॥

मुँय भेड़े को चौसो रागे खेतन सेती घोरि ।

खालिक छोडि यलक सू लागा धोके गौरां होरि ॥ ५ ॥

आनदेव का आजा देखे भाप न देखे माहीं ।

आदम और नहीं कोई भाडो जय जम पकड़े यांदी ॥ ६ ॥

लाडो लाडी जाय लडायण सार्युं भोजक सारि ।

जन हरिराम फिरे मन पीदी ध्यान न हरि का धारि ॥ ७ ॥

पद ५

संतो युंती भक्ति न होई ।

रंटी हठ निग्रह करि भूया पारन पहुँता सोई ॥ १ ॥

नाही निरख भया वैदेगर अनंत औपधी फीन्हा ।

सारी घात रसायण करि करि आतम एक न धीन्हा ॥ १ ॥

गायण थायण ताना तूनी करि करि लोक रिझाये ।

मुख तें राग छतीस अलापै धुनि अधिकेरी लाये ॥ २ ॥

वेद पाठ बहु करत विचारा ज्ञान ग्रंथ भरपूरा ।

उडत गडत राखत धिर देहा साधु सती लिप सूरा ॥ ३ ॥

ज्योतिष सीख ज्योतिषी ह्या अगम अगोचर आपे ।

औरों कूं ग्रह गोचर लाये थाप लैण फी राये ॥ ४ ॥

१ इच्छा करना । २ गोगा चोहान, रामदेव तंवर, हरेवृ सांसला, मेही भोगडिया
पौत्र मबीनाथ । ३ सिरजनहार । ४ इचरानी और शरवी लेखकों के अनुसार मनुष्य
का आदि प्रजापति । ५ वैद्यराज । ६ बजाना । ७ लगावे ।

तप तीरथ मत भरत कलापा करि मत भरमो भाई ।
जन हरिराम राम भज निश्चै नहि तो परलै जाई ॥ ५ ॥

राग सोरठ ।

पद ६

हे जाप जिंदरी तैं जोगियो, न जान्यो भूंडी मेघ ।
जोगी आदि जुगादिरो, तूं करि मुई कुसेच ॥ १ ॥
जोगी एक न जाणियो, यहु मन बैठी लाय ।
जोगण जोगी घाहिरो, पलमें गई विलाय ॥ २ ॥
चेतन थकी न चेतियो, पीछे भई अचेत ।
जो न गहेसी मौन मुख, रसना राम न लेत ॥ ३ ॥
सैणाँ सेती रोपणो, असैणाँ सूँ गुँडि ।
साम सनेही नां किया, शौराँ रही अलुँडि ॥ ४ ॥
निरंजन देख्या जोगिया, रही निहार निहार ।
सारा तन फिर जोइया, नहीं जोगीरी उनिहार ॥ ५ ॥
जोगी राख्या ना रहै, जोगी रमता राम ।
सुरति निरति कर देखिया, जोगी तणा मुकाम ॥ ६ ॥
जननी जन्यो न जोगियो, पिता न इन के कोय ।
हरिरामा आत्म जोगी, जिंद भीतर जोय ॥ ७ ॥

पद ७

हंसा सुन सरवर रय कररे ।
चंच विना चुग चुग निजमोती ध्यान न दूजा धररे ॥ १ ॥
पाँच रु पंख विना इक हंसो वास किया सुन घररे ।
अधर महल जहाँ अजब झरोखा है हरि रास अटार रे ॥ २ ॥
तहाँ नहिँ धर अंबर नहिँ तारा चंद न सूर संवर रे ।
वेद पुराण कथा नहिँ कीर्तन वहाँ अण अच्छर उवर रे ॥ ३ ॥
नर सुर असुर लोक नहिँ नागा दिवस रैन नहिँ पर रे ।
जन हरिराम मिल्या परहंसै जरा न जम का डर रे ॥ ४ ॥

पद ८

मनवा रामभजन करि थल रे ।
तज संकल्प विकल्प कौं तचही आपा हुय निर्बल रे ॥ १ ॥

देखि कुसंग पाँव नहिं दीजै जहाँ न हरि की गल रे ।
 जो नर मोक्ष मुक्ति कूं चाहै संतां बैसि मिसल रे ॥ १ ॥
 संशय शोक परे करि सबही ह्रंद दूर करि दिल रे ।
 काम क्रोध भर्म करि कानै राम सुमर हक हल रे ॥ २ ॥
 मनवा उलटि मिल्या निजमनसुं पाया प्रेम अटल रे ।
 पाँच पचीस एक रस कीना सहज भई सब सल रे ॥ ३ ॥
 नख सिख रोम रोम रग रग में ताली एक अटल रे ।
 जन हरिराम भये परमानंद सुरति शब्द सुं मिल रे ॥ ४ ॥

राग मल्हार ।

पद ९

रे नर सतगुघ सौदा कीजै ।
 इन सौदा में नफा बहुत है एक मना होय लीजै ॥ टेर ॥
 भात पिता सुत भ्रात समेही चौरासी लख हीजै ॥ १ ॥
 जे कोइ चाहै रामभक्ति कूं गुरु की शरण गहीजै ॥ २ ॥
 गुरुदिन भरम न भाजै भवका कर्म न काल कटीजै ॥ ३ ॥
 गुरु गोविंद विन मुक्ति न जिय की कहियो वेद सुनीजै ॥ ४ ॥
 जन हरिराम और सब कूकस राम शब्द सत बीजै ॥ ५ ॥

पद १०

रे नर राम नाम सुमरीजै ।
 यासुं आगे संत उधरिया वेदाँ साखि भरीजै ॥ टेर ॥
 यासुं धू प्रह्लाद उधरिया करणी साँच फरीजै ॥ १ ॥
 यासुं दत्त मछंदर उधरे गोरख ज्ञान गहीजै ॥ २ ॥
 यासुं गोपीचंद भरथरी पैलै पार लंघीजै ॥ ३ ॥
 यासुं रंका बंका उधरे आपा अजर जरीजै ॥ ४ ॥
 यासुं रामानंद उधरिये पीपा जुग जुग जीजै ॥ ५ ॥
 यासुं दास कवीर नामदे जम का जाल कटीजै ॥ ६ ॥
 यासुं जन रिघदास उधरिये मीरां वात बनीजै ॥ ७ ॥
 यासुं कालू कीता उधरे दास अमरपुर कीजै ॥ ८ ॥
 यासुं जन हरिदास उधरिये दादू दीन भनीजै ॥ ९ ॥
 जन हरिराम कहै सबही कूं अपताँ डीठ न कीजै ॥ १० ॥

राग विभास ।

पद ११

प्रभुजी प्राण सकल के दाता ।
 हुआ देव किया दुनिया का तेरै तात न माता ॥ टेर ॥
 जोतिस्वरूप सकल घट जोती रमता राम कहायो ।
 दृष्टि न मुष्टि सुन्यो नहिं देख्यो आप ऊपनो आयो ॥ १ ॥
 सांख्य योग भक्ति सब जान्या एकते एक सयायो ।
 रामभजन विन कोइ न सीधा वेद पुराना गायो ॥ २ ॥
 तीन लोक में नाम न तुमसा ह्रमसा संत अनेकू ।
 मुख भरि बोल करूं क्या महिमा रोम रोम रटि एकू ॥ ३ ॥
 तुम निर्मल दातार दयानिधि में मंगन मल धारी ।
 जन हरिराम शरण तेरी आयो दौय दुख भेटि मुरारी ॥ ४ ॥

पद १२

प्रेम भक्ति मोहि आपो ।
 मांग मांग दाता हरि आगे जपूं तुमारा जापो ॥ टेर ॥
 आठ नवे निधि रिधि भंडारा क्या मांगूं चिर नार्हीं ।
 दे मोकूं हरिनाम राजाना रूट कयहु नहिं जार्हीं ॥ १ ॥
 इन्द्र अप्सरा सुख विलासा क्या मांगूं छिन भंगा ।
 दीज मोहि परम सुख दाता सेवत ही रहूं संगी ॥ २ ॥
 तीन लोक राज तप तेजूं क्या मांगूं जम प्रासा ।
 दीज राज भभे गुरु देया अटल अमरपुर यासा ॥ ३ ॥
 आठ पहर भौलंग अणघड़ फी ता सेती निलाकू ।
 जन हरिराम स्वामि अद सेवक एकमेक दीदारू ॥ ४ ॥

राग बरहंग ।

पद १३

प्राणी करलो राम सनेही ।
 विनस जायगी एक पलकमें या गंदी नरखेही ॥ टेर ॥
 रातो मानो विषय स्वाद में परंफूलिन मनमार्हीं ।
 जीवतणा भाया जमर्किकर एकड़ि लेगया वार्हीं ॥ १ ॥
 भूरथ मगन मयो माया में भेरी करि करि माने ।
 अंतकाल में भई विहार्णी गनो जाय मसाने ॥ २ ॥

राग रंग रूप नर नारी सय हुय जाहिंगे साका ।
जन हरिराम रहैगा अमर एको नाम अहाह फा ॥ ३ ॥

पद १४

रे नर या घर में फया तेरा ।
जीव जंतु न्यारा घर माहीं खोई कहै घर मेरा ॥ टेक ॥
चीटी चिड़ी कमेड़ी उंदर घर माहीं घर केता ।
आया ज्यों सवही उठि जासी बासो दिन दस लेता ॥ १ ॥
मैड़ी मंदिर महल चिणाये मारै ऊंडी नीवां ।
दिन पूगे नर छांडि चलैगो ज्युं दाली हल सीवां ॥ २ ॥
नय रंग रूप सोलह सिणगारा माया विपै विलासा ।
जन हरिराम राम जिन दुनिया होसी खासरं फासा ॥ ३ ॥

राग धनाश्री ।

पद १५

मंगन कूँ दान देवो राम राय ॥ टेक ॥
मैं मंगन जन द्वार तुहारे राखो हरि शरणाय ॥ १ ॥
मैं भिखियारी भया वापुरा तुम दातार सदाय ॥ २ ॥
दीजै दान अमय पद दाता ऊणत रहै न काय ॥ ३ ॥
आठ पहर भौलंग हरि आगै करिहों चित्त लगाय ॥ ४ ॥
रीझैगा जब अमर गुसाँई दैगा पटा लिखाय ॥ ५ ॥
खातां कबू न खुटे रोजी दिन दिन अधिकी धाय ॥ ६ ॥
जन हरिराम भक्ति बगसीजै मुक्ति न मांगूँ काय ॥ ७ ॥

पद १६

धेसे हँ राम गरीब निवाज ॥ टेक ॥
भीर परी प्रह्लाद उयारे हिरण्यकशिपु हण ताज ॥ १ ॥
मा उपदेस दियो धुव सेती अटल वसायो राज ॥ २ ॥
टेर सुनत बेग हरि आये तार लियो गजराज ॥ ३ ॥
जन द्रौपां को चीर बधान्यो भई पंच भरताज ॥ ४ ॥
देवल फेर कियो जन साम्हो भक्तनामदे काज ॥ ५ ॥
दास कबीर धरे लदि बालद आन उतारे नाज ॥ ६ ॥
मीरां जहर कियो चरणोदक राखि भरोसो राज ॥ ७ ॥
सय संतन के फारज सारे भक्त विरद की लाज ॥ ८ ॥

जन हरिराम सदा सिध कामा राम शुभर महाराज ॥ ९ ॥

पद १७

परम सनेही प्यारो प्रीतमो देख्यो दिलड़ा के माहिं ॥ टेक ॥
 घावल घावल धीजली ऐसे घट घट राम ।
 मूरख मर्म न जाणियो पायो नाम न ठाम ॥ १ ॥
 सतगुरु तो घोहरा भया सिख सौदागर होय ।
 हरि सौदो चित घोहटो तोल न मोल न फोय ॥ २ ॥
 सतगुरु घोहरा होय के घस्तु अमोलक देह ।
 सिख साचा गादक भया मन अरु तन करि लेह ॥ ३ ॥
 विषम सरोवर नीर की अति ऊंडी बहु धार ।
 एक मना तिर जाहिंगा दूजा डूवणहार ॥ ४ ॥
 अगम देस अमरा पुरी जहाँ हरिजन फा घास ।
 तहाँ हरिरामें घर किया जन्म मरण तजि आस ॥ ५ ॥

राग गोइवाड़ी धनाश्री ।

पद १८

ब्रह्म विदेही चालिमा जीव नियारो नाहिं ।
 एक अखंडी रमिरह्यो सून्य सेझड़ियाँमाहिं ॥ टेक ॥
 सुरति सुहागिन सुंदरी लाडो शब्द सुजाण ।
 सदा सनेही ऊपरै वारुं मन अरु प्राण ॥ १ ॥
 धरिया कूँ नहिं धारती धुनि अधराँ सूँ धारि ।
 गगन मंडल में घर किया संशय शोक निवारि ॥ २ ॥
 जन हरिरामा सुंदरी घर अजरामर पाय ।
 अरस परस हुय मिलरही आवण जाण मिटाय ॥ ३ ॥

राग भासा ।

पद १९

अव नर चेतो रे कहुँ भाई तोकुं चार चार समुझाई ॥ टेक ॥
 यो संसार भयो भवसागर ऊंडो अथग अपारा ।
 बीच वहे विषयन की लहराँ के बहरया के पाप ॥ १ ॥
 यो मन जानि भयो वाजीगर बाजी बहु विस्तार ।
 सुरति निरति की राँमति मंडी के जीता के हारा ॥ २ ॥
 मोह माया की चाँवरि मंडी भरम करम का फंदा ।

जाया जीव सब काल अहेरै के झूटा के बंधा ॥ ३ ॥
 तूं नर कोन परसाय नर्घातो जम सारीया जोधा ।
 जन हरिराम राम भजि लीजै तजियै काम रु क्रोधा ॥ ४ ॥

पद २०

पांढे देख पाखि मति भूलो आयो ओसर देलो ॥ टेक ॥
 एको पिंड एक है पाणी एक जोणि में आया ।
 यामें अंच कौन है नीचा सब अवगत की माया ॥ १ ॥
 कुल आचार करी कटिणाईं ज्ञान विचार न पाया ।
 वेद पुराण पढ़े पढ़ि पंडित आपा जग भरमाया ॥ २ ॥
 चारों वरण चार आसरमा यामें आत्म एक ।
 जन हरिराम राम सुमरीजै या संतन की टेक ॥ ३ ॥

राग गवरी ।

पद २१

संतो देख पाख पग धरियै अंच कूप नहिं परियै ॥ टेक ॥
 यो संसार भयो अंच कूपा पाँच विषय पनिहारी ।
 लृप्ता घरत काम का चढ़सा सीचत है मन सारी ॥ १ ॥
 माया मोह वष्या कूसेटा कूड़ कपट फी क्यारी ।
 नैपै दुख सुख भया अनेका भुगतै नर अरु नारी ॥ २ ॥
 तीन लोक अरु भवन चतुर्दश जनम जनम मरि जाती ।
 जन हरिराम रहैगा सोई राम भजो अविनासी ॥ ३ ॥

पद २२

संतो है हक मरणा सबहुं ।
 जो कुछ किया जाय अथ करणा वेग सुमरणा सबहुं ॥ टेक ॥
 धंधे माहिं भयो नर अंधो मनयो माया सेती ।
 एक राम नाम विन तेरे मुखां पढ़ेगी रेती ॥ १ ॥
 धुंघा गोली ज्युं धन गदला खिण खिण ऊंडा घालै ।
 जब ते जीव एकड़ि ले जायै तय धन साथ न हालै ॥ २ ॥
 वेद पुराण पढ़े पढ़ि पंडित पंडित करे न कोई ।
 अछर एक अखंडित ही विन जायै दोसग्व सोई ॥ ३ ॥
 घालापण तरुणा भयो वृद्धो तोह न भायो सेती ।
 जन हरिराम बीज विन घाह्यो कहा निपायै सेती ॥ ४ ॥

पद २३

संतो माया सबकुं लूटै ।
 है जगमें ऐसा जन कोई राम नाम कहि छूटै ॥ टेक ॥
 काया कोट वसुंदरवाजा ताक भरम का भारी ।
 काम करम की भोगल मारी खसि खसि गया संसारी ॥ १ ॥
 बलवंत मोह मारको सबमें मन मेयासी राजा ।
 दोड़ै माहिं धकौ गढ बाहिर एक न राखै साजा ॥ २ ॥
 आस पास माया को घेरो विच है जीवका यासा ।
 पांच पचीस मोरचा लाग़ा धँचैगा कोर दासा ॥ ३ ॥
 जमरै आय जीव वस कीया देस दुहाई फेरि ।
 जन हरिराम एक पल माहिं कोट भया दिग़ डेरि ॥ ४ ॥

पद २४

संतो ऐसा रे कोई सुरै फ़ाया गढ कुं चुरै ॥ टेक ॥
 छूटा सारदाब्दका गोला मुँही मोरचा भागा ।
 ध्यान ध्यान का हाथ राङ्ग ले मनसुं लड़या लाग़ा ॥ १ ॥
 साधी सबल मारि संदाय कुं मन मोहादिक पाड़या ।
 मान शुमान घालि मुँह आग़े काम प्रोध कुं ताड़या ॥ २ ॥
 नाम किया गढ़ के विच ड़ेरा अनहद नाद यज़ाया ।
 एके घरमें राग छतीसुं आनंद मंगल गाया ॥ ३ ॥
 जन हरिराम पैति छवि छाजि अटल अमर पद पाया ।
 नाम नृपति की केर दुहाई घडुं दिस राज जमाया ॥ ४ ॥

राग मरु ।

पद २५

सयाने राच गहीजे हो ।
 इरी माया मोह में काँह राच रहीजे हो ॥ टेक ॥
 मान पिता गुन पाँधया को भागे को नूट ।
 ग़हारो धारो करनहुँ आय गये राच ऊठ ॥ १ ॥
 राम नाम कुं गुमरिये धीर नियारो फ़ंघ ।
 एटे गौं बादिरो जान गचल जग भंघ ॥ २ ॥
 बाद विरोध विचार कुं बेचे माहिं गियार ।
 भंघ भुंघ में बदि गयो विन गुद जान विचार ॥ ३ ॥

सुमति सुमारग सोध के चालैगा कोइ सूर।
हरिरामा वरगाह में भेटेगा निज नूर ॥ ४ ॥

पद २६

इत मन कूँ जान न दीजै हो ।
मनसा साजन को नही तन भीतर लीजै हो ॥ टेक ॥
मन राख्यौ सब रस रहै मन ग्यौँ सब रस जाय ।
मन ही प्याला प्रेम का मन पीव प्यारा पाय ॥ १ ॥
सेइइयाँ सुख सुंदरी रमै राम दिन रैन ।
उर परमानंद ऊपजै अथ और न को दुख दैन ॥ २ ॥
काम न काई कल्पना संसा गया नसाय ।
नेह लग्यो रहमान सँ दिल दूज न आवै दाय ॥ ३ ॥
मैं मनसुँ करि जानती सो मुझ मिलिया आय ।
हरिरामा निज मन विचै कुछ अंतर रही न काय ॥ ४ ॥

पद २७

पाऊँ मुझ पीतम प्यारा हो ।
तन मन सोपुँ तुझिसुँ मिल यार हमारा हो ॥ टेक ॥
जो दम अहला जात है सुमरन विन सारा हो ।
आपा उलटि विचारियै ब्रह्म चारंवारा हो ॥ १ ॥
तन जोयन हुय जावसी छिनमाहीं छारा हो ।
सासोसास सँमारिये आतम आधारा हो ॥ २ ॥
सुख दुख सब संसार का अकूर अकारा हो ।
अघर विना घर को नहीं भर दूभर भारा हो ॥ ३ ॥
जन हरिराम प्रकासिया अंतर उजियारा हो ।
दर्शन हरि दीदार का दसवैँ हुय द्वारा हो ॥

पद २८

साजन सुख दीजै न्यारा हो ।
रोम रोम में रमि रहे पीरन के प्यारा हो ॥ टेक ॥
अबला अति आतुर भई आपनपो दीजै हो ।
साँइयाँ तुझ विन नाँ सरै मुझ वेग मिलीजै हो ॥ १ ॥

तन मन तेरा हूँ धनी मेरा नहीं सारा हो ।
 भली घुरी सय जीय की तुही जाननद्वारा हो ॥ २ ॥
 मैं मध्यम तन हीनता तुम उत्तम यारा हो ।
 प्रीति पूर्यली जान के होयत नहीं न्यारा हो ॥ ३ ॥
 थापा अंतर मेटिके अपनी करलीन्हीं हो ।
 जन हरिरामें दोस्ती आतम से कीन्हीं हो ॥ ४ ॥

रग विहागसो ।

पद २९

देख्या राम निरंजन राया ।
 शोभा अनंत कही नहीं जावै वाजा अनहद घाया ॥ टेक ॥
 काया कोट बन्यो यिन टाँची चूनो कली न लाया ।
 फरता पुरुष भया कारीगर छाजा खूब बनाया ॥ १ ॥
 यामें एक विदेही पुरुषा इला पिंगला राणी ।
 सुपुमन सदा सुहागनि सुंदरि मोक्ष मुक्ति जहाँ जाणी ॥ २ ॥
 अणभै राज करत अविनाशी जहाँ चित चाकर लाया ।
 जन हरिराम छाँड़ि हदवासा बेहद वास घसाया ॥ ३ ॥

पद ३०

संतो सतगुरु करण सिद्दाई ।
 अंतर माहिं निरंतर देख्या सहजाँ मेद बताई ॥ टेक ॥
 सहजाँ पुस्तक वेद पुराना सहजाँ अंछर वाचै ।
 सहजाँ तार तबल धन दूरा सहज नचइया नाचै ॥ १ ॥
 सहजाँ गंग जमुन का मेला सहजाँ करत खाना ।
 सहजाँ देव सेव घट भीतर सहजाँ ब्रह्म शाना ॥ २ ॥
 सहजाँ जोग जुगति भी सहजाँ सहजाँ ऋषि सिधि दासी ।
 सहजाँ गगन ध्यान धुनि लागी सहज मिल्या अविनाशी ॥ ३ ॥
 सहजाँ सहजाँ एक भया सय रामनाम कूं जाण्या ।
 मोक्ष मुक्तिका ना कोई संसा सहजाँ शब्द पिछाण्या ॥ ४ ॥
 सहजाँ सुरति निरत भी सहजाँ सहज मंदिर में वासा ।
 सहज पिया हूँ सेश रमंता सहज किया घर वासा ॥ ५ ॥
 सहजाँ इला पिंगला सहजाँ सहजाँ सुपुमणि नारी ।
 जन हरिराम सहज घटभीतर पाया देव मुरारी ॥ ६ ॥

राग केदारो ।

पद ३१

रहियै राम रंग में डूब चंगा राखि तन मन खूब ॥ टेक ॥
 साँवा पीला लाल सपेता केता रंग लगाया ।
 जयलग राम रंग नहिं लाग्गा उडताँ चार न लाया ॥ १ ॥
 सिरपर सांग पहरि भयो स्वामी छापा तिलक वणाय ।
 जयलग हरि की भक्ति न जानी संग दुनी के जाय ॥ २ ॥
 करि करता पूजे कृप्रिम कूं हेत घणै हितकार ।
 जयलग प्रेम पियास न हरिका मोह्या मोह विकार ॥ ३ ॥
 वेद कथा बहु करत उचारु अनुभव ज्ञान सुणाय ।
 जयलग आपा खोजत नाही भूलो और भुलाय ॥ ४ ॥
 बाजा राग छतीछूं सा रे करि तणतण तांत बजाय ।
 जब अंतर अनुराग न उपज्यो गाय भाँवे मत गाय ॥ ५ ॥
 जन हरिराम रची है रंगत करि करि अधिकी ख्याँति ।
 प्रेम पास दे रंगी पिछोरी लगै न दूजी भाँति ॥ ६ ॥

पद ३२

रहियै नाम में गलतान नहि तो जाहिंगो निसतान ॥ टेक ॥
 मारि बंदर मेट दुबध्या धारि अधरा ध्यान ।
 होइ तन मन माहिं परचा दाखिया गुर ज्ञान ॥ १ ॥
 शब्द कुहाड़ी सूइ साँसी सुकत करि किरसान ।
 नाम निज फण बहुत नेपै भूप दुःख नसान ॥ २ ॥
 मन पयना मिल लियो लाटो सिखर आई साख ।
 ज्ञान की भरि गुण गादी लदे बालद लाख ॥ ३ ॥
 तत्त ताँडे तणो नायक जाय समदाँ पार ।
 हरिरामाँ जय आय बैठा आर भार उतार ॥ ४ ॥

पद ३३

जिंदरिया जाहिंगी रहता है हरिनाम ॥ टेक ॥
 जिंद थकी नहि जाणियो प्राण आपणो पीव ।
 आँध पढ़ै कर पारके जम लेजासी जीव ॥ १ ॥
 बालपणै नहि जाणियो भर जोवनमें काम ।
 तन तयणा धृदा भयो तोइ न चेतै राम ॥ २ ॥

हल चल सास सरीर में मन छाँड्यो अहंकार ।
 पूत पिता परिवार में संग न चालणहार ॥ ३ ॥
 पिंड धरती पोढावियो कह तेरा नर कौन ।
 राम भजन बिन दूसरा सब ही आवागौन ॥ ४ ॥
 हरिरामा सतगुरु मिल्या सतका शब्द सुनाय ।
 राम नाम कूं सुमरताँ जीव न परलै जाय ॥ ५ ॥

पद ३४

गगरिया ज्ञान की जाविच अधरा ध्यान ॥ टेक ॥
 काया काची बेलड़ी विच पाका फल जानि ।
 चाखत ही चेतन भया अंधा रघा अजानि ॥ १ ॥
 नर मूरख निश्चै बिना दूर दिसंतर डोल ।
 सोसाहिव घट भीतरै ताहि न देखै खोल ॥ २ ॥
 जग सागर विष लहरियाँ के आवै के जाय ।
 हरि वेमुख से घदिगया हरिजन पार कराय ॥ ३ ॥
 पीव मिलन के कारणे लंघिया अवघट घाट ।
 अगम अगोचर धामकी सहजाँ पाई घाट ॥ ४ ॥
 हरिरामा हृद् छाँडिके बेहद में लवलीन ।
 अलख अजोनी आतमा सोई दोसत फीन ॥ ५ ॥

राग सोरठ ।

पद ३५

कोई मन मृगे कूं मारै रे ।
 तन खेती में चरि चरि जाये हे नहिं मेरे सारै रे ॥ टेक ॥
 मृग एक पाँच हे दिरणै लारि पधीस लवारै रे ।
 भर्म काम इनका हे संगी जे कोई हरि विडारै रे ॥ १ ॥
 निशि दिन नाम करत रुपवाली ज्ञान ध्यान शर घारै रे ।
 उलटी हरि मुष्टि बिन संधे सुरति निरति नहिं टारै रे ॥ २ ॥
 शील की बाहु संघार चहुँ दिशि प्रेम की पासी डारै रे ।
 जन हरिराम मारि मन मिरगा सब ही काम सुधारै रे ॥ ३ ॥

पद ३६

माधव का चाकर मैं हूँ हो ।
 भादि भंन मध्य नाम मुहारे पार उतारण तैं हूँ हो ॥ टेक ॥
 मैं बुखिया काहे दारिद्र्य तेरे कामी न काहूँ ।
 दीनबंधु दाता खगरी का भाग परागनि पाई ॥ १ ॥

तीन लोक का टाकुर तुम हो और किसी को जाचूँ ।
 तुम दरता तुमही करता नाच नचावो नाचूँ ॥ २ ॥
 का तो देश दिशंतर डोलूँ का वैठूँ घर माहीं ।
 डिग मिग मिटै नहीं जय जीवकी कारज सरै न काहीं ॥ ३ ॥
 जो मैं घास करुं वन वनमें मनघो रहण न पावै ।
 घरमें धका धूम बहुतेरी कहु कैसे धनिआवै ॥ ४ ॥
 मुझि औगुणका छेह न कोई तुझि गुणवंता साँई ।
 जन हरिराम कहै जहां राखो हरि तरवर की छाँई ॥ ५ ॥

पद ३७

संतो करक कलेजा माहीं हरि विन भाजै नाहीं ॥ टेक ॥
 सूती ही स्वप्ने में जानूँ सही पधारे सैन ।
 आधी हुय हुय मिलवा लागी ऊघरि आये नैन ॥ २ ॥
 तुम तो अंतरजामी कहियो मुझ माहिँलैरी जानो ।
 मुश्किल होय हमारे मन में तुम करता आसानो ॥ ३ ॥
 राज पाट सुंदरि सुत वित ही दूजा सुख संसारा ।
 पता परंत न भाँगूँ कबहु रामभाम विन खारा ॥ ४ ॥
 जन हरिराम कहै सो कीजै दीजै दरशन तेरा ।
 अरस परस मिल मोहि मिटावो आवन जावन फेरा ॥ ५ ॥

पद ३८

जीव रे जुगति सों कर जीण ।
 पांच पायक पेल पैतल मान का गढ़ लीण ॥ टेक ॥
 सुरति घोड़ा निरति सापैति क्षमा करि खोगीर ।
 पागड़े पग देत सासा डाक पैलै तीर ॥ १ ॥
 चौकंडै चित धारि चौकस लगाम लिवकीलाय ।
 प्रेम की सिर पहर पार्वर अगम दिशि कूँ ध्याय ॥ २ ॥
 तन तैरकस बांधि गाढा ज्ञान गढ़ कव्यारण ।
 ध्यान मूठी धारि उन्मनि शब्द लायो थाण ॥ ३ ॥
 साच की थंडूक साहो घचन गोली याहि ।
 जामकी तिलगाय जतना दिग्गं इंद्र दाहि ॥ ४ ॥

१ तह । २ पेरोंके नीचे । ३ साटका, राजना । ४ घोड़ेकी छाठी के थरे ।
 ५ चौफाल कुदान । ६ बस्तर । ७ भाषण । ८ कव्जा, काजू । ९ डिग=दिया या
 आधपाध ।

सेल सुमरण सोहि सहजाँ तत्त कर तरवार ।
हरिरामा जन एह औसर जीत भायै द्वार ॥ ५ ॥

पद ३९

मन रे गुरू का उपकार ।
विना फूँची सोल ताला मुक्ति का भंडार ॥ टेक ॥
वेद विन इक भेद भेया कछा सुणिया नाहिं ।
सहज ब्रह्मा पढै पोथी एक अक्षर माहिं ॥ १ ॥
उलट हृद कूं चढ़या वेहद बंकनाली पूर ।
इला पिंगला बीच सुपुमण निरख आतम नूर ॥ २ ॥
विना याती ज्योति झिलमिल अखंड दीया लोय ।
देह विन विदेह पुरुषा लहै महरम सोय ॥ ३ ॥
पंख विन इक जान भँवरा विना घाड़ी बीच ।
हरिरामा रहु ऐसे न्यार कमल कंदम न कीच ॥ ४ ॥

पद ४०

भरम कोई सतगुरु भांजैरे । साचो नाम सुनाय ॥ टेक ॥
सतगुरु मेरे सिरधणी मैं सतगुरु का दास ।
घाकै पास विलंबियै काटे जम के पास ॥ १ ॥
योग यज्ञ जप तप करै अठ सठ तीरथ न्हाहिं ।
उर आतम इक तार विन जग के गोलै जाहिं ॥ २ ॥
वेद कथा सुन सीख के घाचै देवै विचार ।
नाम नियारो रहिगयो करि करि लोकाचार ॥ ३ ॥
विन गुरु गम निश्चय विना कहै कदावै कूर ।
हरिरामा उन जीव सूं देख रहीजै दूर ॥ ४ ॥

राग वैतथी ।

पद ४१

सोई अभागिया रे हरि सूं नाहिं सनेह ।
माया मोह मगन भयो मनमें विषयां सेती नेह ॥ टेक ॥
रामनाम चेल्यो नहीं बालक तरुणां माहिं ।
पीछै पांव थकै सिर कंपै अँखियां सूझै नाहिं ॥ १ ॥
औसर मिनखा देह को भोंदूपणै न भूल ।
आयो हीरो गांठि सूं जाहि जतन विन खूल ॥ २ ॥

कूड़ कपट फिर फिर किया जहँ तहँ आघा होय ।
 आधे विरियां अंतकी फारज सरै न कोय ॥ ३ ॥
 विणज बटा धन बहु किया अपने स्वारथ जानि ।
 निज परमारथ बाहिरो आखिर हैगी हानि ॥ ४ ॥
 धार धार मैं क्या कहूँ कह्यो न मानै कोय ।
 ऐसे कीड़ो आक फो अंत्र कहाँ रे होय ॥ ५ ॥
 या जग माहीं आयके केता काम कमाय ।
 जन हरिराम भजन विनपके न्याय रीता नर जाय ॥ ६ ॥

पद ४२

सोई बडभागिया रे खालिक से मिल खेल ।
 छंद वाद से रहत है पाँच पचीसूँ पेल ॥ टेक ॥
 उलटा मन गगन किया आसन दृष्ट पचि मरता नाहिं ।
 पिंड प्रहंड अखंड भया परचा सुरति शब्द के माहिं ॥ १ ॥
 अष्ट प्रहर आनंद रहै मनमें रोम रोम जस गाय ।
 जाति न पाँति घरण नहिं बाके तासे ध्यान लगाय ॥ २ ॥
 घोधे चित्त चेतन किया मेला बोले अनहद धेन ।
 आतम एक सकल करि देखै दुर्जन ना कोई सैन ॥ ३ ॥
 मर्म कम संशय नहिं सोगा आसा छांडि निरास ।
 जन हरिराम शब्द किया सुनमें एक निरंतर यास ॥ ४ ॥

पद ४३

सुणो नर नारिया रे अपनो पीव पुकार ।
 नहिं तो परलै जायसी लख चौरासी धार ॥ टेक ॥
 सतगुरु शम्भासों कहे मनया सादि न भूल ।
 ऐसेो जुगमें को नहीं रामनाम से सुल ॥ १ ॥
 साधु विना कुन सीखथे राममजन की रीति ।
 बूढा से नर पापड़ा करि करि जग सुं प्रीति ॥ २ ॥
 यारी हरि सुं कीजिये दूजा दाय निवारि ।
 पासो पिउसों खेलतां कदे न भाधे हारि ॥ ३ ॥
 साधु मित्या गुण संपण्या उपण्या परम आनंद ।
 जन हरिराम कहे बलि जाऊं जिन भेट्या दुखअंद ॥ ४ ॥

इत्यर्थम् ।

अथ श्रीविहारीदासजी महाराज का सरसरा ।

यद्दत्त संत ररकार लगत रग धमक मूर्धंग तत शम्भु नचक्रता ।
 भध मध उतम उतमभति सुमरण कीर्तन करण कल्याण गयकता ॥
 कमंडलु जल झान झल्लु जल निर्मल धरचत भंग तिलकता ।
 अधःकमल पर भगृत धरंत छकत अकथ छरु अकथक वकता ॥
 ऊर्ध्वं धरर धर अंघर घणणण भणण भृंग मध सिंधु झलकता ।
 विधिविधि धाज अनैत गम उरमध घटघट प्रगट अघट ध्यनि गुनता ॥
 सय तनु धरर रोम रग रररर फरर पंचसरि रंग रुचकता ।
 फ्रिगटि फिरत पग गूधर घणणण चणणण मधुरिसि डेर यन्नकता ॥
 करमद्द ताल स्तयक जय झरझर धरधर झणणण जीझ झणकता ।
 त्रिकुटि अघट ध्यनि मुनियर तणणण तार तयल ततकार तनकता ॥
 शिषपद् अचल भमल घट हल्लल्ल घदन भल्लल्ल घपु चन्द्र झलकता ।
 नमस्कार पद् परम चरित्र नित्य करत विहारी धारी तुमारि पलकता ॥१॥

॥ इत्यलम् ॥

श्रीसिंहयल धाम की जितनी पाठ-वाणी की पुस्तकें हैं उन सब का क्रम इस भांति है। श्रीरामानन्दजी महाराज, श्रीजैमलदासजी महाराज, श्रीहरिरामदासजी महाराज, श्रीनारायणदासजी महाराज, श्रीहरदेवदासजी महाराज, श्रीरामदासजी महाराज, श्रीदयालदासजी महाराज की वाणी तदनन्तर श्रीकवीर साहब, नामदेवजी, और रैदासजी की वाणी लिखी हुई हैं जिनका नित्य प्रति पाठ होता है। तथा श्रीखेड़ापा धाममें श्रीहरिरामदासजी महाराज, श्रीरामदासजी महाराज, श्रीदयालदासजी महाराज, श्रीपूरणदासजी महाराज, और श्रीअर्जुनदासजी महाराजकी वाणी का पाठ होता है बाकी पाठ पूर्वोक्त ही हैं। परन्तु अब कई महानुभावों के हृदय में संका होने लगी है कि श्रीनारायणदासजी महाराज यांभायत थे अतः श्रीसिंहयल पाटगाड़ी पर विराजमान आचार्यों की वाणी से पहिले श्रीनारायणदासजी महाराज की वाणी का यह विपरीतक्रम किस कारण से हुवा। श्रीरामदासजी महाराजने भक्तमाल में यांभायतों से पहिले पाटगाड़ी ही का क्रम वर्णन किया है। यथा:—श्रीहरिरामदासजी महाराज के वर्णन के बाद—

“रोम रोम सहजों छिव लागी। व्यारीदास मित्या बडभागी” ॥

पाटगाड़ी के अधिकारीजी का वर्णन कर फिर यांभायतों के लिमे फरमाया—

“दास नारायण अमी धियाया। आदुराम रामगुण गाया” ॥

इन क्रम वाक्यों से यह निश्चय हुवा कि पहिले पाटगाड़ी का और फिर यांभायतों का वर्णन है।

आगे चलकर श्री दयालदासजी महाराज की वाणी देखते हैं तो पहिला ही क्रम दिखाई देता है। श्रीहरिरामदासजी महाराज के बाद ही

“व्यारीदास अपार बुधि राम संत जस उचन्थो”।

फिर हरदेवदासजी महाराज का वर्णन किया—

“हरदेव मेव सतगुरु कृपा भक्त अंस परगट भए”।

इस प्रकार क्रमशः पाटगाड़ी का लेख देकर पश्चात् संवत् १८०६ में सबसे पहिले टीका घारण करने की वजह से यांभायतों में बडे जो श्रीनारायणदासजी महाराज हैं उनको स्थान दिया

“निर्मल दशा निर्दोषता नारायणदास विचार बुधि”।

ऐसा नारायणदासजी महाराज के वासे लिखकर फिर श्रीरामदासजी महाराज के लिमे वर्णन करते हैं।

“भक्त समय भूमंडमें बलि बटि वारंवार नित।

समत अठार प्रसिद्ध वर्ष नवको भल आयक।

एतु पञ्च वैशाख तिथी एकादशि तायक ॥

१ श्रीखेड़ापा यांभायतों के ठिकानों में भी इसी प्रकार पाठ है। केवल यांभायत महानुभावों की वाणी अधिक है जिसका कई ठिकानों में अनुक्रम से श्रीदयालदासजी महाराजकी वाणीका पाठ न करके अपने महानुभावों की वाणीकाही पाठ करते हैं।

ताम्रिन उदय उद्योत परत गागुह पद पूरा ।
 आन आन मिल आन राम भज उदय भंहरा ॥
 राहुद मिल राहुद भया दाल बाल भर ध्यान वित्त ।
 मज्ज समय भूमंडमें बलि बलि करंवार निज ॥ १ ॥”

यह दाल महाराज निरवित मज्जमालका शेष है । आगे चन्द्रर श्रीरामदासजी महाराज की बाणी को देखते हैं तो आने भी यही क्रम दर्शाया है, श्रीहरिरामदासजी महाराजका वर्णन कर फिर

“दास विहारी विमल बाणी जागु गिख हरदेव ।
 तामु भोतीराम धिन एगुनाय रातगुह सेव ।
 तो निजमेवत्री निजमेव पायो मफि को निजमेव ॥ १ ॥”

इस प्रकार पाटगाठी का वर्णन कर फिर श्रीरामदासजी महाराजके लिये वर्णन करते हैं

“हरिराम गिख धिन रामदासजु धीर नहि कोइ आत्र ।
 निरख सब निरताय निर्णय करण जीवां कात्र ।
 तो महाराज जी महाराज मंडमें अवतरे महाराज ॥ १ ॥”

इस प्रकार श्रीरामदासजी महाराज धीदयालदासजी महाराज और श्रीरामदासजी महाराज के फरमाने के अनुसार पाटगाठी के क्रमसे उन उन आवायों की बाणीका यथाक्रम पाठ बराबर होता चलाआता है तिरफ श्रीनारायणदासजी महाराज की बाणीके पाठ में पूर्वोक्त आशंका होती है, परंतु यह शंका तो श्रीदयालदासजी महाराजने अपने गुरुप्रकरणके प्रकरण ७ में पहिलेही निवारण करसी है ।

सं. १८३४ के चैत्रकृष्णा ७ को श्रीहरिरामदासजी महाराजके शिष्येनि श्रीगुरुदेवजी श्रीहरिरामदासजी महाराजका जीवित महोत्सव (मेला) मनाया जिसमें धीरी महाराजके सब शिष्य शिष्योंको कुंकुमपत्रिका दी गई सैंकडो कोसों से हजारों यात्री दर्शनार्थ आये जिसके बारे में श्रीरामदासजी महाराजने अपनी वाणी में फरमाया है—

“मेलो कर गुरुदेवजी सब कों लिए बुलाय ।
 दर्शन दे पावन किए मिले ब्रह्म में जाय” ॥ १ ॥

श्रीहरिरामदासजी महाराजकी परची का वर्णन—

“धाये जबै महोत्सव माये जहँ जहँ पूगे समंचार ।
 भाई धाई रामसनेही सब आये स्वामी के द्वार ॥
 रामप्रताप कमी नहि काई इहाँ धन ईशतणा भंडार ।
 भावै नहीं लोक पुर माहीं ऐसो यटियो धाट अपार ॥ १ ॥

दोहर ।

शष्टसिद्धि नवनिधिजु पुनि, हाजर हुई सो आन ।
 धीस्वामी के भवनमध्य, सब विधि भए समान ॥ १ ॥”

इस प्रकार बड़े धूम धाम के साथ पांच दिन तक मेलेका उच्छ्वसमाज होता रहा, इसका आनंद तो वेही जानते हैं जिन्होंने उसका अनुभव किया।

“वह शोभाशु समाज सुख, कहत न बने खगेश।

वरणै शारद शेष पुनि, सो रस जान महेश ॥ १ ॥ (रामायण)

महादेव के समान इस आनंदकी पाकर लोक कृतकृत्य हो आशा माँग माँग सब चले गए। सत्यवात् श्रीरामदासजी महाराजकी श्रीजीमहाराज श्रीहरियानंदजी महाराजसे आशा ले कर दिव्य अलौकिक गुरुमूर्तिका ध्यान करते हुए पीछे रीढ़के पधार गये।

जीवित महोत्सव से पंद्रहवें दिन अर्थात् संवत् १८१५ के चैत्र शुक्ल ७ शुक्रवारके दिन श्रीहरिरामदासजी महाराज ने परम धाम पधारनेका दृढ निश्चयकर विरहदुःख से दुःखित श्रीनारायणदासजी महाराज को जिसप्रकार अंतिम शिक्षा, आशा और जो महेश्व प्रदान किया उनका वर्णन श्रीदयालदासजी महाराज गुरुप्रकरणमें श्रीकृष्ण उद्धव रूपसे इस तरह करते हैं:—

निजपुर हरिजातोंह प्रसन्न हुइ उद्धव कछो ।

शब्द ब्रह्म सायोंह कलेवर हित कीज्यो मती ॥ १ ॥ (गुरुप्रकरण)

अर्थात् परमधाम पधारते हुए कृष्णस्वरूप गुरुमहाराज श्रीहरियानंदजी महाराज उद्धवरूप नारायणदासजी महाराजको निज विछोहके कारण अत्यंत दुःखित देखकर आपने उपदेश किया कि शब्दब्रह्म तो अपने साथ है और कलेवर (शरीर) के लिए सोच करना मत। क्योंकि यह तो पांचभौतिक नाशवान् ही है।

महापुरुषवाक्य है—जो तूं चेल शब्द का शब्द ब्रह्म कर जान।

जोतूं चेल देहका देह खेह की खान ॥ १ ॥

इसलिये सोच तो तीन ही कालमें नहीं करना चाहिये। फिर आप श्रीमुखसे फरमाते हैं—

“मैत्रेय रामदास सखौ एक मेरो यहाँ।

धीरज ध्यान प्रकास हरदेवो होवी इसो ॥ १ ॥ (गुरुप्रकरण)

अर्थात् हे नारायणदासजी, यहाँ एक मेरा रामदासजी जो है वह साक्षात् मैत्रेय

१ “यूं रामै जन मांगी आशा। लागत जान गुरांकी जाग्या ॥

खामी कछो रहो तुम याहीं। इन कारण ठहरे जब नाही ॥

कर परणत बहुत परकारे। ध्याये मुरधर देव मैकारे ॥

(परची धीहरि०)

१ इस शोरेटेमें सलापद् जो है सो उद्धव के लिये ही है क्योंकि भगवान् के सखा उद्धवही ही थे—

ऋषि हैं बड़े धैर्यवान् हैं औ ज्ञान का प्रकाश करने वाले हैं । तत्रापि उनके लिये भी यही कहना है कि इस नाशवंत शरीरके लिये सोच न करें, और हरदेवजी रामदासजी के तुल्य ही धैर्यवान् और ज्ञान का प्रकाशक होगा; परंतु अभी बालक है इसलिये इसको धीरज दिलासा बंधाते रहना; इस प्रकार फरमाकर जैसे परमधाम पधारते हुए भगवान्ने उद्ववजी के लिये महत्त्व प्रदान किया—

नोद्ववोऽप्यपि मन्थूनो यद्गुणैर्नादितः प्रभुः ।

अतो महद्युनं लोकं प्राह्यशिव तिष्ठतु ॥

(श्रीमद्भागवत स्कंध ३ अध्याय ४ श्लोक ३१)

अर्थात् उद्वव मुझसे अणुमात्र भी न्यून नहीं है क्योंकि यह विषयोंसे निकलकुल क्षोभयुक्त न हुआ, इसलिये यह समर्थ उद्वव लोकों को मद्दिपयक ज्ञानका उपदेश करता यहीं रहना चाहिये ।

दयालुदासजी महाराजने गुरुप्रकरणमें इसका रूपक इस प्रकार वर्णन किया कि उद्ववरूप नारायणदासजी महाराजको महत्त्वता दिराते हुए धीजीमहाराज फरमाते हैं—

“नारायण भाशा आदि, इण संज्ञा रहजे यहाँ ।

दासा सेव समाधि, भक्ति प्रेम सुमरण सदा” ॥ (गुरुप्रकरण)

हे नारायणदासजी, तुम्हें आदि भाशा है अर्थात् सबसे पहलही पहल तुम शिष्य हुए हो और दासातन, सेवा, समाधि, तथा प्रेमभक्ति और सुमरणमें तुम सदैव बड़े सत्पर हो । अधिकांश विहारीदासजीका तो देहान्त होगया है और हरदेवजी छोटे १० वर्षके बालक हैं और यह गुरुपरंपरा शिक्षा प्रणाली लोकोद्धारार्थ एक रखनेकी जरूरत है इसलिये तुमसे अंतिम यही भाशा है कि तुम्हारे शिष्य बेशक धर्मागत बनें परंतु तुम इन संज्ञामें इसी धाममें निवास करना । इस भाशाको सुनकर धीनारायणदासजी महाराज विरहसमुद्रमें विहल होने लगे तब तो धीजीमहाराजने फिर उनको दिलासादे आशीर्वादात्मक दो शब्द फरमाए—

प्रमाणः—वृष्णीनां प्रवृत्ते भंभी वृष्णस्य दयितः दासा ।

दिप्यो वृहसतेः पाप्मादुद्वो बुद्धिगतमः ॥

धीमद्भागवत स्कंध १० अध्याय ४६ श्लो० १

बुद्धि बुद्धि संगो मुनो पठाधर्म आधार ।

वृष्णसखा वेदि विधि रहत उद्वव बुद्धि उदार ॥ १ ॥

रघु० मत्स्यजल द्वाराखंड कथा ३०

इस प्रमाण से दासा शब्द उद्वव का ही संबोधन है ।

सोरठा ।

सब मेरा मुझ मोंय, रामशब्द राता जिके ।
दूरा फदे न थाय, सन्दरुप मिलसां उठे ॥ १ ॥

दोहा ।

आनंदमें रह ज्यो सदा, कह्यो सुमरण सार ।
रामसनेही रामजन सांचो एह विचार ॥ १ ॥ (गुरुप्रकरण)

यह अंतिम उपदेश फरमाकर अपनी वाक् वाणी बंधकर मोक्ष पथार गए । इस अंतिम गुरुवाक्योपदेशको धारणकर श्रीनारायणदासजी महाराजने जहाँतक आपका शरीर विद्यमान रहा तहाँतक श्रीसिद्धल निजधाम को छोड़कर अन्यत्र कहींमी चरण न धरा । यहीं आप धाम पधारे; सिद्धल देवलोंमें श्रीजीमहाराजके देवलके पास सामनेही आपपर छात्रो बनीहुई है । सब थांभायतों का वर्षी मेला अपने अपने स्थान ठिकानोंमें होता है परंतु नारायणदासजी महाराजकी वर्षी तो सिद्धलमें ही धीपाट कोठारसे सालानी होती चली आती है ।

अब देखिये श्रीहरिरामदासजी महाराजने जिन नारायणदासजी महाराजको इतना महत्त्व दिया और श्रीदयालदासजी महाराजने गुरुप्रकरण में जिनके महत्त्वका पूरा पूरा वर्णन किया क्या ये वचन अप्रामाणिक समझे जा सकते हैं ? पाठकवृंद स्वयंही विचार करलें । वास्तवमें महारामाओंकी अनुभववाणीमें पहले पीछेकी शंका करणी ही व्यर्थ है क्योंकि उन महापुरुषोंके अनुभवशब्द हृदयांधकारको मिटानेके लिये साक्षात् सूर्यरूप हैं । उनमें पहिले पीछे क्या ।



अथ श्रीनारायणदासजी महाराज की अनुभव वाणी ।

सारी ।

सत्त गुरु अद्य सन्त जन, राम निरंजन देव ।
 दास नारायण धीनयै, दीजे परभू सेव ॥ १ ॥
 नरिया मन का दुःखड़ा, किसकूं कहै सुनाय ।
 मन विषयारी विष दशा, दमदम दोड़यो जांय ॥ २ ॥
 मन माया के संग फिरै, अंतर करै विकार ।
 मन करि मनको मारिदो, हरि से करूं पुकार ॥ ३ ॥
 सहस्र की आशा हुई, मुखसैं सुमन्या राम ।
 नरिया निश्चो पाइयो, तजिया कुल बेकाम ॥ ४ ॥
 तीन लोक का राजवी, राम निरंजन राय ।
 सतगुरु के परताप तैं, नरिया तन में ध्याय ॥ ५ ॥
 नरिया गुरु आली करी, चेतन चरण लगाय ।
 भरम विषे वह जायता, अपणा जान समाय ॥ ६ ॥
 नरिया गुरु पेसी करी, तैसी करै न कोय ।
 जग सागर संग जायतां, राखलियो हूँ मोय ॥ ७ ॥
 नरिया रामहिं सुमरियै, टालै जमकी घात ।
 आलस ऊंघ न कीजिये, अवसर धीतो जात ॥ ८ ॥
 नरिया रसना राम कह, कंठ कमल सुमराय ।
 प्रेम पियाला भर पिया, पीवत पाप नशाय ॥ ९ ॥
 हिरदै धुन लागी रहै, सुमरै मांहो माहिं ।
 तन सारो चेतन भयो, नरिया सुख उपजाहिं ॥ १० ॥
 नरिया नाभी आयतां, हूआ सास उसास ।
 मन तन सबही नाचिया, सुमरन रग रग पास ॥ ११ ॥
 रसना नाभी बीचमें, एक अखंडी तार ।
 नरिया रोम हि रोम में, सार शब्द श्लकार ॥ १२ ॥
 नरिया भाग्य उदय हुआ, धनि है विधी अपार ।
 रोम रोम में रम रह्यो, एक शब्द ररकार ॥ १३ ॥

अथ चेतावनी प्रारंभः ।

चेतावनि सुन चेतरे, मूरख मध गँवार ।
 राम निरंजन ध्यायलै, दैगो सुख अपार ॥ १ ॥

छन्द जाति ऊधोर ।

फिरियो जीव जन्मां माहिं । कित्ये चैन पायो नाहिं ।
 अथ तो सिनख करि मोकूंह । साईं सुमरसूं तोकूंह ॥ १ ॥
 नायक जन्म देवो मोहि । हिरदै वीसरूं नहिं तोहि ।
 फरसूं संत की सेवाक । भज सूं राम कूं देवाक ॥ २ ॥
 दीया गर्भ ही में वास । जटराअग्नि ही के पास ।
 फीया देह का आकार । सारा अंग ही सुध्धार ॥ ३ ॥
 उद्दर माहिं कीवी सार । ऊंधै मुख अम्मी धार ।
 राख्यो मास ही नव जाण । उद्दर वीच ओखो प्राण ॥ ४ ॥
 माहीं करत है पुकार । बाहिर लाव हो कर्तार ।
 मेरे तोहि को आधार । करसूं याद भियतम यार ॥ ५ ॥
 भ्वासोभ्वास ही संभार । प्यारा राखसूं उरधार ।
 अथ तो जन्मियो हे बाल । दया करी है दय्याल ॥ ६ ॥
 दाई कहै सुधन्यो काम । बाहिर काढियो हे जाम ।
 माता हर्ष करि परसैह । बालो कान्ह सो दरसैह ॥ ७ ॥
 पिता कहै हुआ न्याल । बेटो कमासी धनमाल ।
 भाई कहै अपनो धीर । बल तो बंधियो शरीर ॥ ८ ॥
 बहिनइ धाल लेवै पास । राखै बनां भोटी आस ।
 कहुंवै हुआ मंगलचार । गावै गीत वैठी नार ॥ ९ ॥
 माता पिता सेती प्यार । सबसें करत है हितकार ।
 बालो रमै खेलै सोय । माता पिता विकसै जोय ॥ १० ॥
 मही दूध पीवै आय । लाहू चूरमांही खाय ।
 अथ तो साथियाँ में जात । खेलै बहुत ही दिनरात ॥ ११ ॥
 कूदै फैल ही करैक । किनता विहृही मरैक ।
 राखै पिताही समहाय । मानै नहीं जोरै जाय ॥ १२ ॥
 ख्पाळी खलकसूं खुशियाल । अथ तो वीसन्यो गोपाल ।
 खांगी पाष ही बुकाय । चंगा चौलणा लग्गाय ॥ १३ ॥
 आछो करत है शृंगार । जोवै रूप ही दीदार ।
 हूयो मरद ही मोटवार । माहीं ऊपज्या विकार ॥ १४ ॥
 करमी करै जारी जाय । कसरौं काइसी जमराय ।
 राखै जोश ही मनमाहिं । मोसा और फोई नाहिं ॥ १५ ॥
 मुखसे बुरो ही भावैह । सय सूं धैर ही राखैह ।
 हरि से हुआ गुनहै मार । जमरो मार करती ख्यार ॥ १६ ॥

गाफिल समझ रे अज्ञाण । माथे रात पति फूँ जाण ।
 फीयो नीरसे पैदाक । ताफूँ भजरे गन्दाक ॥ १७ ॥
 दोलत दियी छै सोईक । गोविंद गाय रे सोईक ।
 भय तो व्याहि लायो नार । पासे बांधियो घरवार ॥ १८ ॥
 माता पिता से करि जुद्ध । माया घाँटि ली बेसुद्ध ।
 गाडे व्याज ही देवैज । दूणा दाम ही लेवैज ॥ १९ ॥
 पिघ सुं प्रेम ही भागोक । लोभ न मोह सुं लागोक ।
 नेहा नारि सँ दिनरात । बूढो कामना में जात ॥ २० ॥
 पंदो घिरत रोटी गाय । सोवै नींद ही अध्याय ।
 घाँयल गाय चंगा माल । साँई विना भूँडो हाल ॥ २१ ॥
 हत्या करे मारै जीव । यदुला मांगसी रे पीव ।
 मांसहु खाय पीवै मद् । हैगो मरद ही गरद ॥ २२ ॥
 पीवै पोस्त ही को लाय । पोसत पिंड ही को खाय ।
 पीवै तमाफू अरु भंग । जावै नीच जूणाँ संग ॥ २३ ॥
 पांचूँ पसरिया अप्पार । फीया कर्म ही हुशियार ।
 मनयो विपै सुं भरियोह । स्वादाँ लागके मरियोह ॥ २४ ॥
 वंदा छाँड मैला खाज । माँहे सुमर लै महाराज ।
 निश्चै नाम लै निराश । नहिँ तो होय सत्यानाश ॥ २५ ॥
 दया दीनता कर भाय । माया राम लेखै लाय ।
 मन को देत है विचार । समझै नाहिँ रे गंधार ॥ २६ ॥
 फीयो संपदा विस्तार । मेरै पूत पोता नार ।
 मेरै गाय गोधा अन्न । मेरै ऊँठ घोड़ा घन्न ॥ २७ ॥
 आंधो अहं में डोलैह । मुख ता राम नहिँ बोलैह ।
 कहारे भरमियो भइयाह । हरि से दूर ही रहियाह ॥ २८ ॥
 झूठै बांधियो रे जाल । वंदा खायसी रे काल ।
 हिरदै नाहिँ हरि का हेत । मुँहडे पड़ेगी बहु रेत ॥ २९ ॥
 फीया श्याम से वचन । जासुं झूठ पड़ियो मन्न ।
 रक्षा करी दोहरी माहिँ । तासँ प्रीति फीवी नाहिँ ॥ ३० ॥
 फीया गुण ही अप्पार । पेसा भूलग्यो करतार ।
 जान्यो नाहिँ सिर्जन द्वार । माथे पड़ेगी बहु मार ॥ ३१ ॥
 अय तो जरा जोजर थाय । बूढो अंग ही धूजाय ।
 कुड़ियो डांगड़ी संभाय । आँखे धुंध लागी जाय ॥ ३२ ॥
 बूढ़ा काम होवै नाहिँ । आंधा अकल नाहिँ माहिँ ।
 नारी कहै कैसे काम । नाखो छानड़ी में चाम ॥ ३३ ॥

घेटा कहै घरमें साल । पापी पड़यो है बेहाल ।
 शफो ठूक देवे लाय । गल में ऊलड़े नहिं भाय ॥ ३४ ॥
 तन से काम करता सव्य । आदर भाय करता जव्य ।
 अब तन थाकियो म्हारोक । सब कुं लागियो खारोक ॥ ३५ ॥
 यो तो खारधी संसार । तेरो नाहिं रे परिवार ।
 घूदो दुखी है मनमाहिं । यामें कोई मेरो नाहिं ॥ ३६ ॥
 घर में घणो रे कीतोक । कुछ इक छोद रे पूतोक ।
 पूतां कियो है विचार । पिता करंगा कुछ लार ॥ ३७ ॥
 दुनिया लोक बूझिआय । बूढ़ा व्यथा तेरे काय ।
 छोटा कर्म लागी आय । पीड़ा पिंड सारि दाय ॥ ३८ ॥
 बूढ़ा राम कहै भाईह । दुष्टी दायही लाईह ।
 अब तो मौतही आईह । संगी कोई नहीं भाईह ॥ ३९ ॥
 नर तूं धीस-यो धेकाम । संगी नाहिं फीयो राम ।
 चेत्यो नाहिं रे गंवार । आछो जन्म चार्यो द्वार ॥ ४० ॥
 नर तूं काहे कुं आयोह । हरि को नाम नहिं पायोह ।
 फंठ कुं काल रोक्यो आय । सब ही द्वार घूंघा लाय ॥ ४१ ॥
 मारों दियी मांहो माहिं । दोदरो पिंड छूटे नाहिं ।
 यहुतो फट ही ह्वोह । माया मोह करि मूयोह ॥ ४२ ॥
 लोकां घाल फीयो छारि । देखा देखि रोवे नारि ।
 जमरो मारि लेग्यो जीव । आडो नाहिं आयो पीव ॥ ४३ ॥

साखी ।

पति रूं धे मुग होय करि, मिल्यो मायाक साय ।
 भझानी नर अहं मे, पड़यो पराये दाय ॥ २ ॥

छंद जाति ऊधोर ।

अब तो लेखर्या जमदूत । फीयो मार करि धर पूत ।
 लेग्या धर्मके भागीह । लेखा सप ही मांगिह ॥ ४४ ॥
 झूठा घोल कह नहिं सोय । मुटत नाहिं फीयो कोय ।
 मैला काम ही फीयाक । हरि का नाम नहिं लीयाक ॥ ४५ ॥
 जापर कोपिया जमराय । मारों दियी जाही लाय ।
 छातां मारियो पिच्छाइ । गल में घाल घीस्यो नाइ ॥ ४६ ॥
 ऊंधो डेर दीपी मार । जम्मां जोर फूट्यो जार ।
 दिरदै नाहिं हरिका लेस । नार्यो मुगदयां रूं पैग ॥ ४७ ॥

भागे भक्ति का बंध्यार । तपती भाय ताना सार ।
 ऊपर तादिके के-योह । बंदो घाल करि ने-योह ॥ ४८ ॥
 नाक्यो नरक ऊंडे ताण । कीड़ा तोड़ छूटे प्राण ।
 फूके पड़े माथे मार । बंदा तोहि कूं घिरकार ॥ ४९ ॥
 सापां विच्छ्रुयां का कुंड । तामें डार दीयो चंड ।
 विच्छ्रु साँप पिंजरखांहि । दूतां मुगदरां की लाहि ॥ ५० ॥
 पेसी भास दीधी ताहि । प्राणी पड्योही बिललाहि ।
 एहा नरक ही भुगताहि । भुगते बहूत जुगां माहि ॥ ५१ ॥
 जग में स्वाद ही लीयाह । सादिय याद नहिं कीयाह ।
 यो तन केर पाये काँय । पड़ियो अनंत ऊंडे माँय ॥ ५२ ॥
 बंदा राम सुमन्यो नाहिं । दुःपां पार कैसे पाहिं ।
 मनमें राखता अभिमान । जोधा गया मैली खान ॥ ५३ ॥
 फरता गर्भ ही गुम्मान । गया नरक ही निदान ।
 ऊंचा महल ही अब्बास । करता नारि नर बिल्लास ॥ ५४ ॥
 खाता भेवा भीठा भात । प्याला पीवता निव्वात ।
 निर्गुण नाम राता नाहिं । गया गंदकी के माहिं ॥ ५५ ॥
 मांही केई जुगां ताहिं । पीछे चोरासी कूं जाहिं ।
 जूणां अनेक ही भुगताय । जामें ऊपजे खपजाय ॥ ५६ ॥
 बहुतो दुःख पावै जीव । सुमन्यो नांहिरे तें पीव ।
 तार्ते कष्ट तन पायोक । जुग जुग माहिं भटकायोक ॥ ५७ ॥

साखी ।

सतगुरु शरणे ऊबन्या, नरिये सुमन्या राम ।
 नहिं तो भरम्या जावता, दुख पड़ता बे काम ॥ ३ ॥

छंद जाति ऊधोर ।

शरणे संत के आयाक । भावरु भक्ति ही भायाक ।
 सेवा घाल की लागाह । दुविधा दोष ही भागाह ॥ ५८ ॥
 रसना नाम ही लीयाह । अमृत कंड ही पीयाह ।
 हिरदै ध्यान ही धरियाह । तन मन सहज थरहरियाह ॥ ५९ ॥
 नामी नाम ही निरधार । सुमरण सहज ही उधार ।
 संगी साँचही धान्याह । झूठा पास ही डान्याह ॥ ६० ॥
 सुं प्रेम ही लायाह । हरि गुण हेत सुं गायाह ॥
 सहजां खान ही आयाह । मनवै शान्ति ही पायाह ॥ ६१ ॥

उलटा पल्लि कूं ध्यायाह । ऊंचा मेरु करि थायाह ।
 बाजा गगन ही थायाह । निरँजन शून्य ही पायाह ॥ ६२ ॥
 सुन में शब्द ही निरकार । लागी सुरत ही इकतार ।
 सुन में सुकष ही मइयाह । दूजा दुःख ही गइयाह ॥ ६३ ॥
 पूरण प्रह्ल ही कूं पाय । सहजाँ रहे सुख सम्माय ।
 मिटिगे जनम अरु मरणाक । अब तन फेर नहिँ धरणाक ॥६४॥
 मिलिया नीर में हुय नीर । हंसा चुगत है हरि हीर ।
 पाया राम ही महाराज । सरिया सहज जनका काज ॥ ६५ ॥

साखी ।

सतगुरु के परताप तें, नरिये नाम पियाह ।
 प्यासा प्राण पिलाइया, पीवत ही जीयाह ॥ ४ ॥
 और सकल कूं छौँडि करि, परस्य आतमराम ।
 नरिया साँसा को नहीं, जाय मिह्या निजधाम ॥ ५ ॥

इति चेतावनी ।

अथ प्राण-परचा प्रारंभः ।

साखी ।

जन्म जन्म जिष भरमियो, माया मोह लगाय ।
 भयसागर में दूयताँ, सहद लियो रताय ॥ १ ॥

घोपाई ।

सहद न्यारा है निर्वाणी । दे दे धान तारिया प्राणी ॥
 सहद पूरण प्रह्ल पियारा । दर्शन पायो बिले विकारा ॥ १ ॥
 सहद एकमेक है साँई । भूल पदुषा जग जाणे नाँई ॥
 सहद सेष करेँ में धोरा । में हीँ तन मन जीय तुम्हारा ॥ २ ॥
 सहद मोकों शरण उयारो । निशिदिन मेरे तोहि अघारो ॥
 सहद मोकों दूयत तारो । भय सागर तें पार उतारो ॥ ३ ॥
 सहद पेनी दया उपायो । दुख दोझक कोँ दूर गमायो ॥
 सहद काम शोध कोँ पालो । में तो कपटी रिपय पिढालो ॥ ४ ॥
 सहद भारा कृष्णा जालो । म्वादी मन माया मोह टालो ॥
 सहद में तो भग्घ भ्रमानी । फाटो कमे करेँ निज धानी ॥ ५ ॥
 सहद मो मन दीइ मिटायो । लालच लोभ र मोह दटायो ॥
 सहद देवो शील सन्तोष । भारो मघ करो निशोषा ॥ ६ ॥

सहृद देवो ज्ञान विचारा । अवगुण भेटि करौ निस्तारा ॥
जन हरिरामजु भर्म गमाया । संशय शोक रु कर्म नसाया ॥ ७ ॥

साखी ।

सहृदसिरजन द्वार है, सब का समर्थ साम ।
अवगुण भेट्या दालजी, दिया मोहि निज नाम ॥ २ ॥

चौपाई ।

राम राम रसना से लीया । प्रेम प्रकाश कंठमें फीया ॥
मनवा माहिं नाम से लाया । हिरदु सुमरण हेत लगाया ॥ १ ॥
नाभी भजन किया अधिकारा । पिड सारेमें रमै पियारा ॥
रोम रोम में अर्थ उचारा । अंग अंग में ही विस्तारा ॥ २ ॥
सहजाँ सुरति शब्द उलटाया । छांड्या देश विदेशां ध्याया ॥
बंकीनाल चले एक धारा । मेरुदंड में हुआ करारा ॥ ३ ॥
घर्षा सहज घणी चहुँ खंडे । उलटा नीर चढ्या ब्रह्मंडे ॥
सुनसागर के माहि समाया । अनहद गाज गगन गणनाया ॥ ४ ॥
पहुँता सन्त अमीरस पीया । लुप्ता घटी जिके नर जीया ॥
परमह से प्राण पिलाया । निशिदिन चरणे ध्यान लगाया ॥ ५ ॥
जित्ये काल कर्म नहिं काया । जित्ये विषय विम्र नहिं माया ॥
राम निरंजन जग से न्यारा । दिया नरैकों सुफल अपारा ॥ ६ ॥

साखी ।

में हीं प्राणी आपका, कहां न फीजे दूर ।
प्रेम भक्ति नरैकों दियो, राखो नित्य हजूर ॥ ३ ॥

चौपाई ।

शरणे भार दीनता दाखे । सहृद मोकों चरणों राखे ॥
गो मुद दीया ज्ञान विचारा । भर्म कर्म से फीया न्यारा ॥ १ ॥
सहृद मेरे किरपा फीनी । भाव भजन की आज्ञा दीनी ॥
सहृद गनका शब्द सुनाया । मुखसे रामनाम सुमराया ॥ २ ॥
रामनामगा माम न कोई । भावे माँह राकल फिर जोई ॥
राम राम कदि राम मिलायै । लख चौरासी कयहु न जायै ॥ ३ ॥
सहृद ऐगा तस्य बनाया । निधय एको राम कहाया ॥
सहृद ऊपर प्राण भेयागी । तन मन शीत चरण में डारी ॥ ४ ॥
रदन जु नेह लगाया । कंठ कमल में सुमरण आया ॥
होर प्रमत्त पाया । पी पी प्राणी कर्म ममाया ॥ ५ ॥
रचना नाम विज्र भाया । हिरदु ध्यान घणी का आया ॥
दीनता ज्ञान विचारी । दिलकी सुमंति दूर निचारी ॥ ६ ॥

चेतन चलकरि नाभि सिधाया । श्वास उश्वासे सुमरण लाया ॥
 तन मन सब ही सहज नचाया । भाँति भाँतिका नृत्य कराया ॥ ७ ॥
 रग रग भीतर सहज पत्तार । रोम रोम में है ररकार ॥
 नाड़ि नाड़ि में जीव जगाया । सारशब्द के संग लगाया ॥ ८ ॥
 जीव पलटिया ग्रह जु होई । और विकार लिये नहिं फोई ॥
 विरहनि झुरी श्रुती अपारा । अथ तो पाया पीतम प्यारा ॥ ९ ॥
 दया करी मोहि दुःख मिटाया । चरणकमल के घीच रखाया ॥
 ररंकार सहजाँ लिय लाया । प्राणी बहुत परम सुख पाया ॥ १० ॥
 पीया ऐसी कृपा जु फीनी । शरणै सदा आपमें लीनी ॥
 सदाय करी अरु मुलटा थाया । पातोत्ताने बंध लगाया ॥ ११ ॥
 शिरपर चढ़िया पूर्य ध्याना । टाम टाम का पाट खुलाना ॥
 सूला ध्यान धरणि कौं थाया । पातालां में पन्थ जु पाया ॥ १२ ॥
 उलटा शब्द पठिम कौं ध्याया । मन पचनाका बंध लगाया ॥
 बंकनाल में सहजाँ पहिया । मेघ मंझि मेघासा दहिया ॥ १३ ॥
 अथः ऊर्षे विच राह चलयाया । आकाशां में अनदद याया ॥
 चंद्र र मूर गगन घर लाया । नाद बिन्दु के माहिं समाया ॥ १४ ॥
 गहरी गाज गगन गणजाया । यँ अमृत प्राण विलाया ॥
 पी पी सन्त शुन्य में थाया । चित शान्ती घर सहज मिलया ॥ १५ ॥
 मन पचना स्थिर दशम द्वारा । पांच पर्चासों बंध्या सारा ॥
 इडा पिंगला सुषमण मेला । सुरति शब्द जहँ हुआ मेला ॥ १६ ॥
 शब्द निरंजन काज सुधारा । भयमागर से पार उतारा ॥
 शब्द नकेपल ऊपर पारी । अपना ज्ञान र लिया उपारी ॥ १७ ॥
 उत्तर दक्षिण ध्यान मिलाना । पूर्व पश्चिम माहिं समाना ॥
 परम शून्य है सरजनहारा । सहजाँ मिलिया प्राण हमारा ॥ १८ ॥
 सुरमागर है निगुण राया । दर्शन क्रिया परम सुख पाया ॥
 जिषेपी में पीय निपाया । मिली पियारी लील विलासा ॥ १९ ॥
 पत्नी ऐसी भीति लगाई । हिलमिल ज्योती रे लिपटाई ॥
 भय कौं बीतर घरणों भाई । सहजाँ रहे भाँड दिपटाई ॥ २० ॥
 संशय शोक सकलही भेटा । निर्भय निराकार कौं भेटा ॥
 पूर्ण भया परम सुख पाया । तार्ते भंतर ध्यान लगाया ॥ २१ ॥

साराजी ।

श्रीय दीपमें मिल रहे, दूर करों नहिं जाय ।

नरिदै नाम जु प्यारया, सहजाँ रहे समाय ॥ ४ ॥

श्रीपाई ।

तहाँ न त्रिगुण मोह न गाय। पांच सत्य नहिं कर्म न काया ॥
 धरती घायु न आम न शारा। राति दिवस नहिं अंध न कारा ॥ १ ॥
 चंद्र सूर नहिं इंद्र न पानी। घाट न घाट न दुख न प्राणी ॥
 जीव न जिंद न खानि न धानी। काम न क्रोध न लोभ न जानी ॥ २ ॥
 तीन लोक नार्हीं ग्रामंडा। मान द्रीप नार्हीं नय खंडा ॥
 सात समुद्र नहिं नदी नहाया। भार अठारह घनी न राया ॥ ३ ॥
 चार चक्र नहिं भटक न मरणा। जत्त न सत्त न भेष न घरणा ॥
 काज़ी पुरान न वेद न ग्रन्था। राय न रंक न रूप न रंभा ॥ ४ ॥
 योग यज्ञ जप तप नहिं घरता। सेव न पूज न मूर्ति न धरता ॥
 देव न दानव जोध न जुझा। जरा न जाल काल नहिं फंधा ॥ ५ ॥

साखी ।

एकापकी ग्रह है, न्यारा सब घट माहिं ।
 संत सयाना मिल रहा, दुनिया को गम नार्हिं ॥ ५ ॥
 याहिर भीतर एक है, घट घट में निरकार ।
 जिन पाया जिन सुमरि के, आप उपावनहार ॥ ६ ॥
 परचा बहुत प्राणमें, हुआ लेवता नाम ।
 कहनी को आवे नार्हीं, नरियो मिल्यो मुकाम ॥ ७ ॥

इति प्राणपरचा ।

पद १

गुरु दर्शन दो महाराजा ।
 अब प्राणी पर दया करीजै सार सकलही काजा ॥ टेर ॥
 सगुरु विछड़ियाँ दुःख अपारा निशि दिन रहत उदासा ।
 कृपा करो जन्म बेहला कलपत पल पल प्यासा ॥ १ ॥
 या जग माहीं सबै विद्याणा किसका लेऊं अधारा ।
 हरिरामा निजधाम पहुँता प्राणी करत पुकारा ॥ २ ॥
 अवगुण गारो जीव हमारो शरणै करो सदाई ।
 झूरे तन मन माहिं विचारा सतगुरु चरण लगाई ॥ ३ ॥
 दरशन पायाँ पावन होई भय साँसा सब जाई ।
 कहै नारायण गुरु सुखसागर सुखमें लौ जी मिलार्ई ॥ ४ ॥

पद २

मोहिं राखो राम हजूर ।
 जन्म जन्म के अवगुण मेटो जान न दीजै दूर ॥ टेर ॥

दया करी गुरुदेव हमारे रसना राम रटाया ।
 फंठ हिरदा विच सुमरण साक्ष्या प्रेम पियाला पाया ॥ १ ॥
 नाभिकमल निज नाम उचान्या रग रग में रंकारा ।
 सारदाष्ट का सकल पसारा तन सारे ततकारा ॥ २ ॥
 करता पेसी छपा फीनी उलटा ध्यान लगाया ।
 दास नारायण निरभै नैदा चरणां चाकर लाया ॥ ३ ॥

॥ इत्यपूर्णम् ॥

अथ श्रीहरिदेवदासजी महाराजकृत ब्रह्मस्तुतिः ।

छप्पय ।

नमो आदि अविगत अगम हो थाप अरुपी ।
 अवरण नदा अघाह लहे कुण धाह सरुपी ॥
 अह सार निरकार परापर नूर पियारो ।
 यसो सर्व जहे पास नाथ निज आप निवारो ॥
 अणदेह अगंष्ट अजन्म अलख आप आप सम आचिप ।
 हरिदेव स्वामि सस्तुति निज पायक तन मन वाचिप ॥ १ ॥
 अह नूर भरपूर सर्व निज इष्ट सधारा ।
 दृष्टि सार अनदृष्टि सृष्टि तय आप अधारा ॥
 जीवन जाति सजीव पीप सघटी का पेठो ।
 परे सकल भणपार पीच तहाँ सार विसेगो ॥
 निज उहाँ नाथ अविगत भरस परम परा पुरुषोत्तमो ।
 हरिदेव स्वामि निज राम हो नमो नमो निगुण नमो ॥ २ ॥
 नमो नमो निरकार सकल तिर सार सदाई ।
 कला अकल अणवीन महा निज नीति कदाई ॥
 देरजण हार दपानु सर्व गत पेण सपाना ।
 पोयल भरण पिचार करे हरि सद्गज सपाना ॥
 परकार अघट घट घट अघट सुघट होय अणघट सता ।
 हरिदेव अह हित उर अणम्य धर्म सर्वे निज हरि भता ॥ ३ ॥
 सुख सागर हरि सोइ अगम आगर अति आनंद ।
 सुमन्यां देह संतोष प्रीति परम्यां परमानंद ॥
 अह विधि तादि आधार संत उर धार सदाई ।
 सुख भाषण सुख हरण सारण सीतल हरि भाई ॥

भेटे जु मरण भय जा जनम सोइ भेटे साहिव सचा ।
 हरिदेव स्वामि हरि है सही कचहु नह काई कचा ॥ ४ ॥
 अलख आप अण रूप पलक में विश्व पसारे ।
 कारण आप कल्याण देव कारज उन सारे ॥
 समरथ नाम सचाह थाट पेसो जग थाप ।
 घट मठ एह अकार करे हरि सहज किताप ॥
 आतम्म आप आपै सहित रूप शक्ति एही रचे ।
 हरिदेव ताहि प्रणमै सरस साहिव हो साहिव सचे ॥ ५ ॥
 सर्व रूप सर्वज्ञ अंग अन अंग अनेका ।
 संग रहत नहिं संग रंग अनरंग है एका ॥
 अंश आप अवतार धार आतम अनपारा ।
 गुणां रहित सो रूप रहै निज रूप नियारा ॥
 केताहि नूर विधि विधि कला करै नाथ सहजां मही ।
 हरिदेव दास वंदै हरप सोइ स्वामि समरथ सही ॥ ६ ॥
 सहाय करण सव जान एक भगवान अनेका ।
 विश्व बहुत विस्तार आप सबही में एका ॥
 पोपै सहज प्रकार परम तोपै सोइ प्यारे ।
 आदि मध्य अंत एक आप हरि होय अधारे ॥
 निज पीव शीव जीव जीवन सरव भेटे जन जामण मरण ।
 हरिदेव दास आनन्द करण नमो नाथ अशरण शरण ॥ ७ ॥
 हरि गहरा गंभीर घीर हरि समा न होई ।
 सीर सुधा निज सार पीर पर जाणै सोई ॥
 हरि दीरघ दीदार पार हरि नको पुणीजै ।
 हरि वैराट हकीम मद्या निज मूल सुणीजै ॥
 हरि समा आप हरि है सही पाप जीव करि है परा ।
 हरिदेव याप सव का अगम ताप नुरत भेटंतरा ॥ ८ ॥
 दाता दीन दयालु जीव किरपालु सदाई ।
 अधः मूँह उरमात होय हरि जहाँ सदाई ॥
 नर शिख सौंज सुरेश धणै हरि सहज यहालै ।
 दई जान नर देह प्रीति पाली सोइ पालै ॥
 जीवियां जुगत मूयां मुगत हरि विन कुण पेमी करै ।
 ॥ नि सस्तूति निज तन वायक मन उधरे ॥ ९ ॥
 होय सयं कदा कयहि गयानो ।
 भरपां जन कहै परम धनपार पयानो ॥

हरि सायर गुण तोय कहा सुगुरा नर सारै ।

उकी थापै व्यास वाच गुण पियै सुवारै ॥

निज प्राज्ञ ब्रह्म उर विच अवश्य कर उराह अवगाहियो ।

हरिदेव धारि तन मन बचन चरण शरण हम चाहियो ॥ १० ॥

इति ।

अथ गुरुस्तुतिः ।

गुरु दाता निज ज्ञान ब्रह्म सत्ता विधि चाचे ।

अनुभव दत्त अपार लेह सिख जावक जाचे ॥

भक्ति सार सोइ वाच वयण कर देह विचारा ।

गुरु यह गम गंभीर कुरैद अघ मेटण हारा ॥

आरम कला पेसी अगम सुगम करै संपति सची ।

हरिदेव शिष्याँ आनँद सरस चन्दन गुरु याविधि बची ॥ १ ॥

गुरु विन भक्ति न भेव गुराँ विन जुक्ति अजुकी ।

गुरु विन सिख ना सुखी परम गुरु विना न मुकी ॥

गुरु विन सुधी न सार पार गुरु विना न पहुँचे ।

गुरु विन किरिया कूर नाहिँ गुरु विना सुनिहँचे ॥

गुरु विना काय न है गमा शून्य समा गुरु विन सिको ।

हरिदेव कहे गुरु विन तिके जग जल बूहा नर जिको ॥ २ ॥

गुरु विन सर्वे गंधार पुनः पंडित है प्यारे ।

गुरु विन कथनी कूर विना गुरु कहा विवारे ॥

गुरु विन अर्चा किती विना गुरु चर्चा अंधी ।

गुरु विन नहिँ व्ययहार संज गुरु विना न संधी ॥

गुरु विना जिको गुण है अगुण सर्वे सगुण गुरु साहिबी ।

हरिदेव दास गुरु के शरण चरण कमल चित चाहिबी ॥ ३ ॥

गुरु है दीन दयाल करै सिखपाल सदाई ।

असै भक्ति परसंग सदा सेवक सुरादाई ॥

गुरु पावन गुरु परम जीव सिख जीवन जानो ।

गुरु का गुण गंभीर दिपै रस राम दिवानो ॥

गुरु समा थाप गुरु है गहर मिटै सयै जग वासना ।

भक्षाराज गुराँ प्रणमूँ तुझे यह हरिदेव उपासना ॥ ४ ॥

दर्पण भषाँ मलीन दृष्टि मुख नूर न दरो ।

हीर जवै अणघाट शोभ सागी नहिँ परी ॥

पंडित पूत अपाठ असत है जगमें थादर ।

हय गति होय हठील मोल के समे बेधादर ॥

पता जु भादि कुल है सगुण गुरु यिन अगुण गिणीजिया ।
हरिदेव मिले जय गुरु सदी तय गुणयान सुणीजिया ॥ ५ ॥
इति ।

अथ करुणानिधान ग्रंथ प्रारंभः ॥

भादि ब्रह्म जन अनैत के, सारे कारज सोय ।
जेहि जेहि उर निधो धरे, तेहि ढिग प्रगट होय ॥ १ ॥

छन्द त्रिभंगी ।

राक्षस ठगवाने ब्रह्मा दाने जाय लुकाने अपधाने ।
मच्छा धरि प्राने जद भगवाने जलयहराने तिहडाने ॥
शंखासुर दाने निगम लराने दयाम दराने विधिसेत्रम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी आनंदराशी दोष विनाशी सुखदेतम् जिय ॥ १ ॥
हिरण्य जय ठाढ़े कौन समाढ़े धर पय चाढ़े तय डाढ़े ।
चेरा हरिताढे आयस गाढ़े चाराहगाढ़े तन याढ़े ॥
राक्षस हणि दाढ़े इल गह काढ़े सो धिर माढ़े निजखेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी ॥ २ ॥
अवनीके तवरे अगनिज अवरे मंजा कँवरे विच भवरे ।
सिरियादे सियरे हरि हित हियरे न्याही नियरे जो जियरे ॥
स्वालत सुत सँवरे वहँ यिन भँवरे खेलत नँवरे निजखेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी ॥ ३ ॥
प्रह्लाद पुकारे जिह ररकारे निश्चय भारे गमसारे ।
हिरणाकश धारे नहीं हमारे क्रोध विचारे खगसारे ॥
प्रगटे अवतारे खंभ प्रहारे राक्षस मारे जनहेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी ॥ ४ ॥
बालक धू ध्याये पिता बेठाये माँइ रिसाये दुखपाये ।
गम पूछी भाये हरि नहि गाये जब लिच लाये वनघाये ॥
धन धाम धमाये सब छिटकाये हरि उर पाये निज हेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी ॥ ५ ॥
धूमर जब आये शिब भरमाये कँकण लराये उठघाये ।
अखीक जिताये लारि पठाये शंभू भाये हरि आये ॥
तिरिया तन धाये नाच नचाये कर शिर आप भसेतम् ।
हो अविनाशी ॥ ६ ॥

तजि आरण करि जल कारण प्राह विदारण जुध सारण ।
यहँ धारण परे पुकारण उर इक धारण ररकारण ॥

मुनिये जय तारण चक्र सँभारण कपे वधारण करमुक्तम् ।
ग्रह हो अविनाशी० ॥ ७ ॥

भवपुज के अंगा कुलधर्म भंगा गणिकासंगा विपरंगा ।
अजमेल अनेंगा दोष उपंगा कर्म कुसंगा नितसंगा ॥
हो नारण चंगा सुतहित वंगा जय जम जंगा छूटेतम् ।
ग्रह हो अविनाशी० ॥ ८ ॥

अमरीप भुवाले ऋषि सुखपाले जेहि करआले दुखटाले ।
पक्षी यहु चाले उलटी भाले दुख असराले तपवाले ॥
दुर्घासा पाले सोह भवनाले राजा टाले दुखदेतम् ।
ग्रह हो अविनाशी० ॥ ९ ॥

आये जल अगरे सोइ ऋषि सगरे याहरन लगरे स्त्रीवगरे ।
तासूं ऋषि हगरे दीनी तगरे जलरत रगरे नय जगरे ॥
प्रिय रजवा डगरे शवरी पगरे परशत सगरे जलनेतम् ।
ग्रह हो अविनाशी० ॥ १० ॥

कौरव मद भरिये है पंड हरिये द्रौपां डरिये धरहरिये ।
दुःशासन हरिये गहन कवरिये अंबर परिये कर अरिये ॥
विलखी जय तिरिये तो हरि विरिये चीर घघरिये निजचेतम् ।
ग्रह हो अविनाशी० ॥ ११ ॥

कौरव पंड भारे जुद्ध करारे गयंद हजारे जहँ गारे ।
सुत यहँ टीटारे दयाम सँभारे गज घँट डारे दुखटारे ॥
राखे जय सारे इसा मुरारे तो कुण पारे पेखेतम् ।
ग्रह हो अविनाशी० ॥ १२ ॥

नुरफज तन साले नर अनभाले वैदपराले इह हाले ।
मगबल पयपाले डगडगटाले शूकरवाले हतयाले ॥
काहियो अँतकाले हराम आले जेहि जमजाले छूटेतम् ।
ग्रह हो अविनाशी० ॥ १३ ॥

घातक तद टाणे शिर भरि जाणे पारधि वाणे दिसताणे ।
जाहँ अहि टाणे शर छूटाणे जाय लगाणे सीवाणे ॥
पप्पीह जु प्राणे टल विघनाणे हरिदि पिछाणे निजदेतम् ।
ग्रह हो अविनाशी० ॥ १४ ॥

निज भक्ता नामा अरि पति गामा हते यछामा दिगतामा ।
जीयादे जामा तो तेहि रामा नतो हतामा इह कामा ॥
गोगमने धामा लाय लगामा मुगल तिलामा करिहेतम् ।
ग्रह हो अविनाशी० ॥ १५ ॥

अथ प्रश्नोत्तर ।

चौपाई ।

निश्चल	कहा	ब्रह्म सुखदाई ।	चंचल	कहा	माया है भाई ॥
जीवन	कहा	सुजस भलजानो ।	मृतक	कहा	अपयशहि बखानो ॥ १ ॥
जागे	कौन	विवेकी होई ।	सोने	कौन	मूडमति सोई ॥
बडा	कौन	जरणा उरपेखो ।	दाता	कौन	सत्यगुरु देखो ॥ २ ॥
गहिये	कहा	वचन गुरुमानो ।	तजिये	कहा	विकर्म अज्ञानो ॥
सद्रुप	कौन	तल के बिता ।	धन्य	कौन	ब्रह्म निज होता ॥ ३ ॥
सुधिवंत	कौन	जोनिसे टारै ।	मोक्ष	कहा	निजज्ञान विचारै ॥
जानै	कहा	सांख्य विधिसारी ।	साध	कहा	मन पवन विचारी ॥ ४ ॥
शुचिहै	कौन	दमन इंद्रपांको ।	पंडित	कौन	विचारै नीको ॥
कौन	विचारै	निल्य अनिल ।	विषगु	कहा	गुरु निन्दा चित्त ॥ ५ ॥
हुतप्र	कौन	प्रीतिही चोरे ।	नदी	कहा	तृष्णा बहु धोरे ॥
सार	कहा	चित्त शुद्ध विचारै ।	वचन	कहा	सत वचन उचारै ॥ ६ ॥
अंध	कौन	अति क्रोध अनीता ।	सूर	कौन	मनसे जुध जीता ॥
सुनै	कहा	हरिगुण उपदेश ।	पीये	कहा	प्रेम रस धेश ॥ ७ ॥
जिहरस	कहा	वचन सुध भाखै ।	दान	कहा	ज्ञानागुण दाखै ॥
शीतल	कहा	हिरदै सन्तोष ।	तप्त	कहा	आदौ अतिदोष ॥ ८ ॥
गुठी	कौन	जग षोछा तजे ।	दुखी	कौन	भव बन्धन भजे
अपिर	कहा	धन जोवन जानो ।	गरवा	कौन	सन्त सो मानो ॥ ९ ॥
नरक	कहा	गर्भवासा सोई ।	बन्धन	कहा	पराधिन होई ॥
मुक्ति	कहा	साधौन अदोष ।	भूषण	कहा	शील सन्तोष ॥ १० ॥
करिये	कहा	सत्संगति सोई ।	सन्त	कौन	उपकारी होई ॥
मिश्र	कौन	अशुभतेँ टारै ।	बैरी	कौन	आलस टग मारै ॥ ११ ॥
गुरा	कौन	हरि विमुख विराम ।	चिन्ता	कहा	चिन्तवन घाम ॥
निदिये	कहा	निदया संसार ।	बैदिये	कहा	सन्तजन सार ॥ १२ ॥
दुर्लभ	कहा	प्रीति निरवाय ।	सुमरिये	कहा	राम निज राय ॥
विवरिये	कहा	पर अवगुण सोई ।	पापमूल	कहा	लोभहि होई ॥ १३ ॥
दुःखमूल	कहा	मूर्ख से प्रीति ।	तीर्थ	कहा	सत्संगति नीत ॥
दुभहि	कहा	सबसे मित्राई ।	धन्य	कहा	हरिनाम सदाई ॥ १४ ॥
पदिये	कहा	भगवन्त वाच ।	सुनिये	कहा	हरि कथा जु राच ॥
जीविय	कहा	लोभ अरु मोह ।	सोम	कहा	हरि भजन अरोह ॥ १५ ॥
हरखो	कहा	कालको मानो ।	तपभय	कहा	विषय सो जानो ॥
बध	कहा	कीजे मन मतकारो ।	मीटो	कहा	जग चाद विचारो ॥ १६ ॥

करीर जन भारे द्विज दुग्ध धारे पनिया कारे दिश गारे ।
भाये जय गारे भोग अपारे पनि निज प्यारे विणजारे ॥
पालव जन छारे भानि उतारे मोर विधि सारे पोछेनम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥ १६ ॥

रेशमजु गाना हरि प्रतिमागा ब्राह्मण जागा सय सागा ।
किन से नहि रागा ना अणरागा भेन सागा मैदमागा ॥
काणे उरनागा गाम सुहागा जय द्विजमागा सयसेनम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥ १७ ॥

मीरां मोर मारी निज हरिप्यारी राणे विचारी विणगारी ।
भंजलि भरि मारी मुग्धमें डारी हरि हितकारी दुरा टारी ॥
भूपति पच हारी निज बलदारी भक्ति करारी भाषेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥ १८ ॥

जनसे दुग्ध द्याये कुलके ताये रामत भाये नर प्याये ।
नरसी के नाये भंक लिप्ताये हुंही भाये जेहि गाये ॥
साँपल हुय साये दिवी भराये सय सुन द्याये जनसेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥ १९ ॥

दाहू दुष धारे लोरु पुकारे मुगल ध्यारे हुय प्यारे ।
फीने सय श्यारे कुल धर्म हारे एह विचारे चेलारे ॥
जन दिश होकारे महमैत भारे धंदन सारे शुंभेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥ २० ॥

तारे जन सारा अधम अपारा असंख्य जुगौरा नहि पारा ।
आपै बुध सारा कहै विचारा लह कुण पारा विदमारा ॥
पैसे निरकारा जियके प्यारा तारणहार उरहेतम् ।
ब्रह्म हो अविनाशी० ॥ २१ ॥

दोहा ।

जहँ जिव उर करुणा धरे, चहाँ करे हरिपाल ।
अपनो विरद विचारियो, करुणामयी कृपाल ॥ १ ॥
अधम जीव तुम तारिया, तुम ही तारे संत ।
अब किरपा मोपर करहु, यों हरिदेव कहंत ॥ २ ॥

तजै यास आसा वने धाम तधू । रहै संग पासै सदासोय रधू ।
 धरै सोय धानं जहाँ अडिगधासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥३॥
 धरै ध्यान ऐसे रहै एक सारा । सबै श्रुती साझन करै कृत्तकारा ।
 सबै धर्म सासाज आसा उसासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥४॥
 गहै सहज काया महा दोष साझै । बसै गेह न्यारा न को जाल चाझै ।
 पखे होय निचुं प्रिये देह पासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ ५ ॥
 सझै आप ऐसा सबै देह सरमा । कला सीख करणी करै नोळि करमा ।
 मलुं अंतर धोये सबै निर्मल थासी । विना रामनामं न को ब्रह्म वासी ॥६॥
 बसै सुरत सोई सदा जीव वासा । सबै अंग साझै गिनै आप सासा ।
 रहै माहिं राता सदा जोति रासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥७॥
 लहै भेष नासा सुरति इयास लधुं । स्वकूँ देप सोई करै काम सिधुं ।
 सबै स्वरजु केरे एकै गृह लासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ ८ ॥
 फुरै धाक सोई करै बहत फतुं । नमै लोक सारा सको सेव निचुं ।
 सबै सोय मानूं तवै ताँह चासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ ९ ॥
 तजै भास तारां सजै सहज तनमां । अनंत सिद्धि आवै सहत सोय धनमां ।
 छडे आप काया परा देह धासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥१०॥
 घहै सोय आपा धरै यानि चिनुं । नवी देह थापै सही आप निचुं ।
 जहँ धार मधुं छिनक देह जासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥११॥
 धरै सोय धारै हरी दृष्टि ध्याना । बसै पास देवा लहै स्वर्ग घाना ।
 रामै संग अमरा सदा रंगरामी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ १२ ॥
 हरी अंतर आना लहै भेष आपा । तनुं दोष पीया तजै सोय तापा ।
 करै ऋद्धि निरधं निरिधं ऋद्धि थासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥१३॥
 यही विषय बहूती महासिद्धि आवै । धरै सोय अंगू गुणह तास ध्यावै ।
 यही भांति आपा महा मान आसी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥१४॥
 करै अंग आचार सुधार केता । लजा कर्म किरिया सबै साशि लेता ।
 हरा ब्रह्म था भय करै धान आसी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥१५॥
 पिपा बेद पाठी कदा टीक धारा । सई होम जापा करै अंग सारा ।
 सबै आप धर्मा गहै अंग थासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ १६ ॥
 करै पेशभयास जो छिद्र केता । पढा सोय पापीक मो धान केता ।
 सबै आप देनाज धोता गुनासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ १७ ॥
 पदुं सोय आपा सही ब्रह्मजाना । पिपा लोक सारे तजै धानपाना ।
 गिनै धान छोती हर्ग देत तामी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ १८ ॥

बोवै	को भव मान बडाई ।	सारे	को निर्मल बुधिताई ॥
सन्त	मित्यां सारा सुख भाई ।	दुष्ट	मित्यां होवै दुखदाई ॥ १७ ॥
प्रश्नोत्तर	माला सुन लीजै ।	वाच	विचार हृदय शुध कीजै ॥
ज्ञान	सार बरज्यो इन माहीं ।	अज्ञान	अज्ञान दियो छिटकाहीं ॥ १८ ॥

दोहा ।

प्रश्नोत्तर माला करी, ज्ञान ध्यान को भेव ।
 जासे शुध हिरदो हुवै, दाखै जन हरिदेव ॥ १ ॥
 भक्ति ज्ञान वैराग्य भल, बुधि निर्मल चित सार ।
 शान्ती हिरदो है सरस, वाचै करै विचार ॥ २ ॥
 प्रश्नोत्तर सन्तां करी, अर्थ वचनका जान ।
 सो हरिदेव विचारके, कियो चौपई ज्ञान ॥ ३ ॥

इति प्रश्नोत्तर ।

अथ आत्मकृते विज्ञानक्रियायाः पंचमः समुल्लासः ।

दोहा ।

बिन भक्ती भगतं विविध, जुक्ति सीख सब जानि ।
 ऐसा आदिम जग अनंत, अखुं अतिथि सिध आनि ॥ १ ॥
 अक्षर उभय उचार बिन, अंतर सोशि अरूप ।
 बिन पग पारे क्या परसि, सागी दृष्टि स्वरूप ॥ २ ॥
 त्यागी तन मन तास बिन, भास बहुत उर आन ।
 पास ग्रह किह विध लहत, नास विना गमनान ॥ ३ ॥
 जोग अष्ट साहस जुगति, कष्ट देह अनकाज ।
 षयोवृद्ध है सिध विगति, जीव मुगति नै साज ॥ ४ ॥
 कारज शुभ करता करम, अनुभ कछु नहिं पद ।
 अनुभ शुभ पावै अलख, न को ताहि विध नेह ॥ ५ ॥
 करि दृठ मारै तन करम, इंद्रि भोग अनोद ।
 राजकाज को सिध शक्ति, भक्ति ग्रह नह कोद ॥ ६ ॥

छंद भुजंगी ।

पखै सहज श्यामं लहे भेय सारा । उभै अंक ऐसा रहै जीह न्यारा ।
 रहै सोय रत्ता सयै अंग रासी । पिना रामनामं न को ग्रहयामी ॥ १ ॥
 करै जोग अष्ट दिवै कष्ट काया । मशै अंग मारा मयै देह साया ।
 तनू सहज साएँ पखै सहजवासी । पिना रामनामं न को ग्रहयामी ॥ २ ॥

अथ हरिजस लिख्यते ।

राग आसा ।

पद १

रामराय में हूं मंगल तेरा तुम दानपती सयकेरा ॥ टेर ॥
 तुम दाता में जाचक तोरा द्वार सड़ा निज देया ।
 निशि दिन अडिग नूर तुम निरखूं सदा करूं तोहि सेया ॥ १ ॥
 तोरा संत विरद फट्टे धाडू सो सुनि तो दिग आयो ।
 में तो मनू घान्य उरसेती साची नाम संभायो ॥ २ ॥
 शौलग करूं अमंग हरि भागै विरहवचन निशिघारया ।
 घाचूं विरद न को उर बीजा एक तुम्हारी आसा ॥ ३ ॥
 सुनिहो घवन दीनका सादिय अमै दान मोहि भायो ।
 वापै भरज शमी हरिदेयो । कुरंद करमरा फायो ॥ ४ ॥

पद २

राम राय में हूं बालक तोरा पिताज तुम हो मोरा ॥ टेर ॥
 में बालक मति भोर रहे उर कद नहीं जानूं काई ।
 दीनबंधु देरा हम दिनु मति भाप विरद निरवार्ई ॥ १ ॥
 सेया साज न जानूं सादिय द्वि मति हीन हमारी ।
 करिहो अये मुगै मोदि करता सो द्वै रजा तुमारी ॥ २ ॥
 में तो बाल केलि संग राता का तो मन गृह मोहा ।
 का तो बसन पार पर्याद्रिक ए उर सदा समोहा ॥ ३ ॥
 तुम हो पिता मुगै हरि नीका में मति भोर भजाना ।
 जानूं मही करूँ हम काई तुम हो दयाम सुजाना ॥ ४ ॥
 में मतिहीन किया अति भौगुल तुम भा गिनो दयाला ।
 कद हरिदेव पिता हरि सुनिग्यो बाल करो मतिपाला ॥ ५ ॥

एग शोरठ ।

पद ३

हृया विधान करियो काहु हृया दीन माथे ॥ टेर ॥
 में आदि तुम के भंगा । अब विरर गप निजयंगना ॥
 सांसे में भाव विहावे । मधु मोदि दया सुख पारै ॥ १ ॥
 मुय जीवो के मतिपाला । निज देया देय दयाला ॥
 राव के जो अंतरजायी । अब मोदि दया करि स्वामी ॥ २ ॥

निगूँ पाठ गीता करे भाग्य नामी । प्रिये नेम गहृतं मनु धार पामी ।
 सही देव वासै गदा मेक प्यासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ १९ ॥
 कर्ये सोय गाथा गुनो भाग्य केती । दुर्घे भंग हरमा घड़े नेम सेती ।
 परा ब्राम गान्ना मयै भाषिन्दासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ २० ॥
 करे ईशपूजा सोई गहृतमां । गहरे देव भूनादिका भंग समी ।
 सवै सेय प्रतिमा करे घाल करणी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ २१ ॥
 निघे भंग भक्तां करे सेय नामी । सही भेय पती तनु भेय सामी ।
 विष्णु सेय पूजा द्विये देव भ्यासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ २२ ॥
 मनुं देत नपथा मधे भंग माने । जिके सेय धर्मां सवै अंतर जानै ।
 सोई जहाँ सेय मनु माहिं धामी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ २३ ॥
 इति पूज्य प्रतिमा गये भंग माने । मनु देत सोई नाना भांति माने ।
 प्रिये नेम सहितं सको नेम प्यासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ २४ ॥
 सवै देयपूजा करे भांति सारी । नमै हेत हीये सदा रीत न्यारी ।
 दिवै देय परचा रमै निकट रासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ २५ ॥
 परी प्रेह लोका पुनै पंध पारा । सठं भष्टीरुं नहि देह सारा ।
 नऊं पंड जोये फिरे प्रह आसी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ २६ ॥
 दिवै दान विप्रां सवै मानि देया । सोई भांति सारी करे ख्यात सेया ।
 सवै बाधि आपा छिजां पूज थासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ २७ ॥
 घटे बाधि यहूती घना लोक यांचै । जिके दूर सोमा सुने बाय जांचै ।
 गुणे लोय गाथा तिके विरद गासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ २८ ॥
 सती आग मंझे करे गेह साचो । कनै लोय केता गिने नेह काचो ।
 जरे आप काया तनु वाच प्यासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ २९ ॥
 महाजुद्ध मांहे करे मार मारौं । तजै आस काया सोई खूर तारौं ।
 लड़े हेत ऐसे पन्या नेह थासी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ ३० ॥
 सवै शुभ कर्मां सोई आप साझे । जके नाम पाखै जवै नेह जाझे ।
 इता धर्म आना सवै भुगति आसी । विना रामनामं न को ब्रह्मवासी ॥ ३१ ॥

दोहा ।

आन धर्म साक्षै अनंत, मरम पखै निज नाम ।

कव वाकुं हरिदेव कह, न को ब्रह्मको धाम ॥ १ ॥

ज्ञान कथै सीखै ग्रंथ, अर्थ अगम का आखि ।

विना भजन नहि ब्रह्मधर, ए हरिदेवो दाखि ॥ २ ॥

(अपूर्ण)

द्वितीयपरिच्छेदः ।

धुरमेल ।

पानी सुखदानी विमल धीरामदास महाराजकी ।
अहुत धानंदकंद छन्द मायाकृत कटि है ।
आदि अन्त सिद्धान्त दान्त ररकार सुरटि है ॥
अनमातम अण्यास भ्यासकृत निधय है ।
गुरुगम करत विचार पार भवमूल जु पट्टै ॥
मनुष्येि वृष्टि प्रश्न हु करत धनधुमंड मृदु गाजकी ।
पानी सुखदानी विमल धीरामदास महाराजकी ॥ १ ॥

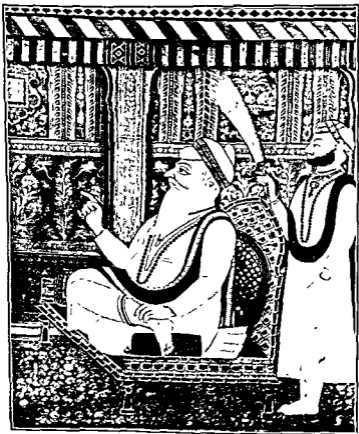


हम दीना दीन पुकारे । तुम सुणी सिरजन हारे ॥
 अथ तारण विरद विचारो । साँई वेग मुझे तुम तारो ॥ ३ ॥
 हमसूँ कुछ नाहिं लहीजै । तुम देव दया निज फीजै ॥
 हरिदेव सदा हरि तेरो । चित चरण कमलको चैरो ॥ ४ ॥

पद ४

विरदां निधान बहियो निज विरदां आप केरा ॥ टेक ॥
 अजामेल से अधभारे । अंत पुत्र हेत पुकारे ॥
 साद सुणे सुण ध्याये । जमदूतां पासि छुडाये ॥ १ ॥
 गजराज की सुणि वाणी । सो ध्याये सारंगपाणी ॥
 निज आगे चक्र चलाये । गज ग्राह के दुःख मिटाये ॥ २ ॥
 आगे अधम अपारे । सो अर्ध टेर सुणि तारे ।
 हम औगुण अधिके यातैं । प्रभु साद सुणो नहिं तातैं ॥ ३ ॥
 मुझ औगुण तुझ ना लहियो । सो अधमतार तुम कहियो ।
 निज आपा विरद विचारो । हरिदेव दया करि तारो ॥ ४ ॥

श्लेषपूर्णम् ।



Sri Ramdasji Maharaj Acharya
(Khedapa).

॥ धीः ॥

पद १

चेतनराम शरण में लेती । भयभी घेर भरज सुन मेरी ॥ टेर.
जो रीझो तो भक्ति मोहि दीजे । अपना जानि कृपा हरि कीजे ॥ १ ॥
आदि भक्त मध्य सकल पसारा । सोई भातमराम हमारा ॥ २ ॥
शकरज देस भचंमो माहीं । तेरे जनको संशय नाहीं ॥ ३ ॥
जिके पात तगहीमें पाया । जेमलदास शरण लेरी भाया ॥ ४ ॥

पद २

मन रे जो तू राम पिछाने । नेहाहे सो निश्चय आने ॥ टेर.
पांच तत्त्व ले किया पसारा । जल स्थल जीव सकल संसारा ॥ १ ॥
तीन भवन के बाहिर माहीं । हरि विन काज सरे को नाहीं ॥ २ ॥
पालन पोषण करण सँद्वारण । दीन दया करि दुस्तर तारण ॥ ३ ॥
जेमलदास साच मन भजिये । राम विमुख विषय रस तजिये ॥ ४ ॥

अष्टपदी ।

घाद विषयास्वाद् तज मन, गहो ज्ञान विज्ञान रे ।
और ऐसो नाहिं जगमें, राम सम कोइ ध्यान रे ॥ १ ॥
भूल मत भ्रम माहिं भोंदू, अलख करिये याद रे ।
उलटि आपा देख दिलमें, प्रेमविन पशु घाद रे ॥ २ ॥
नाम निश्चय ध्याय निशि दिन, परम पीतम पाय रे ।
शोक संशय मेट, सयही, भेंट त्रिभुवन राय रे ॥ ३ ॥
राम विन विधाम नाहीं, स्वर्ग मध्य पयाल रे ।
जीव हरि विन केम छूटे, कर्म कूटे काल रे ॥ ४ ॥
भलो पूरण भाग तेरो, जिन्द जयलग जाग रे ।
आयु दम दम घटै निशिदिन, रहो निजमन लाग रे ॥ ५ ॥
मानुषो अवतार वीहुरि, यहुरि आवै नाहिं रे ।
भक्ति विन बहु भया दुखिया, चौरासी लख माहिं रे ॥ ६ ॥
राम घट घट माहिं न्यारा, रूप ताहि न रेख रे ।
और आप अमर अलेख रे ॥ ७ ॥
लगन लागी जाय रे ।
सहज समाय रे ॥ ८ ॥

॥ धीरामो जयति ॥

विभुं पद्मनेत्रं दधानं तुरीयं प्रकाशस्वरूपं नतं विश्वदेवैः ।
श्रुतिज्ञानगम्यं शुभं विश्वनाथं स्तुवे वेदवेद्यं गुरुं रामदासम् ॥ १ ॥
अथ श्री १००८ श्रीरामदासजी महाराजकी
अनुभव गिरा प्रकाश ।

स्तोत्रमंत्र ।

सतगुरु सेती वीनती, परब्रह्मसूं परणाम ।
अनंत कौटि सत रामदास, निशिदिन करूं सलाम ॥ १ ॥
प्रथम वंदि परब्रह्म नित, जिना दिये सिरपाय ।
दुतिय वंदि गुरुदेवकूं, दिये भक्तिके भाव ॥ २ ॥
तृतीय वंदि घिन संतकूं, सब के लागूं पाय ।
परब्रह्म गुरु संतकूं, रामदास नितगाय ॥ ३ ॥
प्रथम वंदि गुरुदेवकूं, जिनाँ दियो ततज्ञान ।
दुतिय वंदि परब्रह्मकूं, अंतर प्रगटे आन ॥ ४ ॥
तृतीय वंदि सब संतकूं तिहूँ ठोरलौं मान ।
नाम तीन बपु एक है, रामदास कह ज्ञान ॥ ५ ॥
नमस्कारतें रामदास, कर्म सबै कटिजाइ ।
जाइ मिलै परब्रह्ममें, आवागमन मिटाइ ॥ ६ ॥
परब्रह्म सब घट रम रह्या, दूजा कोऊ नाहिं ।
रामदास दुविधा मिटी, अब देख्या घटमाहिं ॥ ७ ॥
परब्रह्म गुरु संतकूं, एकमेक दरसाय ।
रामदास या ऊपजी, जद्ही मुक्ति कहाय ॥ ८ ॥
इति ।

अथ गुरुदेव की अंग ।

अटल वैण गुरुदेव के, रामदास सत मान ।
पता पूठा ना फिरै, गिरिधर गंग ज्ञान ॥ १ ॥
गिरी मेरु अरु गंगकी, या हृद् ऊर्ली यात ।
रामदास गुरुशब्दतें, मिलै निरंजन नाथ ॥ २ ॥
तिलक राम रस चरणामृत, लिया प्रेम निजनूर ।
सतगुरु शब्दाँ रामदास, दुखदारिद भय दूर ॥ ३ ॥

॥ धीरामो जयति ॥

विभुं पद्मनेत्रं दधानं तुरीयं प्रकाशस्वरूपं नतं विश्वदेवैः ।

श्रुतिज्ञानगम्यं शुभं विश्वनाथं स्तुवे वेदवेद्यं गुरुं रामदासम् ॥ १ ॥

अथ श्री १००८ श्रीरामदासजी महाराजकी
अनुभव गिरा प्रकाश ।

स्तोत्रमंत्र ।

सतगुरु सेती धीनती, परब्रह्मसूं परणाम ।

अनंत फोटि सत रामदास, निशिदिन करूं सलाम ॥ १ ॥

प्रथम वंदि परब्रह्म नित, जिना दिये सिरपाव ।

दुतिय वंदि गुरुदेवकूं, दिये भक्तिके भाव ॥ २ ॥

तृतिय वंदि धिन संतकूं, सब के लागूं पाय ।

परब्रह्म गुरु संतकूं, रामदास नितगाय ॥ ३ ॥

प्रथम वंदि गुरुदेवकूं, जिना दियो ततज्ञान ।

दुतिय वंदि परब्रह्मकूं, अंतर प्रगटे आन ॥ ४ ॥

तृतिय वंदि सब संतकूं तिहूं ठोरलौं मान ।

नाम तीन वपु एक है, रामदास कह ज्ञान ॥ ५ ॥

नमस्कारतें रामदास, फर्म सबै फटिजाइ ।

जाइ मिलै परब्रह्ममें, आवागमन मिटाइ ॥ ६ ॥

परब्रह्म सब घट रम रखा, दूजा कोऊ नाहिं ।

रामदास दुविधा मिटी, जब देख्या घटमाहिं ॥ ७ ॥

परब्रह्म गुरु संतकूं, एकमेक दरसाय ।

रामदास या ऊपजी, जदही मुक्ति कहाय ॥ ८ ॥

इति ।

अथ गुरुदेव को अंग ।

अटल वैण गुरुदेव के, रामदास सत मान ।

एता पूठा ना फिरै, गिरिवर गंग ज्ञान ॥ १ ॥

गिरी मेरु अरु गंगफी, या हृद ऊली बात ।

रामदास गुरुशब्दतें, मिलै निरंजन नाथ ॥ २ ॥

तिलक राम रस चरणामृत, लिया प्रेम निजनूर ।

सतगुरु शब्दां रामदास, दुखदारिद भव दूर ॥ ३ ॥

दुःख दारिद्र भाजिगे, मिल्या निरंजन नाथ ।
 रंकार रट रामदास, कर सतगुरु को साथ ॥ ४ ॥
 सतगुरु समदस्वरूप है, सिख नदी हुई जाइ ।
 रामदास मिल एकता, सहजाँ रहे समाइ ॥ ५ ॥
 रामनाम तो दुलभ है, जैसी खाँडा धार ।
 सतगुरु सेती संगरमें, से जन उतरै पार ॥ ६ ॥
 सतगुरु सेती प्रीतड़ी, जे करि जाणै कोइ ।
 रामनाम धन पाइयो, आवागमन न होइ ॥ ७ ॥
 राम रसायन भरपियै, सतगुरु सेतीसंग ।
 रामदास लागा रहै, रोम रोम बिच रंग ॥ ८ ॥
 रोम रोममें रुचि पिया, मनमें भया मगन ।
 अर्ध नाम रत्ता रहै, रामदास हरिजन् ॥ ९ ॥
 गुरु जैसा गुरुदेव है, रामा दूजा नाहिं ।
 भवसागरमें डूयताँ, काढ़ि लिया गहि चाहिं ॥ १० ॥
 रामदास सतगुरु मिल्या, भरम किया सब दूर ।
 निशि अंधियारा मिटगया, ऊगा निर्मल सूर ॥ ११ ॥
 रामदास गुरुदेव की, मैं बलिहारी जाहिं ।
 साँसा सवही भेटकै, प्रह्न वताया माहिं ॥ १२ ॥
 रामदास सतगुरु मिल्या, कछा अमोलक पैण ।
 सुन सागर साँई मिल्या, आदि आपका सैण ॥ १३ ॥
 सतगुरु का मुख देखताँ, पाप शरीराँ जाइ ।
 साधुसंगति सत राम दास, अटल पदी लेजाइ ॥ १४ ॥
 प्रह्न विलासी संत जन, अगमी गम्म अपार ।
 सायरसा सुभर भन्या, सतगुरु तिरजणहार ॥ १५ ॥
 सतगुरु मेरे शींगपर, मैं चरणाँकी रज ।
 शरणे आयो रामियो, लख घौरासी तज ॥ १६ ॥
 घौरामी का जीय था, शरणे लिया गँमाय ।
 भीगुण भेटया रामदास, मनगुरु करी सहाय ॥ १७ ॥
 रामदास की घीनती, गाम्बलिये गुरुदेव ।
 और कट्टू मांगू नदी, जुग जुग तुमरी सेव ॥ १८ ॥
 रामदास की घीनती, गाम्बलिये गुरुदास ।
 रामनाम सुमराइयै, भेटो विषय जंजाल ॥ १९ ॥
 किरपा की गुरुदेवजी, शब्द दिया निजगार ।
 रामदास निशिदिन भजो, छाँडो सबे विहार ॥ २० ॥

भवसागर में डूबताँ, सतगुरु काढ़या आय ।
 रामदास गुरुदेव जी, सहजाँ करी सहाय ॥ २१ ॥
 गुरुकी महिमा रामदास, कहियै कहा बणाय ।
 हमसा पतित उधारिया, जमपै लिया लुडाय ॥ २२ ॥
 गुरुसा दूजा को नहीं, भवसागर के माहिँ ।
 अनँता जीव उधारिया, भिख्या आदि घर जाहिँ ॥ २३ ॥
 सतगुरु पेसा रामदास, जैसा पारस जाणि ।
 लोहाती कंचन करै, तन मन सोंपै धाणि ॥ २४ ॥
 सतगुरु पेसा रामदास, जैसा सूर प्रकास ।
 रात अज्ञान मिटाइ कर, अंतर करै उजास ॥ २५ ॥
 सतगुरु पेसा रामदास, जैसा पूरण चंद्र ।
 तिखफुँ अमृत पाइ कर, अमर किया आनंद ॥ २६ ॥
 सतगुरु पेसा रामदास, जैसा इंद्र जान ।
 किरपा करि घरपा करी, भीज गया सय प्रान ॥ २७ ॥
 दिया एकही रामदास, घर घर दीया जोय ।
 सबै अंधारा मिटगया, जगै अखंडित लोय ॥ २८ ॥
 सतगुरु दीपक रामदास, सिल चल आया पास ।
 अनँता जीव जगाइया, अंतर भया उजास ॥ २९ ॥
 गुरु जैसा गुरु देव है, सांची कहं विचार ।
 गुरु मिलायै ब्रह्म कूं, और धार के धार ॥ ३० ॥
 सतगुरु पेसा रामदास, जैसा बंदन होइ ।
 सिल सेती सीतल करै, विपिया डारै रोइ ॥ ३१ ॥
 सतगुरु पेसा रामदास, जैसी तरवर छाहिँ ।
 शीतल छाया मुक्ति फल, ता विच खेलि करहिँ ॥ ३२ ॥
 गुरुकी महिमा कहा कहं, मोपै कही न जाय ।
 पीरासी का जीव कूं, मुक्ति देदा लेजाय ॥ ३३ ॥
 गोविंदतै गुरु अधिक है, राम कह्या विचार ।
 गुरु मिलायै रामकूं, राम भमर भरतार ॥ ३४ ॥
 राम सबही सिरजिया, लरा चौरामी जीव ।
 रामदास सतगुरु विना, परन न पायै पीय ॥ ३५ ॥
 लरा चौरामी जोनिनें, सबही बंध्या जीव ।
 सतगुरु बंध छोडार कर, मेख्या भाटू पीय ॥ ३६ ॥

रामदास सतगुरु मिट्या, मिलिया राम दयाल ।
सुख सागर में रमरहा, भेट्या विषय जंजाल ॥ ३७ ॥

इति ।

अथ गुरुवंदन को अंग ।

गुरु वंदनते रामदास, मिटजाइ भाल जंजाल ।
जाइ मिलै परप्रहमे, आठ पहर मत घाल ॥ १ ॥
गुरुकूं वंदन कीजिये, मुख सूं कहिये राम ।
रामदास सो सिफल जन, पावै आदू धाम ॥ २ ॥
सतगुरु वंदन अधिक फल, जाका घर न पार ।
रामदास में फया कहूं, कहिगए संत अपार ॥ ३ ॥
सतगुरु वंदियाँ अधिक फल, चौरासी मिट जाइ ।
स्वर्ग नरक दोनों मिटै, जामण मरण मिटाइ ॥ ४ ॥
सतगुरु वंदियाँ रामदास, टलि जाइ कोटि विकार ।
करम कटै सबजीव का, मिलै मुक्ति के द्वार ॥ ५ ॥
सतगुरु वंदियाँ वाहिरो, राम न पावै कोइ ।
चौरासी में रामदास, जीव जूण बहु होइ ॥ ६ ॥
वंदन कर निंदा करै, जाका मूह मदीठ ।
रामदास वा जीवकूं, जम दरगा मे पीठ ॥ ७ ॥
वंदन कर निंदा करै, भुगतै नरक दुघार ।
रामदास वा दुःख को, है कोइ घर न पार ॥ ८ ॥
किरपा की गुरु देवजी, अंतर किया उजाल ।
रामदास निंदा कियां, आँन शपेटै काल ॥ ९ ॥
सतगुरु जो सिख ऊपरै, कोप करै सोघार ।
तोही सिख शीतल हुवै, आणै नहिं अहंकार ॥ १० ॥
सतगुरु लोभी लालची, शोघरूप बहु होइ ।
बलिराजा प्रहलाद कूं, देख निवाज्या सोइ ॥ ११ ॥
सतगुरु का गुण अनंत है, औगुण एक न जाण ।
रामदास घट भीतरै, आपा लेह पिछाण ॥ १२ ॥
सतगुरु दीया रामनाम, निराकार निरवाण ।
या में औगुण को नहीं, आपालेहु पिछाण ॥ १३ ॥
पारसरूपी सतगुरु, सिख है लोह निराट ।
रामदास मिलिया समा, पलट और ही घाट ॥ १४ ॥

लोह पारस की क्या कहें, सतगुरु अगम अपार ।
तन मन सौंप्या रामदास, करै आप दीदार ॥ १५ ॥
इति ।

अथ गुरुधर्म को अंग ।

सतगुरुसं पूठा फिरै, जाके अंतर काण ।
रामदास ताकूं बँधां, बहुती हँगी ह्याण ॥ १ ॥
सतगुरु सं पूठा फिरै, सो अपती बहु जीव ।
अति निंदा गुरुदेव की, परत न पावै पीव ॥ २ ॥
निद्रक का मुँहडा घुरा, दीटां लागै पाप ।
गुरुद्रोहीसं रामदास, अलगा रहियै आप ॥ ३ ॥
गुरुधर्मी का रामदास, दर्शन कीजै जाइ ।
दर्शन सँ बवगुण मिटै, कर्म विलै हुइजाइ ॥ ४ ॥
सतगुरु यह सिख साखहि, रफी धरणि में आइ ।
रामदास यह लग गया, गगन गरजिया जाइ ॥ ५ ॥
गगन गरजिया रामदास, फूल्या सून्य मँझार ।
डाल चली चहुं कूंटमें, सिख फल लगे अपार ॥ ६ ॥
डाल चली यह पेडतें सब यह का विस्तार ।
रामा पेड जु सींचिया, सब हरियाली टार ॥ ७ ॥
बिट लागी सो नीपना, जल पहियां कँइ जाइ ।
गुरु त्यागी हरि कूं भजै, निधय नरकां जाइ ॥ ८ ॥
गुरु हितकारी रामदास, दिन दिन दूणा थाइ ।
उलटि समावै प्रह्व में, ओत पोत हुइ जाइ ॥ ९ ॥
सिख जो पेसा चाहिये, रह सतगुरु सं रत्त ।
सतगुरु जो न्यारा रहै, सिफल न छाँडि तत्त ॥ १० ॥
इति ।

अथ सुमरन को अंग ।

प्रथमहि सुमरन जीमसुं, छोड़ि करौ यजाइ ।
दो भक्षर रट रामदास, भाँई साइ सुजार ॥ १ ॥
सुमरन कीजै रामदास, रोम रोम भरपूर ।
सुमरन सँ भाँई मिलै, सेयक सदा दजूर ॥ २ ॥
रामदास सुमरन कियो, रोम रोम सुख स्वाद ।
नाहि नाहि खर सांगलै, पुट बनाइद नाद ॥ ३ ॥

रामदास सुमरण कियाँ, सुमरण निपतै साधि ।
 सुमरणहीं सुन गढ़ चढ़े, सुमरण संगे समाधि ॥ ४ ॥
 धषणां सुनियाँ रामदास, गुणगुं सुमन्याँ राम ।
 रसना हिरदै माधि पित्र, सहज कियाँ विधाम ॥ ५ ॥
 रसना सुं सुमरण कियाँ, भंजर भागी तार ।
 रोम रोम पित्र रामदास, ऊठन एक पुकार ॥ ६ ॥
 गुण सेती सुमरण कियाँ, मन आयो इतवार ।
 पूजा सब ही झूट है, रामा सुमरण सार ॥ ७ ॥
 रामा सुमरण सार है, भ्यासोच्छासाभ्याय ।
 कियाँ करम शपही फटे, पूजा लगे न आय ॥ ८ ॥
 केताही फुकरम कियाँ, जाण्यां नहीं विचार ।
 सरय पाप पल में फटे, रामनाम चितधार ॥ ९ ॥
 फुकरम करुं न विव भरुं लगी शब्द की घोट ।
 सतगुरु शरणें रामदास, पाई हरि की ओट ॥ १० ॥
 घुरा भला सब तुम कियाँ, घटमें बैठे राम ।
 मैं तैं भिटगी रामदास, सहज मिन्या निज धाम ॥ ११ ॥
 घुरा कियाँ सब मैं कियाँ, तुम केवल हो राम ।
 रामदास की धीनती, भेटो सकल विराम ॥ १२ ॥
 रामदास सुमरण विना, फदे न छूटे जीव ।
 अनंत जन्म जोइ पुण्य करे, तोइ न पावै पीव ॥ १३ ॥
 पाप पुण्य सुं रामदास, स्वर्ग नरक में जाय ।
 सुमरण विन छूटे नहीं, कोटिक करो उपाय ॥ १४ ॥
 सुमरण एको सार है, पूजा आलजंजाल ।
 रामदास सब सोझिया, हरिविन परलै काल ॥ १५ ॥
 हरि सुमरण कर लीजिये, सास उसासाँ ध्याय ।
 रामदास सुमरण कियाँ, साहब मिलसी आय ॥ १६ ॥
 सब इन्द्री सुमरण करै, मन ही करै पुकार ।
 रामदास अब पाविया, सुखसागर भरतार ॥ १७ ॥
 रामदास सुमरण तणा, विचरा देउँ बताय ।
 घट माँहीं अजपा हुवै, सुणो सकल चित लाय ॥ १८ ॥
 रामदास सुमरण कियाँ, प्रथम जगी इक नार ।
 सहस्र एक चौवनमही, शब्द करत गुंजार ॥ १९ ॥
 कंठ में प्रेम प्रकासिया, हृदै होत धमकार ।
 नाहि नाहि चेतन भई, मन आयो इतवार ॥ २० ॥

नाभि कमल में संवन्धा, सहस्र चार परकास ।
 नाड़ि नाड़ि न्यासी घुरै, सुणत रामिया दास ॥ २१ ॥
 यहत्तर नाड़ी बंक की, मिली बंक में आय ।
 रामदास सब घेरकै, उलटा अमर भराय ॥ २२ ॥
 नाड़ि सचासै एक ही, सहस्र पांच परवाण ।
 रामदास घट भीतरै, ए घडि नाड़ि चखाण ॥ २३ ॥
 मही नाड़ि दूजी घणी, तीन लोक विस्तार ।
 रामदास तन सोझकर, सब का करो विचार ॥ २४ ॥
 नाड़ी यहत्तर हजार है, सब ही तनके माहिं ।
 सबहि मिलाणी तीनसुं, त्रिवेणी में जाहिं ॥ २५ ॥
 इडा पिंगला सुपमणा, त्रिवेणी के तट ।
 रामदास ता ऊपरै, मंड्या सहज ही मट ॥ २६ ॥
 चाँसे चल आधा गया, परम सूनु के माँय ।
 गगन कूप में रामदास, अमृत भरभर पाँय ॥ २७ ॥
 नाड़ि नाड़ि अमृत झरै, पीवत सबै सरीर ।
 रोम रोम विच रामदास, चलत सुखम की सीर ॥ २८ ॥
 साढ़ा तीन करोड़ में, एक होत ररकार ।
 सहजे सुमरण रामदास, ताका अंत न पार ॥ २९ ॥
 उर अंतर नख सिख विचै, एक अजप्पा होय ।
 राम दास या संत गति, साधू जाणै कोय ॥ ३० ॥
 जाप कियाँ मुख द्वार तें, रसना चाली सीर ।
 अजपा सुमरण घट विपै, को जाणै गुरु पीर ॥ ३१ ॥
 गगनमंडलमें रामदास, अनहद घुरिया नाद ।
 रोम रोम साँई मिल्या, सुमरण पायो स्वाद ॥ ३२ ॥

इति ।

अथ विरह को अंग ।

नैण हमारा रामदास पिय बिन रखा विसर ।
 अंतर दारुण विरह की तन इंद्रिय मनझर ॥ १ ॥
 अंतर दारुण अति घणी, पिजर करै पुकार ।
 नैण रोय राता किया, तो कारण भरतार ॥ २ ॥
 घाव कलेजै भाल बिन, रामा सालै निच ।
 रात दिनां सटकत रहै, तुहा कारण मुझ निच ॥ ३ ॥
 विरह भाल उरमें छगी, अंतर सालै निच ।
 रामदास सुख उपजै, आप मिले मुझ निच ॥ ४ ॥

पांशु नारि के पुत्र विन, नित झूरतं दिन जाय ।
 रामदास यों तुझ विना, तालावेली मांय ॥ ५ ॥
 निरधन झूरै धन विना, फल विन नागरबेल ।
 रामा झूरै राम विन, विरही सालै सेल ॥ ६ ॥
 विरह आय घायल किया, रोम रोम में पीर ।
 रामदास दुखिया घणा, हृदै खटूके तीर ॥ ७ ॥
 कुंजर झूरै बन्न कुं, सूवा अंवा फाज ।
 विरहिन झूरै पीव कुं, फवै मिलो महाराज ॥ ८ ॥
 वैनइ झूरै वीर कुं, वर कुं झूरै नार ।
 रामा झूरै पीवकुं, दरसन घो भरतार ॥ ९ ॥
 दरसन कारण रामजी, तलफतहं दिनरात ।
 रामा पिब पायो नहीं, आन हुवो परमात ॥ १० ॥
 आठ प्रहर चोसठ घड़ी, झूरत मेरा जीव ।
 रामदास दुखिया घणा, दरसन दो अब पीव ॥ ११ ॥
 तुमरे दरसन बाहिरो, सब दिन अहला जाय ।
 सो दिन नीका होयगा, तुमहि मिलोगा आय ॥ १२ ॥
 तुम मिलवाके कारणै, रामा झूरै सास ।
 तालावेली जीवमें, फद पूरोगे आस ॥ १३ ॥
 विरह आय अंतर चले, सतगुह के परताप ।
 रामदास सुख ऊपजे, आय मिलोगे आप ॥ १४ ॥
 तुमरे मिलियाँ बाहिरो, दाझे घारंघार ।
 रामा विरहन कारणै, आण मिलो भरतार ॥ १५ ॥
 तुम मिलियां विन में दुखी, विरही ऊठै लाय ।
 रामदासके तुम विना, दम दम अहला जाय ॥ १६ ॥
 रामा स्वारथ कारणै, झूरै सय संसार ।
 में झूरुं परछल कुं, अंतर घो दीदार ॥ १७ ॥
 अंतर दायण विरह की, तुमकारण निज राम ।
 तुमरे दरसन बाहिरो, सकल अलूणो काम ॥ १८ ॥
 तुम मिलवा के कारणै, विरहन घूरी घाय ।
 राम तपो संदेसइ, फहो घटाऊ जाय ॥ १९ ॥
 घाट घटाऊ सब घफया, धकिया मेरा प्राण ।
 रामदास तन भीतर, विरहजु लागो पाण ॥ २० ॥
 पाँच पंग मेरे नहीं, में भवला बल नाहिं ।
 मिलवा की भजा नहीं, हुरणो विज्रत माहिं ॥ २१ ॥

मो झुरवाको जोर है, दृजो फट्ट न होहि ।
 तुम हो जैसा फीजिये, दरशण दीजै मोहि ॥ २२ ॥
 विरह विलापां कर रही, दुखी होय बहु जग ।
 रामदास निजपीय कुं, झूरे रैण रु दिव ॥ २३ ॥
 रैण विहाणी जोयतां, दिन भी बीतो जाय ।
 रामदास विरहिन झूरे, पीय न पाया मांय ॥ २४ ॥
 रामदास विरहिन दुखी, दुखी होत बहु जिद ।
 दुखी जीव कदणा करै, तोहि बिना गोविंद ॥ २५ ॥
 रामदास कह विरहिनी, जाल करुं तन छार ।
 हरि दरसन पायां विना, घृक जीतय जम्मार ॥ २६ ॥
 धिक्क हमारा जीविया, भांग करुं तन भुःख ।
 रामदास सांई विना, रोम रोम में दुःख ॥ २७ ॥
 विरही तणो संदेसहो, सुणो पियारे मिस्त ।
 तुम विन झूरे रामियो, सास उसासा निस्त ॥ २८ ॥
 तुम भापो अय रामजी, तुम विन दुखिया जीय ।
 तुम विन झूरे विरहिनी, परम सनेही पीय ॥ २९ ॥
 तुम मिलपा के कारणे, दिन दिन कृणी घाय ।
 रामदास विरही मया, भंदर लागी लाय ॥ ३० ॥
 भाठ प्रहर विरही जगै, जाका मोटा भाग ।
 रामा प्रीतम कारणे, उनमुन अति घैराम ॥ ३१ ॥
 भंतर दादण विरहफी, ताकुं लगै न कोय ।
 रामदास सो जाणसी, जा घट लागी होय ॥ ३२ ॥
 लागी जयही जाणिये, भाटो पहर विगूर ।
 रामा प्रीतम कारणे, रोम रोम सय झूर ॥ ३३ ॥
 पिय मिलपाके कारणे, विरहिन ऊठे लाय ।
 रामदास कैसे मिटे, पीय विना सुर पाय ॥ ३४ ॥
 तुम सुखसागर गांइयां, विरही दास मिटाय ।
 क्य लागो तन भीतरै, तुम मिटियां सुर घाय ॥ ३५ ॥
 रामदासके विरह फी, भंतर लगी पुकार ।
 रात रिमां लागी रटै, रातगुद के उपचार ॥ ३६ ॥
 रति ।

अथ मन मृतक को जंग ।

रामदास मन मारिया, मार रु फीया क्यार ।
 मूर्खा पीठे भूत हुय, पेर हार को हार ॥ १ ॥

रामदास मन मारिणा, मार रु दीया चाल ।
 घर लागो भग्नी भुग्नी, केर उठेगी झाल ॥ २ ॥
 सरप मार भक्त नागियो, रामा सार्द्धे घाय ।
 पायु लाग चेतन भयो, उलट उणीको घाय ॥ ३ ॥
 मन कूं मृत्तक जाण कर, मत फीजो विभास ।
 रामदास मन सरप ज्यूं, जय तद् करे विनास ॥ ४ ॥
 रामदास मन मारियो, मार रु काडी चाल ।
 घायलिया सरगोल ज्यूं, केर ऊठियो चाल ॥ ५ ॥
 मन कूं मृत्तक जाणकर, मत कोइ रदो नचीत ।
 रामदास फय ऊड कर, अंतर करे कुपीत ॥ ६ ॥
 मन मृत्तक सो जाणिये, घायल ज्यूं किरराय ।
 रामदास दुखिया रहे, हरि सुमिरत दिनजाय ॥ ७ ॥
 जन रामा सतगुरु भिन्या, अर्थ धताया एक ।
 मन मृत्तक हुय लागि रह्यो, आद अंत या टेक ॥ ८ ॥
 इति ।

अथ सूक्ष्म मारग को अंग ।

सो मारग पाया नहीं, साधु पहंता घाय ।
 रामदास भागे रह्या, कलह कल्पना माँय ॥ १ ॥
 रामदास घर अलग है, जाका थाह न कोय ।
 अंतर निश्चय किम हुवै, है याका मग सोय ॥ २ ॥
 कोन दिसा सुं आविया, कहो कोन दिस जाय ।
 रामदास अब भूलग्या, इहाँ पड़ेहैं आय ॥ ३ ॥
 रामदास उण देस सुं, चाल न आया कोय ।
 कहु कुण कूं ले वृक्षिये, मेरे मन की सोय ॥ ४ ॥
 रामदास उण देस सुं, जावै सब संसार ।
 भार सीस पर शीत को, जाकी सुद्ध न सार ॥ ५ ॥
 यादल आडा जगतके, सूर आम विच नाहिं ।
 साधु देह संसार में, ब्रह्म पटंतर माहिं ॥ ६ ॥
 साधु राम तो एक है, विरला जाणै कोय ।
 रामा साधू ब्रह्म में, ब्रह्म साधु में होय ॥ ७ ॥
 ब्रह्मदेस सुं संतजन, आन घन्यो अवतार ।
 रामदास उणदेसको, अवुभव कियो विचार ॥ ८ ॥
 रामदास यूँ समझ कर, साधू शरण संभाय ।
 माँसा हर रामाय कर, अमर देह लेजाय ॥ ९ ॥

घरती अद असमान विच, उमय येनि असराळ ।
 रामदास राय मोधिया, तंतु घल्या घडूं नाल ॥ १० ॥
 तिघ साधक जोगी जती, मयही किया विचार ।
 रामदास रामहर्या विना, घोषो घारंदार ॥ ११ ॥
 आशा वृष्णा घेलडी, जामण मरण भरूट ।
 रामहर्या सो तो तिघ दुषा, अणममहर्या सो झुट ॥ १२ ॥
 मारग अगम अघाह सा, मोपै लर्या न जाय ।
 जन रामा सतगुद मिल्या, पलमें दिया यताय ॥ १३ ॥

इति ।

अथ पीय पहिचान को अंग ।

पह्रदामें र्हि रामदास, सोतो घणी न जाण ।
 सकल मंडमें रमरता, तागूं करो पिछाण ॥ १ ॥
 राय रूं म्यारा रामदास, दुनिया जाण नार्हि ।
 रि हूं शेषम जाणवत, सकल मंड ता मारि ॥ २ ॥
 माय पाय जाणं नर्हि, हि अणघडु भोग ।
 रामा येसा हीण हि, रंग रूप नर्हि रोग ॥ ३ ॥
 राय का करता एक हि, परमात्र निजरेय ।
 रामदास घडिया लजो, करो जाण पी शेष ॥ ४ ॥
 रामा एक पिछालिया, तादीगूं रिपदाय ।
 जो दृजा मुख मीकरी, तो वूं जीय कटाय ॥ ५ ॥
 सतगुद के परमाण रूं, लीया पीय पिछाण ।
 रामदास मुख आणजे, दृजी घटं न बाण ॥ ६ ॥

इति ।

अथ छन्द को अंग ।

रामदास गलदास का, भीतर रामा घेर ।
 कारिद पाय न हीमही, रोम रोम विच रोद ॥ १ ॥
 र्हि पह्रपा सत रामु का, भेद सदा लव मारि ।
 रामदास लानी र्ही, काय कालेजा मारि ॥ २ ॥
 लणी रामु र्ही रामदास, अघःकूर्धे विच बांट ।
 रोम रोम र्हीका र्ही, सक सट लकी रोद ॥ ३ ॥
 रोद लणी सत रामु र्ही, मारिद मिचणी जाय ।
 रामदास कालेर र्ही, रामु सतो मुंकाय ॥ ४ ॥

सोरठा ।

शब्दरानी सब मार, साराई शरीर में ।
रामा भणी न धार, रोम रोम विच यहगई ॥ १ ॥

सारी ।

शब्द थाण सुं मारिया, सयही मनका छोट ।
रामदास भाकाश में, लगी भरंड इक छोट ॥ ५ ॥
धर अंदर विच रामदास, एक शब्द गुंजार ।
उहाँसे आघी उलटि के, निकसी दशर्वे द्वार ॥ ६ ॥
शब्द गाज प्रह्लांड में, जाण भणंकी धीण ।
रामदास सुर संभलै, महा झीण सुं झीण ॥ ७ ॥
रामदास घायल भया, सत्त शब्द की मार ।
आठ पहर घूमत रहै, सांई हंदा यार ॥ ८ ॥
शब्द मार करड़ी घणी, विरला झेलै कोय ।
रामदास सो झेलसी, विरह विकलता होय ॥ ९ ॥

सोरठा ।

रामा शब्द संभाय, सतगुरु याहा तन्नमें ।
आठ प्रहर घूमाय, घावलग्या सो जाणसी ॥ १ ॥

सारी ।

जन रामा सतगुरु मिल्या, शब्द जु याहा तीर ।
उर अंतर नख सिख विचै, सारै भिया शरीर ॥ १० ॥
इति ।

अथ ब्रह्म एकता को अंग ।

सगुण जु निर्गुण रामदास, तू एको कर जाण ।
एक ब्रह्म सब बीच में, समरथ पद निरव्याण ॥ १ ॥
सगुण जु माया रामदास निर्गुण माहिं समाय ।
एक ब्रह्म विस्तार है, दूजा कहा न जाय ॥ २ ॥
पाला गल पाणी हुवा, जीव पलट हुवा ब्रह्म ।
निर्गुण सगुण जु एक हुय, रामा छूटा मर्म ॥ ३ ॥
जीव मिलाणा सीव में, पलट हुवा निज ब्रह्म ।

एक ब्रह्म सब बीच में, ताका चार न पार ।
रामदास ताखूं मिल्या, दुबध्या दूर निवार ॥ ५ ॥
इति ।

अथ ग्रंथ-गुरु-महिमा ।

आये संत सधीर, लिये जगमें अवतार ।
खोले भक्ति मंडार, मिठ्याहै तिमिर अंधार ॥ १ ॥
अमर लोक खूं आय, सिद्धथल माहिं विराजे ।
तेजपुंज परकास, वजे अनहदके वाजे ॥ २ ॥
सतासंभाधि अगम जहैं आसण, सुखमण सहज समाधी ।
आय रामियो चरणां लागो, सिख है आदि अनादी ॥ ३ ॥
हरिरामा हरि है अवतार, अंतर कला कबीरूं ।
नामदेवसा दृष्टि देखतां, सूर संत सधीरूं ॥ ४ ॥
पत प्रह्लाद चाल सनकादिक, ज्ञान सहित शुकदेव ।
धुवसा ध्यान अटल अनुरागी, गोरख जैसा भेव ॥ ५ ॥
दादूसा दीदार दुरंस, फोड़ दर्शन पावै ।
काल जाल सब जाय, भरम अघ दूर गमावै ॥ ६ ॥
दीर्घसा दिग्पाल, मेरुसा अविचल कहिये ।
सूरजसा परकास, समंदज्युं थाढ़ न लहिये ॥ ७ ॥
समंद सख्यामें होय, सत्तगुरु असंख कहाये ।
गोविंदतें दीरघ, चंदतें शीतल थाये ॥ ८ ॥
ब्रह्म विलासी संत, ब्रह्म का है व्योपारी ।
ज्ञान ध्यान गलतान, दीसतां दर्शन भारी ॥ ९ ॥
गुरघरके मँझ माहिं, प्रगत्या सद्या साँई ।
देख्या जगत रु भेख, और पेसा कुछ नाँई ॥ १० ॥
पेसा है कोई संत, सूरवां कहियै सादू ।
हरिरामा गुरुदेव, मिल्या पूरव पुन आदू ॥ ११ ॥
जो पावै दीदार, दुरस होय चरणा लागै ।
भर्म कर्म सब जाय, काल अघ दूरा भागै ॥ १२ ॥
सिख कूं ज्ञान यताय, ब्रह्म के माहिं मिलावै ।
पेसी औपधि लाय, जन्मका रोग मिटावै ॥ १३ ॥
सुनिपा था सुरलोक, देवता वापक पूजा ।
अधिक ज्योति परकास, अनंत जहैं सूरज ऊगर ॥ १४ ॥

मिटिया तिमिर अनेक, तेज परकाया माँही ।
 रामाकूं गुरुदेव मिल्या, एक सच्चा साँई ॥ १५ ॥
 पेसा है गुरुदेव, हमारे शीश बिराजै ।
 जेती महिमा होय, गुरां कूं पती छाजै ॥ १६ ॥

साखी ।

गुरुमहिमा सीखै सुणै, आपा लेह विचार ।
 भजन करै गुरुदेव को, सो जन उतरै पार ॥ १७ ॥
 गुरुकी महिमा रामदास, करता है दिनरात ।
 सतगुरुसा दूजा नहीं, सत भाखतहं वात ॥ १८ ॥

चौपाई ।

सह्य समी नहीं पर-दरिणा । सह्य समा प्रेम नहीं चखणा ।
 सह्य समा तीर्थ नहीं तिरणा । सह्य समा और नहीं शरणा ॥ १ ॥
 सह्य समा धूप नहीं रूपम् । सह्य समा नहीं तत्व अनूपम् ।
 सह्य समा पुण्य नहीं दाना । सह्य समा ज्ञान नहीं ध्याना ॥ २ ॥
 सह्य समा जोग नहीं जग्गा । सह्य समा और नहीं सग्गा ।
 सह्य समी कहत नहीं कदणी । सह्य समी रहत नहीं रहणी ॥ ३ ॥
 सह्य समा उडत नहीं गडिता । सह्य समा पल्या नहीं पैठिता ।
 सह्य समा पिता नहीं माता । सह्य सा नहीं तस्य विधाता ॥ ४ ॥
 सह्य समा पीर नहीं यन्धू । सह्य समा और नहीं सग्धू ।
 सह्य विना नरक में जाये । सह्य विन कहु कौन सुझाये ॥ ५ ॥
 सह्य विना कयहु नहीं छूटे । जहँ जाये जहँ जमरो तूटे ।
 सह्य विना बहुत फिर मटके । जहँ जाये जहँ जमरो पटके ॥ ६ ॥
 सह्य विना सयें कों ध्याये । गोगा पावू मात सराये ।
 सह्य विना सयें कों जानै । क्षेप्रपाल बहु भूल बखानै ॥ ७ ॥
 सह्य विना सयें कों सेवै । धूप रूप सो बहु दिन सेवै ।
 सह्य विना सयें कों जोये । करामान ऋषि तिथि कों रोये ॥ ८ ॥
 सह्य विना एक नहीं गूँ । अनै न देखकों फिर फिर पूतै ।
 सह्य विना बहु देख यखानै । हृदकी यान सफ़ल कर जानै ॥ ९ ॥
 सह्य विना राम नहीं पावै । रगना कंट किमु प्रेम सिलावै ।
 सह्य विना हृदय नहीं गूँघा । निञ्जनाम विन कमलहु ऊँघा ॥ १० ॥
 सह्य विना भावि नहीं भावै । भ्यागोच्छ्राम कदो किमु छावै ।
 सह्य विन रगत नहिं बोलै । अन्तर ध्यान कदो किमु सोलै ॥ ११ ॥

सह्य विन अज्ञपा नहिं जाणै । रोम रोम रत किसविधि माणै ।
 सह्य विना पंच नहिं पायै । कैसे मिलकर जुगजुग जीवै ॥ १२ ॥
 सह्य विना पंच नहिं उलटै । काग पंश काहु किसविधि पलटै ।
 सह्य विना भयः नहिं जाणै । ऊर्ध्व कमल कर्हें किसविधि माणै ॥ १३ ॥
 सह्य विना भयः नहिं छेदै । आकारा कमल काहु किसविधि भेदै ।
 सह्य विन भनहद नहिं पायै । त्रियेणी तट कैसे न्हायै ॥ १४ ॥
 सह्य विना लिय नहिं लागै । प्रहजोति काहु किसविधि जाणै ।
 सह्य विन दशमा नहिं जाणै । सहज समाधि किमीविधि गाणै ॥ १५ ॥

सारी

सह्य विन सुधि ना छटै, कोटिक करो उपाय ।

रामदास सह्य विना, सय जग जमपुर जाय ॥ १ ॥

चौपाई ।

कोटि कोटि यहु धान दिदायै । कोटि कोटि धुन ध्यान लगायै ।
 कोटि कोटि यहु देय अरायै । कोटि कोटि किरिया जो सायै ।
 तोहि गुण गोविंद विन मुक्ति न जायै । सतगुण विना काल सय गायै ॥ १ ॥
 कोटि कोटि तीरथ फिर आयै । कोटि कोटि असनान करायै ।
 कोटिक दे पृथ्वी परदारिणा । निज नाम विन प्रेम न चरण्या ॥ २ ॥ तो० ।
 कोटि कोटि यहु नुलाविसायै । सोना रूपा दान दिरायै ।
 और द्रव्य यहुतेरा देयै । सहस्र नाम निशीदिनलेयै ॥ ३ ॥ तोहि० ।
 कोटि कोटि जिग होम करायै । कोटिक प्राहण भोति जिमायै ।
 कोटिक गडवाँ दान दिरायै । कोटि कोटि यहु हेत लगायै ॥ ४ ॥ तोहि० ।
 घर्म कर कन्या परणायै । दत्त दायजो कोटि दिरायै ।
 कोटि कोटि कन्या फल लेयै । सय भेष फूँ यहु धन देयै ॥ ५ ॥ तोहि० ।
 कोटि कोटि जत सत्त कमायै । कोटिक तपस्या तण्य करायै ।
 कोटिक धरत करे यहुतेरा । पोत पहर लूटावत डेरा ॥ ६ ॥ तोहि० ।
 कोटि कोटि अधि सिद्धि कमायै । कोटि कोटि भंडार भरायै ।
 सदावरत यहुतेरा देयै । कानगुरुकूँ निजि ॥ तोहि० ।
 कोटिक कहत कहत यहु कहणी । ॥ ॥
 रेचक कुंभक जोगजु साजे । ॥ तोहि० ।
 कोटि कोटि उडता यहु ।
 कोटिक अगम नि० ॥ तोहि० ।
 कोटि करै शरै

उदय अस्त लग अदल चलावै । विधि लोक सुरलोक जावै ॥ १० ॥ तोहि ०
 सप्तद्वीप लीं आँण सघाई । एक चक्रयती ठकुराई ।
 एको सुकय कहीं नहिं भाया । फिर पाछा गर्भयासा आया ॥ ११ ॥ तोहि ० ।
 फोटिफ प्रह्ला विष्णु ध्यावै । शिव शक्ती सुं ध्यान लगावै ।
 और देव यहुतेरा सेवै । धूप रूप सो निशि दिन खेवै ॥ १२ ॥ तोहि ० ।
 चयवद्द भवन काल घर जावै । प्रह्ला विष्णु महेश डरावै ।
 काल डरे अणघड सुं भाई । तासुं संताँ सुरति लगाई ॥ १३ ॥ तोहि ० ॥

साखी ।

ता भूरत पर रामदास, वार वार यलिजाय ।
 विणज करै ता नामको, जाकूँ काल न खाय ॥ १ ॥

चौपाई ।

शून्य शिखरमें हाट मंडाया । विणजण कूं व्योपारी आया ।
 हरि हीरों की घड़ी लगाई । निजनाम की गूण भराई ॥ १ ॥
 पांच पचीस बलधिया लाया । गूण घाल अरु लाद चलाया ।
 सतगुरु कहै चेला तुम जावो । काया पाटण विणज हलावो ॥ २ ॥
 चेला चलकर लारै आया । दिल भीतर बाजार मंडाया ।
 चित्त चोहटै आण उतारी । फिर फिर जावै सब व्योपारी ॥ ३ ॥
 ततकी तराजू दिल की डाँडी । उर भीतर हम हाट जो माँडी ।
 कड़वा करम परा कर पाखै । तत्त नाम एक हीर जु राखै ॥ ४ ॥
 अधः ऊर्ध्व विच रस्त चलाई । जमडाणी अब न्यारा भाई ।
 विणजकरै विणजारो जागै । जम डाणी का जोर न लागै ॥ ५ ॥
 हाट मँडाई चोहै चोहटै । चोर न मुसै लाट नहिं घाँटै ।
 विणजण कूं जग चलकर आवै । हीरा पारख कोई न पावै ॥ ६ ॥
 जोहरि होय सो पारख पावै । तन मन दे हीरा ले जावै ।
 हरि हीरा की नाव चलाई । जगभीतरमें धुरा बंधाई ॥ ७ ॥
 धुर योहरे अब मेल घणेरा । विणज करै अब सुनमें डेरा ।
 आपहि धुर आपहि है योरा । आपहि विणजे आपहि हीरा ॥ ८ ॥
 हरि हीरा का मन्या भँडारा । विणज करै है अगम अपारा ।
 विणज करै अब सुनमें आया । सतगुरु सेती शीस निवाया ॥ ९ ॥
 शून्य शिखर में गुरु विराजै । रात दिनां नित नोयत धाजै ।
 विणज करै अब कबू न जूया ॥ १० ॥

साखी ।

सतगुरु समाजु को नहीं, इण जुग ही के माहिं ।
 रामदास सतगुरु विना, दूजा दीसै नाहिं ॥ १ ॥
 सूरत शुद्ध कबीरसी, दादु सा दीदार ।
 हरिरामा हरि सास्सा, अनंत जोत अधिकार ॥ २ ॥
 हरिरामा गुरु सूरयाँ, ज्ञान ध्यान भरपूर ।
 घौरासी सं काढ कर, किया काल जम दूर ॥ ३ ॥
 पेसा साधू नामदे, जैसा है हरिराम ।
 रामें कूं शरणे लियो, मेल निरंजन राम ॥ ४ ॥
 हरिरामा प्रह्लादसा, जैसा रामानंद ।
 चरण परस चित चेतिया, मनमें भया अनंद ॥ ५ ॥
 विप माया सय त्यागकरि, हिरदै ध्यान लगाय ।
 रामदास निरमै भया, सतगुरु शरणे आय ॥ ६ ॥
 सतगुरु केवल रामदास, मिल्या निकेवल माँय ।
 हरिरामा संत ब्रह्म है, सिखभी निरमै थाय ॥ ७ ॥
 घरणा चाकर रामियो, सतगुरु है मदाराज ।
 ध्यार चक्र धयदै भवन, ताहि परै संतराज ॥ ८ ॥
 सतगुरु को मुख देखतां, पाप शरीरें जाय ।
 साधुसंगति सत रामदास, अटल पदी लेजाय ॥ ९ ॥
 गुरु गोविंद की महर्ते, रामा पड़ी पिछाण ।
 सय संतां के ऊपरै, थारुं मेरा प्राण ॥ १० ॥
 हरसन दीठां रामियां, भाज जाय सय भर्म ।
 पेसा गुरु हरिरामजी, परस्यां फाटै कर्म ॥ ११ ॥
 पूरण ब्रह्म विराजिया, गाम सिद्धथल माहिं ।
 रामदास जन जाणसी, दूजां कूं गम नाहिं ॥ १२ ॥
 इति ।

॥ धीरममकेभ्यो नमः ॥

अथ श्रीभक्तमालप्रारंभः ।

साखी ।

मैं भबला हौं रामदास, भौंघो भंत अथेत ।
 तुम सतगुरु हो शीश पर, हमको करो सथेत ॥ १ ॥
 रामदास की धीनती तुमहो, अगम अपार ।
 भक्तमाल का मेघ दो, सतगुरु करीं लुहार ॥ २ ॥

चौपाई ।

सतगुरु मिल्या नामनिज पाया । सत्तशब्दकों निशिदिन ध्याया ॥
 हृदय कमल घर लीया वासा । बीज भक्ति मोहि उपजी आसा ॥ १ ॥
 नाभिकमल में राम मिलाया । रोम रोम में रंग लगाया ॥
 उलटि शब्द पश्चिम दिशि फिरिया । अधःऊर्ध्व प्रेमरस हरिया ॥ २ ॥
 मनवा उलटि अगम घर आया । सब सन्तन का दर्शन पाया ॥
 सब सँत मेरे शीश विराजे । सत्त शब्द सन्ताँ मुख छाजे ॥ ३ ॥
 सब सन्तन कों राम पियारा । भक्तमाल का करौ उचारा ॥
 रामनाम संपति सुखदाई । सब सन्ताँ मिल साख बताई ॥ ४ ॥
 रामनाम ध्यावै कुल माँई । सो थांधव है मेरा भाई ॥
 रामनाम कों निशिदिन ध्यावै । आवागमन बहुरि नहि आवै ॥ ५ ॥
 रामनाम कों निशिदिन ध्यावै । अटल पद अमरापुर पावै ॥
 रामनाम कों निशिदिन ध्यावै । दुःख दारिद्र्य हि दूरि गमावै ॥ ६ ॥
 रामनाम से बहुता तिरिया । अनंतकोटि अनेक उधरिया ॥
 रामनाम की सुनिये साखा । अजामेल पुत्र जिन राखा ॥ ७ ॥
 रामनाम की कहीं बडाई । अहिल्याकों जु विमान चडाई ॥
 रामनाम का मता अपारा । शीघर कुटुंब सहैता तारा ॥ ८ ॥
 रामनाम गजराज उधारे । सब सन्तन का काज सुधारे ॥
 रामनाम से शिला तिराई । पाणी ऊपर पाज बँदाई ॥ ९ ॥
 रामनाम केहा गुण गाऊं । जुग जुग भक्ति तुम्हारी पाऊं ॥
 रामनाम की महिमा भारी । मो अबला कों तार मुरारी ॥ १० ॥
 तीन लोक में राम धियाया । सो सन्त जु मेरे मन माया ॥
 रामदास कों राम पियारा । जो सुमरे सो प्राण इमारा ॥ ११ ॥

साखी ।

हरि की महिमा रामदास, कहिये कदा बनाय ।
 अनंतकोटि मर उदरे, रामनाम लिप लाय ॥ १ ॥

छंद नीसानी ।

सतगुरु स्वामी चौ निजनामी निज ही नाम धियायन्दा ।
 गजेरा गरवा कानाँ सरवा अधि तिजि बुद्धि मिलायन्दा ॥ १ ॥
 इरा अथनाकं ब्रह्म विचाकं रंकार मिल जायन्दा ।
 पानी पवन द धरनी अंधर बग्द हर गुन मायन्दा ॥ २ ॥
 नव मी बग्दु बाट्ट पंगु परमल गरमू ध्यायन्दा ।
 छउ मी ऊनिषाँ छानाँ सतिषाँ चैन जाति ह्युग जीवन्दा ॥ ३ ॥

एको अच्छर मंडे मच्छर अकार उपावन्दा ।

लखचौरासी है अविनासी पूर्णब्रह्म समावन्दा ॥ ४ ॥

है भी न्यारा प्रियतम प्यारा जाहिर जोगी जाणन्दा ।

फोटि अनन्तू मिले निरन्तू रोम रोम रस माणन्दा ॥ ५ ॥

है जुग चारू सन्त अपारू दास दीनता गावन्दा ॥

हम कीड़ी कायर हरि सुख सायर उलटा अमर भरावन्दा ॥ ६ ॥

थाह न पाया ध्याय मिलाया समदाँ वृन्द समावन्दा ।

१ रामदासू सतगुरुपासू नमि नमि शीश नमावन्दा ॥ ७ ॥

साखी ।

सतगुरु सेती धीनती, मनका मत्सर भेट ।

रामदास कौं दीजिये, भक्तमाल जश भेट ॥ १ ॥

चौपाई ।

प्रथम द्वि नाम सदाशिव लीया । पावेती कौं निज तत दिया ॥

सो सुनि नाम सूया ले भागा । उदरहि माहिं राम लिव लागा ॥ १ ॥

बाहिर आइ वसे घन जाई । रामनाम से प्रीति लगाई ॥

धेदव्यास बहु ज्ञान उपाया । राम राम कहि उलटि समाया ॥ २ ॥

ब्रह्मा विष्णु रामसे रत्ता । कुचेर जोगी राम सुमरता ॥

शेषनाम गुरुज्ञान विचारा । सहस्र मुखौं से राम उचारा ॥ ३ ॥

राम रसायन नारद पीया । ऋषि सनकादिक हरिगुण लीया ॥

भारकंड लोमश ऋषि भाई । रामनामसे प्रीति लगाई ॥ ४ ॥

गंग ऋषी जु रामसे रत्ता । गौतम कागभुजुंदि सुमरता ॥

जयदेव ऋषि की प्रीति पियारी । उद्वेग हरिसे लाई तारी ॥ ५ ॥

पिप्पलाद ऋषि हरि हर ध्याया । ज्ञान पाय अज्ञान मिटाया ॥

कुंभी ऋषि काम को जीता । काया गढ़ ले भया वदीता ॥ ६ ॥

करणध्वज ऋषि राखी काया । नाद बिन्दू ले गांठ घुलाया ॥

अगस्त्य ऋषि जुगे जुग जीया । सात समुंदका पापी पीया ॥ ७ ॥

भृगुजी ऋषि ब्रह्म को धीन्दा । विष्णुदेवका परचा लीन्दा ॥

सेया करी हयाम से लागा । काल क्रोध भय अंतर भागा ॥ ८ ॥

नासकेत उद्दालकपूर । आन मिल्या सुखसागर सूर ॥

ऋषि समीक भूमंडल गाया । रामनाम को निशिदिन ध्याया ॥ ९ ॥

ऋषि दालभ्य एक पुन धारी । सत्सदाध से प्रीति पियारी ॥

मुनि पतिष्ठ समार्पी सूर । निशिदिन रहते हरी हजूर ॥ १० ॥

ऋषभदेव रामसे राता । निजनामसे कीया नाता ॥
 गुद गांगेय राम गुण गाया । जिन मौई को भेद यताया ॥ ११ ॥
 विश्वामित्र दि प्रह्ला विचारा । रोम रोम में राम उचारा ॥
 पादुपल बलपग्ता ह्या । मन को जीति सन्ताँ मिल घ्या ॥ १२ ॥
 राजा भरत महा पटरानी । दोनां भक्ति निकेयल जानी ॥
 महावीर महा तत पाया । केवल होइ मोक्षपद पाया ॥ १३ ॥
 केशी कुँवर काम बल पाला । परदेशी सन्ताँ मिल हाला ॥
 घोषीस तिथंकर राम धियाया । केवल होइ मोक्षपद पाया ॥ १४ ॥
 भगवन्नाम निरंजन भेला । निजनाम से कीया भेला ॥
 काल जाल जम का डर नाहीं । भगवद मिल्या ताहि घर माहीं ॥ १५ ॥
 सरियादे प्रहाद उधरिया । रामनाम ले कडू न डरिया ॥
 भीड़ पड़ी सन्ताँ पल आया । हिरण्यकशिपु को मार गुढ़ाया ॥ १६ ॥
 सिंह रूप अवतार धारिया । तिलक दिया प्रहाद तारिया ॥
 कार्तिकस्वामी हनुमत सृरा । सीता लक्ष्मण राम हजूर ॥ १७ ॥
 त्यागा राज भरत वन लीया । राम रसायन निशिदिन पीया ॥
 रिपुहन राम राम गुण गाया । मन्दोदरी विभीषण पाया ॥ १८ ॥
 तुलसीदास राम का प्यारा । आठों पहर मगन मतवारा ॥
 भूत मिल्या हरि भेद यताया । हनुमान हरि घरणाँ लाया ॥ १९ ॥
 राजा जनक राम का प्यासा । खट दिलीप प्रेम परकासा ॥
 परीक्षित प्रेम पियाला पीया । जन्मेजय निजतत ले जीया ॥ २० ॥
 पारायण सुनिके पद पाया । आया गमन बहुरि नहि आया ॥
 रुक्मांगद पुँडरीक उधरिया । राजा शिषी सत्य से तिरिया ॥ २१ ॥
 गूँड राज गोविन्द गुण गाया । सुखसागर में सहज समाया ॥
 मोहमर्द निरमोही राजा । दीठा जाय अगम का छाजा ॥ २२ ॥
 परजादीप परम तत पाया । हाकम सन्ताँ चरण लगाया ॥
 फटिया करम रामको गाया । दिन पैंतीसाँ मोक्ष मिलाया ॥ २३ ॥
 मोरघ्वज का मता करारा । त्यागी देह राम का प्यारा ॥
 सदावर्त दीया सुख पाया । सन्तन को बहु शीश नवाया ॥ २४ ॥
 प्रेम भक्ति सँ प्रीति लगाई । बैकुण्ठ चढि नौयत चाई ॥
 जन अमरीप रामगुण गाया । चरणासृत लेकर सुख पाया ॥ २५ ॥
 दुरवासा ऋषि शापन आप । उलटा दुःख उसीको घाप ॥
 तपि लगी तनमें बहुभारी । साहिय सेती अरज गुदारी ॥ २६ ॥
 हरिजन हरि को बहुत पियारा । भक्तकाज धरिया अवतारा ॥
 उलटा ऋषी लगाय पाय । सन्तन का फारज सुधराय ॥ २७ ॥

द्विज कन्या दिल माहीं दरस्या । उलटी मिली अगम घर परस्या ॥
 राजा हरिचंद सती कहाया । सत्त न हान्या द्वाट विकाया ॥ २८ ॥
 बलि जिग माहीं जाग रचाया । वावनरूप छलन को आया ॥
 बलि नहि छलिया आप छलाया । राज पयालाँ निश्चैपाया ॥ २९ ॥
 पांडव पाँच राम का प्यारा । कुन्ताँ माता अगम अपारा ॥
 पांडव जग में जाग रचाया । चार कौट का ऋषी बुलाया ॥ ३० ॥
 जाग जीमिया शंख न थोला । स्वामी काहिन अन्तर खोला ॥
 स्वामी भेद सन्तका दीया । पांडव जाय बाल गुण लीया ॥ ३१ ॥
 बालमीकि की शोभा सारी । कीन्हो जाग संपूरण भारी ॥
 दूजा बालमीकि इक हुआ । रामनाम कहि निरमै दूआ ॥ ३२ ॥
 शतकोटी रामायण कीन्ही । स्वर्ग मृत्यु पातालाँ दीन्ही ॥
 निश्चै नाम एक की आसा । रामनाम कह ब्रह्म विलासा ॥ ३३ ॥
 द्रौपदि प्रेम पियाला पीया । चीर बघार परम सुख लीया ॥
 बिदुर जु भेव भक्ति का पाया । नाम निकेवल निशिदिन ध्याया ॥ ३४ ॥
 बथवै हन्दा शाक बनाया । साहिव को परसाद कराया ॥
 साहिव साधू प्रीति पियारी । कैरव हार गण अहंकारी ॥ ३५ ॥
 सुरदास सन्ताँ सुखदाई । रामनाम से प्रीति लगाई ॥
 कालू कीर राम का प्यारा । रोम रोम में लीया झारा ॥ ३६ ॥
 सँत हरिदास सुरति उलटाई । देवहुति भूमि सातवीं पाई ॥
 ध्रुवजी ध्यान धणीसे लाया । अटल पदी अमरपुर पाया ॥ ३७ ॥
 भक्त बंश में सन्त जु सुरा । वैकुंठा मिलिया जन पूरा ॥
 रतनदास राम सों रत्ता । रोम रोम में लागा तत्ता ॥ ३८ ॥
 नरसीदास राम का प्यासा । प्रेम भक्ति पाई परकासा ॥
 साँई के सँत हुआ हजूरी । कर माहेरो आशा पूरी ॥ ३९ ॥
 तिलोकचँद की भक्ति करारी । लेखण स्याही आप मुरारी ॥
 सुदामा का दारिद हरिया । रामनाम पेसा गुण करिया ॥ ४० ॥
 प्रेम भीलजी भक्ति पियारी । चोर पायकर शिपा बघारी ॥
 सरिता नीर निरमला फीया । शयरी रघुवर टीका दीया ॥ ४१ ॥
 सर जहँ ऋषी सत्तगुरु पाया । ऋषि मिल हरि दर्शन को आया ॥
 शयरी भक्ति मली पण कीन्ही । सब ऋषियाँ मिळ माँहे लीन्ही ॥ ४२ ॥
 ईश्वर थाप गधा कू फीया । पिता पुत्र खोला में लीया ॥
 नेमनाथ नारायण ध्याया । मेदी भेद ब्रह्म का पाया ॥ ४३ ॥
 आदिनाथ मिलिया अविनासी । केवल हुआ एक सुखरासी ॥
 गनिका गुरु स्या को पाया । सत्सशब्द को निशिदिन ध्याया ॥ ४४ ॥

रंका बंका राम पियासा । नामा छीपा हरि का दासा ॥
 देवल फेर रु दूध पिलाया । श्वान रूप हुइ भोजन पाया ॥ ४८
 परचा पूगा परज पतीनी । दशधा भक्ति नामदे फीनी ॥
 दत्त दरश दिल भीतर पाया । गुरु चोवीसुं ले गुण गाया ॥ ४९
 निश्चय एक नाम की आसा । रामनाम कह ब्रह्म विलासा ॥
 विष्णुस्वामी माधवाचारा । सत्त शब्द ले किया पसारा ॥ ४७ ॥
 रामानुज निम्बार्क भाई । कलियुग माहीं भक्ति हलाई ॥
 राघवानन्द राम का प्यारा । रोम रोम में लीया झारा ॥ ४८ ॥
 रामानन्द मुख राम उचारा । निर्गुण भक्ती किया प्रचारा ॥
 चार संप्रदा धावन द्वारा । हुआ शिष उजियागर सारा ॥ ४९ ॥
 भोवानन्द अनंतानंद दासा । रामनाम से लाई आसा ॥
 नरहरिनन्द निकेवल लीया । स्वामि गालवै हरि रस पीया ॥ ५० ॥
 धेने सुरसरै सुरति लगाई । रामनाम मीठो रे भाई ॥
 सन्तन के मुख बीज बुद्धाया । खेती माहिं नाज निपजाया ॥ ५१ ॥
 दास कंबीर भगन मत धारा । सहज समाधि यणी इक धारा ॥
 सय सन्तां में चकवै हुआ । ब्रह्म विलास कबू नहि जूआ ॥ ५२ ॥
 हुइ विणजारा बालद् लाया । सदावर्त दे सन्त सराया ॥
 कमाल कमाली हरि गुण गाया । सुखसागर में सहज समाया ॥ ५३ ॥
 कवीर कमाल जमाल जमहा । शेख फरीद सुमरिया अहा ॥
 भीसहस्रास्य गुरु गम पाई । बहत्तर शिष मिल पद्धति लाई ॥ ५४ ॥
 सेने सुपा योगानंद भाई । आय मिल्या सुखसागर माई ॥
 सीता पीपे प्रेम पियारा । रामनाम रटिया इक धारा ॥ ५५ ॥
 गेले माँटि किया सिद्ध बेला । रामनाम से थांप्या बेला ॥
 छापापात समंद में लीगही । छापां आय परगदी कीगही ॥ ५६ ॥
 राम राम रैदांस उचरिया । रोम रोम में नीहर हारिया ॥
 कादि जनेऊ विम जिमाया । शालग स्वामी मुखां बोलाया ॥ ५७ ॥
 पद्मार्थती प्रेम रस पागी । सय सँग छाँडि राम दिय छागी ॥
 विष्य तपां चरनामृत दीया । साद्विष सहजां भगृत फीया ॥ ५८ ॥
 बमृत उलटि मिल्या घट माहीं । जन रैदास सत्तगुद पाहीं ॥
 बुल मारग को जाने स्थाग्या । मीरा घली गुरां की भासा ॥ ५९ ॥
 रतना करमा मीरा पाई । झाली मीनि राम से लाई ॥
 घुली प्रेम पियाला पीया । सत्तगुद से मिल निज तत लीया ॥ ६० ॥
 रोमण मन को धिर करि राका । रामनाम भजिया गुण गासा ॥
 धर्मदास ध्यान करि भ्याया । अनदद नाद अर्पणित वाया ॥ ६१ ॥

टीलमदास लगावै तत्ता । लाहदास राम से रत्ता ॥
 शानी शान चीन्हिया निर्गुण । माया दूर करी सय सर्गुण ॥ ६२ ॥
 गोवीराम गैब से मिलिया । सब सन्ताँ सुखदाई मिलिया ॥
 गोविन्दराम राम गुण गाया । केवलदास निकैवल पाया ॥ ६३ ॥
 अहैदास अगम की आसा । भक्ति पदीमें कीन्हा वासा ॥
 कोल्ह गैस कुलशेखर सारा । मुकुन्ददास मिल्या तत तारा ॥ ६४ ॥
 मुरलीदास मलूका वेई । आन मिले सुखसागर तेई ॥
 बँदरै चित चेतन करि जाण्यो । सतरै रोम रोम रस माण्यो ॥ ६५ ॥
 मुक्ख भीड़ पीया रस बंकी । चवड़े चपट मँड्या चित चोकी ॥
 चित से चित चेतन करि घ्याया । आत्म में परमात्म पाया ॥ ६६ ॥
 हीरदास हरि का हित कारी । सत्यशब्द से प्रीति पियारी ॥
 कान्हरदास काम कों त्यागा । रामनाम से निशिदिन लागा ॥ ६७ ॥
 मगतीराम भगन में रहणा । आठ पहर नित राम सुमरणा ॥
 जंगीराम जुक्ति करि जाना । ब्रह्म चीन्ह निज तत्व पिछाना ॥ ६८ ॥
 बालकदास ब्रह्म व्योपारी । उलटे आइ लगाई यारी ॥
 केशवदास काम कुण काजी । राम राव भजिया हुइ राजी ॥ ६९ ॥
 हरचंददास चरणा चित लाया । सतगुरु सेती प्रेम मिलाया ॥
 चेतनदास चेत जुग जीया । आत्म राम रसायन पीया ॥ ७० ॥
 मोहनदास मानगढ मारा । रोम रोम में राम पुकारा ॥
 मानादास महा रस पीया । उलटे आइ अगम सुख लीया ॥ ७१ ॥
 धास मुरारि मिल्या तन माँए । तिरवेणी चढि ध्यान लगाए ॥
 सत शिवदास श्यामसे सच्चा । सत्त शब्दसे निशिदिन रचा ॥ ७२ ॥
 बाणारसी राम साँ लागा । उलटा मिल्या अगम घर आगा ॥
 दाईदास दिल माहीं दरसा । रोम रोम में अमृत बरसा ॥ ७३ ॥
 जन पयहारी परिपक हुआ । ब्रह्म विलास कबहु नहि जूजा ॥
 कृष्णदास राम गुण गाया । वे गलते का महन्त कहाया ॥ ७४ ॥
 अगर कीबह हुआ उजियागर । अनुभवयानि मिल्या सुखसागर ॥
 पन्दर नामै हरि गुण गाया । भक्तमाल कर सन्त सराया ॥ ७५ ॥
 सम्मन सेऊ प्रेम पियारा । राम राम रटिया इक धारा ॥
 घाटमदास जातिका मेणा । सतगुरु सेती मिलिया सेणा ॥ ७६ ॥
 डाला भर वेहूँ का लाया । सन्तन को परसाद कराया ॥
 फीता मिल्या राम से राजी । रोम रोम में शालर वाजी ॥ ७७ ॥
 तापै तपस्या करी करारी । लोधिजे जाय लगाई यारी ॥
 मानक गुरु नाम निज पाया । चार कौट में पन्थ इलाया ॥ ७८ ॥

ईश्वरदास रामका प्यारा । हरि गुण कथिया अगम अपारा ॥
 आशोदास अगम की आसा । कनक बंद्यत की बहूदासा ॥ ७२ ॥
 परमानंद आनंद दुर भाई । रामनाम से प्रीति लगाई ॥
 धरि अयतार बूढ़न दुर भाया । दादू कों निज नाम सुनाया ॥ ८० ॥
 दादूदास राम का प्यारा । चार पन्थ ले क्रिया पसारा ॥
 पायन शिष्य हुए उजियागर । अनुभव धानि मिले सुखसागर ॥ ८१ ॥
 दासगरीष गुरु घर आया । मेदी भेद ब्रह्म का पाया ॥
 रज्जय पिया राम रस भारी । सतगुरु सेती प्रीति पियारी ॥ ८२ ॥
 प्रीति लगाय प्रेम रस पीया । नाम निकेयल निशिदिन लीया ॥
 सुन्दरदास मिल्या सुख माँप । नाम निकेयल निशिदिन ध्याप ॥ ८३ ॥
 मुक्ति पन्थ का पाया मारग । दादूराम मिल्या गुरु तारग ॥
 पीये प्रेम पियाला पीया । गोरख जोगी दर्शन दीया ॥ ८४ ॥
 जो गोरख जोगी नुम आदू । उरमीतर में हे गुरु दादू ॥
 लालदास लाग़ा गुरु घाटी । कीन्ही दूर भ्रम की टाटी ॥ ८५ ॥
 नान्दूराम निकेयल लीया । जन गोपाल जानि जग जीया ॥
 दासप्रयाग परम पद पाया । जैमलदास नितो नित ध्याया ॥ ८६ ॥
 घड़सी टीलमदास फकीरा । सन्तदास मिलिया सुखसीरा ॥
 बखना बार्जीदा हरिदासा । सदनै राम भज्या इक सासा ॥ ८७ ॥
 शोभाराम रामगुण गाया । हरिव्यासी हरि माहिँ समाया ॥
 परशुराम राम मतवारा । सब सन्ताँ से मिलिया प्यारा ॥ ८८ ॥
 ततवेता निज तत्व पिछाना । घमडीराम राम कूं जाना ॥
 धीरम त्यागी तन मन त्याग्या । राम राम भजिया गुरु आहा ॥ ८९ ॥
 हरदासी हरि से हित लाया । रामनाम कों निशिदिन ध्याया ॥
 खोजी खोज पकड़िया सेंटा । सब सन्ताँ माहीं मिलि बेठा ॥ ९० ॥
 केवल कूवा ब्रह्म विलासी । उलटा अलख मिल्या अविनासी ॥
 खेमदास की आशा पूरी । निशिदिन राखा राम हजुरी ॥ ९१ ॥
 शंकर स्वामी सुमरण कीया । अजपाजाप रामरस पीया ॥
 गोपीचन्द भरतरी पूरा । अनहद अखंड वजाया दूरा ॥ ९२ ॥
 गोरखनाथ मछन्दर जोगी । रग रग भेद लिया रस भोगी ॥
 कोठि निनाणूं राजाहुआ । गाया राम अगम घर बूआ ॥ ९३ ॥
 हरीदास पूरा गुरु पाया । नाम निरंजन पंथ कहाया ॥
 बारह शिष्य मिले सुखमाँई । पादू माता चेली काई ॥ ९४ ॥
 द्वादश पन्थ सन्त घड भागी । छाप निरंजन माया त्यागी ॥
 अंजन त्यागि निरंजन ध्याप । तार्ते निरंजन पन्थ कहाप ॥ ९५ ॥

जगजीवन तुरसी अठ सेवा । रामरसायन पीया मेया ॥
 भुयत मेव भक्तीका पाया । खाँडै खेरतणे लोह याया ॥ ९६ ॥
 राजा जसू जुक्तिकरि जाना । ब्रह्म चीन्ह निज तत्त्व पिछाना ॥
 जगतासिंह की प्रीति पियारी । राव पलटि चरणों मति धारी ॥ ९७ ॥
 देवे पंडे प्रीति लगाई । पथर मूरति मूँछ अणाई ॥
 गूदड़ रूप होय हरि आया । सन्तदास संत दरशन पाया ॥ ९८ ॥
 किरपा करी नाम निज दीया । सास उसास एक ध्वनि लीया ॥
 सन्तदास मिलिया सुख माँई । तिरबेनी चढि ध्यान लगाई ॥ ९९ ॥
 अनुभव शब्द सन्त बहु बोल्या । भक्ति पन्थका पड़दा खोल्या ॥
 गांव दांतड़े का संत घासी । चारों कोंट भक्ति परकासी ॥ १०० ॥
 बालकदास रामका प्यारा । प्रेम परम तत किया पसारा ॥
 गिरधरदास रु खेमकुमारी । परमानन्द लगाई यारी ॥ १०१ ॥
 जाहूर जोगी जगमें जीता । शूरवीर संत भया विदीता ॥
 दरियासा दिह माँही दरसा । उलटा मिल्या अगम घर परसा ॥ १०२ ॥
 सहज समाधी सन्त कहाया । प्रेम पिपाला भरि भरि पाया ॥
 किसनदास कामकों भेट्या । उलटा चढ्या अगम घर भेट्या ॥ १०३ ॥
 नाद विन्द में सन्त जु सूर । दशमद्वार निज परसत नूर ॥
 सुखरामा सतशब्द संभाया । मनकों ले खुरसाण चढाया ॥ १०४ ॥
 कर्म काटि सब काने कीया । दीठा जाय अगम का दीया ॥
 नानकदास नाम निज पाया । श्वासोच्छ्वास नितो नित ध्याया ॥ १०५ ॥
 पूरणदास प्रेमरस पीया । सतगुरु संग मिल जुग जुग जीया ॥
 मोहनदास मिल्या सुख माँई । तिरबेनी चढि ध्यान लगाई ॥ १०६ ॥
 सेवादास मिल्या सुख माँई । वैकुण्ठों चढि नौवत वाई ॥
 सदाराम शून्यका वासी । परम ज्योति सहजाँ परकासी ॥ १०७ ॥
 घमडीराम घमड में रत्ता । रोम रोम में लाग्गा तत्ता ॥
 चरणदास चरणों चित लाया । सतगुरु सेती प्रेम मिलया ॥ १०८ ॥
 जैरामा जन मिलिया जाहीं । काल जाल जमका डर नाहीं ॥
 खेतादास खरा हुर लाग्गा । उलटा मिल्या अगम घर आया ॥ १०९ ॥
 हेमदास हरिका हित कारी । सत्त शब्दसे प्रीति पियारी ॥
 हरीदास सन्त जु षड्भागी । उलटी सुरति निरन्तर लागी ॥ ११० ॥
 साँबलदास मिल्या सुखमाँई । पाछह परमानंद पाई ॥
 दास पंचायन परिपक हुआ । हृदकों त्यागि बेहदकों बूझा ॥ १११ ॥
 टीलमदास रामका प्यारा । रोम रोम विच लीया झारा ॥
 पच्छिम दिसा मुसाफिर आय । जैमलदास भणत बतलाय ॥ ११२ ॥

तासेती जैमल जल पाया । जब बालक कों रंग गुलाया ॥
 सुण रे बालक घात हमारी । तोकों दारूँ गुंन हवारी ॥ ११३ ॥
 गोलमें गुरुभान सुजाया । योग सहित निज नाम यताया ॥
 जैमलदास जानि जुग जीया । आनम गम रगायन पीया ॥ ११४ ॥
 पंचप्रादीके महन्त कहाये । सब सन्तन में सहज समाये ॥
 ब्रह्मप्यान सुणियो सुधि पाई । एको नाम सत्य है भाई ॥ ११५ ॥
 जयते रसना राम धियाया । कंठकमल में प्रेम मिलया ॥
 हृदयकमल धमकार सुणीजे । चाली सुरति सतगुरु कीजे ॥ ११६ ॥
 जैमलदास सत्तगुरु पाया । जइ मनवा मेरा पतियाया ॥
 हरिरामा हरि का हितकारी । सहज समाधि घनी अति भारी ॥ ११७ ॥
 ब्रह्म विलासी हरिजन सुरा । शिप शायी मिल हुआ पूरा ॥
 सत्य शब्द ले किया पसारा । सप्तद्वीप नव खंड विस्तारा ॥ ११८ ॥
 निज नाम फी नाथ चलाई । तारक मंत्र भक्ति अति भाई ॥
 चाँपाँ माता चित करि पीया । उलटे आर अगम सुख लीया ॥ ११९ ॥
 रोम रोम सहजों लिय लागी । दास विहारि मिले यडभागी ॥
 रक्षियाँवाई रामपियारी । अनहद अखंड लगाई तारी ॥ १२० ॥
 दासनरायण अमी धियाया । आदूराम रामगुण गाया ॥
 लक्ष्मणदास राम लिय लागी । ज्ञान विचार भए वैरागी ॥ १२१ ॥
 दईदास गुरुभान संभाया । मनकों ले गुरुचरण चढाया ॥
 सब सिफ्खाँ संपति सुखदाई । सतगुरु सेती प्रीति लगाई ॥ १२२ ॥
 गाम सींहथल सतगुरु मिलिया । रामदासका अन्तर मिलिया ॥
 सतगुरु ब्रह्म एक है साधो । रामनाम निशिदिन आराधो ॥ १२३ ॥
 रामदास सन्तां शरणाई । भक्तमाल ले शीश चढाई ॥
 भक्तमाल भगवद मन भाई । अनंत कोटि मिलिया इन माँई ॥ १२४ ॥

साखी ।

- रामदास रंग से मिल्या, सुन्दर सुख के माहिं ।
- सहज है हरिरामजी, (चाँपा) माता सहज समाहिं ॥ १ ॥
- सहज मिल्या गुरु घाटमें, सुखसागरकी तीर ।
- सब सन्तनमें मिल रखा, जुगा नाम निज हीर ॥ २ ॥

छन्द अर्धभुजंगी ।

हँसै हीर पाया नितो सहज ध्याया ।
 गदो कंठ लागी चली धुध आगी ॥ १ ॥
 हृदय जाय हिलिया मनो देव मिलिया ।
 लगी प्रीति प्यारी चले गंग भारी ॥ २ ॥

- नाभी द्वार आया सतोपह पाया ।
 रोमा लिव्य लगा सोहं हंस आगा ॥ ३ ॥
 ररुं रंग राता मनो मन्न माता ।
 पूर्व फेर भाया पताले लगाया ॥ ४ ॥
 उलटि मन्न आगा अगम देश लागा ।
 वैकी रस्त पीया जुगे जुग्य जीया ॥ ५ ॥
 तीनुं गद्गु जीता चोथे मन्नमीता ।
 चंदे सूर मेला इके गेह मेला ॥ ६ ॥
 पंचूं एक वाटी मिल्या हान घाटी ।
 पंचूं घेर आया मुक्ति द्वार पाया ॥ ७ ॥
 अक्षय तूर घाजे गगन अंबु गाजे ।
 वणी प्रेम घरपा मिल्या आदि पुरुषा ॥ ८ ॥
 मिले अविनासी टली काल पासी ।
 अलक्षैक पाया टली काल छाया ॥ ९ ॥
 रमे सन्त सारा चलै सहस धारा ।
 पिया नीर मीठा अगम सुख दीठा ॥ १० ॥
 लिया पीउ फेरा किया सहज डेरा ।
 लगी प्रीति प्यारी सुपुम् सहज यारी ॥ ११ ॥
 ब्रह्म मेव पाया अटल मद्द छाया ।
 हुआ जीव जोगी लिया रस्त भोगी ॥ १२ ॥
 पँखौं विन्न हंसा उडे मिह् अंसा ।
 विना चँचु मोती जुगे ओत पोती ॥ १३ ॥
 विना पेड तरवर विना पात छाया ।
 विना चंचु सूवे अगम फल्ल खाया ॥ १४ ॥
 विना पाज सरवर विना नीर भरिया ।
 विना मेघ वर्षा अखंड इन्द शरिया ॥ १५ ॥
 विना वाग वाड़ी फुल्या घन्न सारा ।
 विना घाट नदियाँ पिवै डार भारा ॥ १६ ॥
 विना दोष देवा करी जाय सेवा ।
 विना नींव देवल पुज्या एक देवा ॥ १७ ॥
 विना तेल घाती जगै महल दीया ।
 विना हाथ वाजा अखंड लाग रहिया ॥ १८ ॥
 विना नारि पुरुषा मिल्या गेहवासा ।
 विना भोग सेजाँ धँधी जाय आसा ॥ १९ ॥

रामनाम विमलार्थं, मुक्ती विषय उवाच ॥ २ ॥
 रामनामकी धीमती, सांमल्लिखे गुरु पाठ ।
 धार करे मंगलार्थी, जिन जिन गुह्यति स्वर ॥ १ ॥
 रामनाम की धीमती, सांमल्लिखे गुरव ।

। साक्षी ।

रामनाम संतका शोभा । जिन जिन राम गुह्यति आसा ॥ ३१ ॥
 रामनाम सतगुरु का श्रुत । सतहै साहित्य विरपर मूर ॥
 प्रथ विद्यास प्रथ राम साधु । उरुमें गुरु सीस संत साधु ॥ ३५ ॥
 हरिनामदास हूँ गुरु हमार । प्रान व्यान धरु आम अपार ॥ ३६ ॥
 रत्नकार गुरवैय प्रवाणा । रामनाम हम निशिहित व्याणा ॥ ३७ ॥
 रत्नकार संत शार्द हमार । अनंत कौटि मंत्र उतर पात ॥
 रत्नकार हूँ प्राण आधार । जार्के लखे संत जन व्याप ॥ ३८ ॥
 रत्नकार वैपन का वैधा । जिनका लखे और नहिं भेधा ॥
 एका प्रान और नहिं काई । रत्नकार सी संत हूँ साई ॥ ३९ ॥
 पवन न पाणी चंद्र न सूर । घाज न वाजे ना कौर प्रेर ॥ ३९ ॥
 पर अंतर नहिं सेज न तार । मेष न परपा खं न पार ॥ ३९ ॥
 शीव न विद न करम न काया । ना कौर मान मोह नहिं मया ॥
 फल नहिं फूल पान नहिं पाती । आपु आपुहि अमर अजाती ॥ ३९ ॥
 वैशा एक दोन्यां वैशा । एव न जाल न लील न सुखा ॥
 ना कौर पिता मात नहिं जया । ना क किसकी कुखन आया ॥ ३९ ॥
 जाके रूप रंग नहिं रखा । गृह नहिं त्याग नहिं कौर भेधा ॥
 राजपाट पाया पट राणी । वरमालिया हूँ सारंग पाणी ॥ ३९ ॥
 सुरत शब्द शैल्य मं लोटे । कौटि सिद्धि शीघ्र पाव पलोटे ॥
 पूर्य पर पाया अधिनासी । पांच पत्नीसँ करत खवासी ॥ ३९ ॥
 सुखमग संस्र पिपा संग खिले । पलक एक पीव नहिं भेले ॥
 सुरत सिद्धी संस्र सिधगास । वाली महल पीव धरु व्याप ॥
 रामनाममं राम उदाई । संत करे निर्भय प्रवसाई ॥
 तख धूस अरु हुकम हलवा । सिद्ध बकरी संव संग बराई ॥
 खान चौकीदार हिरया । गहर चौर संव एकदं मगाया ॥
 संत का राज अदल गढ़ माहि । परजा सुखी संख सुख पाहि ॥
 चार कौट का हंसल आवै । सतगुरु आगे आण चढावै ॥
 वैव दुनी संव दरोगा आवै । नामन करै धरु शीस निधावै ॥ ३९ ॥

जग जग रे जगिया, क्या नहिं नगर जगाई ।
 आठ महर आगत रही, सित महर वसाई ॥ टंक ।
 मुख सेही सुमरण किया, कंड में चल आया ।
 गाव गाव उदर सुपम की, सता जीव जगाया ॥ १ ॥
 हिरे में हरि आगिया, खेत नन सरा ।
 युधि कमल परकलिया, जग सेही आया ॥ २ ॥
 नाभि कमलमें सर जग, खड्का चल आया ।

पद १

राम निवाह ।

अथ हरिजसु लिखते ।

हसि ।

महर धार का खेल आज मूज्य । आपका आप सगी खेलया ।
 हंस भी सब के बीचमें खेलते । गुराई जग सब शब्द जया ॥
 राम रसना कला बाल हिरे गया । पिंड गरी भया पूव धके ।
 हरि कर बहिया मग चाई नही । जग अब खेल कण खण धके ॥
 और ही खेलता राम कू रत है । धके सी धके हंस पार धके ।
 सुरल सी उलटि सित खिलर में सवरी । गुर के घाट में जग पूठे ॥
 सब ही युधि से सोम सोधी करे । एक ही पूठ से खान लखे ।
 सुरल उलटाय अह आगम ऊचा चखा । रागिया राम नीसण गावें ॥४॥

(४)

राम ही जग अह तज नीरु सधे । राम ही राम निन और गौडी ॥
 राम ही देग नय मर में राम है । राम ही देग परदेस खाना ॥
 हर देह में एक ही राम है । राम ही रत परादे गुना ॥
 राम ही धेन अह पुन सी देवता । राम आकार निरकार आग ।
 राम ही हरि अह गुरु सी राम है । राम ही देव अकेल जग ॥
 राम ही जल तीपारि अह पवन है । राम ही चंद्र अह सर ताप ।
 राम ही कव अह राई सारासरी । राम ही राम सी सभ पाप ॥
 राम ही मात अह मात धापय सधे । राम ही नरि अह पुन हरि ॥
 राम ही राम तिहु लोक में राम खाना । राम निन और देवा न करे ॥
 राम ही सग पाताल पूजेकर्म । राम ही धरनि अह राम गाना ।
 रागिया एक ही राम से मिल खाना । राम ही राम कहु गौडी विवना ॥३॥

राम ही राम हैं अथ मय राम हैं । राम ही परे अथ माहि वारि ।
राम ही राम हैं राम ही राम हैं । राम ही राम माहि मुक्ति दारि ॥

(३)

सदगुरु मकरतं वारि रामा कहै । जस अथ मरु अथ सिद्धाकरि ॥ २ ॥
गान अथ गेह अथ वारा वारि । विष अथ विष अथ मागिषा ।
रत्न अथ विमला सुपम गंगा वारि । पीपला वन मखसिक्ख सार ॥
उल्लसिया मूढ आकाशमं पर किया । सहज पर्या वणी एक धार ।
उद पाताल अथ उद पश्चिम दिशि । वृषियया गोकु आगम राजा ॥
वसुधु नाभिमं वारि परकासिया । भवर भुंजार होय एक वारा ।
बाज मुदो मुषी और नीका मुषी । खरके वरुन रववार आया ॥
वीरु हृदयं जय वासा किया । मयहोमय मिल होण गया ।
हंस कठ मं मय परकासिया । मला मं मयहो खार आया ॥
प्रथम मिल हार हार सुमरण किया । आठ ही प्रहर हरि नाम ध्याया ।

(२)

गुरु परतप ते रामिना राम मिल । गुरु परतप ते माहि वारि ॥ १ ॥
गुरु परतप की कही माहिमा कहै । गुरु परतप ते प्रथम होवा ।
गुरु परतप की खर माहिमा करै । गुरु परतप सय वाव खरै ॥
गुरु परतप ते जगत बरणा पुरै । गुरु परतप सुर असुर वरै ।
गुरु परतप ते राज निरु भया । गुरु परतप सवमं वधीरा ॥
गुरु परतप ते अखड नीच वरु । गुरु परतप तिहु लोक जीरा ।
गुरु परतप विषि सिद्धि दासी भई । गुरु परतप सद्वान भई ॥
गुरु परतप ते जोति सुं सिद्धिया । गुरु परतप जम दाय जोई ।
गुरु परतप ते गंग जमुना वरै । गुरु परतप सव कसं जोई ।
गुरु परतप ते तीन धारा मिली । गुरु परतप असमान होई ।
गुरु परतप आकासमं रम रखा । गुरु परतप प्रसादि जया ॥
गुरु परतप ते एक गाली वरै । गुरु परतप ते मूढ आया ।
गुरु परतप ते उद उरुका बरुना । गुरु परतप ते आगम जोई ॥
गुरु परतप ते नाभिमं खरया । गुरु परतप अजपारु होई ।
गुरु परतप ते बाल हिरेहीगया । गुरु परतप ते ध्यान जगया ॥
गुरु परतप ते कठ परकासिया । गुरु परतप ते जीव जगया ।
गुरु परतप ते काज हरे भया । गुरु परतप ते रण जगया ॥
गुरु परतप ते राम हंस पाविया । गुरु परतप ते ममं भगया ।

(१)

देवता ।

बलं सदां जगं जगदुः । गुरु गतिवकं पास ।
 दशमं सव वृष सिद्धे । हिरदं मिक प्रकास ॥ ३ ॥
 अथानु सिद्धिया सतगुरु । मनसं उर्या इजस ।
 सिधुव समय पूढे जगता । अति दशम की पास ॥ १ ॥
 दशमं वृषिया सिद्धे । नैया पूषया सतरे ।
 राम राम आनंद मया । देयां देवा मरे ॥ २ ॥

पद ६

बाली मन उगदंस मं । जगं सदां का पास ।
 जगं पूषिया निरुप देवे । जगं न जगदी पास ॥ ३ ॥
 पूष विद्विषुं बालिया । कठ किया परकास ।
 उर मीर पास लिया । मन मया निवदास ॥ १ ॥
 अथः कमल परकासिया । वृषी वंकी पास ।
 वृकनाल इरे बालिया । वया पठिमकं घाट ॥ २ ॥
 मंदद वृषिया । ऊवु कमल परकास ।
 बूदर मला मया । मन किया जय पास ॥ ३ ॥
 पाव पवीषां एक इव । सिद्धिया सिद्धी मया ।
 अनदर वाजा घुर रया । वृष सिद्धिया जगुं जय ॥ ४ ॥
 वृष सिद्धिया परदंसमं । जगती दान्य समानिष ।
 रामदास निरुप मया । सिद्धया पूव पर आदि ॥ ५ ॥

पद ५

मान शीरयः शीरयः, यया मरकणसुं काम ।
 अठसठ शीरय सव किया, एक कशो मुख राम ॥ ३ ॥
 मन मादि मयुव वसुं, विलहिं वारका जान ।
 काया कादीः शीरयः, मादी परर सिमान ॥ १ ॥
 घरें घाले सहलर्षी, मिलकरः शीरय जय ।
 तिरुवणीकं घाटमं, सिद्ध काम कराय ॥ २ ॥
 पावीं पापर परदक, वरं पवीषुं जार ।
 नावव वाव नैपकी, मारलिया अदकार ॥ ३ ॥
 इव वृषी वृदं मया, अमान रया लिय जय ।
 शीव शीव मला मया, सिधुमं रया समय ॥ ४ ॥
 वसुं देवल परलिया, जगती अंदर ज्योति ।
 रामदास जगुं रमरया, पाप पूष मरिं वृषी ॥ ५ ॥

पद ४

पशुपति विद्या प्रदत्त सिद्ध प्राप्त । निरखत अर्धे नयन सुख प्राप्त ॥ ११ ॥
 पशुपति अर्धे माहि सतत देवी । मन मन अर्ध अर्ध लीनी । देक

पद १०

राम वीर देकरामहि व्याप । परम ज्योति के माहि समाप ॥ ४ ॥
 राम नाम विण ही विण जीया । विण विण वास प्रस भ कीया ॥ ३ ॥
 जो हरि सेवी जाव प्रीता । राम नाम वादी का भीता ॥ २ ॥
 राम नामसे अनेक उपाया । अनेक कोहि का कारज साया ॥ १ ॥
 राम सेविका और न कोई । विन सुमन्या सुख पावै सोई । देक

पद ९

राम काशी ।

रामदास गुरु गोविंद शरणे । पूरि मनकी आस रे ॥ १२ ॥
 जन हरिनाम चरण हम जगाम सुख स्वतन का दास रे ।
 केवा पतित पातंगत हवा भिक्षा मुक्तिके दास रे ॥ ११ ॥
 अनेक कोहि साधु जन पहुँचा जाका अंत न पार रे ।
 क्लेशदास सुखदास नाम भिक्षा प्रस के भास रे ॥ १० ॥
 दास सुदरि मन्दका शानी संदास दरियास रे ।
 नामा हरीदास तवदास परसा शानी पार रे ॥ ९ ॥
 पाई जाय दीनसे मिलिया सिद्ध साखा वह जार रे ।
 सेवा सदा अह देवासा मिलिया सुख की सार रे ॥ ८ ॥
 नामदेव अह रामानंदा पीया यना कथार रे ।
 शीघर ऊँच सहेवा तात्या साखलिया हरि पास रे ॥ ७ ॥
 बाबुमीकि अह गानिका दापरी देका वका दास रे ।
 बुवासा कृषि उदर भिक्षा मक हूँ अशीष रे ॥ ६ ॥
 राज करत अनेक उपाया सुनी गुण की सीख रे ।
 निकदेव व्यास पतीधर राजा भिक्षा मुक्तिभं जाय रे ॥ ५ ॥
 पांडव हरिचंद्र पत्नी विभीषण निहरे राज कामाय रे ।
 जनक निहरे अह प्रिय महजया राजा अहमह हाय रे ॥ ४ ॥
 सनकादिक अह सब कपीभार नयनोपर पाय रे ।
 परति जग परलिन नहि आया सुखभं जाय समाय रे ॥ ३ ॥
 शीरीष विषकरी गौरी संवा कपल भिक्षा जाय रे ।
 नय नानु के गौरी संनय भिक्षा निरजन माय रे ॥ २ ॥
 गौरीचंद्र मरुती संवा गोरुखनाय रे ।
 सफल मंड का करत कठिय जगुं गौ संवा पाय रे ॥ १ ॥
 महा विद्या देग अह दाकर रहे राम विज जग रे ।

अथ श्रीसुंदर साष्टी ।
 सुंदर सुंदरी नाम कौं, रात दिवस छिप जाय ।
 हरिदामदास सदायुष मित्रा, एक अक्षरी थाय ॥ १ ॥
 रामदास रसना किया, हिरदै किया मकास ।
 बाणु कान्त अख्यानमें, सुंदर भास उभास ॥ २ ॥

दशसकलम् ।

पिन जाके साथि समागम होई, जाके विष न जाणु कोई । एक
 सब तीरय सनतक बरणा, सब देवता सार ।
 राम निवन राय पधारुं, साथ आवत दारुं ॥ १ ॥
 साथ राम एक ही कहिये, जा निच अंतर नाहीं ।
 दयान किया सब अथ जाई, मजि उदै घट माहीं ॥ २ ॥
 सविस्तराति सब है जग माहीं, जे कोई पावै आवै ।
 रामदास साथु क बरणा, साथ राम मिलवै ॥ ३ ॥

पद १२

गुरु भरे ऐसी कदर बनावै । जास सुंदर शब्द घर आवै । एक
 रसना नाम नेम करि दीया । निशि दिन प्रीति जगवै ।
 हिरदै माहिं भ्रम परकासा । आत्म की नाम पावै ॥ १ ॥
 नामी माहिं नाद परकासा । सबही मन गुंजाणा ।
 पहिम विद्या की पाटी खूली । मूढ बूढ़ हूय जाणा ॥ २ ॥
 सदाजा उलट आवै घर आया । हिरदोष्णीके तीरा ।
 रामदास सुनसगार माहीं । जगत हंस जहू हीरा ॥ ३ ॥

पद ११

राग विद्यावा ।
 सुख मान भग मन भूय । बाधत मिदया भ्रम अंधेर ॥ २ ॥
 दीवत जई हृदयमें जगी । चलत लहर नामी आय पूर्ण ॥ ३ ॥
 राम रोममें सब विद्यापी । उलटी आय भ्राम पर धारि ॥ ४ ॥
 उर अंतर एकी युन जगी । हला प्रियाला सुखमग जगी ॥ ५ ॥
 मुक्तिद्वारमें पाण समया । जन्म मरण बूढ़ रोग मिदया ॥ ६ ॥
 दशादिक सनकादिक जाणै । राम जई शिष्य शोध बखानै ॥ ७ ॥
 अनत कोटि सखा या पावै । रामदास गुरुदेव बनावै ॥ ८ ॥

रामदास वंदन करे निरंतर सदैव अथ ॥ ८ ॥
 नामी नकुल अकुल अंग सदा अतीनी धर जग ।
 निगम धार आधार ज्योति उद्योति अहंकर ॥
 सदैव कहत अपार नामी अयोगि अमोद ॥
 अंत संत जग मुनिदं पार किनहू नहिं पाया ॥
 अमन मनन वैहि अथर धरल कारज हरे मया ।
 रामदास वंदन करे नामी अखंडी सय ॥ ७ ॥
 पाव तवण वृद्ध को नहिं वरणाश्रम नहिं मय ।
 धीरहीनं निरुक्त सकलके ब्रह्म विगाए ॥
 नामी परम परमेश सकलके आप जपाए ।
 रहै सकल घट पूरे अंतर घट अंतर नामी ॥
 परम परम निजदेव परम परमात्म स्वामी ।
 रामदास वंदन करे नामी परम गति अखल मति ॥ ६ ॥
 कोटि कोटि प्रखंडके मुकामान ह्यु निमित्त अति ।
 दीन कालके संत तब रत अगम पठावत ॥
 शिष्य वंदन निव दीन दीन रत पार न पावत ।
 शोच रत पुलि विरसि पार तको नहिं पाई ॥
 नामी निरंजन नाथ पाव लखनोम नहिं ।
 रामदास वंदन करे नामी अतीनी निव अकुल ॥ ५ ॥
 शिष्य हरण मंगल करण विद्वानंद आपक सकल ।
 अर्चन अनादि अगाध निरंतर निरु अमेवा ॥
 नामी अखंड अमोद परम परमात्म देवा ।
 जगमं ज्योति उद्योत प्रखर विस्तार अपारा ॥
 नामी राम सर्वश करण कारण कर्तार ।
 रामदास वंदन करे लखत कहत गति कोन मय ॥ ४ ॥
 नामदेकार समरथ सदा सप्यति सचके ईश तम ।
 रक्षक जीव अंतान स्वामि धियन अगम अपारा ॥
 अंत कथ प्रखंड करण कारण दातार ।
 जल धर जला जीव पीव रक्षक बहू नामी ॥
 सब प्रसिपाल दयादि अराचर पीवण स्वामी ।
 रामदास वंदन करे दयापाल किरपाल धियन ॥ ३ ॥
 नामी राम कारण करण जग अति ध्यार जन ।

अपरम मल्ल आणु इणत न काणु मय न जाणु सिटताणु ।
 परमं पयं आणु निजोन ताणु मोल न माणु हे आणु ॥
 कयं नहि ताणु जिम न हाणु आपो आणु आपाटं ।
 गुरु इमांरं एतं ररकारं निरकारं निरकारम् ॥ १ ॥
 पूरन मल्ल आणुं सहेज समाणुं मीट उणाणुं मल्लमाणुं ।
 अशान सिटाणुं हरे हटाणुं तव सिंहाणुं प्रमसाणुं ॥
 सिपवे निमिं आणुं जीम जणाणुं कान वताणुं सनकाणुं ।
 गुरु इमांरं एतं ररकारं निरकारं निरकारम् ॥ २ ॥
 मल्ल मूल पाणी सतंग पाणी तहेत जाणी निरपाणी ।
 सिटवा निमिं जाणी आतम माणी घट मय आणी वरसाणी ॥
 मल्ल सिरत समाणी तहे हटाणी सिंघ जगाणी प्रमपाणम् ।
 गुरु इमांरं एतं ररकारं निरकारं निरकारम् ॥ ३ ॥
 पाणुं पर मयं उलट समाणुं सहेज सुंनयं सिटताणुं ।
 अवलवालमाणुं राररराणुं एककहाणुं उतमाणम् ॥
 तहेत पयं माणुं सिंघवृतिनाणुं चीन नयाणुं इकाणुं ।
 गुरु इमांरं एतं ररकारं निरकारं निरकारम् ॥ ४ ॥
 आगम आणुं कान विवाक माणुं न पाक गुनथाक ।
 सहेज ररकाक एक अथाक नमां सुंखाक निजखाक ॥
 अपरम सिंखाक संत सिंखाक नाय मकाक तवसांरं ।
 गुरु इमांरं एतं ररकारं निरकारं निरकारम् ॥ ५ ॥
 तहे जिंघलाणुं एक समाणुं निजोन राणुं सुंघनाणुं ।
 माणुं प्रवाणुं बाह सिटाणुं हेत न थाणुं अलसाणुम् ॥
 अयटं धरपाणुं सिटतां सयं मय नहि जयं इकाणुं ।
 गुरु इमांरं एतं ररकारं निरकारं निरकारम् ॥ ६ ॥
 संतन सय माणुं एक वताणुं सिंघ सी थाणुं पयंथाणुं ।
 उलट न आणुं गुण न थाणुं मयं न थाणुं सिटकाणुम् ॥
 साहिंघ सिंम साणुं सिंघे वयाणुं सिंघ सिंघ थाणुं सिंसांरं ।
 गुरु इमांरं एतं ररकारं निरकारं निरकारम् ॥ ७ ॥
 एकं तज आणुं सिंघे दुंघणुं साणुं स्थाणुं सय सयं ।
 आणुं पुलिं हणुं माणुं वयं कहे मयतणुं एकणुम् ॥
 सुंघं पाणिं एणुं मुंला आणुं अंत एकणुं सिंघकांरं ।
 गुरु इमांरं एतं ररकारं निरकारं निरकारम् ॥ ८ ॥

छिंदं निमणी ।

अथक ।

प्रथम साधु मुख रामरत्न, सब वचन गुन ध्यान ।
 रामदास मन पब करम, परमात्म खिब ध्यान ॥ १ ॥
 ध्यान गरीबी धारणा, मन सबसे निरक्षय ।
 शील सब संतोषता, सरथा सुमरण मीय ॥ २ ॥
 साध साधना शिवकी, उर अंतर मुख एक ।
 हितकारी सबका खजान, रामा ध्यान विवेक ॥ ३ ॥
 कहै रहै इकरस वंश, आदि मध्य अंत एक ।
 रामा गुणधर्म आरति, राम नाम निज डेक ॥ ४ ॥
 वृजना ली की वजना, जल कर्द गहि धार ॥ ५ ॥
 वरि पर करि हूँ कहा, आप हि दीविल दीप ।
 कठिन ध्यान उजान वचन, रामा सिद्धे न कोय ॥ ६ ॥
 पाई पाई शोकई, बदन बने न पास ।
 साधु कसोटी अन सबै, दीरा पण्डी पास ॥ ७ ॥
 रामा वानी बदन हूँ, कनक आभिक माय ।
 साधु कसोटी ध्यान मन, कम मुख जल आय ॥ ८ ॥
 सब आन उर उरय, जहै पावना मरे ।
 रामा साधक मनका, सब नर मर हर ॥ ९ ॥

अथ साधुकी जंग ।

शैलि अटक ।

कहा अजब अस्विति करे, गुम प्रभु आग आग ।
 आदि अंत भवतारणा, कारण करणा सब ॥ १ ॥
 अरु छंद आनंद पद, हरै दीप नय नय ।
 यहि लिखि गावत प्रथ सब, सबगुन समरथ आय ॥ २ ॥

दीहा ।

सबै पात पात गुणयो प्रदान । अज्यो सिनयो पही विषमन ।
 इषु स सिधु प्रतिपु प्रकास । सिधु सिधु सिधु अर्यास ॥
 उषु कसु नमस् अघार । निरु हरु मानु हरार ।
 सिधु सिधु पही मंत्र माय । अही रामराय अही रामराय ॥ ७ ॥
 मनादि अनादि सासा सर्वाय । अनादि अनादि प्रयादि माय ।
 रकार मकार गुन वसु मय । अनादि अनादि सिखा सिखवतव ॥
 अनुसार ससार अपार विकार । इह खंड मंड आमंड विचार ।
 इसल विवसु गुणदेव माय । अही रामराय अही रामराय ॥ ८ ॥

निरवधल धृषणमई, धृष्या भावना प्रम ॥ १७ ॥
 नाम सई आना धई, खलवाली निव प्रम ।
 ॥ १६ ॥ रामा परनाट देवली, जग जग जन विस्तार ॥
 आज मलिषा माल मम, बोल धाह आधाट ।
 ॥ १५ ॥ धाह मरिह मीन डूह, हृषणीव कुन साज ।
 मम धृ मरी देवाता, वली मकक काम ।
 ॥ १४ ॥ कुन ध्याती जय विजयसी, रामा ध्याती माल ।
 मक कहे सोई कक, पर मम डक निधान ।
 ॥ १३ ॥ सो परली जय संगता, रामा परनाट धिह ।
 धाय धाय नव धिच हृदय, अहंभंग मन धिह ।
 ॥ १२ ॥ धाह नाम आनन धदन, मीस धिरोमणि राख ॥
 मकी मकी नाम मम, मकी सोकी साख ।
 ॥ ११ ॥ जो अथवा मीका करे, आय संवक धार ॥
 साधु धाह मरी निरा, अनुभव प्रथ अधार ।
 ॥ १० ॥ मरी मा मरी परना, परते रामावास ॥
 मकी धान धृषण प्रव, परनाट मरी धाव ।
 ॥ ९ ॥ निव निवास निव निधि रखा, रामा परनाट जेध ॥
 लक्ष्मी आदि धृष्ट ड, मक सोनी मई कीय ।
 ॥ ८ ॥ सो धंता म धृषिणी, परनाट सोनी राम ॥
 मम सख्य निह करण, आदि अर निवधम ।
 ॥ ७ ॥ माल सोनी रामना, मकी परनाट कीन ॥
 धाय धाय धाय धाय मरी, धंता डे अधीन ।
 ॥ ६ ॥ धाय धायधाय मम करे, मान छेह निधाय ॥
 पर धृष कर आदि ड, अर अर धाय धिधारे ।
 ॥ ५ ॥ धाय धावते एम धिया, धंता मरी धर ॥
 ॥ ४ ॥ धाय धाय धाय धाय धाय, धाय धाय धाय धाय ॥
 ॥ ३ ॥ धाय धाय धाय धाय धाय, धाय धाय धाय धाय ॥
 ॥ २ ॥ धाय धाय धाय धाय धाय, धाय धाय धाय धाय ॥

धायधायधायधायधाय

धाय धाय धाय धाय धाय, धाय धाय धाय धाय ॥ २ ॥
 धाय धाय धाय धाय धाय, धाय धाय धाय धाय ॥

जन्मा माय पृथिवी, पीठे पीठे होय ।

रामा मायपू पापि, पीठे कविच्ये सोय ॥ ३५ ॥

हस्त करीये यत्की, पीठे पाकी पात ।

मलक छिदण रामकी, भावयेकी जात ॥ ३६ ॥

गुह भाषा जोये गुह, हाय हमास छेह ।

उगुरी पूर जगसे विहै, रामा पण्डित वेह ॥ ३७ ॥

दीप पण पावत अयस्य, दीपानां माहि विदिय ।

रामा भोजन सायुके, हरे सचेद वृत्तय ॥ ३८ ॥

पाव करे गुरवेवसे, जणीतल मन मोरे ।

रामा हिरहे पावकी, लखा न उचम पावे ॥ ३९ ॥

आन मन भूतां यजे, मूक हमासे सोय ।

मम मरण सम जालिये, सायु वेमुल होय ॥ ४० ॥

देवा कदा परदेदां, वाहत पर कुदाजत ।

पीठे पर हरे रामजन, सदा हमासे सोय ॥ ४१ ॥

पडे पुष्पके पुष्पके, जाड लडावे कोय ।

दीप मूला रोडिया, दीने पल सुख होय ॥ ४२ ॥

राम जनाके दोसकी, मान लेव अयास ।

या जोका परलोकामे, प्रखानवे विजास ॥ ४३ ॥

मोषे वाधे पीठकी, राम जनाके संग ।

पीठे ज्यारी होय जद, रामा मकां रंग ॥ ४४ ॥

प्रखंड विधि वारा हरी, कमजा कर कोर लेव ।

केवलपद वारा अयस्य, रामा संतां होव ॥ ४५ ॥

अथ वरा परमाद करण, जह अवतार धरंत ।

रामा निव अवतार जन, महिमा कोटि अंत ॥ ४६ ॥

कदा परासका मोल है, कदा सायुकी जात ।

जोहा विधि कवन करे, हरिजन धान विद्यात ॥ ४७ ॥

कामधेव विनामणी, कदा सुखतका मोल ।

रामा गुण परमाद करे, सायु मोल अतोळ ॥ ४८ ॥

हरिजनके दीपानां विधि, पीठे दीपानां सोय ।

कदा माझण धनी वृद्धय, कुलका वडे न कोय ॥ ४९ ॥

रामा चिन मारा विवा, पुत्र मया वे सोय ।

रामजनन करवा रखा, वस गोत्र सिद्ध जाय ॥ ५० ॥

गाँव की गर्व, जगजगत के धर ।
 भूत भूतके, राम धर करार ॥ १८ ॥
 इ गणना अक्षय, पाँच दिग्गज मण्डि ।
 उठा धैर्यही, आई बरतें बरि ॥ १९ ॥
 मयिक गालही, दास खाल जगहेव ।
 दिग्गज गरि हूय, राम गणना बर ॥ २० ॥
 उर मण्डि रामही, अमलके लुप धर ।
 बडे धरणी अक्षय, राम अर्णवी धर ॥ २१ ॥
 कानी धरि करी, विपति धरि धर कर ।
 १ मायैदासके, धर दिग्गज मण्डि ॥ २२ ॥
 इ धरणी ग विपती, जगजगत धरणी ।
 मण्डि कीनी जग, राम जगके धरि ॥ २३ ॥
 इ विर केना धरिब, मण्डिमा अरत अक्षर ।
 इ धर धरणी धर, परमपरम धर ॥ २४ ॥
 मरणा धरणी धर, धरणी धरणी कर ।
 १ धरणी धरके, धरणी धरणी धर ॥ २५ ॥
 इ धरणी धरणी धर, मण्डि धरणी धर ।
 १ धरणी धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ २६ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ २७ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ।
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ २८ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ २९ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ३० ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ३१ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ३२ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ३३ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ३४ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ३५ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ३६ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ३७ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ३८ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ३९ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ४० ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ४१ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ४२ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ४३ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ४४ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ४५ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ४६ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ४७ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ४८ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ४९ ॥
 मण्डि धरणी धर, मण्डि धरणी धर ॥ ५० ॥

सर्वं वंदेन वंदता, मन परमेश्वरं नमः ॥ १३ ॥

आर्त्ता ह्यहं स्यात्तु जग, राम प्रसादात् नमः ॥ १३ ॥

एतं उच्यते तस्मै शिष्टे, स्यात्तु हरे अशान ॥

रामा शशि वन्दे आर्त्ता, दीनतः स्यात्तु विमान ॥ १५ ॥

सर्वं परमेश्वरं सत्तु शिवा, वंदेन स्यात्तु निजग ॥

रामा मन्तव्यं नाम ह्ये, परमेश्वरं आर्त्तात्तु ॥ १६ ॥

रामा जगतां शशि, आत्म उच्यते अशर ॥

जगत्तु सफलं जीवनं सफलं, शिवस्यै स्यात्तु ह्यर ॥ १७ ॥

इति ।

पञ्चाङ्गिजापुत्रविषयनं सुखिणीभीजाख्यानम् ।

रामा जगत्तु न कीर्त्तये, शिवतां हरि कं संव ॥

शान उच्यते अथ हरि ह्ये, आत्मा शिवे स्यात्तु ॥ १ ॥

शब्दं प्रथमं परमेश्वरका, शिवे शक्ति शक्ति ॥

रामदास तां शक्तिं, हरिजनं वदतां वदत ॥ २ ॥

मन्तव्यं शशि वन्देन, कर्त्तव्यं शिव जगत्तु ॥

एतं शिवं शिवं शिवं शिवं, राम उच्यते शिव ॥ ३ ॥

शान शान शिवं शिवं शिवं, शिवं शिवं शिवं ॥

रामा शान शिवं शिवं, शिवं शिवं शिवं ॥ ४ ॥

शान शान शिवं शिवं, शिवं शिवं शिवं ॥ ५ ॥

रामा शान शिवं शिवं, शिवं शिवं शिवं ॥ ६ ॥

शान शान शिवं शिवं, शिवं शिवं शिवं ॥ ७ ॥

शान शान शिवं शिवं, शिवं शिवं शिवं ॥ ८ ॥

शान शान शिवं शिवं, शिवं शिवं शिवं ॥ ९ ॥

शान शान शिवं शिवं, शिवं शिवं शिवं ॥ १० ॥

शान शान शिवं शिवं, शिवं शिवं शिवं ॥ ११ ॥

शान शान शिवं शिवं, शिवं शिवं शिवं ॥ १२ ॥

शान शान शिवं शिवं, शिवं शिवं शिवं ॥ १३ ॥

शान शान शिवं शिवं, शिवं शिवं शिवं ॥ १४ ॥

शान शान शिवं शिवं, शिवं शिवं शिवं ॥ १५ ॥

शान शान शिवं शिवं, शिवं शिवं शिवं ॥ १६ ॥

शान शान शिवं शिवं, शिवं शिवं शिवं ॥ १७ ॥

इति ।

१३ ॥ राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ १३ ॥
 १४ ॥ राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ १४ ॥
 १५ ॥ राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ १५ ॥
 १६ ॥ राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ १६ ॥
 १७ ॥ राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ १७ ॥
 १८ ॥ राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ १८ ॥
 १९ ॥ राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ १९ ॥
 २० ॥ राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ २० ॥
 २१ ॥ राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ २१ ॥
 २२ ॥ राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ २२ ॥
 २३ ॥ राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ २३ ॥
 २४ ॥ राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ २४ ॥
 २५ ॥ राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ २५ ॥
 २६ ॥ राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ २६ ॥
 २७ ॥ राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ २७ ॥
 २८ ॥ राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ २८ ॥
 २९ ॥ राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ २९ ॥
 ३० ॥ राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ ३० ॥

राम ।

राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ ५२ ॥
 राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ ५३ ॥
 राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ ५४ ॥
 राम मराम वामन, राम मराम वामन ॥ ५५ ॥

सोरो ।

राम विचार साधु, साधी प्रगट आय ॥ १६ ॥
 राम भकी संग सव, प्रजत साधु होय ।
 रामजन वर मूल है, मूल साधु होय ॥ १५ ॥
 राम भकी साधु मिल, यह सर्वगतिक मूल ।
 राम किन्ना सर मिल, रामाय दरसाय ॥ १४ ॥
 साधु विना भकी भकी, भुक्ति विना नहि साधु ।
 राम भकी साधु है, परम परायण आदि ॥ १३ ॥
 भक्त साधु काल सफल, परमपरम साधु ।
 राम कथल भक्ता, साधी राम भक्त ॥ १२ ॥
 विद्या प्रसा विद्य साधु, साधु सतगुरु संग ।
 भला विचार रामजन, आनंद प्रस समाज ॥ ११ ॥
 आनंद आनंद विना साधुना, पद्य साधु महासाधु ।
 आज साधु पावन परम, साधु बरना विना पूरे ॥ १० ॥
 जग जग साधी मिष्ट, खर्च साधु पूरे ।
 मूल मूल साधु परम, नवप्रह रई न कोय ॥ ९ ॥
 मूल प्रह लल विद्वता, जगल साधी आय ।
 रामा साधु राम जन, है कठिन जग भास ॥ ८ ॥
 आज प्यार रामना, आनंद पूरे प्रवास ।
 चार परमेशु भुक्तिवत, अथ साधुय नहि कोय ॥ ७ ॥
 परमेशु जीव उधार मम, मम मजन उधि होय ।
 आज भकी बुद्धि पर, बरना रामजन धार ॥ ६ ॥
 रामा साधु बधावना, पलका माल आचार ।
 आज भकी पावन भवन, रामा साधु उधार ॥ ५ ॥
 भली प्यार रामजन, आनंद आनम आचार ।
 सखा समुपन साधुना, रामा साधु विद्य ॥ ४ ॥
 बरनासेव पूजन जग, पूजन दासा निव ।
 करे कीर्तन एक रस, राम भजन हरिजन ॥ ३ ॥
 साधु भुण साधु है, करे न पलट मय ।
 अथवा कथा कवि राम रति, पूजा साधु विधान ॥ २ ॥
 आनंदवता साधुपणा, करे न मम अभिमान ।
 मन कम पूव एक धारणा, अभिष्ट साधु इकरार ॥ १ ॥
 रामा भकी संग यह, वरुं जग विचार ।

अथ भक्तिभावकीर्तन ।

सता दिवाह विष्णुकी, आणपर अवतार ।
 रामनिना माह नही, हरिजनका मत सार ॥ १० ॥
 पराट सखी देखली, खुदवे टेक कधीर ।
 रामा रवा एकस, देर खंडपा जंहीर ॥ ११ ॥
 बालमीक एक आसरे, पराट परचो होय ।
 दोख पचानन पुरिया, हरिजन समी न कोय ॥ १२ ॥
 देह घरो केली करी, अतर गत कहि देव ।
 संत न माने राम निन, झूठ सिधार्ह नेव ॥ १३ ॥
 उई गड जल पर चलै, लखि दीरख हुइ जाय ।
 माह नही रामजन, रामा झूठ उषय ॥ १४ ॥
 काहं पिउ पराट करै, कोही सुजा अनक ।
 रामा हरिजन रामनिन, माने नही एक ॥ १५ ॥
 काल काल की जपना, काल काल प्रवमान ।
 रामा एकण रामनिन, सखी कोकट जान ॥ १६ ॥
 यकी माया मंडही, गाना कय अनक ।
 हरि जन रवा अकष, रामा कारण एक ॥ १७ ॥
 राम टेक छंडे नही, आदि अंत एक जात ।
 रामा चवडं देखली, घरो केषा मान ॥ १८ ॥
 सती न ज्यार लंगडी, दोवा निण न थय ।
 राम धारण रामदास, संता कीनी मय ॥ १९ ॥
 जीव दियो एक राम के, राम माण पति एक ।
 सिरे मरो माह निरो, रामा उर नहि नेक ॥ २० ॥
 सला नक संदाय नही, जे नर रवा राम ।
 मुक्त न घडै रामदास, क्या करणीसे काम ॥ २१ ॥
 करणी एकी राम हूँ, राम विना गुन सोय ।
 रामा कण्ड टेक एक, पापि आनंद होय ॥ २२ ॥
 परिया दिक माहं जया, अण्णी अण्णी टेक ।
 आदि पाति कुल परवाही, रामा करमां टेक ॥ २३ ॥
 जोडि पर गुण विखरे, अण्डन जीव समाय ।
 रामा हरिजन कपी बडे, राम भनकी जय ॥ २४ ॥
 शिव गुण कड लीपां रई, राम भय विभीक ।
 भविष्यक खालिक विण्य, रामा अण्णी टेक ॥ २५ ॥
 पराट सखी देखली, रामा रवा बडे ॥ २६ ॥
 रामा रवे भाजिया, रामा रवा ॥ २७ ॥

- ११
- ॥ १ ॥ रामविना माने नही, हरि जन देक अपुत्र ॥ १ ॥
 रामा कता अनेक करि, कौहि रवे मखि ॥
 ॥ ८ ॥ राम विना माने नही, हरिजन उदे अकर ॥ ८ ॥
 बह कक आकाशका, पछिम जगज्ज सर ॥
 ॥ ७ ॥ एक माहि अनेक हूँ, एक विना गुन देक ॥ ७ ॥
 रामा हरिजन आगम गति, राम नाम सब देक ॥
 ॥ ६ ॥ अत देक साची रही, अक देक परबध ॥ ६ ॥
 हिरण्यकशिपु पव पव मया, कमजा खोरे अथ ॥
 राम कहत रामु सिखा, रामा धरी गहि ॥ ५ ॥
 नमो नमो महादेवी, अखिवल देक सदाहि ॥
 राम सुमर अमर भया, जग जग सब अनेक ॥ ४ ॥
 रामा आहि अनादिम, हिरण्य निमं एक ॥
 ॥ ३ ॥ राम विना माने नही, पति पति मरो अनेक ॥ ३ ॥
 राम जना परतीत हूँ, खरी मरोखी एक ॥
 ॥ २ ॥ पना देक अखिवल सदा, जय एक रकार ॥ २ ॥
 प्रखंड चवई लोक सब, रामा एक अथार ॥
 ॥ १ ॥ रामा सवा अनेक हूँ, रकार रत एव ॥ १ ॥
 देक एक सारु हिरु, राम धम हिय शेष ॥

अष्टककीर्तन ।

हो ।

सहजा भयसिधु पार । बालबाल संदाय नही ॥ ३९ ॥
 भकी भाव अथार । विन जन सेवा सायुका ॥

सौरा ।

होसी विधि विन चहना, जन्म सफल करलेव ॥ ३८ ॥
 निगम पुराण आसत कही, अयिकम भाव समेत ॥
 रामा अरु मावसं, सेवा संदाय गहि ॥ ३७ ॥
 हरि पदारथ गुनि ली, उचम प्रखंड माहि ॥
 रामा साची भावना, जन्म सफल कर लेव ॥ ३६ ॥
 मन पव कम सरया जिधा, धरी सजनक हेव ॥
 जग जग माही देखली, रामा तारण साथ ॥ ३५ ॥
 राम कथ हरिजन भाट, भाव भक्ति आराध ॥
 राम वरस नौका भाव, पातक रखा न कोय ॥ ३४ ॥
 गीत ग्याज भावन भवन, अथ पति नहि सोय ॥

शक्ति की तरह निक पड़ कर कहा पाए ।
 जहाँ पियर आदिल सुनिवत प्रसिद्ध रहता ॥
 लक्ष्मी अति प्रभाव बल करता वृष पाती ।
 सज्जिता नीरस वीर जब वासा दिन राती ॥
 सब छंद सुंदर सुन करत थीं जग बेवत आदि सब ।
 जन रामा मोहर इत्येव हरि भव लेख जगु भव ॥ १ ॥

उत्पद्य ।

अपुत्रोत्पत्तीकीर्ण ।

रति ।

श्री गुरु समस्त आप, एक भरोसी आसते ।
 राम भव जग जग, राजबाल एक मही ॥ ३८ ॥

सीरता ।

राम एक निमज्जी सदा, रामदास गुरु धाम ॥ ३७ ॥
 जैसी पाती धारणा, वही अंत निधान ।

राम एक मही रती, आदि अंत इकवतर ॥ ३६ ॥
 रामा भवक दुःख को, संशय नहीं जगार ।

मन एवं कम एक धारणा, राम एक पल मान ॥ ३५ ॥
 रामदास अर्थात् यह, यह सतगुरु परदात ।

रामदास हरि गुरु कृपा, यह मन जनका सर ॥ ३४ ॥
 एक निमाजी रामजी, वन जावी सोवार ।

जीवत वही न रामदास, मूर्खा हरिके पास ॥ ३३ ॥
 राम निमाज्जी एक एक, यह मही अर्थात् ।

एक बिलल विरद निमाज्जी, भागद वचन प्रमाण ॥ ३२ ॥
 राम एक जग जग अमर, परमाट भक्त निमाण ।

राम एक जन आस है, रामा जीवन मान ॥ ३१ ॥
 जीव भूत कसणी सही, आसा लेव निधान ।

रामा हरिजल झूलवा, हरिजन संके न कोच ॥ ३० ॥
 लीन मोहकी धारणा, झूलत भंगव होय ।

जगसे आपा धानि जन, राम प्रियाके भव ॥ २९ ॥
 ब्रह्म गुरु पर वचन है, कामकायके होत ।

सद्यै एक कृसे वही, रामा पतिवत एक ॥ २८ ॥
 कृती मरत है नाद रस, वही न अपणी एक ।

अलवर धर्म रहत है, रामा अपणी भव ॥ २७ ॥
 अमर एक आकाश विर, अलवर जलके भाव ।

नमो लोक तव देव कदा सर्व पाण्डित नरदेह धर ।
 जन रामा खड मरतमं चोयो परं मिल सोह कर ॥ ७ ॥
 खरवी खायल डोर और अस्थान आधर रत ।
 कनक्या करण सुखेव हेव नरदेह वेव चित ॥
 कवल दान्द अपय सायु सब पाकं गावत ।
 निम्बु मिसे सुधान वसुति भव दुख नहि पावत ॥
 या सुखमं मव भूल नर मन्थ मड केला मया ।
 जन रामा मेरी मदी और देख किण तिस गण ॥ ८ ॥
 कदा वे मोग सुमोग कदा मतिर वे मया ।
 हीर चीर सिथगार मीव सुपती रस जया ॥
 धरं पदन वन कुंदन लज्जव कदं चख सोहि ।
 कदा वे कय किदारि कज सुव और खको हे ॥
 नव खड इड वण लंग गति देला चक परतव जगत ।
 मन मकार सुख दाक लख जन रामा हिसि चित भगत ॥ ९ ॥
 कर्क कटे मीरान गुणव कर्क कला बहावत ।
 कर्क सिन प्रयास कर्क जग नगर प्रसावत ॥
 किमी और मन धीर मीरयो किनको कसि ।
 सब जाला संसार राम भज पार उरसि ॥
 खर हव हरिनाम वं श्रुती मोह निवारिसे ।
 जन रामा मन समय कर सायु पवन उर पासिसे ॥ १० ॥
 खर खर वेव नरि चित वेसे गये ।
 दाय एक आधर पलक धीर नहि अये ॥
 मया चित्त महेरा पारणा एक पावे ।
 मया पान समायि भासि असाहि समये ॥
 जो मीर अगदी निर्या उर विमान कर पायवे ।
 जन रामा गणित नरं और चोरिणी पाकर ॥ ११ ॥
 ले पर वे रीय मग देवा इव सरदा जग ।
 एक मन अस्थान एक मन कय मालेन मग ॥
 उर विमान जन रामा धर मय धरिसे ।
 सिदे जल मानक मय मय मय धरिसे ॥
 पर अकालि धरि मय मय मय धरिसे ॥
 नर नर मय मय मय मय मय धरिसे ॥

सर्वत्र स्वरूप ध्यान उर धरिषु राम भजन मं लगी हो । ३८
वीधु भाग रहत अब रानी राम खेदी जाती हो ।

पद ४

अब रामा अब लीज न कीजे सरगुरु ध्यान जागो हो ॥ ३ ॥
वीरक दोष अक्षर उर सांचा जीव आरु सिधु पावो हो ।
ममता नहिं मोह मय सुपनी दोऊ बुलाकिं चुरे हो ॥ २ ॥
अब अधान भूत धम भागी दानका जाकण चुरे हो ।
उत्तम सुमिरण सास उल्लास कालवणा उर भासो हो ॥ १ ॥
सार अक्षर पदार्थ भासे प्रसन्न भक्ति उर भासो हो ।
सरगुरु ध्यान एहि दिखलवै राम उद्योत अघरा हो ॥ ३८

पद ३

धालवाल उधरण यह नाकी गुरुमुख ध्यान निवार हो ॥ ३ ॥
भाव बधवा साधु उल्लाहा जावै लखे दोरे हो ।
लिंग अन्वेषणा फल हरेक पाववै ब्रह्मगणी उर देखे हो ॥ २ ॥
बलता वीधु अघरा हरिजन रामकपावै परसे हो ।
आधु साधु धरम द्वारा सिधु भाग्य यह ओलखो हो ॥ १ ॥
गुरु सेवा मोसर वह भगणी धिनिधन आशा भासो हो ।
यह परदान अन्वसर चाहै परसे प्राण अघरा हो ॥ ३८

पद २

धालवाल पर परसन होकर भक्तियोग मोहि दीज्यो हो ॥ ३ ॥
बेदी नेम प्रेम उर भरे बरणा दोरण लीव रह्यो हो ।
निधिसि पूजन करिषु सरगुरु अक्षर भाव यजवै हो ॥ २ ॥
भक्ति भाग्य सिख राम संगमं आनंद उदय सदावै हो ।
दयान स्वयंभु मृत्कि भागी अन्वजनका चुरा हो ॥ १ ॥
गुरुधर्म भाव परिक्रमा दीजे चौरासी भिड करे हो ।
अब धाम ब्रह्मनि सदा ही निधिसि भाव भिटावै हो । ३८

पद १

राम भेष ।

अथ ब्रह्मनि ।

दीन हूं जी दीनयु दीन को नहेंसे ।
 महत्मान विरद्वान मान में सेते ॥ ३२
 यह प्रकार विराधार वरद में सेते ।
 जन्म जन्म हरार नार अहं सेते ॥ ३१
 विषम घाट भव विराट वेग ही निहेंसे ।
 बुद्धि जाल में अनाथ नाथ हाथ सेते ॥ ३०

पद १०

राखिये महाराज राज भरण राम सेते ।
 कही काल विव विहाल सार अहं सेते ॥ ३२
 मन असुख पव जाय करत है धोसे ।
 मनु जाल कम काल जगतिं वसेते ॥ ३१
 काम कोय लह न कोय बुगल एक सेते ।
 मोह हर अंधकार जहंता जहेंसे ॥ ३०
 बरुवा पास काल पास पास लेव सेते ।
 घाल फरियाद राम साथ देखा आप सेते ॥ २९

पद ९

प्रकट निकट राम सन घटस भरण भागी ।
 नयन ज्योति रति उद्योत वरण भोगी ॥ ३२
 वरदा परदा सरस नर सर साधु साहि ।
 कमल उदित मंदित मन्दा कुलव भ्रम धारि ॥ ३१
 सुगंधि भाव विव चाव अरध आनंद पायी ।
 निकल निकल मेंट मनकी अकल आप भायी ॥ ३०
 दोष रद्व हीय परवु सुख सखे वरसे ।
 अमर अजर अजर पीव जीव दीव परसे ॥ २९
 कर कल्याण मान दान अवल धान भुरता ।
 रामदास यह विधाम राय मेंट भुरता ॥ २८

पद ८

निरा भव जमका वृत्त निरी राम भागी ।
 निराक भू प्रभात भूया राम भाग भागी ॥ ३२
 आन चोर जोर भाग भरण अलद भागी ।
 कमल खल उदयकार वरस परस भागी ॥ ३१
 भवन काज कीड़े आन जन्म वरद जावे ।
 परिपूर्ण परम वरद रामदास गावे ॥ ३०

॥ २ ॥ हरि आदि विरह विधाये, अथ पलका पलक पयाये ॥ २ ॥
 विष जन्म जन्मकी हरे, आधावत आधा हरे ।
 ॥ १ ॥ एक दया हरे भर हरे, जीवाने जाल जेने ॥ १ ॥
 म राम विद्या पालिहारी, मय मरी तपत हारी ।
 विरहनि पूरे रमान कीजे, साहिव अपनी करलीजे । ३ ॥

पद १७

कालीनी शिर ।

॥ ५ ॥ बालवालक समरथ खानी रामदास किरपाल ॥ ५ ॥
 विरह कमावनि जीवन साईं सब जाले सिर जाल ॥ ४ ॥
 ॥ ३ ॥ राशि गहने अमी दूवे जी माधव ती विपदे कम रखाज ॥ ३ ॥
 जी सुरेज परकासे गहने पाल न कर विद्याज ॥ २ ॥
 ॥ १ ॥ अलग करी साईं अथ कीजे अपने परकी जाल ॥ १ ॥
 रामदया बालकी प्रतिपाल । ३ ॥

पद १६

॥ ४ ॥ बालवाल पर कया कीजे राम गरीबनिवाज ॥ ४ ॥
 कीजे बरवा दयालिय माधव मेरे है विष काज ॥ ३ ॥
 ॥ २ ॥ जन्म जन्मकी प्रति पुमान पूर्वा भूलत ही आज ॥ २ ॥
 ॥ १ ॥ विरहाय आधार गुहारे बरना बालकी जाल ॥ १ ॥
 सनेहिया गुम आवा आवा राज महापान ॥ ३ ॥

पद १५

राम कल्याण ।

॥ ७ ॥ बालवाल बलि जाक वेला हरिजन राम मिलया हो ॥ ७ ॥
 आज पसत सब दिन बरखण सखिया मंगल माया हो ॥ ६ ॥
 ॥ ५ ॥ विरहापी विरह भ्रम नीर भर जैन जन्म अहंलया हो ॥ ५ ॥
 ॥ ४ ॥ सुयो प्रति रीति हरिजनकी धाम गुजाल सुवाया हो ॥ ४ ॥
 ॥ ३ ॥ माय मात कसर रस घोषी महिमा सुनिधि सुहाया हो ॥ ३ ॥
 ॥ २ ॥ हिरा चौक पुताक सनीति निव बदन बरवाया हो ॥ २ ॥
 ॥ १ ॥ अनत उजह भयी मन आनंद परम परारथ पाया हो ॥ १ ॥
 बलिजाक बंध बरख सुख पाया हो ॥ ३ ॥
 ॥ ३ ॥ हरि रामजन पर आया हो ।

पद १४

राम कथा ।

विद्वान् कुरुतेऽपि, साहय्यं यथा करणी ॥ १ ॥
 मम विद्या यद्विद्वान्, मम मते नयत इति ॥ २ ॥
 एकं यथा एतद् भवेत्, जीवन्तं वारं जेता ॥ ३ ॥
 विद्यं जन्म जन्मकी इति, आद्यत्वं आत्मा इति ॥ ४ ॥
 इति आदि विद्वान् विद्वान्, अथ पञ्चकां पञ्चकं पञ्चकं ॥ ५ ॥

पद १७

कविनी शील ।

रामदया शरणाङ्गी प्रतिपाल ॥ १ ॥
 अवलोकनी कवी साहेब अथ कवी अपने परकी बाल ॥ २ ॥
 जो सुख परकासे नाहीं रात न कंज विद्याल ॥ ३ ॥
 यथी नहि आनी इवै जो माधव तो विपुलै कम रसाल ॥ ४ ॥
 विद्व कर्मावलि जीवन साहेब सव जाली सिर जाल ॥ ५ ॥
 पालवालकें समस्य ज्ञानी रामदास विद्याल ॥ ६ ॥

पद १८

सनेहिया विम आनी आनी राज महाराज ॥ १ ॥
 निर्यादा आधार गुणसिं बरला शरणाङ्गी जाल ॥ २ ॥
 जन्म जन्मकी शक्ति पुरातन कर्मा भूतल हो आज ॥ ३ ॥
 दीक्षे द्रव्य द्याविधि माधव से हे सिध काल ॥ ४ ॥
 पालवाल पर कृपा कौनै राम मनीवनिवाज ॥ ५ ॥

पद १९

पुन कल्याण ।

इति रामजना पर आया हो ।
 पञ्चिकां वैश्वं वरुण सुख पाया हो ॥ १ ॥
 अत उच्छाह भयी मन आनंद परम पदारथ पाया हो ॥ २ ॥
 हिंदी लोक पुरातन सजनी विव वंन वरवाया हो ॥ ३ ॥
 माय माद केशर रस योही महिमा सुगंधि सुहाया हो ॥ ४ ॥
 सुयो शक्ति शक्ति हरिजनकी शान गुजाल सुवाया हो ॥ ५ ॥
 विवकाती विद्व मम नीर मर जेन जन्म अहंलया हो ॥ ६ ॥
 आज वसंत संव विन वरुण सखिया मंगल माया हो ॥ ७ ॥
 पालवाल वलि जाऊं वेला हरिजन राम निजया हो ॥ ८ ॥

पद २०

पुन कथा ।

बलिजाकं विहयल सहर सिधान ।
 हियानंद आनंद के करवा अविभव प्राण्यो मान । हेर
 मान सरोज मगर सोरि दीवो मोक्षि निराम अमान ॥ १ ॥

पद २१

राम देव ।

राम बालबालके लागी, अब आबो अंतरायसी ॥ ३ ॥
 विहरेनि मन अब कम व्योमी, पिया जीवन जीव विपयोसी ।
 पिन हरिजन वंदीज वेरा, पाहीस जीवन मोरा ॥ २ ॥
 प्रयतिय सिया मन भावे, देक नीर निना मर आवे ।
 हो अबलौ प्राण अघारा, बलिजाकं देम विपारा ॥ १ ॥
 हे अबलके बल सारि, मुक जीव निना बंद कारि ।
 पिया क्यो नहि आवे पयारी, पर आवे सीति विचारी । हेर

पद २०

सरो विन सवगुण गायो, जन बालबाल मन भायो ॥ ३ ॥
 अब पनहर प्रीतम आवो, विह बालक देक निभायो ।
 बन मन पियाजी सावा, बलिजाकं मनसा बावा ॥ २ ॥
 एक बंद कमाव पियासी, अब देखा मन परकासी ।
 पिन यो ठमन जन भाही, एक हरि पिन वजा भाही ॥ १ ॥
 निव जन यथा नहि मुक, एक सदायक दारो ब्रह्म ।
 मारी बालो सरो सरोही, पिन प्रीति प्रवली पही । हेर

पद १९

अब आप आया सोरि कीजे, जन बालबाल निव जीजे ॥ ३ ॥
 निव निवैल यल अब काई, सब राम समर्थ प्रणोई ।
 निव सदायक विदो बाक, यो भकवछलवा साक ॥ २ ॥
 पिन आह सुरत संगारी, सो भायो दारण गुहारी ।
 कायासा महल वणगा, निव भाया मोह छिमाया ॥ १ ॥
 पिन प्राण प्रकपीतम व्यारा, सब आपहि किया पसारा ।
 प्रवली प्रीति विचारी, पिया अब क्युं मोहि विचारी । हेर

पद १८

मोहि भास करव सम आवे, कब राम पिया पर आवे ॥ ३ ॥
 जन बालबाल बलि जावे, कब राम पिया पर आवे ॥ ३ ॥

रति ।

निम्न रतिधा संत आनां ॥ ६ ॥
 रामा राम प्रकार सखिदलन ॥
 किराई हव न डोक यही मन लखणां ॥ ५ ॥
 आधा एक ही एक ही आवणा ।
 वारी वार विहाय सुपन को आग ॥ ४ ॥
 सरकीर केतन गया सब लीन ॥
 काल महा बखान सास अति सोखती ॥ ३ ॥
 राव एक सुखान खोसिया भूती ।
 जानत रहियो वीर पाइं वडू मीच ॥ २ ॥
 देव है भैदान सरयां वीच ॥
 गीत गीत संग कामकम ही अरे ॥ १ ॥
 वारी वसिया आव प्रभाते पूष परै ।
 कहियो रामहि राम वडूरि कवही मिठै ॥ एक -

भाग २३

सखिद बरन दारण पर सारी बालबालकी आज ॥ ८ ॥
 सखा सुखिय देवा में नवनिध रामपक राज ॥ ७ ॥
 रसद वसि सुख संपति सारी वीर काल न दार ॥ ६ ॥
 आन देवकी लाम मिटाई अदल वंधाई पाव ॥ ५ ॥
 अनुभव लोनां उरुं प्राई आनंद करत सार ॥ ४ ॥
 प्रदशन परतन रामसनेही गुरु प्रभु भाव सकाज ॥ ३ ॥
 पदपानी आदी श्री मोसर भंडी संत समाज ॥ २ ॥
 वार परमाई धान परापी पावपतिव उदर ॥ १ ॥
 रामपक निज परमाट कीःही रामवास महादाज ॥ ६ ॥
 गीत वारी लोनी श्री सुंदर आज ।

पर २३

बालबाल गुरु वरनि एक रस विरही भक्तिप्रदान ॥ ६ ॥
 विगुण कामोक्ति सौई आरुपी बकता बख हरेखान ॥ ५ ॥
 दिन बकया विज आनंद उरुपी प्रीति कम विकसन ॥ ४ ॥
 प्रभु उरु कीवर मिट अविद्या विधिपर पूषी दाम ॥ ३ ॥
 सखि पराव सुख लाम आनम परापी धान ॥ २ ॥

धलिजाऊं सिद्धयल सहर सिधान ।
 हरिधानर आनरु के करवा अनुभव माठ्या मान । डेर
 मान सरवा नगर सोरु देवा मदी सिधा अधान ॥ १ ॥

पद २१

एन देव ।

सुम धालवालके सानी, अब आवा अतरयानी ॥ ३ ॥
 सिद्धहि मन धव कम यानी, सिधा जीवन जीव सिधानी ।
 धिन हरिजन दरीण बेर, यहीम जीवन मीर ॥ २ ॥
 प्रयुती सिधा मन माह, रक नीर विना मर जावे ।
 हो अबलू माण अघार, बलिजाऊं येम सिधार ॥ १ ॥
 हे अवलक यल सारु, सुके जीव विना देव कारु ।
 सिधा कया नहि अही पयार, पर आहूँ सीति सिधार । डेर

पद २०

सो धिन सवगुर गाया, जन धालवाल मन भाया ॥ ३ ॥
 अब नगर धीम आवा, सिद्ध जातक टुक सिमावा ।
 वन मन सिधाजी सावा, बलिजाऊं मनसा वावा ॥ २ ॥
 एक बरु कमाह सिधानी, अब देखा मन परकानी ।
 धिन यो ठमन जन माही, एक हरि धिन देजा माही ॥ १ ॥
 निव जम घना नहि मरु, एक सहायक दोरु मरु ।
 माही वाला सवा सनेही, धिन धीति पूरवली परी । डेर

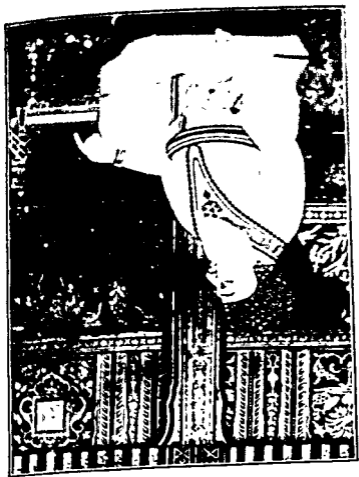
पद १९

अब आप आठा सोरु कीही, जन धालवाल निव जीही ॥ ३ ॥
 निव निवल वल अब कारु, सब राम समरु दोरगाह ।
 निव सहायक विवा वाक, यो भकवडलवा साक ॥ २ ॥
 धिन आहूँ सुरत संभाति, सो आवा दोरुण विधानी ।
 कायासा महल वणाया, निव भाया माह सिमाया ॥ १ ॥
 धिन माण पुवतीम चार, सब आपहि किया पसार ।
 पूरवली धीति सिधार, सिधा अब कयु माहि सिधार । डेर

पद १८

माहि पास कव सम जावे, कव राम सिधा पर आवे ॥ ३ ॥
 जन धालवाल बलि जावे, कव राम सिधा पर आवे ॥ ३ ॥

Das Bild des Hais, Manuskript
aus 1878





व्यभिचारात् शेषः

विनीत-

प्राप्तिसंज्ञा महोदयने पूर्णोक्ति से सहायता दी है जिसका आभास है।

इस के निर्माण में स्वामिनिवासी श्रीमान् आत्मसामर्थी महोदय व

जिब को गढ़े है पाठकवन्द अर्थात् कर्त ।

साधारण के ज्ञानार्थ कल्याणसागर की वरणी नामक टीका सेवा में सुस-

सहित पाठ करनेका शोखों में अधिक माहित्य लिखा है। इस लिये सर्व

श्रेष्ठ धर्मावलम्बी साधु महोदय जिबका निरूपण पाठ करते हैं। अधुना

करनेसे अथवापत्ति अनेक बाधाएँ पड़े हो जाती हैं। और आज्ञावैद्य राम-

शरीर पर आ जाता है। वह भक्तिप्रधान यही कल्याणसागर ग्रंथ है जिसका पाठ

उसीक्षण आप के नेत्र खिलाने और नेत्रों की शरीर व्याधा मिटा दे। वहाँ

की सुनना। तब तो श्रीमान् महोदयों ने ऐसी आप की कल्याण सुनी कि

अधर में कल्याणसागर ग्रंथ है उस "कल्याणसागरग्रन्थ" की रचना कर आया

और दृष्टि भी नष्ट हो गई। तब तो अत्यंत दुःखित होकर जिसके अधर

उसे सह सह सके। अनेक उपचार किये गये किन्तु कुछ भी सफल हुआ

उसीक्षण आप के नेत्रों में व्याधा शून्य हो गई। तो इस कष्टर हूँ कि आप

असंख्य नेत्रों की वेदना से पीड़ित होवा। यों कहे पीछी चली गई। और

पर आप नहीं माने। तब देवानानां कृपित होकर आप दिया कि आप

कि मैं देवताओं से निवृत्त करके आइ हूँ एकवर नेत्र भरकर मुझे देखो है।

माहित करने की अनेक यत्न किये पण्डित साहू निरंकुश हुए। उसने कहा

छलनेके लिये एक देवाना खोसे उठती और हाथ गाव कटाक्ष से

मन कर रहे है। उससमय देवताओंसे निवृत्त कर महाराज की

एकसमय पढ़ाई की गयी मैं विरोध हूँ श्रीदयाचिदासजी महाराज

। शक्य ।

॥ ३ ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥

(कर्मणः) ॥ १ ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥

। एतत्तुं ।

॥ १ ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥

(एतत्तुं की कथा)

॥ १ ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥
 "एव एतत्तुं से कर्मात्" ॥

॥ ३ ॥ ...
 ॥ ४ ॥ ...
 ॥ ५ ॥ ...
 ॥ ६ ॥ ...
 ॥ ७ ॥ ...
 ॥ ८ ॥ ...
 ॥ ९ ॥ ...
 ॥ १० ॥ ...

। ३३ ॥

... ॥ ३३ ॥

। ३३ ॥

... (१) ...

(३३ ॥)

॥ ३३ ॥

“... ॥ ३३ ॥”
 “... ॥ ३३ ॥”
 “... ॥ ३३ ॥”

(३३ ॥) ...
 ... ॥ ३३ ॥

। ३३ ॥

॥ ३३ ॥ ...
 ... ॥ ३३ ॥

। ३३ ॥

शिव शक्ति का प्रेम (१)

(शक्ति का प्रेम)

शिव शक्ति का प्रेम (१)

शिव शक्ति का प्रेम (१)

शक्ति

शिव शक्ति का प्रेम (१)

शक्ति

शिव शक्ति का प्रेम (१)

शक्ति

शक्ति का प्रेम (१)

शक्ति का प्रेम (१)

शक्ति का प्रेम (१)

शक्ति का प्रेम (१)

(शक्ति का प्रेम)

शक्ति का प्रेम (१)

शक्ति का प्रेम (१)

शक्ति का प्रेम (१)

शक्ति का प्रेम (१)

शक्ति

शक्ति का प्रेम (१)

शक्ति का प्रेम (१)

शक्ति का प्रेम (१)

शक्ति का प्रेम (१)

शक्ति

पुष्प कर दीपदी का कर राज ।

जल चली आया । वन आदिपल दीनदपल ने दीपि पाते के लिये सब
संभारिया कलामिदिय मयि (हे मया ! मेरी जल आज की ही है अथवा आज
आवे, उस समय आते बाद से दीपदी ने एकदम (अर्थात् लीकते) लीक
समा के बीच हरे रंगमसन ने दीपदी को बहवती के साथ उपादी करती

(दीपदी की कथा)

पुष्प शिविदं ॥ १४ ॥

आदर उपादी मयि पाति कर राजि मय ।
हा हा पुकाति पाडु मयि जल मयि आज म ।
समा मयि हरे उपादी कर उपादी काज म ।

(अन्वय)

पुष्प है अथवा दीपदी का ।

अथवा बहने सुमदा पयामकर अथवा बहने ही भी बना लिया । पुष्प है मय
की कथाजला कि अर्जुन सखा तो था ही, परंतु इसके सिवाय अपने अर्जुन की
मिया जिन पांडवों की कीर्ति पुराणों में लिख्यात की । देखो जिन कथा महोत्तम
सहायक ही मयुओं की उपाकर विजय कराई, और ऊंच नीचक आदि दीपप
परंतु जिन श्रीकृष्ण ने माता सहित पांडवों की रक्षा की और मय में सब
दुर्वाचन ने पांडवों को लाजपाई के अंदर अलादे में बही कीपिती की,

(पांडवों की कथा)

पुष्प शिविदं ॥ १३ ॥

दीपप मिदाम पुत्तम माप सखा साप मय म ।
दीपि सपाप सप सप सिधेसाप मय म ॥
जला मयप जलदाम पाडुमाम राज म ।

(अन्वय)

दीपि पाक पाठकी, करि न सख जग कोम ॥ १ ॥
मयि सिदी रियाम में, मयदेन की रिय ।

दीपि ।

मय में बसे मयिद मयि सपुन मयन के लिये रियामकी उपादे है ॥ १ ॥
मय पर सिद बसे सिद है के पाकस मयस है के बसे मयन उपादे है ।

विद्वर सदाई अममई अिकमई अर ५ ।
लिकन सदाई सदाई अमममई अर ५ ।
राजा अुमाई वनी सदाई अर ५ ।
एसा गलिक ॥ १३ ॥

(अममम)

सिवा कर अणना मनीस सिद्व किय ॥

(२) अिक के मई की जानीपाला धन्य है अुवदेव कि सिवने मणव-

(अुवदेवनी की कथा)

(अममम)

कल सौ वराइ दिवान, कोटिन वर मकास ॥ २ ॥

मीन सारे लिकलिक, एाई सिव सिव पाव ।

दीदा ।

भासा करा नाला वम आइ करा वारं भाई भलि न सुहावा कोक एसे परदेव है ॥ १० ॥
दुसिका के राजाई सिद्धे पर हीनोगयो रानी करा हीनोगी कलना न मीरे वेव है ।
पहित न अुवदिध न वेष था न कोवुकी है रानी को वलनलि है करा कोन देव है ॥
गलिन के मय अी अी एादेर से बाले बाप अी अी करे पाप पर गानेकी न देव है
लामकी सदाई दुख अुवकी दलनदाती अुवा वनवाती काई सोक मार दाती ॥ ९ ॥
दीदा दीदा कादल दलदल दिखान करि आदल उदाइ देवा देइ मुव गाती ॥
जा ही दीदा पर हीदी काईका वनन देवा दीनदार एही सोदी दयाही दयाती ॥
वाला उजाई काई वानीकर धाम कीना छाना छाय सारी एाई सिववाती ॥
कोन करियाइ मुने कोन मीरे याद करे कैसे गादुक पूर दादका करेयाकी ॥ ८ ॥
दिवि लिकव देवे साहिबी समेव वसो करी गाइ है कैसे पाज से उनीयाकी ।
दाय कोरे आइ देवे पापी सिवियाइ एाई जीना मीरे धाम अण गापी है मरुयाकी ॥
रानी गाहि टाव मीरे गाव मीरेही को, हीनकी को लिकार मीरे लिकट वरुयाकी ।
भागीनी समेव कइ वेव है अणवा पर गाव है ववावा वकी कया से न माने ही ॥
दीपकी को वीरे गलिन के छान सिव माइ वे ववाया गज देगुलि माने ही ।
आइ अइ के एही न मानती अणन अण एही मीरे गावे गावेही अने ही ॥
गादीवे जनमगीर गापी गहि दयामर व परदादि मीरे कला गाव नहि माने ही ।

कलिय ।

“अिरे देव अरे ही सुदामा अिरे देव अरे ही”

लिकर के पाज की न आपन कलना सिद्धे लिकके अणीन एसे उदिव मणल है
लान मक लाला है लिकरेके सुखाला है सुखाला ही लिकाला लिकलाला है ॥

१ जीव जीव के भाव, जीव काव है एव ।
निज ही स्वयं भाव, यही निज ही काव ॥ १ ॥
२ स्वयं ही काव है । २ स्वयं ही काव । २ स्वयं ही काव । २ स्वयं ही काव ।

जिन कवीर साहब के गहरी जगनाजी के बीच में जंजीरें बंधीं, तथा
(कवीर साहबकी कथा)

अमुना गहरीक सड़ जंजीक साज जीक ना जले ।
बाद वहीक घर गरीक नीर नीक हरि मिले ।
निज कवीक प्रसवीक गार्खीक गाज ए ।
अकी वधाक ॥ २ ॥

(अकमाल)

नामदेवजी की गहरी बुभाया किन्तु मंदिर को कर दिया और उनके निवे
शक की उबार देखादि आपने भक्त की निज्य करादि, क्योंकि आप भक्त
के वधाकरेवाले ही । निरद की बार (सहायता) करनेवाले ही और वही के
काम सांकेवाले ही ।

(नामदेवजी की कथा)

का निरद (बागा) है ।
मकी वधाक निरद धाक सन साक काज ए ॥ जी सन ॥ १ ॥
शेप कार्य है और मैं आपका दास हूँ । मेरा के दरद करके जो मैं कायज
होगाया हूँ जो इस दरद को मिटाओ । प्रभा ! मेप हैय (पीज) मत करो
अथवा भी करणी मत देओ (मति देओ करणी हमाठी एव लेओ निरद
सुगरी) निजय आपके मेरे दसुव निवका गेण है । मेरे तो सर्वत्र आपही
का निरद (बागा) है ।

उद सांसी ।

जग जग में यह एक आपका ही आपय है । है मदीयन । आप खिक है ।
मक्तमनी की गारण यह एक आपका अगादि निरद है तो अब मेप यह कार्य
है क्या हीज करे है ।
जग जग में यह एक आपका ही आपय है । है मदीयन । आप खिक है ।
नारण निरद अगादि नय, यह मेरी अब काज ॥ ४ ॥
जग जग याही भासते, तुम रक्षक महराम ।

आपकी नीति है । क्यों कि सब के साथ आप ही

विषय पूर्णतः ही सहायता करनेवाले हैं । आत्मान की सुख देना यह
 ब्रह्मदान माने है कि जयक की पापक कहिये सेवक है उसकी गोपनी

जयक पापक दारण सुख, यह सब नीति विधान ॥ ३ ॥

सहायक विधावीस हरि, गायक ब्रह्म पुमान ।

आत्मान है । आप जैसे की प्रति और में आधिपतिय मज यह कैसे ही सकता है ।

है खलमयक । है नरमयक दीनय ॥ देवादिदेव ॥ यह पालवाल आपके

पालवाल दारणागती, निमसे प्रति हम आधि ॥ २ ॥

खलमयक साहिक जना, दीनयु देवाधि ।

वही करे ।

सर्व में अनाथ आपके आधीन है । है पानकी । वही आपकी इच्छा हो

कैसे कटपुटी की के आधीन है, जैसे विम विनकार के आधीन है जैसे

में अनाथ ऐसे सदा, निम इच्छा सोइ राम ॥ १ ॥

जैसे सतर पुतली, विनकार विनाम ।

दीक्षा ।

उभय आपके द्विप है ।

मेरे विषय वही द्विप है । है अनाथों के साथ । सर्वेव आप मेरे साथ हैं मेरी

गर्वावर नरकरम हो । में सर्वेव आपकी बंदना करता हूँ । आप सुखदायक हैं ।

कार्य में आपका वचन सब हो । है अंतर्वाणी । है सर्वसहि के खानी । आपकी

करते हैं । है धारण । में आधि से बलदा है । जिस आधि के विविधता

है । आप अकाल हैं । और अयम उचार हैं । ऐसा आपका निज ब्रह्म वचन

है आदिहर । है निमय करनेवाले ॥ है सब शरण ॥ आपकी नरकर

पुसा गोविंद ॥ २० ॥

आध्यात्मिका सदा साया तोहि दायो दाम ॥

वही सदा है सुखदा है निज आर्त करे ॥

नामी नानामी आध्यामी सब खानी सदि ॥

पुसा गोविंद ॥ १९ ॥

हम आधि अरण्य परा परा वचन करेण करम ॥

पुसा अकरण्य अतिरिण्य ब्रह्म परण निज ॥

आदि हरण अयम करण्य नाम अरण्य सब ॥

कवीर राम नाम के पठने, देना के फल बाहे ।
 ॥ १ ॥ गुरु संतोषिये, हीस रही मन भाहि ॥ १ ॥
 कवीर राम नाम धरै गरी, धरै गरी धरै गरी ।
 ॥ २ ॥ धरै गरी धरै गरी, धरै गरी धरै गरी ॥ २ ॥
 कवीर राम नाम धरै गरी, धरै गरी धरै गरी ।
 ॥ ३ ॥ धरै गरी धरै गरी, धरै गरी धरै गरी ॥ ३ ॥
 कवीर राम नाम धरै गरी, धरै गरी धरै गरी ।
 ॥ ४ ॥ धरै गरी धरै गरी, धरै गरी धरै गरी ॥ ४ ॥
 कवीर राम नाम धरै गरी, धरै गरी धरै गरी ।
 ॥ ५ ॥ धरै गरी धरै गरी, धरै गरी धरै गरी ॥ ५ ॥
 कवीर राम नाम धरै गरी, धरै गरी धरै गरी ।
 ॥ ६ ॥ धरै गरी धरै गरी, धरै गरी धरै गरी ॥ ६ ॥
 कवीर राम नाम धरै गरी, धरै गरी धरै गरी ।
 ॥ ७ ॥ धरै गरी धरै गरी, धरै गरी धरै गरी ॥ ७ ॥
 कवीर राम नाम धरै गरी, धरै गरी धरै गरी ।
 ॥ ८ ॥ धरै गरी धरै गरी, धरै गरी धरै गरी ॥ ८ ॥
 कवीर राम नाम धरै गरी, धरै गरी धरै गरी ।
 ॥ ९ ॥ धरै गरी धरै गरी, धरै गरी धरै गरी ॥ ९ ॥
 कवीर राम नाम धरै गरी, धरै गरी धरै गरी ।
 ॥ १० ॥ धरै गरी धरै गरी, धरै गरी धरै गरी ॥ १० ॥

सप्तमः ।

गुरु धीर (गुरु) धरै गुरुधरै गुरुधरै गुरुधरै ।

धीर धीर धरै गुरु, धरै गुरु धरै गुरु ।
 धीर धीर धरै गुरु, धरै गुरु धरै गुरु ।
 धीर धीर धरै गुरु, धरै गुरु धरै गुरु ।
 धीर धीर धरै गुरु, धरै गुरु धरै गुरु ।
 धीर धीर धरै गुरु, धरै गुरु धरै गुरु ।

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846. 847. 848. 849. 850. 851. 852. 853. 854. 855. 856. 857. 858. 859. 860. 861. 862. 863. 864. 865. 866. 867. 868. 869. 870. 871. 872. 873. 874. 875. 876. 877. 878. 879. 880. 881. 882. 883. 884. 885. 886. 887. 888. 889. 890. 891. 892. 893. 894. 895. 896. 897. 898. 899. 900. 901. 902. 903. 904. 905. 906. 907. 908. 909. 910. 911. 912. 913. 914. 915. 916. 917. 918. 919. 920. 921. 922. 923. 924. 925. 926. 927. 928. 929. 930. 931. 932. 933. 934. 935. 936. 937. 938. 939. 940. 941. 942. 943. 944. 945. 946. 947. 948. 949. 950. 951. 952. 953. 954. 955. 956. 957. 958. 959. 960. 961. 962. 963. 964. 965. 966. 967. 968. 969. 970. 971. 972. 973. 974. 975. 976. 977. 978. 979. 980. 981. 982. 983. 984. 985. 986. 987. 988. 989. 990. 991. 992. 993. 994. 995. 996. 997. 998. 999. 1000.

॥ १० ॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥

॥ ११ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥ १२ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥ १३ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥ १४ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥ १५ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

अथ ॥

॥ १६ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥
॥ १७ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥
॥ १८ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

(अथ ॥)

॥ १९ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥ २० ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥ २१ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥ २२ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥ २३ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥ २४ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥
॥ २५ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

(अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥)

॥ २६ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥ २७ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

(अथ ॥)

॥ २८ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥ २९ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥
॥ ३० ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

(अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥)

॥ ३१ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥ ३२ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥ ३३ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥ ३४ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

॥ ३५ ॥ अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥

(अथ अष्टादशोऽध्यायः ॥)

यह मैं जानता हूँ कि राम महाराज भरणाल के दुःख को भेदोपाते हैं। शीघ्र निवान हैं, निम हूँगा हूँ और सदैव भाग करता हूँ ।

दीक्षा ।

• भक्तिरस जातं सकल, छंद सास्ती जान ।

हरि सरवर हंसाना, मुंका नाम निधान ॥ १ ॥
भाव नीर निरमल सदा, परिमल भवसिंधु पार ।

रामदास जन रमरदा, जहा अखे सुख सार ॥ २ ॥

कण्ठोपगारकणी दिव्य सुवीर में भक्ति के सारे रहस्य समाप्त हूँ हूँ, जिसमें छंद सरस है, भक्त हंस है, नाम मोक्षियों की निधि है, भाव निर्मल जल है, भवसिंधु से पार होना ही मयूर सुभाव है ऐसे सुवीर में जो रामभक्त समुदाय रमण करते हैं वे मोक्ष सुख को प्राप्त होते हैं ।

मन कलिया मोह सिंधु में, काल प्राह भय तंत्र ।

अथ जयक स्तव्यक सदा, नमस्कार भावत ॥ ३ ॥

मोहलक्ष्मी समुद्रमें कलौजा हुआ जो मनलक्ष्मी होया तिसकी पापलक्ष्मी तंत्र जालकर कालकधी भाह खींच रहा है, अब उनकी सहायता करने में आगती समर्थ हूँ, हे भावत ! आपकी सदैव नमस्कार हो ।

छंद रोमकरी ।

नमो भावत स्तुमराल कारण भक्ति अपार न कोण छही ।

अथ दुःख निवारण काज सुधारण पार जतारण एक सही ॥

यल वरह भवारण अथ निवारण जीव निवारण वृणु धरो ।

भव के दुख तर उधार अंधपर पार नाजंदर जेम करो ॥ हरि ॥ १ ॥
रखा करोपाते हे भावत ! आपकी नमस्कार हो, आपकी अपार शोभी का फलने पार पया ।

संसार के दुःखों को दूर करोपाते, कार्य को सुधारोपाते, पार जतारोपाते एक सत्यसत्य जान हो हूँ ।

हे शूरे के बल को ब्यापरोपाते । हे पापों को निवारण करोपाते प्रभो ! आप जो केवल जीवों को निवारण के पारहे अपवार पारण करते हैं ।

हे हरि ! संसारके अपार दुःख को तर निव प्रकार जल में डूबते हुए नाश कर जतार किया तब ही शूरे को पार करो ॥

“अक्षराल को फिर धिनि, रजस ही-ही रोय ।
 सब धिनीया पवन पवित्र, ऐसी नवीनी सोय ॥ १ ॥”
 यह जानत महीरज, शरणागत भूतल भूत ।
 राम गीतवनिवाज, विप्रदत्तम संगल सदा ॥ ८ ॥

इस पाणी को भी उदार है ।

जान को पाणियों को विशेष है तब ही भी यह प्राधान है कि अब की कर
 अर्थक पाणियों को पवित्र कराना समर्थानों के ही एक चीज है और इस
 पाणी हृदय विरोध, अवकी धर उपासि ॥ ७ ॥
 पवन पवित्र अनेक, समस्त पाही चीज है ।

“धी नामा नम हरिभ शशि, भजमाल धी जान ।
 शिख अमन अक्षर है, पान करै रस जान ॥” (भजमाल)

है, क्या कि यही आसरा वातवाल के है ।

ने अर्द्धत प्रसन्न के का वर्णन किया इस प्रकार में भी ही हरि शरणे शेष शशि
 भूत कि तीनकाल (यह शशिपुत्र वर्तमान) की वाला सहेने लग गई, तब उन
 की भजन किया और राम शब्द की शरणे स्थिति की तो उनके नेत्र ऐसे खुले
 निरु मायाजी ने महानिमाओं के चलाकमल की पूजा से नेत्र, हृदय और मन
 अर्द्धत सहेपला की, उसके हृदय के नेत्र खिले उनकी लखा संजय बना दिया ।
 हृदय का एक नामा नाम बाजक मक आपक शरण आया उस नामे की

(नामाजी की कथा)

हरि शरणे शशि, वातवाल यह आसरा ॥ ६ ॥
 मुक्तेला सुखत, अर्द्धत प्रसदा प्रस पद ।
 राम शब्द शरणे, ताहि नेत्र ऐसे खुले ॥ ५ ॥
 जन पद पकज धर, चल कर मन भजन कथा ।
 नामा नाम सदाय, बंधना खुले संजय सदा ॥ ४ ॥
 तब जन शरदा आय, हृदयेंद्रा एक जायते ।

में सदैव से जानता है, और वस हरीपर में निर्भर है ।

केन से आज बाल कर रहा है । जिसके कोई नहीं उसके हरि शरणे है यह तो
 है महान । अत्यधिक श्रेष्ठ से में बोलना कोई नहीं जानता केवल मन से
 नहि जाके हरि शरणे, शरदा में शरणे सदा ॥ ३ ॥
 शाल न शरणे कोय, अत्य शक्ति मन वेन से ।

१ दूर-दुम । २ निजिपर अर्थात् राजिन । ३ पाणिवात=समूह, कायवा, अर्थात्, एतत् । ४ दृष्टी । ५ धीन वात=दृष्टिक, दृष्टिक अर्थात् शीतक
 ६ अर्थात्समूह, कायवादिभ्यः, कायवादिभ्यः । ७ विवर=वीकर । ८ अर्थात् १० धातव । ११ शिष्य आरुष्य ।

यद्यप्यस्यैव उल्लास उल्लास उल्लासकं पाप कियंकर जार जगाम ॥
 शिष्य उपा कलाप शिष्य मयंकर याक उल्लासकं मय्यु अगाम ॥
 मन सौम्य शिष्य कयापर मोह मया पर वंश वरं ।
 मानवै शिष्य सार अथार सारिंसम आप विना कुल वाप हरे । जी ॥ १ ॥
 धीन वाप के संताप से सब माली उख को मारा हो रहे हैं । यह धीन वाप

उद् रोमकंती ।

नहि न देवी आसती यह उख मेटण आप ।
 दासित जग मया उखद धीन लोक नय वाप ॥ १ ॥
 धीन लोक की दुःख देनवाले जो धीन वाप इन से मया जगत को जल
 रही है । शिष्य आप के देना कोई आशय नहीं है । हे राम ! इस उख को
 मेटनवाले आप ही हैं ।

दीहा ।

मरी ! क्या मुझ दालवाले की बेला नहीं सैली ?
 आपकी दारणागत है । मिलिजोग कहते हैं कि गर्वाद की बेला सनाई ती है
 संसारकी समुद्र में निरधारी के एक आपही का आधार है । यह दालवाले
 है दीनव्यु आनंद रूप । भैती यह डर सुनिए । हे परिवर्तमान हे हरे !
 ही गण है ।
 नहीं जाते ही । अथाह उख ने भरे को महण कर लिया है । जन आपकी
 भर ! आपकी नमस्कार ही । हे माली के आधार विनयात भरे से आप मुल्य
 हरेप शोक को हरोवाले हे गीर्वाद । हे संसाररुषी समुद्र से तनुवाले । हे शिष्य-
 दालवाले दारणागती की सौ मूलि कथित ॥ १ ॥
 निराधार आधार हरि धारवार पावन पवित्र ।
 धीनव्यु आनंद डर यह सुनिये भैती ॥
 माह उल्लाह अथाह अथ दारणागति भैती ।
 नमस्कार आधार मूल नहि परव निदासर ॥
 उद् हरेण गीर्वाद वरण मयासिष्य शिष्यसर ।
 उद् उष्य ।

१२ मधु । १३ मधु । १४ मधु । १५ मधु । १६ मधु । १७ मधु । १८ मधु । १९ मधु । २० मधु । २१ मधु । २२ मधु । २३ मधु । २४ मधु । २५ मधु । २६ मधु । २७ मधु । २८ मधु । २९ मधु । ३० मधु । ३१ मधु । ३२ मधु । ३३ मधु । ३४ मधु । ३५ मधु । ३६ मधु । ३७ मधु । ३८ मधु । ३९ मधु । ४० मधु । ४१ मधु । ४२ मधु । ४३ मधु । ४४ मधु । ४५ मधु । ४६ मधु । ४७ मधु । ४८ मधु । ४९ मधु । ५० मधु । ५१ मधु । ५२ मधु । ५३ मधु । ५४ मधु । ५५ मधु । ५६ मधु । ५७ मधु । ५८ मधु । ५९ मधु । ६० मधु । ६१ मधु । ६२ मधु । ६३ मधु । ६४ मधु । ६५ मधु । ६६ मधु । ६७ मधु । ६८ मधु । ६९ मधु । ७० मधु । ७१ मधु । ७२ मधु । ७३ मधु । ७४ मधु । ७५ मधु । ७६ मधु । ७७ मधु । ७८ मधु । ७९ मधु । ८० मधु । ८१ मधु । ८२ मधु । ८३ मधु । ८४ मधु । ८५ मधु । ८६ मधु । ८७ मधु । ८८ मधु । ८९ मधु । ९० मधु । ९१ मधु । ९२ मधु । ९३ मधु । ९४ मधु । ९५ मधु । ९६ मधु । ९७ मधु । ९८ मधु । ९९ मधु । १०० मधु ।

इत्युत्तरम्

॥ इति श्रीशंभुकवचनसंग्रहः ॥

(एक वर कहे कथाउ वलसंपास भो)

। ७५५५५५

संगर पूर्ण हो जाय । बालबाल आपका योग्यता ही है इस योग्यता को आ
 महीन । इतिवचनकी यथा से अब यह वर्ण कथनो कि निरुपे कल्याण
 है । राज ही सोचनेवाले है और राज ही वर्ण है धन है । है इत्येव ही यम-
 कहे एक वर्णन करे ; सो है यम महीन । इस जीव के अब आपही सहीपक
 जाता है । जन्म से मरणपूर्व जीवों को जन्म दुःख होते हैं उन दुःखों को
 पर क्या करते हैं वह यणी जीवों ही समय में निरंतर काल की धारण तब
 काल में इकाल में वही संभाल करते हैं जो करणा के संगर है । इति निर
 बालबाल योग्यता ही अपनी करिके लीजिये ॥ १ ॥
 राम इह इतिजन यदा यह वर्ण अब कीजिये ।
 अब स्थायक महाराज राज वारण निज पीस ॥
 जन्मजन्म भवत कहे वरणा उल जीवस ।
 बाल बालबाल निकाल दरे इति वासु कथा कर ॥
 काल इकाल संभाल करे करणा के संगर ।

उत्तर ।

वह यम महीन इस काल में क्यों गहि रखा करे ?
 देखा उन कथाउ की दयालुता जन्म के पहिले ही दूध दूध करि करि
 गांध के छिद्र है उध गांध के बाहीदाय यह जीव रस को भक्षण कला
 जब यह जीव माला के उतर में ऊंचे मुख होकर भूखे माला है तब
 काल की कथाउ बाल में से जीवों की बचावे है ।
 वही दयालु यमहीन कथाउ होकर जीवों की संभाल करते हैं जो
 मनसं सिधसार ॥ ८ ॥
 जन्ममाल सुखाल सुखाल सिखार कालमें क्यों न माल

दास पूरा मालवी, धन किये पूरा काम ।
 आज जगकी भेट दीका, लियो मन बिसराम ॥ ५ ॥
 वंशीवर कर दमन दंडिय, पूब बंध करलीन ।
 दील साच संतोष दाम दम, दीव परकी चीन ।
 ली परवीनजी परवीन, हरिख मजनम परवीन ॥ ६ ॥
 दास नारायण नाम नीकी, लियो दिव अवतार ।
 सकल प्रायश्चित मयु दिनम, कियो पंडेपार ।
 ली बलिहरजी बलिहर, नारायणनामकी बलिहर ॥ ७ ॥
 दास मोहन मोह माया, दंडे सकल निपार ।
 व्याप अण्णा धणी निधय लियो उरम धार ।
 ली सिधसरजी सिधसर, साठी बात कर सिधसर ॥ ८ ॥
 स्थान माधवदास धान्यी, मई जाय मूदान ।
 आकाश आठण मूनि पीठण दंडो दिशे बखान ।
 ली परवानजी परवान, स्थान वीरगम परवान ॥ ९ ॥
 किये नख सिख सब सुन्दर, स्थान सुन्दर धार ।
 बाबु बिरौध बिकार परिहर, विषे दंडरमार ।
 ली बिलवारजी बिलवार, निरमल कियो मन बिलवार ॥ १० ॥
 बरणदास बिचार बाणी, राम चरणां बिल ।
 अथ सुख संसारकी, निजनाम साचो बिल ।
 ली बड कुचली बडकुच, संतोवरणकी बडकुच ॥ ११ ॥
 नमो वैमलदास सामी, बडे धीर मधीर ।
 धार जन अवतार अवनी, भूटणा परधीर ।
 ली सुखसीरजी सुखसीर अमृत धारकी सुखसीर ॥ १२ ॥
 दास जयू कवीर बकवै, लियो निर्गुण नाम ।
 कियो निरणय नीरधीर, दंडे जयू हरिनाम ।
 ली विद्यामजी विद्याम जीवां कारकी विद्याम ॥ १३ ॥
 दास विदारी विमलवाणी, आसि धिय बरदेव ।
 ली निज भूषणी निजभूष, पायो भक्ति की निजभूष ॥ १४ ॥
 हरिनाम धिय धन रामदासजु धीर बहि कर आज ।
 निरख सब निरणय निरणय, करण जीवां काज ॥ १५ ॥
 ली महापावनी महापाव मंडरुं अथनरे महापाव ॥ १६ ॥

मम गिर कृत खेवसी, सहेज पार जे होत ॥ ३ ॥
 मय्य समिदहे कथ हे, महेत गिर सोर पोत ।
 पूर्ण विधि दीजे सरस, ती मू पाऊं पार ॥ २ ॥
 मू मय उच्यो हय, हीका करण उच्यार ।
 हे हे मय्य आशा करि, मय्य उच्यारण नाम ॥ १ ॥
 मय्य राम गिर वन्दना, वृत्ति सब सन्त प्रणाम ।

दीर्घ ।

अथ पूर्वजन्मपरिचयः ।

अजुनदासहि रावटे, सरण कमल विजलया हे ॥ २ ॥
 सख्या मय्य प्रमाते रट, जीव परमपद पाय हे ।
 याती विमल रसाल, मय्य कम उच्यार ॥
 गीसर श्री गिरवंध, प्रस पूरण गिर पूरा ।
 देसर श्री गिर बाल, अनंत जीवा हंसगामी ॥
 मय्य करी परणाम, रामदास गिर स्वामी ।

द्विपद्य ।

धारि गिर हरिचाम निय, रामदास गिर साम ।
 बालवृष पूरण प्रती, अजुन की परणाम ॥ १ ॥

सावृत्ति ।

अथ श्रीअजुनदासजी महाराज के छंदकर श्लोक

(४०)

जन्मलीला ।

॥ इति ॥

ती सिद्धपालजी सिद्धपाल अपने जीवकी सिद्धपाल ॥ १७ ॥
 राज पूणदासकी अथ, काटिये कमंडाल ।
 सरण आय! साह कीजे, दरवा दीजे बाल ।
 ती किरपालजी किरपाल जीवा जपहे किरपाल ॥ १६ ॥
 बाल अजयव निय याणी, यास जेम विद्याल ।
 रामि भादी आन भाजे, मात देवेयाल ।

श्रीअजुन०

सत्य अद्वैतं प्रति, यत् तेषाम् मान ।
निगमनं यदी यथादेशी, तामव कति विधान ॥ १२ ॥

दीर्घा ।

सो प्रतिद्वयं अद्वैतं कतिवचनं पारं । मुञ्जद्वयं पारं कति आदं ॥ ६ ॥
विधानं नास्ति तिनं द्वयं अपारं । तिनं वचनं यत्नं मनं समविधानं ॥ ५ ॥
तिनं विधानं नाम सो करं सुमात्रं । कण कीर्त्तनीं कृञ्जद्वयं माहं आदं ॥ ५ ॥
अस्ति नाम अत्र कथा अपा । सो काहं कीर्त्तनीं द्वयं सन्तप ॥ ५ ॥
अस्ति नामी उच्यते सिनां दोष । तिमं सुद्वयं कसे सो प्रकाश ॥ ४ ॥
वदं वया पदं पुरं आयं सोदं । यदं सदायत्नं कति सुकलं दोदं ॥ ३ ॥
सुद्वयं सत्यं करुकीं रत्नं तिमं । गुरुं पारं उच्यते वचनं पाम ॥ ३ ॥
जनं यथां धामं केषलं प्रकाशं । परं आयं औरं के जनं ताम ॥ ३ ॥
दोमं अस्ति गतिं द्वयं प्रयाजं । करं नमस्कारं चादीं सकलं ॥ २ ॥
किं भूदं यदी यदं सिद्धं चीजं । नहिं सन्तं वस्तिं वनं दायं दीजं ॥ २ ॥
तिनं दायं मायं अस्ति करं आयं । नहिं दायं वस्तिं वस्तिं वस्तिं वस्तिं ॥ १ ॥
एकं विधानं गिकां मयं विरजमानं । मिरं पदं अस्ति उच्यते जनं ॥ १ ॥

उच्यते पदं ।

सद्वैतं अस्ति वचनं सिद्धं, उच्यते सो विधिं कीर्त्तं ।
यदं विधानं प्रकटं द्वयं, तं वस्तिं अस्ति चीजं ॥ ११ ॥

दीर्घा ।

एवं सुद्वयं द्वं सुदं न रतिया । अथवां तदिं यत्नं किमिं कतिवया ॥ ६ ॥
सिद्धीं वदं सापरं के माहं । जनं पुरंतीं यत्नं सिद्धीं ।
मायं प्रयाजं निकषलं द्वा । वीणीं जनं मयं से वीणा ॥ ५ ॥
महामयां यथादीं प्रकटं । सनं आत्मं रत्नं परस्वतं ॥ ५ ॥
रत्नकारं यत्नं दोषं समानीं । पञ्च दीनं वचनं सव्यं यकानीं ॥ ४ ॥
एवं विधानं सुद्वयं मयं । प्रकटं सन्तं कसें तिनं कसे ।
मायां के गुरुं रत्नं उच्यते । मिरं तिनं यत्नं यत्नं यत्नं ॥ ३ ॥
सिद्धीं कलं आदीं अद्वैतं । यत्नयां तिनं अमरं अथवा ॥ ३ ॥
यदं अद्वैतं दायं नहिं आदं । मयं न दायं न पारं न दायं ॥ २ ॥
मन्दीं सातं सधुं यत्नं दीयां । यत्नं यत्नं यत्नं सो रत्नं दीया ॥ २ ॥
आकाशां सुद्वयं रत्नं सुद्वयं । मिरं तिनं यत्नं कलं कलं ॥ १ ॥
पुरं यत्नं पारं विधानं । पुरं यत्नं यत्नं यत्नं ॥ १ ॥

चीर्त्तं ।

निवृत्ति गुरु वंदन कर्तुं, पूजा प्रार्थना प्रार्थना ॥ १ ॥
 परस्परान् कर वंदना, आदि अन्त मध्य संत ॥ २ ॥
 परस्परान् गुरु आत्मा, प्रथम कर्तुं गुरु प्राप्त ।
 भवसागर पयोकर सिद्ध, किम छिद्रे अमयास ॥ ३ ॥
 ज्ञान मरण वंदन कर्तुं, वीरगती सिद्धया ।
 शिख पृष्ठे सतगुरु प्रती, सा मम मंद वताय ॥ ४ ॥
 नक्तं कुंड मं ना पङ्क, जीव मम आधार ।
 प्रसी मूल उपदेशी वी, सतगुरु कर उपकार ॥ ५ ॥
 मुक्ति दीप एव जीवकी, अवगुण सिद्धे अन्त ।
 पूर्वी मुक्ति पथारु, सतगुरु संत मंदव ॥ ६ ॥

साधो ।

श्रीपरमहंसजीमदोराजका मुक्तिप्राप्तिसंबन्ध ।

त्रिरक्तश्रीविपवर्तक-

श्रीपूज्यम् ।

अखिलदास गोलाम तव धामा करुं विम वात ॥ १३ ॥
 ओ अधिका आर्षी वर्ती, सर्व कर्तुं अर्थर मात ।

श्रीश्री ।

पार्थी सुरति स्रुमाल, कागण श्रुति पूज्य सरस ॥ १ ॥
 विराज दीनदपाल, गुरुपर पावन करत ।

श्रीश्री ।

एव हिं अति बालक युक्तिहीन । गुरु चरित अमित कुल लहहि चीन ॥
 तिहि विषय प्रसिद्धी भई पद । सा हम चरणी ओ सुनी वेद ॥
 सुनि वचन भयो आनंद अपार । सब शिष्यांप्राप्ति कहि देख निवार ॥
 अब दंडी दीनदो वंदी आर । क्यों सोचत हरिभंकर सिंहाड ॥
 एक विषय शिष्य तन कष्ट जान । विन्ता कर सुमरे परम मान ॥ २ ॥
 सा रामकृष्ण के शिष्य जानि । आर्षी सर्व उचरे आप जानि ॥
 गुरु सहर चर्चोरे पंडित जाय । वही विज पति पूर्वी पद सुजाय ॥ ३ ॥
 पूजा सुत राखे राम धाम । तन आधि भई नहिं संग काम ॥

उत्त पदो ।

सम्भव अद्वैतस्य प्रसिध, यद् वैश्यासी मान ।
सिंघसर यद्दी यथावर्षी, रामत कर्त्त विधान ॥ १२ ॥

दीर्घ ।

सो प्रसिद्ध मर्द्द कविषस पाद । मुञ्जदपर पावन कर्त्त आर ॥ ६ ॥
विश्वस नाहिं तिन दूख अपार । सुनि यवन पात्र मन समधिपार ॥
तिन त्रियो जन्म सो कर सुमात्र । कण कीर्त्त कृत्तर मणहिं आत्र ॥ ५ ॥
श्रीराम यजन अत्र कृपा आय । सो काहिं कीर्त्त दूख सन्नाय ॥
श्रीलाम्नी उचरुं सुनी दास । तिम सुश्रव कसें सो प्रकास ॥ ४ ॥
यद्दुर्बला पद्मी पुर आय सोद । यद्दु सुवायल कर्त्त सुफल दौर ॥
सुश्रव सब करको रेल वेम । मुठ पास उचारे यवन एम ॥ ३ ॥
जन मयी शान केवल प्रकास । पर आय और के जन्म दास ॥
दुम्पि आदिग मति देखे दयाल । कर नामदेकार चाली सकाल ॥ २ ॥
फिर मूढ यदी यद्दु सिद्ध चीज । नहिं सन्त यस्वुं जन दाय लीज ॥
तिन दूख भाव आनि करे आय । नहिं दण्डि लाल देखीं सु दाय ॥ १ ॥
इक दिवस गुफा मध विराजमान । सुर पदर अस्वय छजन जान ॥

छन्द पद्वी ।

सद्विद अविदल यवन मुनि, उर यरि सो विवि कीन्द ।
पद विच औषट मकट दूर, त्व तचलि अवि चोन्द ॥ ११ ॥

दीर्घ ।

एव वेदव हे मर्द्द न रहिया । अयण ताहिं यण किमि कहिया ॥ ६ ॥
मिठी वृं सापर क माही । लान पुतली गत मिलवाही ।
भाव प्रभाव निकवल हुआ । जोगी जन्म मण से र्जाआ ॥ ५ ॥
महमाया ज्योती प्रकृत । मुन आत्म रूपा परकृत ॥
रत्नकार खनि दाय समानी । एव चीन यत सप्त यकानी ॥ ४ ॥
रुपा पिपाता सुधुमन भला । फिकरी सन्त करे निव कला ।
माया के गुण रहे सु लरे । सुरति शम्भु गव वरुमं दारे ॥ ३ ॥
मुक्ती फल आनी अर्द्धता । वाक्या तिके अमर आयुता ॥
गुण अदृष्ट दण्डि नहिं आरुं । मूल न जाल न पात न छारुं ॥ २ ॥
मन्दा सीत समुं नहिं दीया । मध गुण चहिं सो रस पीया ॥
आकाशां मुख र्जा ज्युमर्द्द । सुरति शम्भु मिल कलि करुं ॥ १ ॥
पूरुसे पाताल विधाया । पहिम घाट दूर मूढ चर्वाया ॥

चौपाई ।

॥ १८ ॥ या विधि मन्त्रो जीवकर, विष परमार्थं भवेत् ॥
 पूज्यं देवीं पावकर, पूष विषय रस भवेत् ॥
 नक्तं कुर्वन् नो परी, पापानि मुक्तिं मुक्ताम् ॥ १७ ॥
 मन्त्रा वावा कर्मणा, रती रीति विन राम ॥
 तत्र चौरादीं जालिनीं, जन्म न पापे जाय ॥ १६ ॥
 जगत्सु विष उदय कर, हृदि बरणा लपयत् ॥
 जन्म मरण वेदन कटे, पापे पूष विद्याय ॥ १५ ॥
 राम राम अमर अर्षी, सर्वत्र वेद सिद्धाय ॥
 विद्वन्मया कर मन्त्रा, वे मय उद ह्य पाट ॥ १४ ॥
 राम राम नोका करी, सर्वत्र सिद्धय हरे ॥
 विद्याविन वाकी वादी, ज्ञाने ह्ये ज्ञान वास ॥ १३ ॥
 मन्त्रिणां ज्ञाना मन्त्र, सर्वत्र करे मन्त्रा ॥
 जगत्सु वेद अर्षी, मन्त्रे मन्त्रो ह्ये ॥ १२ ॥
 मुनिनां मुनिनां वेदना, परमं वाकी ज्ञान ॥
 सुखी विद्वान् वाकी, वाकी मन्त्रो ह्ये ॥ ११ ॥
 मान परमं वेदना, वाकी वेदना ॥
 ॥ १० ॥ इत्युक्तं विद्वान् भवेत् कर, सर्व मन्त्रा ज्ञान ॥
 राम राम नोका करी, सर्वत्र करे मन्त्रा ॥
 मुनिनां मुनिनां वेदना, परमं वाकी ज्ञान ॥ ९ ॥
 इत्युक्तं विद्वान् भवेत् कर, सर्व मन्त्रा ज्ञान ॥
 राम राम नोका करी, सर्वत्र करे मन्त्रा ॥ ८ ॥
 राम राम नोका करी, सर्वत्र करे मन्त्रा ॥
 राम राम नोका करी, सर्वत्र करे मन्त्रा ॥ ७ ॥
 राम राम नोका करी, सर्वत्र करे मन्त्रा ॥
 राम राम नोका करी, सर्वत्र करे मन्त्रा ॥ ६ ॥
 राम राम नोका करी, सर्वत्र करे मन्त्रा ॥ ५ ॥
 राम राम नोका करी, सर्वत्र करे मन्त्रा ॥ ४ ॥
 राम राम नोका करी, सर्वत्र करे मन्त्रा ॥ ३ ॥
 राम राम नोका करी, सर्वत्र करे मन्त्रा ॥ २ ॥
 राम राम नोका करी, सर्वत्र करे मन्त्रा ॥ १ ॥

श्रीगणेशाय नमः

निवृत्ति गिर वंदन करे, पूरण प्रथम जात ।
 परस्पराम कर वंदना, आदि अन्त मय संत ॥ १ ॥
 परस्पराम शिव आरामा, प्रथम करे गिर पास ।
 प्रवसागर पृथकार तिर, किम हरे अममास ॥ २ ॥
 अन्त मरण वंदन करे, शौरासी निरजाय ।
 शिव पूरे सतगुरु प्रती, सो मय संद वजाय ॥ २ ॥
 नक कुंड मं ना पड़े, शीत मय जोषार ।
 प्रसी मुख उपदेश दी, सतगुरु कर उपकार ॥ ३ ॥
 मुक्ति शेष रस जोषकी, अवगिन निंदे अन्त ।
 प्रसी युक्ति पवारु, सतगुरु संत मख ॥ ४ ॥

साखी ।

श्रीपरस्परामजीमहेरारामका शिकुशोरमसंवाद ।

विरकशोखिपवनेक-

शोखिपवनेक ।

अखुनदास गुलाम तव क्षमा करेहि विम जात ॥ १३ ॥
 जो अपिपती आखी पनी, अहं करे अक्षर मात ।

दीक्षा ।

विरह दीनपताल, गुजरपर पावन करत ।
 पाखी सिरलि सुमात, कमाण शिदि पूनम सरस ॥ १ ॥

सोरोठा ।

पूरुम सित राखे राम धाम । तन जाणिय महे महे संत काम ॥
 गुरु सहर बर्षदे पडूज जाय । वहा विज पति पती पद सिजाय ॥ १ ॥
 सो रामकण्ठ के शब्द जानि । आगुं अहं उवदे आय जानि ॥
 एक दिवस शिष्य तन कर जान । खिन्ना कर सिमरे परम मान ॥ २ ॥
 तव देवी दीनरी देवा आह । क्यो सोचत हरेशेकर सिजाह ॥
 सति वचन मया आनंद अपार । सय शिष्याप्रति कहि रेख निवार ॥
 तिहि दिवस मनिदी महे पद । सो हम प्ररणी जो सीनी वेह ॥
 हम हू आति पालक बुद्धिहीन । गुरु चरित अमित गुन लहहि चीन ॥

छन्द पदवी ।

ॐ तस्य श्रीरामरक्षा रंकाराणां । अविभव तत्र निभय मुनि
 ज्ञानि ॥ वाविष्या मूलं देविष्या स्थूलं मानं गर्जनं बुद्धिं स्थानं ज्ञानं
 स्थितिं तीर्णं गुणां शीलं सन्तोषमं रामरक्षां द्वियं आकारं ज्ञानं ॥ ५
 तत्र पचीस प्रकृति पत्र भूतारामा पंचवारं । समद्विष्टं साम परं आशि
 प्राण अथान उदानं ज्ञानं समानं अहदं शब्दं शीलं खरं पार्श्वं ।
 उल्लिष्या सुरं प्रहं कं उदंनं किंवा पश्चिष्या चन्द्रं तस्य कला साधि
 आशिं प्राणं मूर्धं जरां वेदनं तदीं ज्ञानिनीं शान्तिनीं धरं माधि ॥ धरति
 अथरं सिद्धं पद्यं पदनां रूढिं प्रथं भूतं दानं चंद्रोप । धरतीं
 कोटिनीं धरतीं धरतीं धरतीं धरतीं धरतीं धरतीं धरतीं धरतीं धरतीं
 नमः शान्तिनीं उरुणा शिष्यं कीं उदरं निद्रां न शिष्यं । पित्रं निभयं मया
 पीतं पर्वतं स्वरां रीमं मयवाप्यं पीतं न शिष्यं ॥ रीमं रीमं रंकारं
 उदरं ज्ञानं शिष्यं शिष्यं शिष्यं शिष्यं शिष्यं शिष्यं शिष्यं शिष्यं शिष्यं
 शिष्यं शिष्यं शिष्यं शिष्यं शिष्यं शिष्यं शिष्यं शिष्यं शिष्यं शिष्यं

शिष्यं धरं धरं ।

आत्मशुद्ध्या नमः । परमात्मशुद्ध्या नमः । आदिं शुद्धं च
 शुद्धं च शुद्धं च शुद्धं च शुद्धं च शुद्धं च शुद्धं च शुद्धं च शुद्धं च

तत्पदं वृत्तितं येन तस्यै श्रीगुरुवे नमः ॥ २ ॥
 ॐ अखंडं मंडलाकारं ज्ञानं येन चराचरम् ।

श्रीरामरक्षा ।

अथ तृतीय पत्रच्छेदः ।

अथ परमहंसव्रतस्य श्रीसुवर्णारामजी महाराजका

श्रुतियां श्रुत् ।

नर जग जगावत सव्यज्ज, अथ सोय रखा कसे सहिसुत्तै, ।

उठ जग पुढै माह्णै काह्णै अत्तै, बल सायु संगलिस भं सज्जुत्तै ॥

नित जगत्तुहै विजगाम सेवी, संग विषयनका लज्जुत्तै ।

वेदा माग वडा माणव भजो, कह्णै सुवर्णाराम समसिद्धुत्तै ॥ १ ॥

नर नाम निजकण छांड विद्या, कण कणस ऊटपां न पायात्तै ।

फिर सांस्की सेव विचार पठी, सेव संवळ हाय फया आपणात्तै ॥

मुळ अमी अवगमन माह्णै किया, नीर ओसहु माह्णै आपणात्तै ।

कह्णै सुवर्णाराम समसुख विना, नर वार धीवां पण्डितयात्तै ॥ २ ॥

एन वंछि वया माह्णै आपणु हूँ, नर मार सुहार सायात्तै ।

यहां किये हूँ कर्म न टोक मानी, वहां आव कह्णै माह्णै आपणात्तै ॥

हक पुंछ हिंसाव हर्षर माह्णै, अब लेखा दिया नहिं आपणात्तै ।

कह्णै सुवर्णाराम साह चोरमया, नरजामक हाय विक्रयात्तै ॥ ३ ॥

देखा देखा वृत्तियनकी दोखिहत्तै, माह्णै देख अवगमा हिं आपणुत्तै ।

कह्णै सार अक्षर विचार नही, उठ छांड अमी विव जाणुत्तै ॥

नित भागत भाग अवगण नही, फिर वेहि दिना वेहि राणुत्तै ।

सिन सुवर्णाराम हूँराम भया, कह्णु वार कही नही जाणुत्तै ॥ ४ ॥

विक्र विक्र जनां दयां जौविया हूँ, सार आत्म राम विचार सोया ।

भय वय दण्डी सुख विच विद्या, सिन देन विषय रस माह्णै भोया ॥

दोठ माह्णै माया माह्णै राखि रखा, देख वेन नापी हूँ कय भोया ।

कह्णै सुवर्णाराम समसुख विना, नरतय रतय भजोळ सोया ॥ ५ ॥

कोऊ जात न पाहि कुटुम्ब वेदा, पर याम य-या रहि आपणात्तै ।

अठ मात न जात न आठ संगी, सब सुख वेदा याद यायात्तै ॥

कय अम जौरावर अयु सेहै, तय आडा कोऊ अह्णै आपणात्तै ।

कह्णै सुवर्णाराम संभार साह्णै, वेदा जीव अकलहि आपणात्तै ॥ ६ ॥

यह्णै कय औषध वेदा फिर नही, सिन चार्तिक वार वजायात्तै ।

इक देन एतेन सुतेन यया सब, वंछतही उठ आपणात्तै ॥

एण औषका नीर केलीक वेदा, उदै सर हुया गुण आपणात्तै ।

कह्णै सुवर्णाराम संभार साह्णै, एसे फिर वेदा बल आपणात्तै ॥ ७ ॥

नर करणा होय सो करलेवा, यह्णै मासर जाण न दोखियेत्तै ।

सिन साय करस खेर करतै, सिन माह्णै करतै आम कीजियेत्तै ॥

मह्णै करत पठीय करतै, पउखिय माह्णै करलेखियेत्तै ।

कह्णै सुवर्णाराम कीयां न दीळ यन, एदां साय उखासहिं जीवियेत्तै ॥ ८ ॥

श्री विष्णो परब्रह्मणः ।

नाम परतापत कालकटक टले नाम परतापत कम धोया ।
 नाम परताप उर जाकणी ना उले नाम परताप मन मूल धोया ॥
 नाम परतापत वाप विविधा गई नाम परताप ग्रह नाहि पावे ।
 नाम परताप मय मय भागा सवे नाम परताप उर र नाम ॥
 नाम परताप उल जोगिनी बाडिका भूरा भूत उल छिद्र नाहि ।
 नाम परतापत विम व्याप नही नाम परताप विद्र लोक नाहि ॥
 नाम परताप की सल महिमा करे विज्य विज दाय प्रगति साया ।
 दास हरिनाम करे नाम परतापत जगल उल माहि अन होर पाय ॥ १ ॥
 नाम विम व्यापकी मय व्याप कर्मकी मय का दान इमान पावे ।
 सावि सहीर की विम व्याप नही नाम परताप पय दे कपय नाहे ॥

देखो ।

भावने ॥
 पाप म विपने पुणे न होने जे जपने जनादेन मोक्ष मुक्ति फल
 संपासि संकटे संख्याकाले मयाही धीरमरणा उचरने उचरे प्राणी
 मयाने उचरे प्राणी ॥ जोगिया विचार पादेगता पय धोरे एउवदे
 यति विरक्ति दोष रामानन्द मय धीरने प्रसिद्धाती । रामरक्षा
 सोचन सौरि विद्र रोम नाही गरजन गगन धाजन वेणु दोष दान
 देल ज्योति ज्योला जमी मूर गुंजार भाकाया जोगा ॥ रमल सार
 उलट असे विद्या विष का अहर सव देर भागा । कमल देल कमल
 पर एक राहियो करे जोगिया संप्राम देवाहि देवा ॥ कर सया किया
 हीया रहे माय रक्षा करे गुणका जप से गुण सेवा । वन्द अह सर
 सोचनी खेला मालती सन्तका शीघ्र पर देल किरियो करे ॥ चक्र
 विदेयमं राज का वेचमं सांकई धेवता वसे धीरमरक्षा करे । जगता
 कार की, चक्र किरियो करे पाटमं पाटमं पापमं धोरमं धोरमं देया
 मयमह देव पावड टारी, उवादे किरती रहे अलख निरंजन विप-
 जाला । सोसठ योगिनी का काटकटका करी खेचरा भूचरा धेवपाजा ॥
 जले मले पाट शवदे वसे धीरमरक्षा करे पाप पापणीका कोष
 सेवती आजीवती जगती पूष मुद्रा साधने सिद्धा योगिनी उर देगरे
 सुधी गदही गद गद सिद्धा का छक सादे सादे । वावती भूवती
 दीवार देवल रहे धी अजर अमर देर आप जोगा ॥ सुभाषणी कम-
 लसे माउ पक्षिम मिले निकसिया विष भकाय किया । आस माहि
 देवमर हुंकार मवती रहे धी सोसिया पकरं पावन धीरे ॥ नाम उलटी
 हीरे देया ॥ उचरे नेन उचरे धेन वन्द अह सर सोसिया धीरे धीरे ।
 भूया । विद्र लोकमं धोर धोर सय सिट गया खेव ही रेफिकमलि

राम ररकार में निजर जगै नही अथ मोवन करै अनव केरा ।
 राम ररकार में बाप जायै नही जन्मका हवै नही दे न धेरा ॥
 राम ररकार में अथ हूँ अरे राम ररकार में काल धरके ।
 राम ररकार में उक जाकण अरे राम ररकार में प्रव सरके ॥
 जय अथ भय जोह जोह नही राहै अथ केवै शानि हवै हूँ ।
 उर उकर वंजार संवार जायै नही पनाग नव नाथ कहै खव पूरा ॥
 अमिरसुरेनाथि चहै प्रोथ विन विन कहै प्रोथ अहविण्य कहै सिजन भेरा ।
 सभ पाताल उछाह उछाह करै नमी ररकार परताप तेरा ॥
 भजन परताप भय काल सधका निन्दा सुमर ररकारकी शरणा आया ।
 जन रामा किया आपसा सहजसे अही अपार भया ॥ १ ॥
 शरणा गुरुदेव की राम विरुधक सदा विम भय काल अजाल हूँ ।
 सदा पाताल आकाश मरुतु जोकर्म सहिठ बाल निभयसरा ॥
 देवा परदेवा घट घाट घट घाटमें विरुधक रमणीत सधमं दयाला ।
 मारि कदा सध पूज भुज आनंद कर हरेण अथेक अथ मध माला ॥
 अमिरसुरे पाहै जलजोय वर अवर सध नयप्रद आहि सहायक सदाहै ।
 एक सृजता अहो अनव सृजता सदा अथा जन जोड विम न कदाहै ॥
 चोहै जोक पर जोक निभय समव राम रमणीत वल निभय सदाहै ।
 अहो विवरन वही भानन उद्योत अहि रामजन आगम पर अगम राहै ॥
 नादकी बुदकी अथ मथाहि सध वंथकी अरि कोउ नाहिं जनी ।
 बाकीणी बाकीणी भव उल छिद अनव राम परताप में हरे मनी ॥
 राम परताप वल राम सुख सधयो राम अहुरे भंडार भेरे ।
 राम आचार विचार किरिया सधै राम पुलि पाठ गायन हरे ॥
 राम भुज धनी समुद्र शरणा सधल वाव अथ मात ऊठ यथा सारा ॥
 राम पापु मरण राम मतिपाठ निव सख ही राहें मीरै आषारा ॥
 राम वीर्य बाल जीवन सधो आस विनवास राम राम सिद्धा ॥
 राम वा कथम एत एक कारण कारणे आहिसे अथ हेषै परिखा ॥

राम विरुधक परताप बाकिया चारों जीवा ।
 राम विरुधक परताप अनाममें भया वधीना ॥
 राम विरुधक परताप चला गड ऊपर जाहै ।
 राम विरुधक परताप जोधवा निभय सदाहै ॥
 राम विरुधक परतापमें सुन सागर में समरा ।
 रामा राम प्रतापते काल विम हरे गया ॥ २ ॥

- सज्जन धृति सुखी कुटुंब, राम रत्न राम राम ॥ २४ ॥
 राम धीमता राम राम, सदा सति विद्यमान ।
 सुदूर दालमान पर, पूजा परम विद्वान् ॥ २३ ॥
 विद्वक लाल मूल, नर नारायण मूल ।
 राम सुभद्रा धीमता, पूजा परम राम ॥ २२ ॥
 राम धारणा राम सुख, राम सुभद्रा लाल ।
 राम धृति सुखान निज, क्षेत्र राम परमान् ॥ २१ ॥
 धीरय मत्त पराधरणी, रामदासक राम ।
 मत्त ज्ञान पूजा परम, विद्यनिपुण गुरु राम ॥ २० ॥
 सुख सुख सुखि यणी, धीर आचार विचार ।
 रामदास वा आभर, धीर विद्वि कर सुख ॥ १९ ॥
 आदि आदि सुदूर सकल, अकल अक्षरी सुख ।
 राम रक्षा सुख सुख, रामदास परमान् ॥ १८ ॥
 सुख सुख पाताल जी, वा सुख नर अक नाम ।
 रामदासक रामजी, विद्यमान धीमत्त राम ॥ १७ ॥
 सुखादिना आनंद आन, विद्वानंद मानवान ।
 राम सुख विद्वान सुख, रामदासक सुख ॥ १६ ॥
 सुख आनंद पूजा कला, नमस्कार मानवान ।
 राम सुख सुख करण, रामदास विद्यमान ॥ १५ ॥
 सुख सुख सुख सुख, सुख सुख सुख राम ।
 राम सुख सुख सुख, रामदास सुख सुख ॥ १४ ॥
 सुख सुख सुख सुख, सुख सुख सुख सुख ।
 सुख सुख सुख सुख, सुख सुख सुख सुख ॥ १३ ॥
 सुख सुख सुख सुख, सुख सुख सुख सुख ।
 सुख सुख सुख सुख, सुख सुख सुख सुख ॥ १२ ॥
 सुख सुख सुख सुख, सुख सुख सुख सुख ।
 सुख सुख सुख सुख, सुख सुख सुख सुख ॥ ११ ॥
 सुख सुख सुख सुख, सुख सुख सुख सुख ।
 सुख सुख सुख सुख, सुख सुख सुख सुख ॥ १० ॥
 सुख सुख सुख सुख, सुख सुख सुख सुख ।
 सुख सुख सुख सुख, सुख सुख सुख सुख ॥ ९ ॥
 सुख सुख सुख सुख, सुख सुख सुख सुख ।
 सुख सुख सुख सुख, सुख सुख सुख सुख ॥ ८ ॥
 सुख सुख सुख सुख, सुख सुख सुख सुख ।

अहं बोध हीन प्रथा हीन प्रानी । कथा है सिनाय वचन वचनी ॥
कथा है नयन मुद्रासं मुद्रासं । सर्व काज सिद्ध कर संत सेव ॥ १ ॥

उत्तं सुवर्णी ।

आसि के शिष्य नरायणदासहि, पूज्य विद्याविष प्रमाद बाळ ॥
बाल प्रकाश उजास भयो उर, गुह्य लही हरिदेव विद्याळ ॥
वासिके शिष्यपराम भय जन, वाहि कथा खिनाय कथाळ ॥ १ ॥

उत्तं देव ।

रामानन्द गान्ध बास वन्दन अनन्तानन्द
वन्दो कर्मवन्द देवाकर सिद्धकन्दको ।
पूजा ही माजवी जे देमावेवदास वन्दो ।
नारायण क मोहन वन्दो गनि ब्रह्मको ॥
वन्दो जन माधवादास सुन्दर सरणदास
कुमल हरिचाम गान्ध वन्दो वा नन्दको ।
वन्दो हरिदेव मोतीचाम खिनाय गान्ध
वन्दो मुद्रासं गान्ध वन्दो मम निन्दको ॥ १ ॥

उत्तं मनहर ।

मति उपजायन परम मुठ, उर अरक निज सर ।
गाम सहित परमालिका, वरणी करि निरघार ॥ १ ॥

दीर्घा ।

वन्दो आदि पूज्य परमसं । किपो वाहि नरवज्र यकसीसं ॥
वन्दो परम वधु मुद्रासं । निज दीर्घा निज भक्ति मुद्रासं ॥ १ ॥
अन्त कादि वन्दो हरिजनको । वाते करी गुह्य मतनको ॥
शशिष आगव कदल अर्णव । हरिगुह संत एक ही रूप ॥ २ ॥

दीर्घा ।

गान्ध राम मुद्रासं को, परम भय वरसाय ।
धायाय पय निज जगत हित, सो मम सर्वो सहाय ॥ १ ॥

दीर्घा ।

पूज्यपादाजाय श्री १०८ श्री हरिचामदासजी महाराज
की परणी गान्धः ।

अन्तः श्रीमदभिरामदेवः ।

पूजित किये सि जनसे, प्रसन्नमान कहुँ माय ।
 महापुरुष जन मिलनकी, अति अन्तर अभिप्रेत ॥ १ ॥

दीर्घ ।

एह विषय समझहि विचार । गुरु सिन हरे न भय तें पाय ॥ ६ ॥
 तब सवही तें भय उदासी । जानी जगजाल जन पासी ॥
 सुमरण कीन्हो भास उदास । जब उर माहीं लखी प्रकास ॥ ५ ॥
 प्रथम मांक परी जन पासी । नाम महात्म मन्थ विचारि ॥
 परधी सहित कथा करि दीव । प्राण ध्यान विधान अद्वैत ॥ ४ ॥
 अनेभव कला आदि अवतार । जा प्रभाव सर्वो विस्तार ॥
 इति अज्ञान इत्यु अंधार । प्रगट भय गुह्यजाल गुरार ॥ ३ ॥
 अज विनयी हेल भार उदारण । भेदण अथम असुर संहारण ॥
 निशि गुरु परधी कला रचिनाथ । गुरे नर सजजन करण सनाथ ॥ २ ॥
 इति अवतार वार परकार । जानत वेद सत संधार ॥
 निगुण निजानन्द निरकार । पूरण प्रथ सत अवतार ॥ १ ॥
 श्रीहरिचरम निरंजन दयाम । प्रगट आह सिद्धलाल प्राम ॥

श्रीपारु ।

उर प्रकट हुइ कहत हूँ, सतगुरु भग प्रवीन ॥ २ ॥
 परण न जानत मूढ़ अति, मति बैराम मलीन ।
 परणी सिपदा दयालुकी, उपदेश हूँ अपार ॥ १ ॥
 गुरु है अन्तःकरण जे, मन बुद्धि चित अहकार ।

दीर्घ ।

जानि आपनी बाल, बाधा कीन्हो मोहिकां ॥ २ ॥
 जब करि कथा दयालु, परी मनवाञ्छित वंदे ।
 जो गुन आपसु दीर, तो गुण मांक रावरी ॥ १ ॥
 निधी पत्रिका दोर, परी जे आगे पाटके ।

सौरदा ।

कदा मन्थ लक्ष्मी कृपाहृदि कीहै । गुरु रामाना रखा भय दीहै ॥ ४ ॥
 कथा है सु भू प्रह्लाद कधीर । विदाओ हूँ कौटि नन्द सधीर ॥
 कथा है रचिनाथ कीहै निहाल । जन् वेव दीहै सुधाणी विनाल ॥ ३ ॥
 कथा है सु मती जे राम कपाल । समयां निधी भेद दीहै दयाल ॥
 कथा है इतिदेव वेव गुह्यरी । महा वी प्रकाश कीहै इमारि ॥ २ ॥
 कथा है जन समदास विदापी । मनु दीप आनन्द सत विदापी ।

उत्तम ज्ञान । आशा से लहर आसीन और ॥ २ ॥
 वरुण लीन । तबि कपट हीरे तन मन अपीन ॥
 मुक्त से लहर ध्यान । सर्वे तु तबि प्रकाश जान ॥ १ ॥
 सावित्र मुक्त उत्तम जान । योग्यहि प्रथम प्रकाश प्रकाश ॥
 छन्दः पद्यी ।

सा प्रीति अथ होनकी, पद्यहि कही सब सीति ॥ १ ॥
 परा से प्रीति भक्ति की, कही से भूँ गुन भीति ।

दीक्षा ।

पय भी धीवें सेक सा प्रसेक रस पीवेंक भिष्य रहे ॥ १ ॥
 भिष्य प्रकसेक साभि विसेक सेवक सेक सुकल लहे ।
 अति आत्म लकी पति अतिरकी निकट निरकी या मुकी ॥
 यह परा तु भकी परम से रकी कही से रकी संवकी ।
 छन्दः त्रिपिपी ।

सामी सेवक एक हुए, रहे भिष्य प्रचार ॥ १ ॥
 पराभक्ति अथ फिर कही, सुनिवे विष लगार ॥

दीक्षा ।

पराभक्ति विधान ।

द्विप्य तबि समझाय कही भूँ प्रीति ॥ १ ॥
 यही निरूप प्रदद्याय सही जन जीवमुकी ।
 जन्म मरण तबि जीव पर प्रथम समझे ॥
 कर्म सबे कति जाय भय भय भय विजये ।
 जो उर धारन करती कर्म सबे कति जाय ॥
 प्रीति मनी भूँ कही द्विप्य यही समझाय ।

छन्दः त्रिपिपी ।

परी उत्तम कही से जन्म दान उतरे नाहि कही ॥
 कर्म परक कर्म मुक्त विष प्रथम प्रीति ॥
 भक्ति भीरु से देना भय लीना है लयलीना राम भकी ॥
 जन्म परसे प्रीति अत्यन्त प्रीति प्रीति प्रीति प्रीति ॥

छन्दः त्रिपिपी ।

वसन्त हीरेक भिजन की, जन्म प्रकाश निरुपे ॥ ३ ॥
 राम राम प्रकाश राम, प्रकाश निरुपे से प्रीति ।

पराभक्ति विधान ।

पदके जगत् महर्षे, गण्डि मर्षे सु जगत् ॥ १ ॥
कथयते परम जगत्, निरुप परम निरुप ।
यद् धृष्ट्या सु उरु मय, गण्डे परम जगत् ॥ १ ॥
अपरे सिद्धि सु अग्नि सम, यत्न गण्ड सम जगत् ।

दीर्घ ।

यद् परमाना जगत् अग्नि सम जगत् ॥ १ ॥
उपयुक्ता धृष्ट्या साभि सुयुक्ता अन्तर माग्नि विद्य जगत् ।
गुह्यं यत् सत् मान्या मन परवान्या धीय विदुष्या विज गत ॥
अप स्यात् आत्मा सुमित्त तन्वा हिरे अन्वा अग्नि हेतु ।

उन्द विष्णो ।

अप यथा उर अग्नि, यद् अग स्ये जगत् ॥ १ ॥
कठ निरुपहि कल ज, परम प्रकाशय जगत् ।

दीर्घ ।

रसना सुमर्षे धीर्गुह्यं कठ प्रवेसं यत्न किम् ॥ १ ॥
गुह्यं युक्ति कहेसं वा विधि जेसं परम परसेसं जगत् प्रियं ।
स्य मर्षि अवेसं काम कलेसं राम रवेसं हरिरामं ॥
आपु उपदेसं निरुप गहेसं तन मन पसे करामं ।

उन्द विष्णो ।

यद् उपदेस उ अग्नि, धीर्गुह्यं जेमलदास ॥ १ ॥
जो निरुप गति विद्य कला, मन सजीवन जगत् ।

दीर्घ ।

हरिरामदास को परमगुह्यं यद् उपदेस उ अग्नि ॥ १ ॥
उर मया जगत् मंगल परम काम मयं स्य कथिया ।
जगत् युक्ति को वात कही स्य परम कथितं ॥
गोसा निरुप क सुचित आन पर एक कथितं ।
इं कर्म परसाद राम निज मय सुनाये ।
परंपरा को धर्म गुह्य उर परम गुनाये ।

उपय ।

रामनाम निज मय, यद् गुह्य कला उ विद्यन पं ॥ १ ॥
नय पद चार सुतन, सुमित्त शेष महेशो ।

सोरो ।

उर निरुप जगत् विद्यासा आसा पासा सर किम् ॥ १ ॥
इं निरुप आसा यत्न विद्यासा आसा पासा सर किम् ।

अथात्र परम परम उवाच परम प्रकाश करत मय ॥
एषी अर्थात् सिद्धी तु दासा आन उवाच इत मय ।

उत्तं विभाषी ।

परिचित जैसी एक परम, एसी सिद्धि अर्थात् ॥ १ ॥
देव मय निज दासकी, दीया जमलदास ।

दीहा ।

सी पर देव देव देव देव देव करती है ॥ १ ॥
राजी निज नीचवर्णा केरा अन उरती है लीज ।
सह परताप सत्य में आय आय आय है ॥
दीहा अब आय में सि सताप राम आय उर प्राते ।

उत्तं विभाषी ।

एक सतिव अब दीहाय, रामनाम को आय ॥ १ ॥
गुरुक गुण उचम कहै, सो गुरु मिले तु आय ।

दीहा ।

अब राम समेव अनर मेव अमर समेव उरदेव ॥ १ ॥
आ निरव में मय दोरा जमव दिव्य करेव गुदेव ।
जम कदा जनेव परत वदेव यही सिद्धि है आने ॥
निवमन में मय पर परेव दीहा पर परसादे ।

उत्तं विभाषी ।

दीहा परम प्रसादी देव । तन मन कक गुहारी सेव ॥ १ ॥
दया करे गुरुदेव दयाल । मोका करे गुहारी बाल ॥

वाप्रादे ।

दिव्य वचन ।

एत विनकर के बेअर, मया निरि सव काट ॥ २ ॥
एसे गुरु के वचन सुनि, उरके सुले कपाट ।
मं बाल में हरि मिलन की, सो सो कही तु वासु ॥ १ ॥
कया मय अस्तुति करि, जो जो जम विधासु ।

दीहा ।

तव रट भास उवासराम । रट मिले परमपद ब्रह्म धाम ॥ ३ ॥
गुरु मय अब दे कपसार । वार दिव्य निधाय सार धार ॥
सम आत्म ब्रह्म सहज मारि । वाप्रादे दे अण हस धारि ॥ ३ ॥
आ निज कहै गुरु एकि जोग । आ निज करै हरि हिन संगोग ॥

इसके और न भास, जहाँ परदेकर विना ॥ १ ॥
इसके और न भास, जहाँ परदेकर विना ॥ १ ॥

। शीत ।

। शीत ।

करत अप करि वेर से, मम तव चरन निवास ॥ २ ॥
गद गद होइ शीत सव, शीत न निकसे जास ।
बसि जगत दग शीत, शीत खिलत विजास ॥
आसि कदगा कर दास, देवलि तिव सीम देवास ॥
जासरे गिबतरास, आसि कदगा कर दास ॥
पर तिव जगजि वचन मिलि, मम परम परकास ॥
पम पम तिव मम पर, कही निगम लख जम ॥ १ ॥
निज बसिजत दिवकर परलि, मम से हो के म ।
बहिर धरु परतप मम सव वचन सुधास ॥
पर परम जम मम तिव शीत निवास ॥
देरली मम तव जम मम, पर परम जम मम ॥
पम पम तिव धरु पर, कही निगम लख जम ॥

। शीत ।

। शीत ।

करि अतिकथा करत से, सफल सफल विम सेव ॥ १ ॥
पर विनी निज सिखन की, सिनी शवन गुरुदेव ।

। शीत ।

रामनाम वचनार, शीत सव मम पमसिपा ॥ २ ॥
बहिर किय जपकार, शीत मम सिधुते ।
पर मम परवान, सेव निरंतर रावरी ॥ १ ॥
आसि मम शवसान, देव प्रसव गुरु शीतसे ।

। शीत ।

निजिपन सुख म शीत बहरी, शीत चरन तिव धार ॥ ८ ॥
नमी नमस्ते सबगुरु, महिमा लखी न धार ।

। शीत ।

शीत शीत शीत ॥ ८ ॥

कर और सदाप शीत नमाम लखी धार करदेव ।

अथ ज्ञानवान् सिद्धयेत् सन्नाहं आदि,
 वाशिष्ठ रामचन्द्रं अर्जुनं कृष्णादिं कर ॥ २ ॥
 समर्थादिं धातुमार्थिकं आदिं ज्ञे सन्नाहं अथ,
 नारदं धर्मदेव अथ ज्ञे प्रणयं कर ॥
 यिष से जगद् विप्रकंय मिति आदिं ज्ञे,
 साहं यद् वरुणीं ज्ञे मिति ज्ञेन परापर ॥
 सदाय सव गथां प्रथम प्राप्तिं ज्ञे अहं अत,
 गिह विप्र विजय अथ ज्ञे सन्नाहं कर ॥ १ ॥

धनार्थी ।

ब्रह्मिष्ठानकी यां अथा, विप्र सवगिह सन्नाहं ।
 जिन जिन को जय जय मित्या, आगम आदिं अनाहं ॥ १ ॥

दीक्षा ।

देवत से अर्कत, एक प्रथम यद् यद् मर्हि ॥ १ ॥
 विनतीं पत्नीं पीति, विप्र कर्त्तुं गुरुदेवसे ।

शारदा ।

साक्षीं सप्त समुदकीं पत्र ज्ञे यद् यद् देहं ।
 कलय करत सिद्धकनकीं लिखत शारदां साहं ॥
 लिखत शारदां साहं पार गीत वादि न पावत ।
 आप विद्वि परमान गुरु महिमा विप्र भावत ॥
 स्वामीं ज्ञे मान अरज पत्नीं गुरुदेहं ।
 पत्र ज्ञे यद् यद् देहं समुद कीं कर्त्तुं ज्ञे साहं ॥ १ ॥

कृतलिया ।

शारदाकमल कीं सेव, कर्त्तुं अचकम्पा यगमिषु ॥ ५ ॥
 दीनवन्धु गुरुदेव वाच्यार यद् योनायां ।
 परंपरा कीं दीन, सां वरुसाहं मय्य उर ॥ ४ ॥
 प्रमा अन्तिक पूर्णत, सव विधि कर्त्तुं ज्ञे यन्तिक से ।
 पुति धारण विवेक, दिव्या परम गुरुदेवजी ॥ ३ ॥
 राम मिहन विव रूष, कर्त्तुं न राखीं आप मो ।
 सहक समुप खाम, यान यान कर्त्तिक कथा ॥ २ ॥
 रामनाम विननाम, विगुण प्रथ सन्नाहं ज्ञे ।
 सहक कथ गुरुदेह, उर मं रवीं ज्ञे अहं विधि ॥ १ ॥
 विनतीं धारण, कर्त्तुं साहि कर जातिके ।

शारदा ।

तिम अभासम खड़ी न पाए। तिमव कए मँ पाएगाए ॥ ८ ॥
 तिम गुरु भोगे भोगे सभ भाए। मम उरके सभल वन भाए ॥
 मम गुरु भाए दीने दीने पाए। मदी आन अजान अर्थाए ॥ ७ ॥
 भाएी परम सुधारस धानी। सवगुरु सवविधि धान सु जानी ॥
 परम भाग हम दान पाए। दैरे प्रसव प्रसंग सुनपाए ॥ ६ ॥
 देवा सवगुरु सभ भाए। ते आ सभ वृथा वन जाए ॥
 जो गुरु तिम सिखरे मुहि भाए। आनी नहि सुखि उर भाए ॥ ५ ॥
 तिम गुरु अरथ कहै तिम एक। वन मन अरथ तिमि अनेक ॥
 हिरे नदी तिमला गुरु मेरे। वन मन पाएी ऊपर मेरे ॥ ४ ॥
 यह उपकार कही जनि गऊ। तिमवम नहि पाए नहि पाऊ ॥
 रामनाम वन परम परसं। परम दूध तिम सुमितर दोसं ॥ ३ ॥
 तिम सभान सजन नहि कोइ। दीनेही मुहि अथर गुरु कोइ ॥
 अब तिम दाना मया सु देव। नाम महावम दीया सु ॥ २ ॥
 मयम मय दाना हरि परे। तिमने पाएँ मायम देहे ॥
 मँ मँ मँ सफल सभाइ। भाक मय उर मुकि पभाइ ॥ १ ॥
 हिरे नहि सवगुरु तिम देवा। दीना धान गुरु भाएि पूसा ॥

भाएइ ।

त्रिपुरवचन ।

धीसवगुरु के वचन सुनि, उच्यो अधिक सोहे ।
 धान गुरु सुख मिलन को, मानन मय सु परे ॥ १ ॥

दीहा ।

तिम ते पूछो राम वचन । देहि विधि मेरे मया मिलन ॥ १५ ॥
 रामनाम जपियो सुख राख । जय मेरे आयो तिमनास ॥
 पूस वचन कहै गोविन्द । देहि किए मेरे दुख हरे ॥ १४ ॥
 संसय तिमिनि छुई दहीब । धान ज्ञान मँ तिम गहीब ॥
 मान मान सववचन हमार । राम राम रउले वनसारा ॥ १३ ॥
 ते वान आयो हे देवा । ते हे आहि अनन जन मेरा ॥
 तिम कारन आयो वय परसं । जन जान ते जन सवगुरु मँ ॥ १२ ॥
 मँ ही तिमनाम अविभासी । पूरण धान सफल परकासी ॥
 महादुख जोले नम धानी । तिम देवा सेती मँ जानी ॥ ११ ॥
 तिम ही कौन कहैत आय । मोकी यह उपदेश वचाए ॥

पुति पद भूय रूपाण अत्रक राजा विभक्त्यु ही जान ।
उत मत सहित भोग से विदुत जनक विदेह रहे अस्थान ॥

सुधा ।

१ गहि कहे पर जनकी । विष एक हरि से हरिजनकी ॥
१ ॥ मं दयान्त पदावी । परम्पर इतिहास सुनावी ॥ १ ॥

चौपाई ।

गही काम कहु अगत से, राम भजन से मोति ।
पौ जन बुडे भवन में, सकल मोह गण जीति ॥ १ ॥

दीर्घ ।

जव बोले जनक संवधी । गहिं रही आप निरवधी ॥
राम भी दशरुण करु तेरहरी । ताते हू कल्याण हमारी ॥ १ ॥
करि अर्पति कहत से सदा । अरु निवधे पुनि पादपादा ॥
धंधा गुमकी गहिं भुजावी । अरु कवह गहिं ध्यान बुजावी ॥ २ ॥
सब रहस्य गुम आजा माहे । परही माहिं भजो गुम साहे ॥
एसी सुनी धीनवी स्वामी । रहे निराज सु अन्तर आमी ॥ ३ ॥

चौपाई ।

चार दिनन को अगत सुख, अति दुख को भीर ।
ताते तनि जन जाव खां, हरि भजनां सुख सीर ॥ १ ॥

दीर्घ ।

सुख राह पवारें भी दरखारें अग उर खारें दिनपारें ॥ १ ॥
सुखन पवारें सब सुख खारें जगें पारें हरिनाम ।
हैशकी नारें कुल व्यवहारें पवन उचारें हरिनाम ॥
गहि काम हमारे धंधा खारें मोहिं मारें उर पारें ।

उत्तं विभागी ।

जगें सु भुम प्रकाश उर, मन से भूय एकन्त ।
राम रतव हरिनामजी, सदन पवारें सन्त ॥ १ ॥

दीर्घ ।

नर ब्रह्मन को दाय पन्थी है कया कही है सवागुह स्वाम ।
धकार्यम पुरुता गुरे माहिं गुरे एकन्त भजो हरिनाम ॥
राम धम करि धरि ध्यान सुरति सति निवरी भूयध है निकाम ।
गुरुभावा से पन्थ पदत जू पसे पवन कहे हरिनाम ॥ २ ॥

जब मन युगल वि किरी मनीरय खानि चली सपही धन धाम ॥ १ ॥
 हे आवसि हरिनाम परम जन आवत मय सहीयल नाम ।
 शुकित ही अलि धरु मयसे अर धाम कसिके परनाम ॥
 वृत्ति कर नामकार परकीरिण आव सै संग सहीत उदराम ।

सुधी ।

ध्या करि गुरुदेव, जब उर परी विधि वनी ।
 भुक्ति धामस भय, वृत्तिक सहीत सपही करी ॥ १ ॥

सीरी ।

हरिनामवास आवत मय करि मिलाय गुरुदेवसे ॥ १ ॥
 इति वृत्तिक सहीत सय विधि करी भुक्तियुक्त तव भयसे ।
 विधि सवगुरु के पास विनय करि यावारे ॥
 कसिके वरि अर्थाति धर्म निज उर मय धार ।
 इत सभाय उर इतु मय पर धम विवापसि ॥
 करि पवन करजोर दीया परिके मय आवसि ।
 हरिनाम सदन आवत मय करि मिलाय गुरुदेव से ।

उपप्य विरमल ।

विधि गुरुदेव मिलाय करी, कही कही लजि सीति ।
 गुन चहुँ रू धाम की, सुनत चहुँ अलि प्रीति ॥ १ ॥

दीष्टी ।

धाम वरनाथ भुक्ति नाम वकरीया की ॥ १ ॥
 ऐसे हरिनाम के मिलाय भयो जैमल की ।
 रवि के मिलाय भयो उदभरतीया की ॥
 परमेश्वर के ल्या गुरुदेव की मिलाय भयो ।
 शुक के मिलाय भयो जनक मदीया की ॥
 यदु के मिलाय भयो दत्तात्रय मुनी की वृ ।
 जैसे सनकादि भयो इस जगदीया की ॥
 निज के मिलाय भयो जैसे नव योगिन की ।

छन्द मन्दिर ।

गुरु जैमल हरिनाम के, भयो सु यम मिलाय ॥ १ ॥
 उदय देसा वि द्याम निजि, अनर मिले सु आप ।

दीष्टी ।

निचम सहित गुरु देवता निव, कल भू पद मास ।
वय क्षणी मापत भू, वही भगी हरिदास ॥ १ ॥

दीर्घ ।

उद्वेगान कोश समान को पद मास सापव भो भू ॥ १ ॥
निव वेमसे दिन सासता पद आसता असे लिये ।
अस्यान हरिपुर को दिव्य प्रभ नीर शीत सु चार्या ॥
पदसे सदा सत वही गुरुधाम को पूव चार्या ।

उत्त गीतक ।

संयम गजसुभीक सम, जव भव ह्युभव वेम ।
वही जनक विदेह सम, नन्द सुनन्द सु वेम ॥ १ ॥

दीर्घ ।

जग परपुत्र समान सु जग्या जनहरिदाम पूव रस शीप ॥ २ ॥
जिनि अरविन्द लिपु नहि आसु तु वैसे समुद्र माहीं शीप ।
पदसे गुरुदेव देवत जगती वैसे पथी नीर समीप ॥
भगी निना अद्य सुख मासे अन्तर यान प्रकाशो दीप ।
सहज समाधि अहित मन आसन गीतगुणके देवत उपाद ॥ १ ॥
जनहरिदाम सहज भव दाम दाम से जेव प्रसाद ।
सर्वके जनक सकलके ईश्वर ह्यु राम निजनाम आदा ॥
आत्म ह्यु एक फरि देखे सुनिन से नहि वाद विवाद ।

संक्षेप ।

वस्य निच गुरुदेवसे यहि निच जगी सुधीव ।
ह्यु एक फर देखियो, सब पद प्रभ अद्वैत ॥ १ ॥

दीर्घ ।

हरिदाम द्याम सु फारो, गुरुधीव ह्यु यहि सावरो ॥ १ ॥
प्रहलाद ज्यो हरि नामरो, अजुदाम सनत एकान्तरो ।
गुन प्रभ नारद गानरो, निच शीव जेम सिधान्तरो ।
गुनि चंद्र ज्यो जे फमारिनी, यन भोर सातक स्मार्तिनी ।
जिनि भूग गुण सुपासव, ह्यु नि दस भावसरोवर ।
जिनि पाज भागु निपासव, जिनि पक्षे नंद वरोवर ।
सकपदि नीर निपासव, पुंडरीक भागु प्रकाशव ।

गजराज स्व वराह, अन्यादि पक्षि अकार्ये ।

उत्तं भीतिक ।

सत सानि मुद्वेष से, दिन दिन भीतिक खरहे ॥ १ ॥
राम देम सहित वु राम राट, पहुँचे राज्य से गेह ।

दोहा ।

जनी सुनखार प्रस सिखात, देखा मुद्वेष प्रताप उजात ॥ १ ॥
अभी रस नीर खले जय एम, निरानन्दक उपके रस प्रेम ।
परमेश देव वसे जन वास, जनी युनि एक अवब अकार्य ॥
मिजे हरिनाम से वेहरद माहि, कभी भिन आदि से अंत वु माहि ।

उत्तं भीतीनाम ।

गुण शिष्य भीव व सीव, एक सेक उर मिल रहे ॥ १ ॥
नही आने इदनीव, वेहरकी गति वणिवा ।

सोरो ।

संतनकी गति खरहे आने । इदके जीव से कदा वखावे ॥ १ ॥
श्री सख से भीति वु ऐसी । माता भीन उदक पुनि ऐसी ॥
रानी रानी वही रखावे । आजा माहि यही पुनि आवे ॥ १ ॥
सब कोय निवही खलि आवे । परम पुनीत देवा गुह पावे ॥

चौपाई ।

जायत गुह संगति करन, सब कोय निवनेम ॥ १ ॥
भिन हरिनाम से धर्म प्रेम, परम अलक उक प्रेम ।

दोहा ।

परम से श्रेम उपज भूम भंग से प्रेम अलक उक नेम खदेण ॥ १ ॥
धाम उजात ज्योति विज दीपक ज्यो ज्यो दिन दिन होत सवाय ।
आठो हि धाम अखंडित आनन रामहि राम रहे लिय जय ॥
एक एकव भवन से आधम आसे आन विराने आय ।

सुवैया ।

कचह मंदत माहि जे, जैसे कंट डोखर ॥ १ ॥
जय जगदी हरि नाम से, अह निधि एक अवब ।

दोहा ।

एक हि धाम ज्ञान एह कारण निअय एक हि धाम निधान ।
श्री हरिनाम भवन के माहि भीव लियो उर माहि पिछान ॥ १ ॥

॥ १ ॥ तिमि कर्तृक वचन कमाउं आशीपर के भासि नहिरे ॥
 नाम विहासीदास आसिका खंड पराउके जैसे केन्द ।
 ॥ १ ॥ गन संपद गिहिक भायक हरिके भायक रूप अन्त ॥
 ॥ १ ॥ प्रति स्वामी के भक्ति अर्पि नन्द विहासी जैसा नन्द ।
 सुध्या ।

॥ १ ॥ पीछे विरिजानन्द तिमि, रखा जब मर धार ॥ १ ॥
 गिक मिलिया पदली भया, एक पुत्र जन धार ।
 दीहा ।

॥ १ ॥ ऐसे वचन कहे अशुभ्या । स्वामी धिय धिय भाप प्रसिया ॥ १ ॥
 हरिके जन भाट परमाई । स्वहीके सिमराव सारु ॥
 ॥ १ ॥ बापा राम राम गण गाव । स्वामीजीको बहव सारु ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥ प्रति स्वामी सिमरण मं जयो । आत्मपाम सदा अरिरो ॥
 ॥ १ ॥ प्रति स्वामीसे दीया निवाए । अपन अपन भवन सिधाय ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥ पूव संस्कार तिन देही । सो जन हवा रामदेही ॥
 ॥ १ ॥ जब सवा सो बरणा जगा । कावा सुनव देरि बर भागा ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥ आशा बहव कहिन है मारु । जो लेसी सो दीया कटारु ॥
 ॥ १ ॥ स्वामी पास साव करमाई । जामं कसर न राखी कारु ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥ ऐसे कहत मय विभासी । दो आशा स्वामी सुखरासी ॥
 ॥ १ ॥ अह कर्तार जैसा जन पूरा । शीज सपीर अहिग मति सारा ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥ गिमहो जब मन शिकरु जैसा । प्रति परीनारायण जैसा ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥ आशा जैन बहव धिय आप । स्वामीजीसे वचन सिनाए ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥ ऐसी बात सुनी नरनासि । सबके भाव ऊप्ययो भासि ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥ बायु उजठि बाप से भासि । स्वामी ध्यान जगारु भासि ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥ स्वामी नयन बाज करि देही । मयाके मन लज करिबेकी ॥
 ॥ १ ॥ एक समय सिर असर धारु । स्वामी निकट से देही आरु ॥ १ ॥

अथ प्रथा ।

॥ १ ॥ धा करतौ धीरा के वरसा । स्वामी अधिक धीलि हरिहरसा ॥
 ॥ १ ॥ धा छुधि माधुं परलि न जाई । जनि हरिजन परुता जाई ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥ उमान रहे अष्टही पदर । सुदलि जनी सारु सुन सरसा ॥
 ॥ १ ॥ स्वामी करे ध्यान दिन देना । जो कहसै बोज धुना ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥ करि शिखण्डवर्ति अनजान । स्वामी को परसाइ करान ॥
 बापारु ।

॥ १ ॥ पतिपुत्र सहित फरै रिसि सेवा तिमि धीपाके सीता याम ॥ १ ॥
 तिमि साधिया बरुनान के पावनी जैसे निकाम ।

समी उर धरा विवर्षी । सेवक को देखा मत भाषी ॥ ११ ॥

साधा देवो गर्हि । तो म माण तर्कोण गर्हि ॥

पूर्ति समी की कसणी सदिधा । केव दिवस अथ गर्हि लहिधा ॥ १० ॥

रवनी सुनि रागो जन धेरा । साधे मते होय निव संहरा ॥

साधन आन सकल पूर्ति खोई । तय दीक्षा देखा जन बोई ॥ ९ ॥

सानी देक होय जो तेरे । राम राम कतिके मत धरे ॥

सानी कला खनन गुम जायो । के दिन गया धुइरि गुम आयो ॥ ८ ॥

जो दीपा जेसो मत सायो । ते कण्ठ गर्हि होवै कयो ॥

सानी धुइरि कसोटी दीन्दी । दीक्षा देन परीक्षा कीन्दी ॥ ७ ॥

आप कला समीसे पूजा । ईसावा मत दीपा जेवा ॥

पूर्ति सेवक सय धर्म सुजायो । शान्ति करि सार लखायो ॥ ६ ॥

कर बरवा समुदायो होई । याको सार मतो जो होई ॥

सानी पाव इत्य जो दीन्दी । एक सेवक को आधा कीन्दी ॥ ५ ॥

रवना कवत होय तय जोरे । रामन देवन सधरी जोरे ॥

रामदेही पर गर्हि राखे । रामनाम रचनसे माखे ॥ ४ ॥

गुम हो भीषक रूप बनरी । अज्ञान पर तार बनरी ॥

सानी कला पवन अव पूसे । गुमसे दीक्षा पूछे ये कसे ॥ ३ ॥

करि लिखा दीक्षा माहि दीवै । समी गुम सुखानाव दीवै ॥

सामीसे करि परनाम । कल अतिके पावै राम ॥ २ ॥

अथ रामा गात्र करि माये । सामीसे को देवन पाये ॥

जाई भीष्मा कला पवानी । परम पावक हरि के मांजी ॥ १ ॥

पूर्ति सिधुच माहि ये समी । आप सिधुसे मजबानी ॥

दीक्षा ।

रामनाम पवन ।

राम नामक पूजा समी को गुम माहि पवानी होत ॥ २ ॥

रामनाम से अथ रामा गात्र मय रि पूसे होत ।

अथ ये देखा अका मयत्त पाये परम सु होत ॥

पूर्ति नामनाम राम ये माये समी के सिधु सिधु पूजे ।

अथ सिधुनि पाप धुइ पाप काय राम नाम से नहि कोय ॥ १ ॥

गुरु गुरु करि माया दीवै अथ गुरुते होय ॥

पुनः स्वामी से रामा मिलिया वहाँ तिकी यावा होय ।
मुदर माहिं लिये अथवा हरिकेशर आये सोय ।

सुवैया ।

(श्रीरामदासीनदेराजकीदीक्षावर्णन)

आन राम मय सय कहे, माया प्रल लिलास ॥ १ ॥
उः के वरुं दयालिसे, मिले नारायणवास ।

दीक्षा ।

हे आशा लक्ष्मण गो देरी । दास नारायण रहे हर्षो ॥ ३ ॥
तव स्वामीजी मये कपाल । आशा दीन्ही आप देयाळ ॥
जब लिलास हल सु जाँर । स्वामी वचन शोभा पर मोर ॥ २ ॥
एक राम के सुमरी मारे । मन लिखय करि याँहि सारे ॥
स्वामी वाले परम सुजान । छोडी सवही आन आशान ॥ १ ॥
आशा लेन उमय जन घाँरी । पुनः स्वामी से अरज गुजारी ॥

चौपाई ।

हो आपसु अय लिख्य न करनी ताँरे देरुँ परम सु वर ॥ ३ ॥
आपसमाहिं युगल बरलाय सेबादोस लिलास यह सन ॥
स्वामी की देरीन जब पायी जप्या दिलमें हय अनन ॥
तव से पुँरी सिद्धयल आय सहेन समाध बहेन से पय ॥
जब से राम टीकले खाय हरिजन गौरी पाये राम ॥ २ ॥
यो प्रसाद जनकी गुन गाँरी किसनदासके जाय राम ।
सो वे कहल मये जन सेरी याँही मजन करे गुन राम ॥
तहाँ एक पूरा जन ताँह सेबादोस लिखैका नाम ।
जाँह राम पावनी गाँरी जहाँ आप कीनी विधाम ॥ १ ॥
देरावली बले गुण परसन रामे सहेन मुकाम ।
प्रथम से दोस नारायण लक्ष्मण दीन्ही जन्म जैवदर नाम ॥
पुनः स्वामीके लिलासिनकी गाँहि हकीकत करि वामाम ।

सुवैया ।

हो भी भजन करे दिल साँव । रामनाम से लिखि विन दाँव ।
दाँस लिखाही परम सु दीँव । सो स्वामी के रहे समीप ॥ १ ॥

चौपाई ।

स्वामीके अर्काई नहिं आसा । सवासमाधि दीप्युं वासा ।
 रामनिजान अजान राता । पर उपकार नामका दाता ॥ १ ॥
 रई दयालि सकल निरदाई । ऐसे रामनाम गुण गाई ॥
 कठिन समय रैक ऐसा आया । कारण अथ बेचई काया ॥ २ ॥
 तिन पुल्लुं हरिजन रैक आया । स्वामीजीकी दर्शन पाया ॥
 स्वामी ऐसे पवन उवाच्यो । चापु रमा दीपे पर धार्यो ॥ ३ ॥
 या जन के परसाद करायो । पीछे गुण हरिके गुण गायो ॥
 तब तार्का परसाद करायो । स्वामी सहित आप नहिं पायो ॥ ४ ॥

चौपाई ।

ऐसे जीवजु आपका, लीया चरण लगाय ।
 जगत जाल बनयन दंडा, रखा राम गुण गाय ॥ १ ॥

दोहा ।

इगारवास जातकी थीका आय सिन्धो स्वामीसे साथ ।
 कहिं लिका नामको टाकर स्वामी की निज बाकर होय ॥
 और सि प्रमदास पुलि आदिक पीपावदी भाला होय ।
 सो स्वामीका भया शोषा कुल अभिमान भूम के होय ॥ १ ॥

सुबोधा ।

नर नारि सो निवभसै करि प्रभसे परसै परं ।
 महिमा करै अजुमादेसै तववापसै मादं तवं ॥
 सतसंग खासि सनेदसै सुख लेव सो अलि सेवसै ।
 पुलि परे धारण दोस ओ सव भाष सो गुण बेचसै ॥ १ ॥

छन्द गीतक ।

सिरत माद भय कलि माहीं । ताई ऊजत रही न माहीं ॥
 साथे पीप उधारण स्वामी । पन्य पन्य गुण अन्तर्वाणी ॥ १ ॥

चौपाई ।

एसे आदि शिव उवादे सुनिषे आगे निज लगाय ।
 आरु आशीराम जन आरु सगुं बेदेसै सवाय ॥
 जो जो पुक्य भया जन परा सो सो जगना स्वामी पाय ।
 जाके सिद्धं राम मिलनकी ताके ऊजत रही न काय ॥ १ ॥

सुबोधा ।

पास विद्यति कस्य नहि कस्ये । सुव पवन द्विद्वेषं सहे ॥
 लघाल यं पीत्य पथी । उदय मधी क्ण निमि माधी ॥ १ ॥
 त्वं पुत्रि स्वामीके पासा । हल गीर करि पवन मकासा ॥
 न पास अय नहि सदाये । तां च लो रवी निराये ॥ २ ॥
 रि सुमिरनं निम न हीं । पथी युत्रि विद्यते कां ॥
 कस्यर आवनकं कासा । पाजपाल सहे निप्य सभासा ॥ ३ ॥
 च माम नपासर माया । शक्तिर समुख आन पथाया ॥
 ई मार करिह पर लया । गिह यत्नोमं दीप्य मयाया ॥ ४ ॥
 नहि विषय सहे परसेसा । निम निम आन पथाये हला ॥
 निहिते वृत्त सुख पाया । स्वामीके करि माय पथाया ॥ ५ ॥

चापाई ।

एतजसे संघाती करिके सुव एक निम कीना येव ।
 हिरान वेव अरे निधिवासर नही सुवाये सायुं मय ॥
 हिरपकद्रिय राधसके अमी वेमी इनके उरमं देक ।
 पाज पाज के नीर पासवे पवन कहे कहे सुव विद्येक ॥ १ ॥

संघाती ।

तदा एक बोला नर सुकी । हिरानसे जानी नहि नेकी ॥ १ ॥
 पास विद्यति कस्य पथाये । अल कायल एमि मती विद्यते ॥

चापाई ।

पास नराण हर्षोमं, रहे अदही जाम ॥ १ ॥
 पाज विद्यतिवास गुनि, रहे प्रीतिकर राम ।

दीर्घ ।

जो निमित्त्ये सो ह्ये आप सम अमपदान से रहे न कीर ॥ ४ ॥
 राम राम हिरराम वासिके सवकी किये पार भव पीर ।
 गारे भव सव वनमनके मारे एकदि पव वज मीर ॥
 हल परकाश अकं ज्युं भासन निधिदिन धान गरक मधीर ।
 तरण जीव समयुं अनेकन निमलकर ज्युं गंगातीर ॥ ३ ॥
 वेदद मिले रामके यद्यम यं हिरराम यमगुह पीर ।
 हिरमकी निम कहे न चाहे ज्युं पीया रेवास कधीर ॥
 राजा एक एक सम जान वेसे ककर वेसे हीर ।
 परमारय हिर पथ वलाये स्वामी सव वे तरक फकीर ॥ २ ॥
 पाजल सिपल आप उर मीजन चाखत मही मय रस मीर ।

कोई आन बर्दाह कवन कोई आन बर्दाह नाव ।
 कोई पाठ विचारपर बाई कोई बाँर बर्दाह नाव ॥
 कोई आन बर्दाह करदो कोई आन बर्दाह नाव ।
 पूरै सेट करै विष बाई सामीक निव रहै समाज ॥ १ ॥
 जैसे अथपुटी के माई बाँहव सुनन संग खु बाँर ।
 आनम पाँ गुह पाठ संग परि पोरे

सुवधा ।

अथवा सेट आपरा जगती । सेवक सेवा एकहि सगती ॥
 हय हय दहीन के आवै । सो सामी को सेट बर्दाह ॥ १ ॥

सुपाई ।

सामी दयालि कथालि के, लिस ककर लिसि धार ॥ १ ॥
 तीन लोकको सुख तज्या, सीरकी फग वार ।

दीहा ।

ऐसे हठवै सेट रखाई । देका वंका जेम अखाई ॥ १ ॥
 जब देखा व्याकुल ना जानकी । सामी प्रसन्न किया वा अनकी ॥
 सीरज धार एवन तव बोली । सामी सेट करी से सो स्यो ॥ ५ ॥
 नीरधर बाही हीनवत । बोली नाहि गयो हीनवत ॥
 जब जन विरह करन के जगो । सेट गयो सामीके आगे ॥ ४ ॥
 अथवा नहि जेवा हरियाल । मान मान जग एवन हमार ॥
 पाहिले सेट करन गुन खाई । तो प्रसन्न हय जेव भाई ॥ ३ ॥
 हमार सीर नहीरे भाई । रामप्रताप आनन्द सदाई ॥
 सामी वार विष की चीन्ही । सीर आनिक सेट से चीन्ही ॥ २ ॥
 पण बलव सो पाछी आयो । सीक लोपा सेट बदायो ॥
 पुनि जन बयो भाग करि आया । सामी वहरि ध्यानमे जगया ॥
 सामी सख से राखो रसो । सतवासेन विपक जेयो ॥

सुपाई ।

अथो नकुल मया कवनको पांडव विगासे किया विसक ॥ १ ॥
 तव विषवतत मोअन कीन्ही दीन्ही सवै सजको देण ।
 अण सु सहित किया सुन गयो सो जन मतो विचार्यो एक ॥
 सतवासेन विसो पार सारो भाकी सख सु कइ विवेक ।

सुवधा ।

सतवासेनको प्रसंग ।

कोठ आवत कोठो वृ पकनत, सतसंग द्याजि सु प्पेवनत ।
 कोठ आवत जोजन आपनत, गुह धान धैरान सु साधनत ॥ १ ॥
 कोठ आवत कोठो सु मुत, अति धैर अतिन्य मनो उरत ।
 कोठ आवत सो जन जोजनत, सतसंगति जामि पयोजनत ॥ २ ॥
 कोठ आवत कोठो प्पेवनत, गुमयस्य ददय गुन संवनत ।
 कोठ आवत जोजन जोजनत, गुहदंय सुसंगति कोजनत ॥ ३ ॥
 कोठ आवत कोठो सुसनत, वय घाल मिदाल वसनत ।
 कोठ आवत जोजन दोहनत, निज नाथ विजोवन लोचनत ॥ ४ ॥
 कोठ आवत कोठो सिद्धि पदत, ररकार सु यान मुखा रदत ।
 कोठ जोजन सोर सया उरत, निज आपन दस अर्धु प्पेवत ॥ ५ ॥

छन्द श्लोक ।

जन साधना विष्णु अवतर । दशन भाव लोका अपरा ॥ १ ॥
 सिद्धयलपुत्रि अयोधा वैसी । और पुत्रि नहि कोक वैसी ॥

चौपाई ।

इह लिय सुरवर देदी को, करि पावन मधाराज ।
 आय विराज आय यह, याल महोरख साज ॥ १ ॥

दोहा ।

समी आयु निजपुर धाम । रामल करत लहज सुकाम ॥ ४ ॥
 वय अस्वति करे परणामा । किरे सदन कुं निज शिष रामा ॥
 अब गुन पीछा करी पयानी । यह शिष पीछ दमासि मानो ॥ ३ ॥
 यं गुन सया समीप दमारे । हम गुन तं कवह नहि जारे ॥
 अवर माहि वसै निजि रद । वसै कमावनि निजि मय सिन्धु ॥ २ ॥
 गुह हरिराम कखा वय पसे । होमल कखा आय कुं वैसे ॥
 यणी दूर आयु पदु जाया । मन से पाछा करे न जाया ॥ १ ॥
 पुनि आवन की सासि कीन्दी । गुह सुरति शिष हिय परलीन्दी ॥

चौपाई ।

वै अवाह वै सरण रत, मिले सु एक समय ॥
 शिष को रामा जन जिषा, याल जिषा गुहदय ।

दोहा ।

गुकदंय जैम संदुष अवाह । करि सेवा शिष लीन्है सु लाह ॥ २ ॥
 तव करि यह रक्षा सु आय । सिद्धयल को आवन करि मिलाय ॥

॥ १ ॥ कर्म ब्रह्म प्रसिद्ध, विलिखि आदि अनादिकी ॥ १ ॥

कर्म अतिक्रम्य ब्रह्म, महत्त्वं देय पराधिप ॥

। शिरः ।

अथ स्वामी अर्थात् स्वतन्त्र मान्नी । स्वयं कर्म अति प्रीति प्रियता ॥ ३ ॥

यत्नं यत्नं अथर्व कर्म परार्थं । यत्नं या अर्थात् मुद्रितार्थं ॥

यत्नं तो स्वयं अथर्व ही स्वामी । पर तब वृत्त अथर्व्या अर्थात् ॥ २ ॥

स्वयं यत्नं अथर्व्या ही स्वामी । यत्नं तो वृत्त अथर्व्या ही ॥

यत्नं ही यत्नही अथर्व मन्त्रक । यत्नानि यत्नं दीन कर्म ॥ १ ॥

कर्म करायन ह्यम कर्म यत्नं । यत्नक आय सकल कर्म यत्नं ॥

। यत्नः ।

। निरूपयत्नः ।

यत्नं कर्म अथर्व्या, यत्नं यत्नं कर्म ॥ १ ॥

यत्नं यत्नं अथर्व्या, यत्नं यत्नं यत्नं अथर्व्या ॥

। शिरः ।

। यत्नः ।

यत्नं यत्नं अथर्व्या । यत्नं यत्नं कर्म ॥ २ ॥

यत्नं यत्नं अथर्व्या । यत्नं यत्नं कर्म ॥

यत्नं यत्नं अथर्व्या । यत्नं यत्नं कर्म ॥ १ ॥

यत्नं यत्नं अथर्व्या । यत्नं यत्नं कर्म ॥

। यत्नः ।

यत्नं यत्नं अथर्व्या, यत्नं यत्नं अथर्व्या ॥ १ ॥

यत्नं यत्नं अथर्व्या, यत्नं यत्नं अथर्व्या ॥

। शिरः ।

यत्नं यत्नं अथर्व्या, यत्नं यत्नं अथर्व्या ॥ १ ॥

यत्नं यत्नं अथर्व्या, यत्नं यत्नं अथर्व्या ॥

। यत्नः ।

यत्नं यत्नं अथर्व्या । यत्नं यत्नं अथर्व्या ॥ १ ॥

यत्नं यत्नं अथर्व्या । यत्नं यत्नं अथर्व्या ॥

यत्नं यत्नं अथर्व्या । यत्नं यत्नं अथर्व्या ॥ १ ॥

यत्नं यत्नं अथर्व्या । यत्नं यत्नं अथर्व्या ॥

पाद एक लक्ष्मणा नाम् । आका भवा अहला नाम् ॥
 सो लक्ष्मी क दरदान भवा । अति कठलाकर वचन सुनपर ॥ १ ॥
 समस्तो और अनाथ न कोई । जो कौत सिंह लोकात्तं कोई ॥
 और नहीं बदन के काई । अब मैं कदा कं जनराई ॥ २ ॥
 अब लक्ष्मी मन प्रेमी घाति । धीरा जैसी परम विवाति ॥
 हरिजन कोई पर उपकीर्ति । यह यह आवन राम सुहृदी ॥ ३ ॥
 आपर लक्ष्मी भवा जगल । अब सो कीयो बहव निहाल ॥
 और प्रथम दीक्षा दीन्दी । कठला सिधु जग रक्षि कीन्दी ॥ ४ ॥
 लक्ष्मी जणी जगलसे साई । संपति विविध भालि न साई ॥
 लिनकी वारिद भयो सु प्रसे । पुनि सो सिध सुदामा जैसे ॥ ५ ॥

श्रीपद ।

अममलम भलि गाल की, गीत जवनी न आय ।
 लिनकी गंगारामसे, लकी रहीं गलगाय ॥ १ ॥

दीहा ।

जैसे गोपाल संग सु गालं लिय बरिवालं लिखतालं ।
 है लिय गल करि तबकालं हव कजालं अम दालं ॥
 धो करन निहालं आप बालं अजुभव साजं विचारं ।
 मति गुनि गालं कर्षा कहैलं परवा गालं नहिं पारं ॥ १ ॥

उन्द विमर्षी ।

शिगुठ हरिवाकदेके, परवाँ को नहिं पार ।
 सुन सो आमी कदन में, और हू गुन अपार ॥ १ ॥

दीहा ।

यो गुम लक्ष्मी कला अनंत । वासर किया रैन को संत ॥
 अब लक्ष्मी बोले जन सेवी । हरि कतां पर्यं नहिं है परी ॥ ११ ॥
 मेरु करै गुल सँ हरि साह । पुनि वल गहुरि मेरु सँ होह ॥
 सांच मरै रामकीं सेव । जो रक्खा है सो करि वेव ॥ १२ ॥
 यकी मरी अवधो मानो । अह गुम हरि कीं समर्थ जानो ॥
 यो वरिय राजीवो छाँ । कौत जाने को गार्हो जाने ॥ १३ ॥
 हारै काम जगन से मारि । मिलिये राम अंतरके मारि ॥
 अब गुम वरी किया रे मारि । ऊपन मनमें रहै न काई ॥ १४ ॥
 धो कहि दाल समीची भवा । शिप बंदन कर शहर सिधाया ॥
 लक्ष्मी गहुरि समाधि जगारि । गुल्यदाहर मारि इकतारि ॥ १५ ॥

सजाव राम लुप्ये । ऐसे उर में मया अने ॥ १ ॥
सवाहि मख मये हिय माया । प्रति सागी प्रति अभिजाया ॥

चौपाई

कर यावा करतार से, आप यहा दयाल ॥ १ ॥
कारज करवा कारो, दारणापक रिछपाल ।

दोहा ।

एसे समरय सनत दयाल । कवनामयीकरा प्रतिपाल ॥ १ ॥
आप किया तनमें परबसे । मन्दा सवकी योके अदेसे ॥
राजन वीस विवसली काया । हरिसे कोल करे परे आया ॥ ५ ॥
यो मिलि सकल करी जो करणा । सागी सुनी परमापद दारणा ॥
ओ मन्दा आरयो ऐसे । सागी विना हिय अब कैसे ॥ ४ ॥
नारायण आहिक सब दस । ब्रह्मव ही जन मये उदास ॥
पदर दिन मन्दाके आगे । हरियानन्द किया वज्रलग्ना ॥ ३ ॥
अबराज हुयो एक आति भाती । लखि नहि सकै कोउ वनवासी ॥
मन्दा फिरत दारका लीन्दी । विविधि भाति सामगी कीन्दी ॥ २ ॥
बैद्य सु मास कल्याण सारम । विविध उदरारु हरिजन आरम ॥
सब जनपदीन्दै समवाज । ग्राम ग्राम हरिजनके दाज ॥ १ ॥
एक समय सब सिखा विचारि । मन्दा करण सूत्र लिखासी ॥

चौपाई ।

जो हिरदै निखे गहि राखे सो भवसागर आवे गाहि ॥ १ ॥
गावत मधुघान दर्यावै सुनता परम मोक्ष मिल आहि ।
हरि गुरु की अर्था करि आरु लखिबेकी सेरी मति काहि ॥
हुि चरवा जाती अति सुन्दर परवा मया मास एक गाहि ।

सुधा ।

चार पाव परबे से लगत । सो सुनि सुख पावे हरिमक ॥ १ ॥
प्रति सो विवस अरु दया जात । परवा मया अगत विषयात ॥

चौपाई ।

अब आगो पान करी, हरि गुरु जया सदाव ॥ २ ॥
परम सङ्क आदि, एतन मये पदीत ।
रामबास के भावसे, किया भक्ति उपदेश ॥ १ ॥
षोडश पावन किया, गाल सु मन्दर बेरा ।

दोहा ।

मान करै करत पनाग । सिंहखल आवै अनाग ॥
 सुनि जामी आष की बाजा । पाय जन दशान के काजा ॥ १ ॥
 पूछे समाचार पुलि साग । जामी कहै सकल निजाग ॥
 निज निज मान जिया विधाम । निज निजका सु प्रताप नाम ॥ २ ॥
 जेना दिन खरुण रहिय । तेना निज निज करि कहिय ॥
 तहाँ जहाँ मिलिय हरि चारै । तहाँ तहाँ के नाम उचारै ॥ ३ ॥

चौपाई ।

सायु लख माणद कहै, पूसे सन दयाल ।
 एक भजन की का कहै, विभूजन करै निहाल ॥ १ ॥

दोहा ।

परमारपका फय प्रतापै । निज निज की हरिचरणौ ज्ञापै ॥ ३ ॥
 जामी अमर प्रजन उचारै । जीवन के भय नाप विचारै ॥
 पुलि हरिदेव सु प्रीणित पूसे । विद्वज्य सनकादिक जैसे ॥ २ ॥
 नारायणदास हर्षी संग । जौ मनसिद्वि भयाम निजअंग ॥
 सु नी सन दहौ के साईं । अमर लोक से आप साईं ॥ १ ॥
 जामी तहाँ जहाँ प्रयातै । तहाँ तहाँ महिमा विजातै ॥

चौपाई ।

पूसे उरख बाळके, नाम नाम में होत ।
 सधक उषे भावना, दशान करन उथात ॥ १ ॥

दोहा ।

सु है कपिल महासुनि जामी । इनकी ऊपर मोक्ष है प्राणी ॥ ७ ॥
 स्वर्गै बरन प्रदोषा गाथ । रामकय सधके मन गाथ ॥
 मग जामी बालग गहि देव । जामी की गुरतै मिल सेव ॥ ६ ॥
 देल करी आतिथदा सहेव । सेवा भया सुदेस रहिव ॥
 करि अलि प्रीति सदन पराय । बहु भोजन के भोग जगाय ॥ ५ ॥
 तहँ हरिदास गथावण आय । आय जरी जामी के पाय ॥
 जामी शोक शोक गाथ । आय कर्म गाथ जहाँ हो ॥ ४ ॥
 गहन हर पड़बावण आप । करि प्रणाम पुलि भजन विधाप ॥
 यौ सेवा करि जहा जोग । गुरु की गुरत प्रसन्न सु कीया ॥ ३ ॥
 रामदास कह जन धन देरा । में वी सेवा बरन का बेरा ॥

सपत्नी स्त्री करण की जगो । प्रति आशीन होय अजगो ॥

हम गुणकी जगो नहिं स्वामी । नक यगसिधु अंतरजामी ॥ २ ॥

स्वामी कहे नक नहिं काँइ । हरि गुणवो सगदी सिधु होइ ॥

अधिकार करे नर नाथी । पित्र पित्र स्वामी गरी भुंखति ॥ ३ ॥

पति समथु गुनर पस साँइ । ताल ताल छेले छिन साँइ ।

स्वामीकी प्रति करत पखाना । करत सधे पावर जखाना ॥ ४ ॥

दीश ।

भाणा साँइ भीरकी, नर गुणो पवन जगर ।

सो मुख महिमा उखर, एसे सरजनहार ॥ १ ॥

वापडै ।

पावर अंधु तालवे आवे । सधे सोजे अतिही सिधु पावे ॥

स्वामी पाँच विनाला पावे । यहु साजन करिके सन्तोषे ॥ १ ॥

मन धाँडित सो हार करीया । स्वामी सधे कं आवर दीया ॥

जब प्रसन्न हुवे जनसार । आधा साँनि चले पुलि होर ॥ २ ॥

पण पण्य माँइ गुन गाँवे । स्वामि सकय हृदयमं जवे ॥

पुनि सधे आपसमं वतलावे । स्वामीकी गति जखी न आवे ॥ ३ ॥

एसे करवे सकल विधाए । जेते जन उत्सवमं आए ॥

सामयस अब माँगी आधा । जगत जन भुंकी जाया ॥ ४ ॥

स्वामी कछो रही गुन धाँइ । इन कारण उठरे अब माँइ ॥

करि प्रणाम यहुव परकर । आवे मकर देवाँ मँधारे ॥ ५ ॥

पुनि स्वामी मन भयो उदाँसे । अब या नरलोकन के वासे ॥

विष जगो अमरापद माँइ । जहँ जग जाल काल उर माँइ ॥ ६ ॥

आवर करे पाएपद जोइ । नन्द चिन्त अति छे साँइ ॥

स्वामी कछो रही सुखाँइ । काल कियो जवही मं आवे ॥ ७ ॥

यो कहि सधे वरुव पहुँचावे । पाडा वेगा वेग वलावे ।

पुनि सो बार पाँच दिन माँइ । जो जी आनी सो पहुँचावे ॥ ८ ॥

स्वामी दिवस कालकी आया । प्रातसमय स्वामी करमाया ॥

परम लोककी सौज माँइ । अब निश्चै सवकी दरसाँइ ॥ ९ ॥

आगम तीन पहर पुनि साँइ । पाव विख्यात जनमं होइ ॥

दीप्याँइ विंजुठ पयाँरे । एसे सवही लोक उखाँरे ॥ १० ॥

अहं अहं पुण्य खबर हु पाँवे । तहं तहंके देवानकी पाँवे ॥

यो सधे हलक बाँजलाँ आया । यहुरि याद मँकेकी आया ॥ ११ ॥

याँच श्रीर सन्त बहुरेए । स्वामीके चरणो काँ खेए ॥

कारण जे एसे । हरिकारण आवे घुर जेसे ॥ १२ ॥

सब पुर माहि ऊपर्या माय । अब लगे खानी के पाय ॥ १ ॥
सामनाका ये विधाना । साकट अब है परे विधाना ॥

बापाई ।

अब दही बहू घल करे, घल अबू अबू बय जाय ।
हरि करवा क्यों माहि हूँ, हरि हरिजन के माय ॥ १ ॥

दीहा ।

उन मन प्राण घाल पर वारै करै सकल मिल जौकर ॥ ४ ॥
ठही मरल लोक भलि पूरै मिटनी व्यास एक विनवार ॥
बोध लगी सीदखल ऊपर परणी एक अबूदी याद ।
अब नय बही पवन एक परली जाकी बहव ययो विस्तार ॥
हरी हरी करि बरी प्रीतिसे दोष घरी लगी कथी पुकार ।
याँ कहि घाल विराजे आश्रम निव शिष्य को वैदय्ये वार ॥ ३ ॥
गोकी बही मरोसी माकी नहि चूकै अवसर निवार ।
सयकी करै करी मलि आदि रोहित नही राहै करार ॥
खानी के घोरज मन ऐसी बना जिनी हरिसे रकार ।
आदि शिष्य विनव यहू आने अब मय कीही कहा विचार ॥ २ ॥
होपी लोक हूँसी अलि दाने जाने नाही नाथ सुवार ।
व्यासा मरे तबकई मने बालक करै वारही वार ॥
अबरी काम कठिन प्रयायी साकट पलठयो बचन गवार ।
भावे नही लोक पुरमाही ऐसी अटिया याद अपार ॥ १ ॥
सामनाय कभी नहि कारुं बही धन्ये लया मंडार ।
बाईं भाईं रामसनेही सब आय खानी के वार ॥
याये सबे महीसब ऊपर अबू अबू पूगे समवार ।

सुवैया ।

अब सिद्धि नयनिहि मिथ, धाजद हूँ सु आन ।
धी खानी के भवन मय, सब विधि मरे समान ॥ १ ॥

दीहा ।

सब सामान लपार करायी । जो चाहे सो वही परायी ॥ ३ ॥
अबकी समाधान सब कीयो । हे नाणी तू कबल करि लीयो ॥
कभी कसै पहिले भाई । अब चाही सो करे मंगाई ॥ २ ॥
खानी वही विरासा दीनी । कठणा परम सकल पर कीनी ।

के लीं दीप धारणी चोरी । के वृंत्त मूयभावे सोरी ॥

यां कहि जय वृंत्त उजायी । धार माह गरी अटकयो ॥ ४ ॥

उद्यम करत गरी यलि आय । ग्यो कियो आप जिहि जाय ॥

पूत कपूर समिधि सब लीनी । बाहिकिया बेहकी कीनी ॥ ५ ॥

बली मुनिधि परगरी सुन्दर । मोहै सुर मुनि सहित पुरंदर ॥

पाल युवाधिक ले नरनाथी । सबके भाव ऊपयो भाथी ॥ ६ ॥

आनि आनि पूत सीवन जनी । जेव सुपुन कम सब भाथी ॥

बैसे पूत अयोनी भाथी । प्रत सबेस दया भाषे सिजाथी ॥ ७ ॥

एसे सकल पवित्र हि अये । सबेस जन्म दीप मिदगये ॥

जय भसी दीवाल जे होई । तव निजदास सुमाली सोई ॥ ८ ॥

साधिव रहिया श्रीकल गरी । पाँच सात पदया जे जायी ॥

परवा की कोर पर न पाये । आहि अन्तली आगम जबाये ॥ ९ ॥

दीही ।

पर जेई कृण घालकी, अपरंपर अनन्त ।

विद्वान्द जगज्जग मदी, सदा विरलिय सन्त ॥ १ ॥

यह परदे रत लोकके, सिने सु वरने सोरे ।

भाग्यमान अब कहव जन, सुखुर जसव होरे ॥ २ ॥

उत्पय ।

सूवर अठारह जान एवं पुनि द्वािम पूर्वोत् ।

वैच दिके सभसी मिले परमात्म ईसे ॥

घार सु दिकर घार यान तव यज्ञे सु यान्यो ।

आप सुखन्द दोरीर एवं गुंजाहि निवायो ॥

दोराणय सीव सेले सकल अनत सु जीव उधासिया ।

नलोका बाल परिल्याग तव परम सु याम पयासिया ॥ १ ॥

सोरो ।

कर वन तर्जित प्रकाश, पुलि आकाश समार है ।

पेसी दीप उजास, सन्त मिले परमात्म ॥ १ ॥

उन्द परदी ।

ज्योति ज्योति मिल एक होरे । जल जवन पूर्वो निम न कोरे ॥

दरीजन प्रख माहि । यवजलमें आये वहुहि माहि ॥ १ ॥

सोरो ।

नमी नमी हरिराम, परम याम हरिसं मिले ।

संग सदा एक खाम, आहि मय्य अपवसान ॥ १ ॥

पुनः शुकं प्रति शक्तिं तदापि । समाप्तीं करवाहं सति ॥

शुद्धिं सकलं वरुणं चैव । समाप्तीं वनं मनं मनं चैव ॥ १३ ॥
पुनः सौ पुनः शुकं वीणा । समाप्तीं एकं कलां चैव ॥
एकं कर्तव्यं तद्विधां शुकं । ते आया निजं जनको सौहृदं ॥
तार्कं समन्वयं कुरु कथिणी । सौ निजदासं मानं चरं लक्षिणी ॥ १५ ॥
जीवनदासं समुत्थिं यद्दं सैव । यदंतीं पासं चालं धरिं चैव ॥
समाप्तीं कलां यवनं पुनः शुकं । शुकं लक्ष्यां चैव को चैव ॥ १६ ॥

श्लो० ।

समाप्तीं संचं पहिलीं शुकं वीणां प्रति ।
शिव-यां शक्तिं च अस्तमे, जन समाजकं शक्तिं ॥ १ ॥
पूजा परवा अन्तं है, जाका अन्तं न पर ।
शांताम इति वीणां, परया मतिं अनुसर ॥ २ ॥

श्लो० ।

शिव शुकं शय लगाया । शरं समन्वयं तव आया ॥
मायव्यं प्रति कियो पयानी । देवतं सवही लोक सयानी ॥ १ ॥
आसन मार विराजं पूसे । चल पलवीर विराजं वैसे ॥
पुसेहि नैनं मुदिं विवलाहं । सुदतिं प्रस कं शक्तिं समहं ॥ २ ॥
आप शुकं चंद्रं चंद्रं वलिं मानं । यदाचं चर निजयं मानं ॥
सव ही से अवरुणयुव भाऊ । समाप्तीं की मति लखी न काऊ ॥ ३ ॥
कुरु एक लखी आसि कं वास । कवरुं न रही वासिके वास ॥
महाप्रणव्यं नारायण पया । तवही यदं लिखुटी आया ॥ ४ ॥

श्लो० ।

तदर्थं चैव प्रसादं पुनः, सपुं मयं शिव साय ।
शांताम देव प्रसादं मति, लखी न जावै कोय ॥ १ ॥

श्लो० ।

पुनः शुकं चंद्रं जो मोटी । माया जवै वारणां छोटी ।
शक्तिं कुरुं देवतां वीणा । यां शुकं चंद्रं देवतां शक्तिं ॥ १ ॥
शक्तिं कुरुं शक्तिं वीणा । यां शुकं चंद्रं देवतां शक्तिं ॥ २ ॥
यां शुकं चंद्रं देवतां शक्तिं । यां शुकं चंद्रं देवतां शक्तिं ॥ ३ ॥
जव शक्तिं वीणां शयणक । ते समाप्तीं मतीं शयणक ॥
शुकं मतीं शयणक । याकां मयं शक्तिं आया ॥ ४ ॥



मयिरे धीन भासि धीर वापज, अन्तर विरहिति तीये ।
 आदि ए अन्त तजय तव सिमित्त, मन पय कसुं सधी ॥ ७
 अयक सिर्षा परम परमानन्द, धीनयान अयार ।
 निमज करण मदी सिधसामर, विरहिति का मरार ॥ ८
 ऊणत एक पिपा मय मंजन, देन राम सन्धी ।
 पीका जया सव रस रसता, प्रमा मयुं विरुधी ॥ ९ ॥
 जयु विरा आलस मिट अगा, गधी पय अवादे ।
 यय पयादे देक मुस सार्दे, हरिवैव सायन सार्दे ॥ १० ॥
 एकदिन माट अज आदि अयत, कला अनेक सार्दे ।
 गीला कया ययुं शीर्षा, यास उखासा मयुं ॥ ११ ॥
 ररर रोम यरर यरर, गामिकमज सिजदला ।
 नार उछाह नारि तव सरजल, अन्तर तार यजाला ॥ १२ ॥
 वाट हजार नारिं धरनमी, ररर ररर ररर रमाला ।
 नल दिख विबु एक यानि रमता, मनया पयन सिजला ॥ १३ ॥
 जेवि सधीर मया यानि देका, गान नारं यररला ।
 आतम मया सध धर परवा, चरवा राम विकाला ॥ १४ ॥
 के दिन रखा नारि धर मारी, देकदिन करण पयाला ।
 मन अर पयन सिजे जिय प्रमा सिरति ययुं देरसाला ॥ १५ ॥
 भिन भिन मयुं जला धर निक्षय, आतम तवय प्रकाश ।
 उदय देला सध पावाळुं उदटा पजय मयाया ॥ १६ ॥
 पय समुप ययुं गत देला, रमिषा सध पयाळुं ।
 पूरव जलति पण्डिम दिधि आया, वर वरया बुकनाळुं ॥ १७ ॥
 अमृतधार वक धर शरणा, गारं विरुं देक शीर्षे ।
 ययुं देन पूरु विन उदणा, गानोना अन कौं ॥ १८ ॥
 जया मग अयमा मरी, यास देन वतकाल ।
 प्रकट देकीसुं मणिपा जिया, सिरति ययुं उजवाळुं ॥ १९ ॥
 प्रमा चरुया मयुं की यारी, सध धीरत उवाया ।
 पूरुवा प्राल सुंदे के नाके, सधे रल जया ॥ २० ॥
 सध जे उजवा गानके मारी, अरुंन माट अन्या ।
 देन आदि ययुं सिरे जालक, नमस्कार करे वया ॥ २१ ॥
 गीला ययक अदिरल योया, राम अनेक उवाक ।
 यार वाजा वहुं अनवा, कहिये कान विवाक ॥ २२ ॥
 न जमी सुंद परवा, नीर विना सर मयिया ।
 ॥ २३ ॥

वरुण मरु अश्विनी सौरि, एक अश्विनी सौरि ॥ ४० ॥
 श्यावा शशि रक्षा अश्विनी, सवरावर सव शौरि ।
 दीता त्रिक सव पुरिपुत्र, सविधा कारज सौरि ॥ ३९ ॥
 शौरि कर्तुं नो वल न कौरि, इतिथा जन सप्त शौरि ।
 शक्ति विवार शेष अश्विनी, शक्ति महाकल शौरि ॥ ३८ ॥
 अश्विनी कर्तुं मं शौरि, वरुण अश्विनी अश्विनी ।
 निज कण नाम शौरि निव मुका, कर्तुं काल शौरि विरवा ॥ ३७ ॥
 सवरावर शेष पर इति, अश्विनी पर शौरि ।
 सिपुमण शेष अश्विनी मुका, कण कारज शौरि ॥ ३६ ॥
 सव शौरि रक्षा शौरि, शौरि शौरि शौरि ।
 शौरि कला शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ॥ ३५ ॥
 शौरि शौरि अश्विनी अश्विनी, शौरि अश्विनी शौरि ।
 शौरि शौरि अश्विनी अश्विनी, शौरि अश्विनी शौरि ॥ ३४ ॥
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ।
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ॥ ३३ ॥
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ।
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ॥ ३२ ॥
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ।
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ॥ ३१ ॥
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ।
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ॥ ३० ॥
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ।
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ॥ २९ ॥
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ।
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ॥ २८ ॥
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ।
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ॥ २७ ॥
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ।
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ॥ २६ ॥
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ।
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ॥ २५ ॥
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ।
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ॥ २४ ॥
 शौरि शौरि शौरि शौरि, शौरि शौरि शौरि ।

॥ १६ ॥ सायु आशय नमो गतिं समस्त, वा संस्तुते ॥ १६ ॥
 अस्मिन्मय आशु विद्वद्द्वयं, एत परकार कर्तव्यं ।
 ॥ १७ ॥ पौषः परम स्वर्गकं स्वर्गक, कारण अकारण करो ॥ १७ ॥
 अत्यय धाम नमो नमो, एत नमो नमो ।
 ॥ १८ ॥ वा तिलिहं मारुतं द्वै अक्षरं, सद्रहं सद्रहं विद्या ॥ १८ ॥
 एत आस्तिकभाव कर्तव्यं, अक्षय अक्षय निकर्तव्यं ।
 ॥ १९ ॥ एत तिल एत परम परमात्म, एकपक्ष त्रिकोण ॥ १९ ॥
 एत त्रिकोण काल गतिं करतव्यं, मातृया त्रैय त्रिकोणम् ।
 ॥ २० ॥ एकत करणं कर्तव्यं, एकत मूर्ति, एकत मूर्ति मूर्ति मूर्ति ॥ २० ॥
 मयम मातृया परमात्म, अज्ञानमय स जीवम् ।
 ॥ २१ ॥ मूर्ति आदि अत्र मय जीव, स्थिर आकारो अपरम् ॥ २१ ॥
 संभव मया लला एतं प्रसा, अत्र विद्वद्द्वय त्रिकोणम् ।
 ॥ २२ ॥ एतं नमो त्रिकोणं सत्यं, मोक्षो धाम एतम् ॥ २२ ॥
 धीर्वा त्रैय जलनं नहि एतं, आदि अस्ति एतम् ।
 ॥ २३ ॥ मयम योम लभ्यते वेदा, कुल मयि एतं अत्रिभिर ॥ २३ ॥
 जगत्तं नमो नहि माया, नवमहं त्रिकोणं नहि एतम् ।
 ॥ २४ ॥ एतं त्रैय आशय आशु, त्रिकोणं नमो नमो ॥ २४ ॥
 कुलसो अत्र द्वै एतं मयम्, कुल मयम् कुल मयम् ।
 ॥ २५ ॥ एतं कर्तव्यं विद्यते आनन्दी, एतं नमो कर्तव्यं ॥ २५ ॥
 एतं एतं कर्तव्यं, एतं कर्तव्यं, एतं कर्तव्यं ॥ २६ ॥
 मया आदि कीटपुत्रान्, धीर्वा नमो कर्तव्यम् ।
 ॥ २७ ॥ एतं एतं एतं एतं एतं, एतं एतं एतं एतं ॥ २७ ॥
 एतं एतं एतं एतं एतं, एतं एतं एतं एतं ॥ २८ ॥
 एतं एतं एतं एतं एतं, एतं एतं एतं एतं ॥ २९ ॥
 एतं एतं एतं एतं एतं, एतं एतं एतं एतं ॥ ३० ॥
 एतं एतं एतं एतं एतं, एतं एतं एतं एतं ॥ ३१ ॥
 एतं एतं एतं एतं एतं, एतं एतं एतं एतं ॥ ३२ ॥
 एतं एतं एतं एतं एतं, एतं एतं एतं एतं ॥ ३३ ॥
 एतं एतं एतं एतं एतं, एतं एतं एतं एतं ॥ ३४ ॥
 एतं एतं एतं एतं एतं, एतं एतं एतं एतं ॥ ३५ ॥
 एतं एतं एतं एतं एतं, एतं एतं एतं एतं ॥ ३६ ॥
 एतं एतं एतं एतं एतं, एतं एतं एतं एतं ॥ ३७ ॥
 एतं एतं एतं एतं एतं, एतं एतं एतं एतं ॥ ३८ ॥
 एतं एतं एतं एतं एतं, एतं एतं एतं एतं ॥ ३९ ॥
 एतं एतं एतं एतं एतं, एतं एतं एतं एतं ॥ ४० ॥

सज्जन परल विम विव भूली, कुलवन्ती कुल जना ।
 यमाप्यसि दुमल मं देवा, परमारथ विव जना ॥ ५८ ॥
 सदा जग सती जल देही, आसत सिद्धि सदाई ।
 परल सभाय विना करै रहता, गरजा सीस न करई ॥ ५९ ॥
 वनिता समय पील की पारल, परनात साख विरोमन ।
 शपनी कला विछावत थाप, जानत सबु मनीमन ॥ ६० ॥
 साद अगाई सिद्धा का सिद्धय, परलु मूढ सदाई ।
 निगुणसार वख अजयिर, अपरमपार अतीता ॥ ६१ ॥
 शीतक सिद्ध मोक्षको मारग, परनात जना सदाई ।
 नमस्कार देवा जनकता, मूल न परल करीई ॥ ६२ ॥
 जेनी देव देव शूक पावत, पिता आय जत साख ।
 मिक प्रसाद साय पर लिये, सज्जन मूल भाख ॥ ६३ ॥
 सार प्रकार मनात विर वाणी, वाका मूढ वजाऊ ।
 शयु मारि सवकी परिपूर्णा, गरया पार न पाऊ ॥ ६४ ॥
 परनात सदा साय परदासिल, दीप शूक सत सिधा ।
 प्रथमहि मिक पराया इमकी, खास खास पर सिजा ॥ ६५ ॥
 लिनका दोस पास निव बरणा, मन वख सिद्धि इमती ।
 अजिमेव वाख साख उर आनन, परमपुरुषसु पाती ॥ ६६ ॥
 आनाजद गुलम गुलानी, निवमति एकल धारा ।
 मूढा मजा मयव बाकर, पर जया प्रधिपाय ॥ ६७ ॥
 कठना भाय शीनती दोसा, आदि अनन देक अना ।
 समता लिपा सबु सिद्धोपेक, सिद्धल विव मन अना ॥ ६८ ॥
 करवा राम भक्ति मं करवा, सदा दीनता मारि ।
 अकरणाकरण उपायन समरथ, बरना शरण जन सारि ॥ ६९ ॥
 देन आदाय वायक दलवाणी, दोस विरोमनि सार ।
 शयु शूक मनात वख आनन, अरस परल दीविर ॥ ७० ॥
 प्रथम जगत से भया उदासा, माया मनु अनेका ।
 सन अजाल वदा कुलकमा, यती गुह मन परा ॥ ७१ ॥
 प्रथम परकर मन गिरगाम धारण, सवेसावि पर मारि ।
 जग जग पासी मारै वाहन, सिद्धय जग बजाई ॥ ७२ ॥
 सदा निद्रिक रूढि निद्रिय, यथन से निवारा ।
 कथल मनु जय उर आनन, राम शब्द मववाला ॥ ७३ ॥
 अन्तःकरण वासना आनी, वासनी वन मूढ रहता ।
 वली कोष करै नहि जाई, सत निद्रिया सत रहता ॥ ७४ ॥

पय वि का वृ "वि" जगती, परमपद गजवती ।
 पावो वी न मय नहि जेहि, यद् "पवि" का याना ॥ १०१ ॥
 चैव "वृषवति" चिक्कं भाति, धरिया स्व ज्जाला ।
 "भूक" भू सकल भव भूदण, "मनुवृक" उ गुण गाला ॥ १०२ ॥
 मन वृत्ति स्थान वासना स्थानी, तन पर ईद वृषाणा ।
 "सुसुमार" सन्तका चलाता, वीर सपुं भूदण ॥ १०३ ॥
 "सुसुमार" चिक्कं भाति चलाता, चिचमं विम अंका ।
 "भूषा" वीर प्रकार चिक्कं भाति, ज्जाला मधुण चिक्कं ॥ १०४ ॥
 वृषव वृष वीर स्व ज्जाल, "भू" स्वव जट भूवृ ।
 "वाक्कं" एक विन कोकट, भूज पर सुं ज्जाल ॥ १०५ ॥
 कहिवा कदा सन्त स्व सादी, "कामा" उ दणाला ।
 चिचिया ज्व धावणी जानी, मदीया धाव वणाला ॥ १०६ ॥
 "सुवृ" रामके योद, "सुव" धाव नहि ज्जाल ।
 फवन दाय काव फति कान, सावा पर ज्जाल ॥ १०७ ॥
 स्व ज्जाल ज्जाल ज्जाला, दाय भू ज्जाल ।
 "भूवृ" ज्जाला, एक अल्लो वृवृ ॥ १०८ ॥
 क व "भू" धाति भूजाला, भू "भू" म द्दो ।
 गाला वीर चिक्कं मय भूज, ज्जाल चिक्कं ॥ १०९ ॥
 वृ "भू" दय दयाना, वीर दयाना के सागा ।
 भीर चिक्कं चिक्कं भाति, धाव नहि ज्जाल ॥ ११० ॥
 पूसे राला "अभू" अचला, धावस चिक्कं म कीर ।
 उरु कदा पर सुव पाव, दय अचला अदी ॥ १११ ॥
 "भू" सदा सदा सुवपाक, मन पर मय कपाता ।
 दया वी नाम चिक्कं भाति, चिक्कं स्व सदा ॥ ११२ ॥
 "भूवृ" कते नहि कपड, कल माला का ज्जाल ।
 फावो नाल ज्जाल ज्जाल उ ज्जाल मय परु म ज्जाल ॥ ११३ ॥
 ज्जाल दय मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ ११४ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ ११५ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ ११६ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ ११७ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ ११८ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ ११९ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १२० ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १२१ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १२२ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १२३ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १२४ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १२५ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १२६ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १२७ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १२८ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १२९ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १३० ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १३१ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १३२ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १३३ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १३४ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १३५ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १३६ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १३७ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १३८ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १३९ ॥
 मय पर मय ज्जाल, चिक्कं भाति चिक्कं ॥ १४० ॥

"साम्राज्य" है व जेकर, एव एनी निराला ।
 भाषा यही करे उर निरा, वरदयी मरवाला ॥ १२१ ॥
 "विषयविद्या" विद्या यद मीर, यदिर कौन मरवा ।
 जीव ज्ञान सवुव अमीर, एरुण यही विद्या ॥ १२० ॥
 यह "विद्या" एरु है आया, मन एव कसु सदाई ।
 यीण मरण सवु मतिपजन, यही नाहि कदाई ॥ ११८ ॥
 विद्या मति एरी उर "वीर्य" ही है एर उराला ।
 "विरकथन" सारही सीटी, नरणी एर विचार ॥ ११९ ॥
 ननु निवार अमगलि अविगत, "समर्थ" करे स हीई ।
 एण वे एव एव वे एण सम, नान नवावे सीई ॥ ११७ ॥
 एवु व शोक विद्या यव संशय, "शोकसोपार" शीया ।
 जेन व मणु मणु किय विदिये, अथर मूख समया ॥ ११६ ॥
 "धर्म" यहाई यवा गलना, "केशव" जही न कीई ।
 अथर जरे कौन है शरी, मया मय स कीई ॥ ११५ ॥
 "शरीर" स शीर मया मन यणज, जही यद्विन हीरा ।
 शरीर यव गणन मण निकसी, अरुदद शरद अया ॥ ११३ ॥
 "कर्म" अनेक निर्या जव करे, एण एव सव जना ।
 "कौल" जाल वे यवा निदावे, यही समुद सिल एया ॥ ११४ ॥
 "मूर्च्छा" शीर जहा विर निमल, अथर अथर सिल एया ।
 एनी शीरि यदिरि नहि विदिये, कीर न जाल यया ॥ ११५ ॥
 यही "संशय" यही न आपधि, "विरकपटी" करे जही ।
 मने मने कनी एर उजव, विदिय शीर समाने ॥ ११३ ॥
 एरुद जान अमल एव कसमल, मन एव कसु उदिरि ।
 सव अमल कही करे एक, अथर मुदस निकरी ॥ ११७ ॥
 "गुरुविषय" मिले जद मरुम, अथर उर वराला ।
 वही यव एरु करेव, आरम वरु विचार ॥ ११८ ॥
 यही "दुःखी" "दुःखी" एव जनी, एरण उराला ।
 मुदनी शीर सिलि क पीर, मया मुदस निराला ॥ ११९ ॥
 "दुःख" हीव जान सव सुमरण, मन उर यव वराला ।
 "वीर्यसुवक" हीया सीया, अथर अथर निराला ॥ ११७ ॥
 "साधुवैद्य" सौकर जनी, गीर उर जाल सुजाला ।
 हीर जेन "अधीर" जही, कौरी हीव विचार ॥ ११६ ॥
 "पारु" एही निकी शीर पाई, एव अथर यही ।
 अथर एवु शिके एकाए, हीर अमाल जही ॥ ११५ ॥

। ३३ ॥ ३३ ॥

॥ ५ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 ॥ ४ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 ॥ ३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 ॥ २ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥

। ३३ ॥

॥ १०० ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 ॥ ९९ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 ॥ ९८ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 ॥ ९७ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 ॥ ९६ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 ॥ ९५ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 ॥ ९४ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 ॥ ९३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 ॥ ९२ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 ॥ ९१ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥
 ॥ ९० ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥ ३३ ॥

नाम परदाव लिहूँ लोक जना नहीं भौंसियु के निरन कूं बनाये ।
संग अथक वरि पार पूले गये कहे कधीर निज नाम वेरा ॥ १ ॥
पारदी वार रीट राम रस पीवणा भटकि मय मय में भौलि आई ।
जहाँ जाई वहाँ सब सुखसुखे गहीं उलटि उलटसुं गहाँ जाय माई ॥
सुखति अथजद में पलटि मन पवन कूं परम सुखधाम जहाँ प्राण जाई ।
कहे कधीर यहाँ अजय विधाम है रोमही रोम रस राम पाई ॥ २ ॥
मन धारही पार रंकार रसना रही सार सुखधीर निज नाम वेरा ।
पाप का नास अरु नाप जगै नहीं अजुर अस्सी तणा मिटै करार ॥
नाम परदाव लिहूँ लोक जना नहीं शेष विरलिय सब सायु पावै ।
कहे कधीर गुरु दई है औपवी पीवै सो पार भवसियु पावै ॥ ३ ॥
दंड गुण त्यागि अरु जगि दखिनामसुं जागिरे जागि अथ कहा सोवै ।
शानसमोद ले माहि मन मोर कूं पांच कूं पकड़ि ज्युं पीर होवै ॥
गगन का तखत परि उगति कर खेलाया रोक नवदार ज्युं कमल फूलै ।
कहे कधीर तहाँ काल जगै नहीं सहज वरिपाव में प्राण झूलै ॥ ४ ॥
नाम ही ध्यान अरु ख्यान पर नामही नामही भौकि वैराग्य भाई ।
नाम ही धन निज नेम सो नाम ही नाम ही औगकी जगति भाई ॥
दौल अरु साँव संतोष पर नाम ही नाम ही जग्य अरु तप्य कीया ।
कहे कधीर यह फल पाकी नहीं रोमही रोम निज नाम पीया ॥ ५ ॥
कर रं कर मन पवन कूं धर रं सुरत की वीर सुं जेर भाई ।
अथः अरु जग्य के बीच में रोकाणा नाम कूं छुडि नहीं अरु जाई ॥
निकट विधाम निजधाम नैरां सही गुण के धान में होय पावै ।
कहे कधीर यी वीर मुकलावणा खूहरीं चारिका करी वारा ॥ ६ ॥
पवन के रोकरु मय भी खोजता मय के रोकरु तप्य होवै ।
मय के रोकरु तेज में खेळिया तेज में खेळ के पाट खोलै ॥
द्वेष ऊपखि तप्य होय ऊपखिना धन अकासका सुफल भावै ।
॥७॥ दोस कधीर तहाँ अलख जपना रही विना कर वासियां मान पावै ॥७॥
जोगकी बुकि विन मुकि होवै नहीं बुकि विन कमाही भाई होवै ।
जोगकी बुकि विन सायु पर ना टहै जोगकी बुकि विन कौन पीवै ॥
सुरति मन पवन कूं कर उलटा चली दौल अरु साँव संतोष पावै ।
कहे कधीर यी राम रसना जगै काम अरु कौय मय जोग्य मावै ॥ ८ ॥
राम कह राम कह रोजिया राम विन काम नहीं और कीवै ।
सुरति मन पवन कूं कर उलटा चली रोम ही रोम रस राम पीवै ॥
भावि ही अरु मध्य एक ही आसरा एक विन वैराग्य आन भाई ।
दोस कधीर ज्युं कबल उकारिके एक रं एक रं एक साई ॥ ९ ॥

काम पत्रदान सब जीव अथा किया पढ़या मन सारथी संग झूठे
 कहे कवीर कोर संत जन कबरे नाम निर्वाण नहि पलक भुंई ॥ २
 तरक संसार से फरक फारक सदा गरक गुरु धान में सदा अर्था
 भयः अह ऊच्ये के बीच आसन किया बक ल्याला पिंवे रसेय भोग
 अथर दंभियाव तहाँ जाय डीरी लगी महल घाटीक में मोड पाया
 कहे कवीर भू संत निरभे भया परम सुख धाम जहाँ गण जया ॥
 देव निर्वाण तहाँ गण लगी नही सकल काला सिरे काल देवा ।
 विष्णु शिव शैव अज पार पावे नही बंद अह सर देव करे सेवा
 तेज क्षिति पवन जल रहत आधा महीं निगम हू कहव नहि पार अ
 कहव अगाध सब साथ सेवे सदा दास कवीर तहाँ शीघा न्यावे ॥
 सबा सारथी एक भू अथर दूजा नही दहि दीखे जिकी सब माया ।
 गुणा के कल्प परपंच सब बिनसही दीखता नही कोरे रहण पाया ॥
 यह अथ मई महदाहि सिर ना रहे रहैगा आहि सोई अंत माई ।
 कहे कवीर भू वासकी बंधगी एक भयरे सबंध सोई ॥ २६ ॥
 पाव अह पलक की आरती कौनसी रोग दिन आरती संत माई ।
 धरत नीसण जहाँ शैव की झालरु शैव की घट का माई आवे ॥
 तहाँ शैव बिन देहरा नाम निर्वाण हू गानका तबत पर बुकि सार
 कहे कवीर तहाँ रूणदिन आरती पाविया पाव पूजा जगती ॥ २७ ॥
 सारथी आप की सेव वा आप ही जान ही आप का सेव कहे कौन पा
 आपनी आपनी बुद्धि अनुमान हू वचन बिलास करि लहर जावे ॥
 हस्ता माहि आत हू देख वा जिक की निगमई कहव नहि पार पावे
 कहे कवीर देय शैव गंगावती भोग होवे सोई संत पावे ॥ २८ ॥
 रजा गुम सारथी कदा सी होयगी आपकी रजा कहे कौन भई ।
 पंडना जीव नारे जिसे पलक में कहे असंख्य गुण माहि भई ॥
 उलटका पलट अथ पलटका उलट हू आपका खोल कहे कौन पावे
 पलक में मात्र करि करि रचना करे कहे कवीर भू रजा होवे ॥ २९ ॥
 खोल अथर्व का महा अर्थव हू रैन परपंच का खेव माई ।
 गणमयी कल्प सब काजकी दातमें शैव शिव विरचि अह विष्णु तारी
 रहे निघारि आधार सिर ना रहे बिसर संसार आधार माई ।
 कहे कवीर यह खोल निघय किया जग अह मरु का भूम आहि ॥ ३० ॥

रत्न अरु पिपला सुदुष्का सीसि करि अणु अरु ऊणु विष व्यन आवै ।
 कहे कवीर सौं संत निरसुं रहे कालकी घोर फिर माहि जावै ॥ १८ ॥
 उरुणा अव्युत्त मलान माना रहे दान धैरान सुं उरुणा पूरा ।
 सास उरुसास का पूण व्याना विषुं गगन गरवै तहां पवै पूरा ॥
 पूरु संसार सुं राम राजा रहे उरुन जरणा विद्यां गुणति खेले ।
 कहे कवीर सुं धीर सुं सर परु सरु सहज सुखधाम सुं गण भेले ॥ १९ ॥
 संत की बाल संसार सुं निप है सकल संसार सुं बहल भावी ।
 हिरे सुखलमान धीरु धीन शरदरु वन वेरु कवेरु प्रपव सावी ॥
 हिरे की वेग आवार पूजा पनी प्रसु पकारयो रहे रावी ।
 पाकरा मासि मुख मांस भक्षण करे भक्ति महि होत या दगायावी ॥
 सबु वष जीव अणुण के मूल है कठिन या चुक दुसु वन भावी ।
 सबु धर्म ऊपरु उरुण गीता कधी उरुण का कला सुं मान भावी ॥
 कला गीता पढ़ी हरि पठेही गही यां बहिकमुवा तरु मरुं पावी ।
 सुदुष्मदुष्का कलीम उरुण कला पुरा करुक पवसु कर सुयो कदा धीन पावी ।
 सुखलमान कलया पढ़े बीस राजा करे धानु निपाज पुन करुत भावी ।
 यकरी मुदगी जीव जहै करे गण पठारि करि कुरे कर्षी ॥
 जेसु पना करे लिखित काहे मिले पुन अणुण की आधि भावी ।
 होय लिखाव तव जाय क्या वेत है ले बले फरिदो पकरि भावी ॥
 होय तवीर जव कठिन कंठी करे धाम बल करुत तहां परे भावी ।
 सुदुष्मदुं महदवान दया दिलसे करी तहां राजा तहां लिखित ठावी ॥
 जहां रव राज तहां बाल अनवरुतणी महदपद सुदुष्मदुं सुदलि भावी ।
 कहे कवीर जहां अहां साहिबी सी करे अणु निन चीन सव कुकरु उरुणी ॥२०॥
 लिख क माधु विद्या हाथ सुं लाकर्षी भजन का भव जो माहि पाया ।
 गीत अरु सांघु संतोष बंतरु नही कनक अरु कासिनी उदरु जया ॥
 गुरदां परुति करि एक आसन किया मज्जली गिजन सुं होत भावी ।
 कहे कवीर जव काल गडु वेरु है धीन गीत होयानी जीव भावी ॥ २१ ॥
 पवतां होय सुं जीव वरु उरुतिया वनी के जीव सुं गुरु लीया ।
 पांघु पुरापतां गानुं पुरादिया वासके जीव कोरु संत जीया ॥
 भीरु भावंत अरु गुरुण गुरु देव की घाटियां उरुि करि परुत हया ।
 कहे कवीर सुं खेपले खाली वरुति विपथार सुं माहि बया ॥ २२ ॥
 कल परुतव सी साय गीता खरी रहे निरसुं तहां घोर जनी ।
 बलि के संत जणुं जीव विषयल बले कासिनी संत सुं काम जनी ॥

जो शक्ति हो करिष्य राम । मान बनत से गौरी काम ॥ १ ॥
विद्या धारि नो रामहि शोख । नहिंर परत कपाट न शोख ॥ २ ॥

पद ६

हरि शिर काल सदा गुरे शोख नामदेव करत प्रकाश रे नर ॥ ४ ॥
मान्य अंग आय नहिं धरे शोख प्रग गवार ।
बनकमल अचरम न उपर्या वष लग शोडी आगा रे नर ॥ ३ ॥
गोग न मान मोह नहिं माया कदा भयो पनाई पाल ।
पार्श्व के मंदिर विनास आदिना शोख करी पसार रे नर ॥ २ ॥
एक ममता अपनी अति जानी पन जोपन सुत वार ।
किर पीछे पहिचानि धारि रंग न मिजहि उधार रे नर ॥ १ ॥
आपु भाष शीर के निंदे गुरु मान के मारे ।
जल सीधे करि जवन भवाले आव बुरे न फलही रे नर ॥ २ ॥
राम भक्ति विन गति न तिरकी कोरि उपाव जो फलही रे नर ।

पद ५

मानदेव कहे सोर वास कदावे जीवते छिन न विचारि ॥ ३ ॥
परम पुनीत स्वयं हरि वासर निजान हरि प्रग धारि ।
शान पणु आय तिरि हरि सुमिरत महिमा आस विचारि ॥ २ ॥
अजामल गानिका एक पेशी रसना नाम उचारि ।
कीट परम सुनत गति पावे गौरीव गुण विचारि ॥ १ ॥
काशी प्रति मुख गवरापति अह निशि सदा पुकारि ।
साठ घड़ी में एक घड़ी रे सोई सकल अघ आरे ॥ २ ॥
जय तव रामनाम निस्तारि ।

पद ४

भगत नामदेव भाव है रसा । जैसी मनसा काम है वैसा ॥ ३ ॥
रामनाम सनकादिक राता । रामनाम निमग्नपद वारा ॥ २ ॥
विष प्रणव है गण गार । रामनाम अक्षर है वै विचार ॥ १ ॥
इतना कहत तोहि कदा लगत । रामनाम ले सोवत जागत ॥ २ ॥

पद ३

गौरीव पाती गौरीव पूजा नामो भरी भरे देव न दूजा ॥ ३ ॥
गौरीव भावे गौरीव भावे गौरीव भेष सदा मुख काछि ॥ २ ॥
गौरीव धान क गौरीव स्थान सदा आनंदी राजाराम ॥ १ ॥
माई गौरीव क वाप गौरीव जति पाति गुठ देव गौरीव । २ ॥

पद २

पश्चिम भया सब हाल वालें लोकन भेद बडाई । देर
पवरी में बाज्यो रे भाई ।

पद ३

देव कारण दधि मधु सधान जीवमनुक सब निधान ॥ ६ ॥
कहै खास यह परम वीरग रामनाम किन जगह समान ।
मनकी माहिमा सब कोरि कहै पाठित सो जो अनुभव रहै ॥ ५ ॥
सो मन कोन जो मनके साईं विन दारै वैलोक्य समाई ।
जल में जैसे रंग विरै परचै पिय जीवै माहि मरै ॥ ४ ॥
जो मन धरै सोई वन्द्य अभावस में जैसे दीसे चरै ।
जहाँ का उपजा तहाँ समाई सहज दोनमें रखा जुकारै ॥ ३ ॥
बटक बीज जैसा आकार पस्यो तीन लोक विहार ।
आनहि कारण कम कमाई उपज्यो दोन तब कम नसाई ॥ २ ॥
फल कारण फुली बनराई उपज्यो फल तब पहुँच बिजारी ।
धरण रहित कहै जो राम सो भका केवल निकाम ॥ १ ॥
जो दीसे सो सकल विवास अण दीठे माही विवास ।
परचै राम रस जो कोरै पाव परसे दुखि न होई । देर

पद २

आग्या स्थिर तब सब निधि पाई ॥ ४ ॥
कहै खास छेटी आया तब हीन जाही के पास ।
राम मिले आप जोयो कबिबिहि सब जगवाई ।
आयो गयो तब भक्ति पाई एसी है भक्ति भाई ।
जहि जाई करे सोई सोई कम चडाई ॥ ३ ॥
भक्ति जोली न आनी जोली न आपकी आप बखानी ।
भक्ति न चरन पुपाव यह सब मुनिजन कहाई ।
भक्ति न भूँद मुँदाव भक्ति न माला दिखाव ।
भक्ति नही यह सब वेद बडाई ॥ २ ॥
भक्ति न निरा साथ भक्ति न धैरान्य साथ ।
भक्ति न अहार पटाव यह सब कम कहाई ।
भक्ति न दही साथ भक्ति न जोग साथ ।
भक्ति न यह सब कुल कानिनि भाई ॥ १ ॥
भक्ति न एसी हाल भक्ति न आया पास ।
भक्ति न पतन भक्ति न मरै ।
भक्ति न रसदान भक्ति न कष्ट जान

राम नाम तिन जो कहि कसिये सो सब भयं करिये । हेर
परी भक्ति न छोड़े रे माई ।

पद ९

अप श्रीदेवीसजी महाराज के अनुभव

रसदाम ।

सब प्रवर्षी भक्ति आपिदा नहि आपिदा दो माण स्थापित । हेर
दुखवा पाती निरु परा मारवा जीपदा किमवा ज्ञापित ॥ १ ॥
द्वार मुक्ति आपा सिद्धि आपुं भक्ति न आपुं दास नामरप ॥ २ ॥
नामदेव कीउल समुख भक्ति आपिदा मुक्ति स्थापित ॥ ३ ॥

पद १०

भक्ति आप भोरे पावला । तेरी मुक्ति न मागुं हरि कीउला । हेर
भक्ति न आपुं दो न आई । कौटि करे दो भक्ति न छोड़े ॥ १ ॥
अनेक जन्म जन्म दो किन्ही । तेरी नाम ले ले उच्यो ॥ २ ॥
नामदेव कहै ते जीवन मोरा । ते सापर भे मरवा दोरा ॥ ३ ॥

पद ९

रामनाम भरे पूंजी बना । जा पूंजी भरी जगो मना । हेर ।
साह की पूंजी आवे जाय । कषट्ट आवे मूल नामय ॥ १ ॥
यह पूंजी है आग अणर । देना करे न साहिकार ॥ २ ॥
जाती जले न जाई जाय । राजा डहे न चोर लेजाय ॥ ३ ॥
अलख निरजान दीन दयाल । नामदेवके धन श्रीगोपाल ॥ ४ ॥

पद ८

हरि भज हरि भज हरि भज मूल तिन हरि भजन परे मुख पूंज । हेर
अनेकवार पणु है अवत-यो । जल चौरासी भरीत किन्ही ।
प्राणी नही कही विद्याम । समुद्र अरुण कही नहि राम ॥ १ ॥
राज काल मित मित सब जाय । अविनाशी से श्रीति जगय ।
यह अनुमान भक्त बर धरि । जरा मरण भय संकट दरी ॥ २ ॥
गुण सागर श्रीविषु गुण गणय । अर्पना विरत विरत जति जाय ।
प्रणाम नामदेव सब सधरि । चरण चरण रणो हरि सीर ॥ ३ ॥

पद ७

रामनाम भोरे हिरै लेख । राम तिन सब कोकर बैख ॥ २ ॥
नामदेव भोले भरे एको नाम । रामनाम की भे बलि जाय ॥ ३ ॥

देवी कहे अमुम कहे न आवे साहिब मेरी मिसे वो को बिगरोसे। हेर
 सब में हरि है हरि में सब है हरि आपनो लिन आना ।
 आपा साधी न देखि जानहर समाना ॥ १ ॥
 से रान रही पाली को मंगे सब जाना ।
 सब पातीर जाना मन पतिपाना ॥ २ ॥
 हीय वो कोरे न सुखे जाने जाना दाया ।
 बिबेक सिध सबेन सबेन समारा ॥ ३ ॥

५८

कवल करवा एक सही कर सब राम लिहि ठारे ॥ ४ ॥
 मणी देवास जेवास तारी से करवा कोरे मारे ।
 अखिल नाम जाके ठारे न किवरे क्यो न कहे समुठारे ॥ ३ ॥
 सब वन लीम परस विष वन मन मन परसन नहि जाई ।
 आप आपसे कोरे न जाने कहे कौन से जाई ॥ २ ॥
 लिहि रामहि सब जग जाने भय भूले रे मारे ।
 कम अकम कठगाम्य केशव करवा नाम से कोरे ॥ १ ॥
 राम कहे सब जान मुजाना सो यह राम न होरे ।
 मारे रे राम कहे है माहि वरावी सब राम जाके निकट न जारे । हेर

५९

मरेम मरेम देवास तौली तौली जाई राम ॥ ४ ॥
 मरेम मरेम शेर तौली मरेम नाम निराम ।
 मरेम तौली जालिये मरेम की करे आस ॥ ३ ॥
 मरेम मरेमी निमद कोय मरेम मुकाम पास ।
 मरेम करि करि करि मरेम कोय मरेम की यह राम ॥ २ ॥
 मरेम पर कम सकल सहित मरेम मरेम पर जान ।
 मरेम सेवा मरेम पूजा मरेम से पहिचान ॥ १ ॥
 मरेम मरेम मरेम मरेम मरेम जय जय राम ।
 मारे रे मरेम माकि सो जान तौली नहि सबसे पहिचान । हेर

६०

कहे देवास में लालि के पूजे जाके नाम न राम नाम नहि कोरे ॥ ५ ॥
 जोर जोर कर पतिये साईं साईं काना सबेन भाव सबेरे ।
 धर कथेय पूरान कुरान सबेन एक नहि देखा ॥ ४ ॥
 कला कलीम राम हरि राधव जय जग एक एक नहि देखा ।

रामजन दोह न भक कहेका सेवा करी न दोसा ।
 गिरी जीन जिन कह्ये न जानी वारी रहीं उदासा । हेर
 भक दुखा ही बहै वडाहें जीन करी जग मानै ।
 गुणी दुखारें गुलि जन कहे गुणी आपकीं जानै ॥ १ ॥
 ना में भयवा भई न महिमा यह सब अणु लिखाहें ।
 दोषांख लिखित दोउ सम करि जानी दुहुवातें तरक हे भाई ॥ २ ॥
 में ही भयवा ब्रह्म सकल जग में वें भूल गमाहें ।
 जब मन भयवा एक एक मन अवहि एक हे भाई ॥ ३ ॥

पद ५

गाई गाई अथ क्या कहे गाईं गायन हरिकी निकट वगाईं । हेर
 बजलन है या जन की आशा बजलन करे पुकारा ।
 जब मन सिद्धो आया नहिं जनकी वच की भाषण दारा ॥ १ ॥
 बजलन नदी न समुद्र समथे तब जग बहै अहंकारा ।
 जब मन सिद्धो रामसागर से तब यह सिद्धी पुकारा ॥ २ ॥
 अवलन भक्ति की आशा परमवच सुण गावै ।
 जहाँ तहाँ आया धरत है यह मन तहाँ तहाँ कहे न पावै ॥ ३ ॥
 छाईं आरु निरुप परम पर तब सुख सब कर दावै ।
 कहे दोष आसे और कहत है परम तब अथ सावै ॥ ४ ॥

पद ६

धिकत भरी भाषण अथ भाषण भाकी सेवा पूजा ।
 राम जन दोह न भक कहेका चरण पछाड़ि न दूवा ।
 और और करु उलटि मोहि बाँधे जातें निकट न भूया ॥ २ ॥
 पहिले धनका किया जानणा पीछे किया बुझाहें ।
 दीप्य सबन में दोक जगो राम कहें न खिदाहें ॥ ३ ॥
 हरि वच है पटकम सकल अथ दूरव कीन्ही सेक ।
 धान खान दोह दूरव कीन्ही दूरव छाँहें बेक ॥ ४ ॥
 पावै धिकत भय है जहाँ तहाँ जहाँ तहाँ लिखि पावै ।
 जग कारन में दोषो फिरतो सो अथ बट में पावै ॥ ५ ॥
 पावै भरी खली खली विन निधि वंई लिखाहें ।
 अथ मन फूल भरी जग महिमा उलट आपमें समाहें ॥ ६ ॥
 बलत बलत भरी निज मन याकी अथ भाँपे बल्की न जाहें ।
 छाँहें खलन मिले सो समुख कहे दोष वगाहें ॥ ७ ॥

॥ १ ॥ अथ विषयव्यवहार इति प्रसिद्धं मन्त्रम् ॥
। अथवा ६ ॥

। अथवा ६ ॥

॥ १ ॥ अथ विषयव्यवहार इति प्रसिद्धं मन्त्रम् ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥

। अथवा ६ ॥

। अथवा ६ ॥

। अथवा ६ ॥

। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥

। अथवा ६ ॥

। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥
। अथवा ६ ॥

। अथवा ६ ॥

। ॥१॥



। ॥१॥१॥१॥-॥१॥१॥१॥

। ॥१॥१॥१॥

॥ ॥१॥ ॥

५०
 जाते रे मनां सगुहबारे वरणां । ३२ ।
 वा वरणां सु आवागवन निरत है पीछे क्या करणां ॥ १ ॥
 देह धर्यां कीं धरि है परम गति साधु संगति करणां ॥ २ ॥
 विवरा चर कर गुण ऊपर मनमें है उर धरणां ॥ ३ ॥
 भीषं कहे मय धरि अविनाशी छंड सकल भयनां ॥ ४ ॥

३

जाते व सरो आध गुण नें प्रयाण जासां व । ३२ ।
 सगुह खापी रहत अंतर जामी वरणां नें धरि स विवासां व ॥ १ ॥
 कुंजम केसर ही मार बजसां मीतिरुं से जोक प्रसासां व ॥ २ ॥
 सोनेरि धरि कधी धरि कवन कलस यथासां व ॥ ३ ॥
 पर पर ही सब सखियां वेडासां हिल मिल माल जासां व ॥ ४ ॥
 भीषं कहे मय निरधर मार धरि वरणां नें विव जासां व ॥ ५ ॥

२

रहा धरिजन आरजा रहि अंगलिये धानं से मीरींग यथाकं । ३२ ।
 सिंहे गावरी गोबर मगाकं धर आंगलियो निपाकं ।
 कवनकलस यथाप गुणन मीतिरुं जोक प्रसाकं ॥ १ ॥
 कदली धनरी हसी मगाव अवादी सुकाक ।
 गेहटा गदरा गुहली विराजे ऊपर चर हुलाकं ॥ २ ॥
 बल जगुनारी नीर मगाकं राती गुदर काकं ।
 घोषा चरन और अरगाजा अपोल हार्य न्दकाकं ॥ ३ ॥
 मख खोल्या सा बायल मगाव कावे देव पुआकं ।
 धीर खंड पुंन अमृत मोजन अपणे हार्य निपाकं ॥ ४ ॥
 कंठी माला करुं किलनी सगुह अरण जाकं ।
 दिवण विरामी मगाव कावतिया अपोल हार्य जोडाकं ॥ ५ ॥
 कहे कवीर सुणी मारुं साधु आनंद मंगल गाकं ।
 मयसमार गुह दयाल खोवहिवा मजल चहुंरि न आकं ॥ ६ ॥

१

प्रयाण.

अथ निगुण-भजनमाला ।

संगुह-सार ।

॥ श्रीः ॥

प्रम माय विव चाव परस्पर द्रव्यां यथा ॥ २ ॥
 दरयान करत सव नर नापी सान्ना राम सनद ।
 कथा कीरतन हरि गुण गावै आनंद उदै आनंद ॥ १ ॥
 पावन भवन करण पना यारै सवगिह सवही संत ।
 सरज सोनारी उगी सखीपी विन आननी ॥ २ ॥

१२

जन भावन सवगिह पद परसव जाम जनम को लीन ॥ ४ ॥
 कर दंडोव दीया धर चरणां जन मन अपुण कीन ।
 गरी पाट पर परत पावडा आयु भवन मयार ॥ ३ ॥
 दीण सुदंग दाल सहेनाई बाजा पवन अपार ।
 प्रम पीति स कक आरती सखियां मंगल गाव ॥ २ ॥
 केसर चन्दन तिलक चर्चाक पुण माल पवराय ।
 जय जय गान्द हीन सव्वुं विधिं वें दर्शन विद्या दयाल ॥ १ ॥
 कवन कलय दीया धर कर मं सर मोक्षियन को थाल ।
 धर आज हमारै आया परम गुरु पाहिला ॥ २ ॥

१३

सुखदेव सागर मं दारो मननीं दूले दारै सन सदाई सिताज ॥ ५ ॥
 रण भयसागरसे दारो सवगिह वारै कोइं आपुण विरद को जज ॥ ४ ॥
 जल सोनारी सरया दुखदंती पापी कोइं द्रव्यां छे यवुव अकाज ॥ ३ ॥
 कथा कीरतन सरया हरि गुण गासा दारै आगलिये छे सनारीं समाज ॥ २ ॥
 सोनारी सरज सरया रण पुज उगी दारै धर बुवा गागा आइं आज ॥ १ ॥
 आया प गाया सरयां आनंद यथाया दारै पाहिला परम गुरु आज ॥ २ ॥

१०

सुखदा सागर गुरु दक्षिणासा दुखदो सब भूली है ॥ ५ ॥
 विन दारणा सुखदास कहै निव निक दू फोटी है ।
 नं वट धंटी गगनरा गोसां मं यचना सुनो छे है ॥ ४ ॥
 धमक छे गुरार पावै छे मुर्ली रास रगो छे है ।
 प्रम कलस गुं मं यथासा यथाई यदासां है ॥ ३ ॥
 भुधर भुजार नाम धर माटीं मंगल गासां है ।
 सिद्धमिंद नर गुदाकीरा वरणा ज्ञ दीपक माला है ॥ २ ॥
 प्रणवद वीक विन उगी विरदें उजियाला है ।
 सुखदा सा धन गुरा दारो वीरगा ज्ञां मीरद दीपा है ॥ १ ॥
 कक कलस मं फोटी गुरु यथापी अधीरस पीपा है ।

सर्वो सगुणो र आसा है, सोई आसा गुणवैपकी
॥ १२ ॥

१

सुखराम कह्यो बस गाई आणू किया निवार है ॥ ७ ॥
आन गावई निव सगुण सैया सैया मन खरा है ।
काज करम सब निर आसी गुण जोषा है ॥ ६ ॥
सगुण सो अमयव पाया आनीरष पोषा है ।
दीन लोक संपति सब पाक बोहि करण सोई है ॥ ५ ॥
आन गाव निवार गुण न ले मरिचर माई है ।
दिज की वरमलि वरकर निवनी गुणवैप है ॥ ४ ॥
पाट विवावर पापरा विहावा निरे पयसा है ।
इस निव आरती संतोष गुण की सिगासिना जोषा है ॥ ३ ॥
धीरन धाल पाक ले आनी कहे मन मोरी है ।
गुण की गुणाल उदंग गुण पर सांव को सया है ॥ २ ॥
मन कुले ले समुख आसा आनी रस पीया है ।
करणी ही कसर मोल के पाके मलक देसा है ॥ १ ॥
निव कर वंदन आन कहेही कुकुम लेसा है ।
बूक के कंक कव पासा है ॥ १२ ॥
सर्वो आनी गुणवैप यसा है, एसा मोसर

२

पलिहाही गुणवैपणी ही न रही हूँ दूण आन ॥ ४ ॥
इसराम मय हरिसुख निरखे नैण नैण निवार ।
कनी सहेही आन नो मारै सोना देवी सर ॥ ३ ॥
कर मणाम पतिकमा देसा देव दोख भव वर ।
प्रयुकी दीनी दीन सँ म्हािन म्हािक श्रीगोपाल ॥ २ ॥
आवरा सगुण सैया सैया आल अजाल ।
आनद मयी मन गावनी म्हारे वैया वैंदी म्हा ॥ १ ॥
मलीमई म्हारे आंगण आया, आण गुणानी नैह ।
जोका आन जाल यथाई ही ॥ १२ ॥
जोका आन जाल यथाई ही म्हाण सगुण आया आन

७

विधि वैकुंठ सदन कव अखरठ दीरय नाग ही,
रामदास पदकव परस उर म्हािक अंगण ही ॥ ३ ॥

॥ १ ॥ पाप । अब राम नाम से विमुक्त पाप ॥ १ ॥

पार जान । कब बोल कब गहर मन ।

हरे अक्षर । मन मित्रो जूँ चर खर ॥ ८ ॥

द्विज खाल । मूँ कब राय देक भोज ।

कब करे स्यास करम । कब कुल मान लोके सरम ॥ ७ ॥

कब मुहिल कब खल कुल । कब कुल काया पलट मुल ।

का साईं अष्टम जोग । का नाम द्विज करे भोग ॥ ६ ॥

का लखु का दीपु वा जान । का मुख मान बडाई जान ।

का मन मूरख निकल जास । का हरे पूडे बूढास ॥ ५ ॥

का मूँ आलस करव ऊय । का फिर सुधा करव सुय ।

का मन आधा खल पास । का मन हूय पूडे निवास ॥ ४ ॥

मूँ कब आसन धूस पूरे । का जन बीरय फिर हरे ।

का मन माया बीच गाड । मूँ केतिरे गयो छड छड ॥ ३ ॥

मूँ कब गना करव बूढे । का मन लगनी चवन बूढे ।

का मन पूय आन पास । बिना भक्ति मया फूस पास ॥ २ ॥

का विधिया मन काम कोय । का कसि मयो वाद मोय ।

का मन पूय आल जान । अब बीच पकड ले जाय काल ॥ १ ॥

का वहु लालव करव लोभ । का अपनी करे मरव सोभ ।

अब राख दारुण राम मोहि । बडिबर भरयो बिना रोहि । हेर ।

पद २

हरिनामा भव परम तन । द्विज सनकादिक कहव सन ॥ ५ ॥

कादव भरम करम का पास । भूढव जनम मरण की पास ।

गाफल काईं सुनी नवीन । जग अक्षर कहल मोन ॥ ४ ॥

काल कभी सा कर कथाण । मार आजक कहल बिहाण ।

निधि दिन ऊसर धरत जाय । जूँ पसरो करव आय ॥ ३ ॥

जाँ भिनखान पाय बीच । माण अके मुख उबर पीच ।

जा मुख हरि की नाहि जान । साईं जनम कुल हीन जान ॥ २ ॥

सकल वरण मूँ एक भयो । ऊच बीच ऊण होय वयो ।

सीखत साखत सुनव यान । आठम की नाहि परत यान ॥ १ ॥

झारा झारा करव झूठ । पला पखी परनिवा पूठ ।

नर कपी सुमिरे नाहि राम नाम, बेरी निकसी रजना कोन काम । हेर ।

पद १

वसंत

श्रीगुरुभार

परमेश्वर स्वामी आया क्या था ।
 श्री गुरुदेव दयानिधि आनंद स्वतन्त्र हितकार ॥ १ ॥
 भाव भक्ति से कब रसाई अदा समा स्यात् ।
 सुरत शब्द का शौका लज्ज चरण कमल बलिहारे ॥ २ ॥
 करमायाई शीघ्र पयाया उठ परमात्त स्यात् ।
 अलि स्वजम किरिया नहि देखी भोग भक्ति के प्यारे ॥ ३ ॥
 बूढ़े करकर धन से लय आति अयावन नात् ।
 शब्दी के फल शक्तिकर पाये शीठे निजे न थारे ॥ ४ ॥
 दुर्गापनका भया खाना अजन आत् आत् ।
 साग विहारे धर शक्तिकर पाये पूर्णकृपी पया थारे ॥ ५ ॥
 निजनी के धार सिधया के तन्त्रज जीव धरन पयात् ।
 नामा का हय धनाकी सीदी युग युग जन विखारे ॥ ६ ॥
 मैं अजान कहु सेव न जानूँ सेवा आम आयात् ।
 सनक सनयन अयुन नायक प्रजाहि पवारे ॥ ७ ॥
 दीन दीन भलिदीन महा जह यत्न पदयो देवारे ।
 रामदास की अदा सखा दीजे भोग भुवारे ॥ ८ ॥

सगुह भोजन जीना प्यारे, अपने अनपर कृपा कीजे आठ सदा

१४

सतगुरुपारे भोग लगे शब्द अनाहद भेदा गाने ॥ देर ॥
 भोग शीतले करी है रसाई अखिल भोजन पावस होई ॥ १ ॥
 कषन शोषी सुखेन थाल जीमन बूढे श्रीराम दयाल ॥ २ ॥
 पाय प्रसाद अखन कीना महेन्द्रसाद पाव के दीना ॥ ३ ॥
 दास एक कणका भर दीना ताते काल भयो आर्षीना ॥ ४ ॥
 कहु कहीर हेम भयूँ सनाथ जव सतगुरु मलक धरिया होय ॥ ५ ॥

राग गौं निजवल ।

राजभोग ।

१३

जीव भगव लेत चरणसेन उरमें अधिक उभंग ।
 पावन पतिव होत पल माहीं कर संतन को संग ॥ ३ ॥
 संत समाज आज भल पाया देर भया ब्रह्म देव ।
 जन भावन सतगुरु दशोन से पायो परमानन्द ॥ ४ ॥

धर जगो रंग । मते विव न चले मन भयो पंग । टेर
 भयो उभा । यस जोषा वदन चरव अंग ।
 जगो रंग रंग । गुह मल पतयो आप मय ॥ १ ॥

पद ८

देखा देखा संतो नर की मूल । सीवन योगा जग मूल । टेर
 राम निरजन देह समान । बाहि छोर पूर्व पखान ।
 जल धीव पापण योग । सी तो आदि अंत पापण योग ॥ १ ॥
 आकाश शीस पावल पाप । सी संपुट में कैसे समाय ।
 राम निरज अथै न जाय । सी दियो गुमारी कैसे जाय ॥ २ ॥
 बार बार में कहु प्रकार । सी दान्य न माने करत रार ।
 कधीर कोरे लहे न लोज । मटक मरे कैसे वनके रोस ॥ ३ ॥

पद ७

री संत जगो पंत काम । मिले पीव जन पडे मग । टेर
 प्रथम गुणव धीर दार गाय । राम राम हिरयो में जाय ।
 जगो मुट्ठी की टेर सुजाय । धीरो प्रीति अथ प्रेम अजाय ॥ १ ॥
 भाषि कमल में नार धार । एक डके पर जगत टार ।
 रीम रीम में गुण अपार । धीव पधारे नानि मयार ॥ २ ॥
 एकमाल विवकार कीन । गाव पकीसी संग लीन ।
 अथ ऊव विव मय्या जगल । विवरे पधारे महल जाल ॥ ३ ॥
 अनाद पाना गुरे अपार । जगो अलख निरजन अमर मुतर ।
 मिले संत तो मारि जाय । अनत कोट रहे काम रमाय ॥ ४ ॥
 राम नारद सनकादि दाय । प्रथा विज्य क आदि महदाय ।
 सुवदेव अर भुव महलाय । सुखसगर जगो सुख समदाय ॥ ५ ॥
 जनक विदेह मिले लहा जाय । पालनीक पांडवो माय ।
 गौरव भरयो गोपीचंद्र । सुखसगर मिलकर आनंद ॥ ६ ॥
 नामदेव अर रामानंद । नामा कधीर लिलोकचंद्र ।
 धीव पना सजन देवास । रंका वंका सुना रज्यास ॥ ७ ॥
 नामा दारु देवीदास । कवल कृपा संतदास ।
 जनदेरिया अर महर रंग । किसनदास सुखराम संग ॥ ८ ॥
 अनत कोटि रहे काम रमाय । जन हरिनाम मिले लहा जाय ।
 रामदास जगो चरण निवास । गुहगोविंद मिल पूर्व आस ॥ ९ ॥

पद ६

कहेर वासिणी अणम अणार । सुटे मर नागा उर न पार ॥ ४ ॥
 सवगुह माहि सिखाय धीव । उलट जेव जेवो धीव ।
 रमर विद्या संग माहि धीव । अणर जोर जेवो सिद्धे संत ॥ ३ ॥
 अखर तिकर अणर देव । जेवो सुख निरत निरत करत संत ।
 रमर विद्या धीव पार । रीम रीम मं मंरुणी रास ॥ २ ॥
 पार पर्वसि एक टाय । सुखर गाय के सिद्धी माय ।
 धीम धीम धीम धीम गुडाळ । गाय मरळ मं मंरुणी रास ॥ १ ॥
 पार रमर धीम धीम धीम धीम । सव सखिपार निरत मंग सार ।
 रमर विद्या धीव संग । वन मन अरु अरु संत ॥ ३ ॥

पद ५

अरज करे इरवेव गीहि । अरज मंजो देवी माहि ॥ ३ ॥
 विना गीहि मी पति अणार । विना रसुं करुं वरत सं ।
 सौं पार वरं गाय वरं । सुखे रमावी रं पद ॥ २ ॥
 अणर काल मर कळ मळ । सौं काल पर वणी खळ ।
 वरस देवी सुख पूर्व अण । विना विना सुख वरत पार ॥ १ ॥
 विना गीहि रम विना वार । मरु करे हरि सिद्धी अण ।
 देवी कथा गेव करी देव । रसुं पार सौं मरु संत ॥ ३ ॥

पद ४

माहि मरु इरवेव आस । रीम अंक प रसल माल ॥ ४ ॥
 सौं नाम गेव व्याय धीव । सिद्धे सखल वन सखल धीव ।
 सिद्धे सिद्धे सिद्धे अंक सार । पार वरु विना वरं पार ॥ ३ ॥
 सुखी नाम परताप सौव । मज्या सखल मर पार धीव ।
 सुखे मर वन सखल संत । आदि धीव उवरे अंतर ॥ २ ॥
 धीम सुखी मन कर विचार । उधुं अंक रसना उचार ।
 विना अणम अण मरु अणाय । सौंर अण सुखे सुखी अणाय ॥ १ ॥
 रीम नाम निरत पार वर । सुखर सखा धीव पार संत ।
 मन रीम सुखर सिद्धी धीव धीव । अणम मरुण सुख सिद्धे धीव । ३ ॥

पद ३

वन मन सौंर्या गेवके पार । विद्या अणुपद सिद्धी आस ॥ १ ॥
 वन इरिदामा सखल अण । रीम नाम धीम धीम सिद्धल ।
 धीम वीरुध वरं संत । अण पराखल सु माहि धीम ॥ १ ॥
 धीम सिद्धल का सुखर धीम । का सौंके अणुपद धीम ।

उत इतिम सुत विद्या वासा अपर मन्त्रके एते ॥ ४ ॥
 सदा सुभास इत्य सकल धम मन्त्रान् विदते ।
 भवत् भवत् मं पाठ स्वो हे अतो मय मन एते ॥ ३ ॥
 विन कलास इक विन वृत्त पा विन पाठे मयै ।
 विद मयै पर विद्या मदीना अलस युव स पाठि ॥ २ ॥
 नाकारे देव न गीह संतोना मयै आगम गति ज्योति ।
 वन कुल काव ज्ञान लोक की सिन्धु सिध मन्त्राणा ॥ १ ॥
 सिध संदेशा देव देव सिन्धु देवाम सुजाना ।
 मयै मं मयै मं मयै मयै पाठ महेती । देव ।
 इत्येति विन पाठ महेती ।

५१

शैली अक्षिया विद्यास

कहे कधीर मनका सभाव । राम मय्या विन जमकी वार ॥ ४ ॥
 शैली विद्ये जीवे मय्य वार । वय मय्ये शैली शैल मय्य ।
 उरि न सके पर मयै हे वृत् । वय मय्ये शैले विर कृत ॥ ३ ॥
 गुण गुणा मयै हे सख । वय मय्ये की जगिहे मय्य ।
 वय वयसली मं जगती आग । वय मय्ये कहे आर्यो मय्य ॥ २ ॥
 विद्यस वार की सुला फल । गहि देव क्या खो मय्य ।
 मं जी कहे गहि वार वार । मं सव वय मय्ये वार वार ॥ १ ॥
 देव मय्ये गुणन की विद्या है मय्य । देव सुख न मय्ये वय वय्ये है मय्य ।
 वय वय दे मय्ये कमल पाठ । मय्ये मय्ये शैले अति उवास । देव ।

५२

कहे कधीर मन मय्ये अर्य । वय इत्य सिधे गिह रामान्त्र ॥ ५ ॥
 आदा पवत विपम वाट । सुत नर मुनि कहे उहेन वाट ।
 रामानन् जगती रमव मय्य । गिह एक वाट कहे कौटिकम ॥ ४ ॥
 सवगुह मं अलिहारी शैल । मय्य सकल विफल धम विद्या शैल ।
 देव स्वयं सव विद्या शैल । वयै आर्ये देवि मय्ये न शैल ॥ ३ ॥
 वयै आर्ये जहा जल पापान । पूर रहे मय्य सव समान ।
 दे मय्ये मय्ये कहे जग । देव वट ही मं शैल कयै न शैल ॥ २ ॥
 अज्ञन भवन वय विकार । अर्यसठ शैल्य सव नामजार ।

सुखमय होति खलु निरसी भान कुमकुमा धीति ।
दयाम से खलु धरणी ही निव भानद मंगल होति । ६२.

पद १७

खलु धरति न भावै प्रसा खरुंगा मी खलु । ६२.
सुखत खलु धरु अनम धरणीना अयके उरुटा खलु ॥ १ ॥
रसना फल धरु धरु खिल खिल नानि कमल रंग खलु ॥ २ ॥
धरु धराल आकाश उरुटा खलु धरु धरु धरु धरु ॥ ३ ॥
धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु ॥ ४ ॥
धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु ॥ ५ ॥

पद १६

निवही वरुन निव काम मंगल होति खरु । ६२.
धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु ॥ १ ॥
धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु ॥ २ ॥
धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु ॥ ३ ॥
धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु ॥ ४ ॥
धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु ॥ ५ ॥

पद १५

राम रसीले से रंग रक्या धरु धरु धरु धरु धरु ॥ ६२.
धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु ॥ १ ॥
धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु ॥ २ ॥
धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु ॥ ३ ॥
धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु ॥ ४ ॥

पद १४

धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु ॥ ६२.
धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु ॥ १ ॥
धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु ॥ २ ॥
धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु ॥ ३ ॥
धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु ॥ ४ ॥
धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु धरु ॥ ५ ॥

मन भावन कागज भाषी आर्षं रक्षितो राम विद्यायो । हेर.
 या नवकी मं मरुकी ध्याऊं भाव सो देण मरयो ।
 सिमना की करले विवकाति धान अर्धर उर्यात् ।
 म को देण परसयो ॥ १ ॥
 उरव निरव की गाल यवत है ध्यान को बना मरयो ।
 तला की मरुंग भवती वजावै गुण के यवन सोई मरयो ।
 निव वन भाषर पायो ॥ २ ॥
 विरि गिराल गुणव की केसर सोल यवन हिरकायो ।
 सुपुण्ड पाति सवांग कटीति पिपावी वं खल मरयो ।
 धमाकी धुवर उर्यात् ॥ ३ ॥
 शक्ति मुक्ति का काया वृत्तव है विरले वृत्ति अन पायो ।
 आठ वरण की रज धर मलक मेलन

पद २१

कल्याणनिधि अरज हमारी राम सुनलीज्यो मुखाति । हेर.
 जम मरण की पार न पायो ये उरव वहुत बुराति ।
 हाथ आर्षं विनवी करे मारण स्फुट मीटो भाति ।
 राम गुराणार भाति ॥ १ ॥
 भव मरुदर विभीषण जायो गति गौतमनाति ।
 अजामोडसे अधम उघारे गनिका सी गुम वाति ।
 गाय कदा दील हमारी ॥ २ ॥
 धनमक बार्जिद कर्षीस नामदेव लिवा जयाति ।
 भवन कोहि प्रभु तार दिया है कदा तकसीर हमारी ।
 राम भूली भव रूही ॥ ३ ॥
 राम सीम गुह्यगार मर्या है खनी वहुत विवाति ।
 इससे अधम पार कर करता हीरामदास विवाति ।
 राम रज भूँ मं लिवाति ॥ ४ ॥

पद २०

अर्धे वर कछुई ना विगयो रचना राम कर्षीति ।
 सुपुण्डराक्ष दारण सगुह की वृत्ति सुमर्या सो विवाति ।
 मं वा वेरे दारण पयाति ॥ १ ॥

निर्गुणसुखममला

रामकी की शरण सिद्धी ॥ ४ ॥
 बड़े बरन की रज पर मलक सेवास बस गया ।
 भक्ति मुक्ति का काया बूटव है बिले हरि जन पाया ।
 रामकी बुर दुलाया ॥ ३ ॥
 रामर पाँते संतोष कटोरी पिपासी से खोल मचाया ।
 सिद्धि गोल जगत की केशर गोल बदन बिरकाया ।
 मनुष्य जन मोसर पाया ॥ २ ॥
 मनस की मरुंग मनकी बजावे गुरु के बखन साँड़े गया ।
 सिर बिर की गाल बजत है ध्यान की बंग भटायो ।
 धम की रंग परसायो ॥ १ ॥
 सुमता की करले पिबकारी धान शरीर उजवायो ।
 या बरकी में मटकी पणकें भाव से रंग मचायो ।
 मन भावन कागज भायो जामें रसियो राम सिद्धी । हेर.

पद २१

राम रज हैं में सिद्धी ॥ ४ ॥
 हमसे अपम पार कर करत लीलमदास बिबायो ।
 राम राम गुरुगार मन्थो हैं खनी बहव बिकायो ।
 राम भूली मत भायो ॥ ३ ॥
 जन कति मरु तार दिवा है कदा तकसीर हमारी ।
 धनामक बार्दिक कबीर नामदेव लियो जवायो ।
 नाथ कदा दीज हमारी ॥ २ ॥
 अनामीलसे अपम उपारे भक्तिका से नम जायो ।
 सुख महलाय विभीषण जायो जायो गीतमनायो ।
 राम गुरुगार भायो ॥ १ ॥
 हाथ जोड़ विनयी कहे माधव सकट मंटी भायो ।
 जन्म मरण की पार न पायो से दुख बहव उपायो ।
 कल्याणिय अरज हमारी राम सुनलीलाय सुपायो । हेर.

पद २०

अजड़े बुर कछु ना विनयी रसना राम कबोयो ।
 सुधमदास शरण सगुरु की हरि सुमन्थो से लियोयो ।
 में से शरण पयोयो ॥ १ ॥

कवच कवीप अमल कवीप रघु कवीप ॥ ७ ॥
 पकी पकी खर देण दिन खिलकी वसति खरुं वे ।
 गतिं तीव धीरव्य धारणा रान धेव नहिं कवीं वे ॥ ६ ॥
 सदा उदास खर जगत सं निरुधी निरुमीही वे ।
 निधि दिन पवन कवच ख्याती हउ आसण पर सोई वे ॥ ५ ॥
 खेला यूसि आकाश आरुणा जालि खरुंमा जोई वे ।
 जो मांन वाही कवीं देवे ऊव तीव नहिं कवीं वे ॥ ४ ॥
 निधु माव सखन की खीपी खीली अकलज टाई वे ।
 आशा धरणा अधिक लकरी यूसी माहिं खलीं वे ॥ ३ ॥
 यूसी खान जगय देणदिन निकर पावोई पाई वे ।
 निरुजानदार खिलक शिर ऊपर सुमरण कवीं पाई वे ॥ २ ॥
 जव कवीं आरुंवेय सव का मान मनोगा सोई वे ।
 नाम निरुत खीला पठणा खेला सुख सुमाई वे ॥ १ ॥
 टीपी तव सुमरण विवचन सीपी अनहद सोई वे ।
 सग सुख पाताल लोकता निकर कवीप सोई वे । ६८.
 देखा हल कवीप देवा सुणलीया सव कवीं वे ।

५४ ३४

कही कवीर सुनी माईं सखा मखजालि खिल आजंगा ॥ ५ ॥
 खरुं सरुं खीउं सम करुं सारुं सुन सं सुखलिं समाजंगा ।
 सखुंवे धेव निधु आनिनासीं वाईं गाईं दिखजंगा ॥ ४ ॥
 जरीं वृही आणिय नहिं सारुं नारुं धेव न लजंगा ।
 पाल पाव सं हे पुठयोवम वाईं गाईं सवाजंगा ॥ ३ ॥
 पावीं नारुं पुर नहिं पुरुं वृवीं वेव न खाजंगा ।
 अरुंखरुं तीरुय गुड खजणा पट्टीं खीरुं खीरुं खीरुं ॥ २ ॥
 तीरुय जाउं न जलुं खीरुं खीरुं खीरुं खीरुं न सवाजंगा ।
 पुणुं वाण पाव नहिं नारुं वरुं वरुं नहिं पाजंगा ॥ १ ॥
 धेवा वरुं न फिर करुं खीरुं यूसी वरुं न अवाजंगा ।
 मणुं निरुय मरुंवरुं तीरुं वरुं अवावरुं न खाजंगा । ६८.
 सारुं कवीरुं आवाइं रारा सं वरुं अरुंल क आजंगा ।

५४ ३५

कहोती सखी माधोजी कव सिद्धे सांघो ध्यासो सिस्जन धार । हेर ।
 महीर आंगर हे सखी मांही अणवली जाल ।
 लिंग पर धोती कोपली थोडे धाप रसाल ॥ १ ॥

पद ३५

एग धर ।

कहव कपोर अलमल कपोर रावटक नहि कोई वे ॥ ७ ॥
 एका पकी रहव रंग दिन दिवली उमलि कोई वे ।
 ताई तीस धीरग्य धारणा राग देय नहि कोई वे ॥ ३ ॥
 सदा उदास रहव आगत सं निरुद्धी निरुद्धी वे ।
 निहि दिन पवन करल खपामी हेर अलम पर सोई वे ॥ ५ ॥
 सेव्या भूमि आकाश आठणा जोति चंद्रमा जोई वे ।
 जो मांही तांही को देवे ऊव नीव नहि कोई वे ॥ ४ ॥
 मिथ्या भाव सखन की नीपी जोती अकलम टाई वे ।
 आशा देणा अधिक जाकही भूमि माहि धसोई वे ॥ ३ ॥
 भूमि ध्यान लगाय रूपादिन निकर पावोवो पाई वे ।
 सिस्जनहार लिलक धिर ऊपर सिमरण कही पाई वे ॥ २ ॥
 जन कोपीर आठंय सब का मान मनागा सोई वे ।
 नाम निरंतर चोला पह-या सेली सुन सुनोई वे ॥ १ ॥
 दोपी तरव सिमरणा विनवन सींगी अनहद सोई वे ।
 स्वो मरु पाताल लोकवा निकर कपोर कोई वे । हेर ।
 ऐसा हाल कपोर देवा सुणलीया सब कोई वे ।

पद ३६

कहे कपोर सुनी माई सांघो प्रलजोति सिद्ध आंजना ॥ ५ ॥
 चंद्र सुर दोउं सम कर राखुं सुन सं सुनलि समांजना ।
 सगुठ वेध सिन्ध्या अतिगोपी तांके नाहि दिआंजना ॥ ४ ॥
 जर्फी वूँठी आपणिय नहि सार्फुं सार्फी वेध न आंजना ।
 एत एत सं हे प्रणयोसम धार्फुं नाहि सवांजना ॥ ३ ॥
 पाती तोरुं एपर नहि पूजुं देवी वेध न आंजना ।
 अहंसउ तीरथ मुक अलापा घटती भीतर सवांजना ॥ २ ॥
 तीरथ जाउं न अलसं सवाक जलका जीव न सवांजना ।
 एधुं ज्ञाप पांय नहि तोरुं पर ध्या करिष पांजना ॥ १ ॥
 धीर रई न फिर कर लज्ज मूला रई न अपांजना ।
 माया विण्य महेपर तीरुं देवा अतवार न पांजना । हेर ।
 दोय कपोर आनहद राता सं पर अकल के आंजना ।

पद ३७

॥ ४ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥
 ॥ ३ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥
 ॥ २ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥
 ॥ १ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥
 ॥ २ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥
 ॥ १ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥
 ॥ २ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥
 ॥ १ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥

७३

॥ ४ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥
 ॥ ३ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥
 ॥ २ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥
 ॥ १ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥
 ॥ २ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥
 ॥ १ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥
 ॥ २ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥
 ॥ १ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥

७४

॥ ३ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥
 ॥ ४ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥
 ॥ ५ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥
 ॥ ४ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥
 ॥ ३ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥
 ॥ २ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥
 ॥ १ ॥ एतद्गुरुः प्रोक्तवान् ॥

सौम्यो निम वसति हो ।
उम विन धीजो को नही जोगे जग सरो हो । ३८.

पद ४१

काह से नेह न करिये रे ।
नेह किया निहै सही विन पावक जरिये रे । ३८.
जग की शरी मिलनना मिल वंथन परिये रे ।
धुप छीबं निरुध हो सुख सिधु विवरिये रे ॥ १ ॥
यो जग पावक रूप है जगें पाव न धरिये रे ।
यो ही धान विचार के हरि पंथ विवरिये रे ॥ २ ॥
सुख पाव सब झूठ है यो वंथन मरिये रे ।
उरनी वन मन धारकै हरि नाम उवरिये रे ॥ ३ ॥

पद ४०

विधा सं धीति न जानी हो ।
तलक मुं जेम कारण जेम विव न जानी हो । ३८.
धीनव तलक नीर के नहि जानत जानी हो ।
दया न आहै देखातां मन धोती जानी हो ॥ १ ॥
पुन पवना जगसं काहु दीप न जानी हो ।
धीति की रीति विचारतां मर देह की जानी हो ॥ २ ॥
धीति करी मन नाथ सं काहु नहि न जानी हो ।
मुखसं दीपु वजाय के मार मान्यो जानी हो ॥ ३ ॥
धीति गपुं पयां पन सुनो सांजगानी हो ।
दास के संग जगारुष जेम हो सुख दानी हो ॥ ४ ॥

पद ३९

विधा मरे नाम जगानी हो ।
नाम लेन विरता गुणा जैसे पावन जानी हो । ३८.
सुखन कपडु ना किया पद काम कमानी हो ।
गतिका कीर पदावतां धुंठ पडानी हो ॥ १ ॥
अध नाम गुजर किया पानी अपनि पडानी हो ।
गदरु छुट हरि आधिपा गुज जेव जगानी हो ॥ २ ॥
जो नाम हमारे गुन किया साह पद पडानी हो ।
धीनै यानी पारण अपनी कर जानी हो ॥ ३ ॥

पद ३८

मम गोरु मनी ।

समस्त मन मुक्त होत है ।
 धारि धीमां क्या भयो पट भित्त भूला है । ३८.
 १०० दिवानो यो फिरे जैसे छाया में छैला है ।
 १. बड़ी कर छोलसी छुरियां पाव सहेला है ॥ १ ॥
 कहे मीठो जीमही माणीही महिला है ।
 जेवा बुल ऊपड़ खारसी सहेला है ॥ २ ॥

७४ ४७

पूसा जन रामजी की भाव है ।
 फनक कामनी परिहरे नहि आप बंधावै हो । ३८.
 सब ही से निरुत्तरा काहू न बुझावै हो ।
 शीतल पाणी पीज के अमृत परसावै हो ॥ १ ॥
 कैयो सुनी होय रहे के हरि गुण गावै हो ।
 भयन कथा संसार की सब पूरे मगावै हो ॥ २ ॥
 पावै दंडी वस करे मानही मन लखै हो ।
 काम कोय मरे लीम की खिल खोव बधावै हो ॥ ३ ॥
 बोधे पूव को बान्ह के वहां जाय समावै हो ।
 सुंदर पदसे साधु के किंग काल न आवै हो ॥ ४ ॥

७५ ४६

जो मोहि राम पियारा हो ।
 धीति वही संसार से किय मने जार हो ॥ ३८.
 सखमुद दाम्ब सुनारया विषा जान विचार हो ।
 भयन विमर भागे सबे पट भया उजियारा हो ॥ १ ॥
 में धर्य उस प्रथ का जाका वार न पार हो ।
 गहि मई कोर साधया जिन जन मन मार हो ॥ २ ॥
 बाज बाज सब छुटिया माया रस पार हो ।
 राम आभीरस पीजिये दिन चरवार हो ॥ ३ ॥
 जान देव को व्यावसी जाके मुल छार हो ।
 राम निरंजन ऊपर जन सुंदर पार हो ॥ ४ ॥

७६ ४५

ज्ये पूरा लखेव में लोहा जन सखिये हो ।
 बापर कही धीर को धरम किम अखिये हो ॥ २ ॥
 बुझया नर दानी कर धरदी विचार हो ।
 परमांतर की पीननी मुन सखिये पार हो ॥ ३ ॥

परत की कासे कहिये हो ।
 धरती और नहीं अपन मन सहिये हो । ३८
 पढ़े पावक परतही उर भरवायो हो ।
 पूरा पाव दीसे नहीं लिखिये उर पावो हो ॥ १ ॥

पद ४४

सही शक्ति नींद नसानी हो ।
 पिय को प्य निहारता साती देन विदानी हो । ३८
 सब सखियां मोहि सीखे मन एक न मानी हो ।
 पिय बरान कल ना पदे मन लेनी जानी हो ॥ १ ॥
 धान धौल आकल भई मुख मयुति यानी हो ।
 धर धरन निरह की पिय धीर न जानी हो ॥ २ ॥
 पावक ज्युं मन की रई मजली बिन पानी हो ।
 मन लेनी पिय बिन मिले सुख बिसरानी हो ॥ ३ ॥

पद ४३

मन मोहि देन लिखे हो ।
 दीन मुने कासे कहुं परती नहिं जाई हो । ३८
 पूरा मख विचारते मोहि नींद न आई हो ।
 जगज जगन जालियां सुते न सुहाई हो ॥ १ ॥
 कारण जिन सखु की सब लोक सिद्धाई हो ।
 जानत सब क सुपुत्रि तीनों बिसरि हो ॥ २ ॥
 गिरिया पर अजुमर भयो ताकी सुख पाई हो ।
 अहंता के कहत हो हूँ जो भयो लिखाई हो ॥ ३ ॥
 यमन वही पुरुष नहीं यां सैन पचाई हो ।
 सुदर गिरियातीन सं सुरनी उदराई हो ॥ ४ ॥

पद ४२

अब हमारे पीरमा बलि जाते हैं तेरे हो ।
 ज्युं पावक उल बंधके बिरहनि ज्युं देरे हो ॥ १ ॥
 पाद गुमारी जीवतां केता दिन जीवतां हो ।
 गिरते ही धारत नहीं देव रखा नवीता हो ॥ २ ॥
 राम लिखे हूँ वृक्षां मन करत अनोखा हो ।
 पावुं धीरु देव रही यां कियां लिखे हो ॥ ३ ॥
 देव मंदल सुखसंगत निरधारा आधा हो ।
 सहजाम की धीनती घर आयां सेरा प्यार हो ॥ ४ ॥

जान प्रणम की दरशान दीजे पाद बनावे तीर हो तीर ॥ ४ ॥
बिनाही पाद पाद कडा कीजे ज्ञान बिन्दु की राज बहीजे ।

एक सवहन के कारन खारे मोमें कडा बकसीर हो बकसीर ॥ ३ ॥
अज्ञानिज कडा के बारे अज्ञान अर्थात् पलित उपादे ।

समस्त सामी बिन्दान भाषा ज्ञान अर्थात् धीर हो धीर ॥ २ ॥
अपने कारण में रंग राना परकी धीर न ज्ञान हो राना ।

बिन्दु ज्ञानो है अज्ञानी ज्ञान सुखसागर की तीर हो तीर ॥ १ ॥
जान ज्ञान ज्ञान अज्ञानी सकल बिन्दुमलि सबके सामी ।

ज्ञान गुणवान गंधीर हो गंधीर ॥ देर ।
बिना ज्ञान बेखो भेरी धीर हो धीर ।

पद ४१

जान प्रणम की दरशान दीजे गुण मलन के मोर हो मोर ॥ ३ ॥
दरान भाषा की सहाय कहीजे बाह भाषा की ज्ञान बहीजे ।

बिन्दु सुदानी बहल ज्ञानी हो तीर हो तीर ॥ ५ ॥
करना ज्ञान धीर धीरकर पायी बिन्दु है बिन्दु पर आयी ।

दुई धीर धीरानी के बाखे धीरम की पाण जोर हो जोर ॥ ४ ॥
उत्तर उत्तर मरम की राखे धीरि काल अज्ञान रण हिके ।

भवाति सुत भाषि ज्ञान के बहल तीर हो तीर ॥ ३ ॥
भूषी भाषा भाषि गुणाति ज्ञान राखी पाठवभाषी ।

ज्ञान पाषण पल अज्ञान बिन्दु भाषि तीर हो तीर ॥ २ ॥
पूर्व ज्ञान धीर धीरि बिन्दु भाषि अज्ञान भेष बिन्दु न पाये ।

तापर टाठी सदन बनाया भाषि तीर हो तीर ॥ १ ॥
कडा बकर गहरी ज्ञान भाषा पाठ सदन कल ज्ञान ।

काँटे दोपरह बिन्दु तीर हो तीर । देर ।
बिना ज्ञान बेखो भेरी धीर हो धीर ।

पद ४२

ज्ञान ज्ञान मरम ।

कही कधी समझा भाषा काँटे उत्तर देला ॥ ४ ॥
पाठ सामी संज्ञा गुणाति भाषा सुदानी ॥ २ ॥

नाम बिना पूर्व बे भेरी यही की यही हो रहीला ॥ ३ ॥
उत्तर बिन्दु ज्ञान की सुखपाठ बहीला ॥ १ ॥

भरी मन धरि हठ नाहि नञ । ३८.
 ज्यो युवती अजयव मसवती दक्षण उल उपञ ।
 ह्य अयुक्तेल विहार दोल यति खल पतिहि मञ्ज ॥ १ ॥
 द्विय लक्ष्य गृह पदोत्प जहो वहु विरयण यञ ।
 तदपि अयम विचरै वेहि मारण जोर न भूट लञ्ज ॥ २ ॥

पद ६०

एम शोच ।

जोषियाजी ही मन जाज्या वचना पेल । ३८.
 आपवर्षा आनंद ह्यो रे जोनी जाला करायो हेल ।
 धारा शब्द सुहावणा रे जोनी म्हारे अंतर पदनायो दोल ॥ १ ॥
 म्हारी लिवर्षा धाम यसे रे जोनी ज्यो दीपक मं वेज ।
 म्हूं तो ममं जालियो रे जोनी करती म्हारु खेल ॥ २ ॥
 सरत धारी जीवनाम्हारी रे जोनी योही रामत खेल ।
 कपयल की धीनती रे जोनी कांवे मिलींगो मेल ॥ ३ ॥

पद ५९

जोषिया रे राधा रे विजमय । ३८.
 ऊठो पांच सहेलिया जगा जोषिया रे पाय ।
 ह्य जोषिया रे मन कांवे पती जी म्हारी नगरी जोड्या जय ॥ १ ॥
 तो विन जोनी सुपर्वारे बाला जंगल धवली जय ।
 ह्य नगरी ही पारकी कुण कहेला जय ॥ २ ॥
 दोली आयो वहु सुख पायो अय क्युं जोड्या जय ।
 कमर काडी परदेदोने कांवे मिलींगो आय ॥ ३ ॥
 दोरणी लाग्या वहु उल पायो दियो जोरती मय ।
 कहेल कधीर सुणी महुं साधो कुण आवे कुण जय ॥ ४ ॥

पद ५८

पाट न जोडि मुला न योडि साम मरुं परमात ।
 अथोला मं अथुपि धोती काहे की ऊदालत ॥ १ ॥
 सामं धरि वरदाण दीनो मं न जाव्या हरिजात ।
 दीन ह्यमारे उधरि आय मरुंणी विप खत ॥ २ ॥
 दीन अथुपि विरहिन धरि जारो विगत विहात ।
 काट खरुण कठ कापळनी करुंणी अपघात ॥ ३ ॥
 आपन आपन काहि मयु मोहि मिलनकी यथात ।
 बास मीरा महुं जाकुल पालकन्या विजलात ॥ ४ ॥

५३
मैं भी हूँ नहीं पाव ।
एक माँहो माण पायी निकस क्यो नहिँ जाव । ३८ ।

५७

कहै कधीर मिलो सुखसागर मिलकर माण ॥ ३ ॥
एह अरोस दोसन की सुनिधि वनकी बाँध ब्रह्मण ।
सोव हमीरि सिह मरुँ हूँ अब आनँ अब जाय ॥ २ ॥
मैं उदास मायव निव जाई विववत देण विहण ।
या कामना करी परिपूर्ण समरथ हीँ रामाय ॥ १ ॥
हे जायुँ मैं हिल मिल खेनुँ वन मन सुरत समाय ।
आ कारण या देह धरी मिलवो अंग जगय । ३८ ।
हे दिन कब जावुँ हे माण ।

५८

५७

कहै कधीर सुनो मरुँ सायो फकर धान अजाये ॥ ५ ॥
दरनी वजकर सिधी कधीरी निव आकीन विचारे ॥
अव नो प्यारी बालबालाग खाना लिया पूजाये ॥ ४ ॥
दरबाराँल हे लदेकर बरुँवा पड़ती पाह नमाये ।
अव नो देका पावण जगण सीला साँस सवारये ॥ ३ ॥
सानीस निपाहे जेवा नानी सुरत तपारये ।
अव नो घोष उजवाण जगण मरुँ देँ अजाये ॥ २ ॥
सवा टूक वन जाला पहर पाँव टाक वन सारये ।
पावणारुँ मँ किया अयावुँ येहीँ जालुँ जमाये ॥ १ ॥
बेहीँ सीली छरी निगुली बाउक बोड बकारये ।
निव या बाँधी मुक हमारे राहवनाया विपकारये । ३८ ।
सिलवानीं निपावुँ बलख वकारये ।

५९

कहव कधीर सुनो मरुँ सायो जाहैबाल अमीरीये ॥ ५ ॥
पाव जगण की कहुँ न सिदाहे सील सुनो मुक पीरीये ॥ ४ ॥
कमीरुँक आसण राजमहल मँ कमीरुँक गली अहीरीये ॥ ३ ॥
कमीरुँक धामीरुँक मुँसिर कमीरुँक जगल खीरीये ॥ २ ॥
कमीरुँक बासा मलमल मूसिर कमीरुँक मुँदुँकी खीरीये ॥ १ ॥
पावणारेँ सील कधीरीये । ३८ ।

६०

अथ इति कर्तव्यं कथं वा । इति ।
अथ उपरान्तं पश्चिन्नां पश्यन् कथं प्रकाशं चेत ॥ १ ॥

पद ६३

पालङ्गनां चोदीनं वासि कं कर्मां नहि पारं करे ॥ ८ ॥
यं सर्वं सर्वं कारणं परं निवृत्तं पर्यां न परे ।
विशेषं निवृत्तं साविकं तव वासं पालं न परे ॥ ७ ॥
प्रकाशी इह निरुद्धं आसनं सुखं मनं करे ।
संनं मुक्तिं प्रसादिं लोककीं अभिलाषां न करे ॥ ६ ॥
मनं कर्म पवनं निरुद्धं विपश्यन् रमादिं रमां रते ।
कर्मं ज्ञानं संवृत्तिं शून्यं कं सो सर्वं हीं परं अरे ॥ ५ ॥
तत्रिं सर्वं विवृत्तं कथं तव परं पालं परे ।
द्वयं विवृत्तं हीं संनं लोके इह मनं मीनं करे ॥ ४ ॥
मिथं अभिप्रायं आपनो र्दोषं न विवृत्तं न परे ।
समतां सर्वं ज्ञानं हीं रते मिथं हीं विवृत्ते ॥ ३ ॥
एवमां द्वयं लोभं इह तत्रिंके उत्पद्यं पालं न परे ।
पथात्मानं संतोषं मानिकं लोचिपतां न करे ॥ २ ॥
विशिनं र्द्विप्रां विमं मत्तं तत्रिंकोपाधिं न अरे ।
पानं हीं रते संवृत्तं ज्ञानं संनतिं यो मनं विवृत्तं परे ॥ १ ॥
मिथं र्द्वयं द्वयं द्वयं संवृत्तं धर्मं कामादिकं विवृत्ते ।
करं करं कोपादिं कर्म परं हीं समतां निवृत्ते । इति ।
इति यो विनं पर्यां न करे ।

पद ६४

युद्धं न कामं अभिं सुखं हीं विपद्यं मीनं रते हीं ॥ ३ ॥
तव अत्रानं ज्ञानं तव मूढं ज्ञानं इत्यादि वांति ।
अत्र हीं तत्रिंकोपाधिं न परं तव हीं ॥ २ ॥
सुखं हीं रते ज्ञानं साध्यं रते नो करं नो रते र्द्विप्रां ।
धर्मं रते करं धर्मं साध्यं हीं तव उरु हीं ॥ १ ॥
सर्वसाध्यं रते रते हीं रते नो करं नो रते र्द्विप्रां ।
इत्यं रते रते रते रते रते रते रते रते रते । इति ।
मनं पश्चिन्नां अथरं हीं ।

पद ६५

मिथं रते करं ज्ञानं विवृत्तं अभिप्रायं प्रवृत्तं हीं ।
मिथं रते रते रते रते रते रते रते रते रते ॥ ३ ॥

पाकी कीरति मुख मुख गाथे । जिक धामामपव वधाथे ॥ ३ ॥
 फटा कइया कियो तप माथी । धाके सुन परावलिजाथी ।
 हिन हिन नारायण गाथी । जमदो पास छिडाथी ॥ २ ॥
 फटा अजामल कियो आवाप । पाकी करणी गाथि जिगाप ।
 सितला वकाल पधाथे । धाके फट काठ डूब दाथे ॥ १ ॥
 कदाकियो नारायण धर्म नाम । हिन मुख ररर नाम ।
 मतिवेला करणी हमाथी । राज लेला विरद मुपाथी । हेर ।

पद ७४

। राम कालीना सोठ ।

गाथे मुक महर धी भजयो, सिद्धयल को आधार ॥ ८ ॥
 जन्म जन्म सिद्धयल गुण गाऊं, नहि पाऊं मं पार ।
 मायुं धौंकर जोइ हरे माहि, रज वरणांठी राज ॥ ७ ॥
 वधा करी दीनानाथ वधान, रामवदप महापान ।
 जिकमना सवुदप गांनिवलिब, गावत गुण गाविद ॥ ६ ॥
 रामबाकसं विसे रवीसम, मुख गोमा जिति बन् ।
 भीति सहित पर परसे कोइ, हरे पाप वप तप ॥ ५ ॥
 तिर गाथी साहि नामाहि, धीधीरामनाथ ।
 रामचन्द्र वैसे मयाथी, सब हरेचन्द्र समान ॥ ४ ॥
 वधान गुणवना जानी, जनकरप धी जान ।
 हृदियेला आय लकणर, मकी गालकप ॥ ३ ॥
 वन महन भय जहा बकव, धी मगिरप भय ।
 धीधुगिदसे अधक कोहि कल, परसे ते वडमान ॥ २ ॥
 मानखाल विपुति समझि, वरयां मय रूख जाहि ॥ १ ॥
 सिद्धयल जने सुदयला, धोला धोवामाहि ।
 कही सवुदगांठी धाम, सिद्धयल जने ल्याथे हे । हेर ।
 जिनिय मन नो करी जारो हे ।

पद ७३

। राम कालीना ।

मलाखे उधार करण नो आय हे महापान ॥ ४ ॥
 सब हरेचन्द्र कहीर नामरे कादी दोकर राम ॥ ५ ॥
 जगदामळ जरेल राखे आयवे विरद की जतन ॥ ६ ॥

वही सबी सबी सिद्धयल पिन महराज ।
 उन हरिनाम है मय उगार जीवां नारय जगत । ३८.
 १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥
 ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

१२ ७२

पिय मयिं जनि है जी धी धीरुधरुधरु गुरुधाम ।
 वही रत अहीनिधि राम । ३८.
 १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥
 ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

१२ ७३

उमर धरि आबि छि जी विधां रे देगी । ३८.
 १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥
 ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

१२ ७४

गीर्ध गार्गुडोबी विजयल मीन । ३८.
 १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥
 ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

१२ ७५

एक नदियाँ एक नाल कहरत मूलो नीर मरी ।
 १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥
 ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

पोथी जो खोल पाई । छाजन हमारा फिर है । डर ।
 सं प्रणी छाजन की पतिव्रता । भरे चली फलेबे कतिव्रता ।
 मोहि मीर न आवे छाती रतिव्रता । आली आई विगोषी रा है ॥ १ ॥
 कोई छाजन खदेवा आवे । मोहि निरोधी भी पाव सुपावे ।
 शारा छाजन कर पर आवे । पाही सं शारी फिर है ॥ २ ॥
 परदे मीर कोहिजा पोखे । जयल विष बहू विधि खोखे ।
 परबने की दरवाज दीखे । शारी पोथी खेदेवो फिर है ॥ ३ ॥

पद ७०

परबे परबे पंडित गोपी । शारी राम मिलन कर दोषी । डर ।
 शारी आज फकके बाई । शारी लागू मिले के बाई ।
 शारी विद्या परदेवा छपा । किन बरवा न मिलमाया ॥ १ ॥
 शारी रीय रीय खिखिया रानी । शारी वन विवली मन पापी ।
 शारी छुर छुर फिर खीना । जैसे जल विष बरके मीना ॥ २ ॥
 उठ उठ रे काजा काजा । शारी विधान यगा दिन जगा ।
 आर्याही फिर विरह विरह ॥ ३ ॥

पद ७१

कल्याणविधान सुनिवे । कष्ट कल्याण का न भेरी । डर ।
 मरुजद के हितकारी । जय कर के देवपापी ।
 नरविह कर कयापी । सब संतन के मन भापी ॥ १ ॥
 गजकी अरज गुन भापी । सो तो परत वेद भापी ।
 पाद के जो कर कटे । अथ कोहि कोहि पाई ॥ २ ॥
 गुन केते पतिव्रता उपाई । सो तो कविजन निगनिन हाई ।
 अथ भेरी वेर राया । गुन सजा ही कि जगो ॥ ३ ॥
 सं वेर वेर मयु डेके । मयु याद गुहापी डेके ।
 भागवान अथविहापी । जन रामखले पतिव्रती ॥ ४ ॥

पद ७२

कदा गलिका पतिव्रतापी । सो वेर विमान विधापी ।
 गुन पतिव्रतापारु देवा । सुनार गुनि उदर न भेवा ॥ ४ ॥
 शरणागत जेव उपापी । पर आरुपीनि गुहापी ।
 गुन याद परब पतिव्रती । जन परब जन मन पापी ॥ ५ ॥

३ ॥ कदव ह्ये दे वरसन शोनी वपाज ॥ ३ ॥
 अथ नो धूमि कीलिये दे निवमम ज्वा जल ।
 २ ॥ मी नो जाव्या संग वही दे मी नो शोनी वान ॥ २ ॥
 यही पलक जग जाव ह्ये दे वय कर् वय मान ।
 १ ॥ विजावरी आगव्य दे गव्य युक्ती जार ॥ १ ॥
 जल जवयो अति घनी दे वीस न पती मार ।
 पहली मीव जगव क दे अथ कय मयो उदास । देर ।
 जार निरमाहिया दे कदा रवा करवास ।

पद ८८

४ ॥ सुंदर विरहनि कदव ह्ये दे वी वरसन विनमान ॥ ४ ॥
 वातक ज्युं देरी सदा दे वीवो मय जल वान ।
 ३ ॥ अथ ही वृष्टिमर देविही दे मीरे सुद कुयजल ॥ ३ ॥
 मी अवल अतिवय वृष्टीरे मम जानो सव वाव ।
 २ ॥ देरे मय कय मीरे दे वलक २ मर जाय ॥ २ ॥
 मी जाव्या अवसर मजरे पीव निजेव जाय ।
 १ ॥ मम करवो ज्यो हीवती दे मीरी शोनी वीर ॥ १ ॥
 मी नो जाव्या शोरी दे मी कय जाणी शीर ।
 बालपणी मीले गयो दे पंडर हीनया केय । देर ।
 सजन सनेहिया दे जग रवा परदेवा ।

पद ८९

३ ॥ राम भवो मारवा मारवा दे मीरी मिलसी देह ॥ ३ ॥
 मय करीवो सांजो दे शोनी जाको बह ।
 २ ॥ सनयुक्ती मिलरी दे बाफन बह कदाय ॥ २ ॥
 अमम साईं साव ह्ये साईं सव सुहाय ।
 १ ॥ बाफन सेनी राखले दे और फकीरा गुलाय ॥ १ ॥
 फकीरा धर निमालिया दे महली माल न लय ।
 शोनी मारवा छोडवे दे साहिव मी वित चाज । देर ।
 मारवा मन माहिला दे चालवो आज के काज ।

पद ९०

४ ॥ सदावाम मन लीलिये दे मय मंडल सुखमीरे ॥ ४ ॥
 सव वयन को वय ह्ये दे सव पीर को पीर ।
 ३ ॥ देवा हीव गुण लीलिये दे मय अमोख हीर ॥ ३ ॥
 मय भवो सगुण निर्या दे पय्यो सभर से पीर ।

कर न हरेषी आरुषी के रण खरुद की तीर ॥ २ ॥
 खरुद कीरि जान है के लू अरुषी की नीर ।
 कर खरुद आरुषी के नीर करुषी नीर ॥ १ ॥
 खरुद खरुद मज कीरिषे के खरुद न कीरुषी नीर ।
 कीरुषी खरुद न आरुषी के खरुद खरुद नीर । हेर ।
 रण मण मणखे के खरुद खरुद नीर ।

पद ८५

रणखरुद खरुद खरुद के खरुद खरुद खरुद ॥ ४ ॥
 खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद ।
 खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद ॥ ३ ॥
 खरुद खरुद खरुद खरुद के खरुद खरुद खरुद ।
 खरुद खरुद खरुद खरुद के खरुद खरुद खरुद ॥ २ ॥
 खरुद खरुद खरुद खरुद के खरुद खरुद खरुद ।
 खरुद खरुद खरुद खरुद के खरुद खरुद खरुद ॥ १ ॥
 खरुद खरुद खरुद खरुद के खरुद खरुद खरुद ।
 खरुद खरुद खरुद खरुद के खरुद खरुद खरुद । हेर ।
 खरुद खरुद खरुद खरुद के खरुद खरुद खरुद ।

पद ८६

खरुद खरुद ।

खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद ॥ ४ ॥
 खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद ।
 खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद ॥ ३ ॥
 खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद ।
 खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद ॥ २ ॥
 खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद ।
 खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद ॥ १ ॥
 खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद ।
 खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद । हेर ।

पद ८७

खरुद खरुद ।

खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद ॥ ४ ॥
 खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद खरुद ।

दोस दोस कुल गाईं पोर । बल है सास अति सीर ।
 सुनी एक बिरहनी जाती । आरु विव निज निजकी जाती । ३८ ।
 दोस गुरु धारु भर माया । कलेजा छेद कर माया ।

५४

जगत की भेट है आसा । कहै गुलाब जन बसा ॥ ४ ॥
 ऐसे गुरु मारु विव पूरे । पावै गुरु मुखी विव सुरे ।
 गुणी निधान कहै खावै । मान मुख कहव नहि आवै ॥ ३ ॥
 धर्म गजराज की गाईं । रई मखान मन गाईं ।
 जगत का रंग सब खोया । इदव म प्रेम से योगा ॥ २ ॥
 धारु गुरु धारु माया । कलेजा छेद कर माया ।
 धारु का बाल है देसा । विवे वी कमल विन कसा ॥ १ ॥
 धारि की धारि म जाती । जलक है मीन विन पानी ।
 लफ्या रस प्रेम विव प्यार । मया है मान मर वार । ३८ ।
 इक गुरु रामदा जगा । बलक का मंग सब मागा ।

५३

कहै जम आलदा धार । कहै नागाध जन वेर ॥ ४ ॥
 सदा मर जान पा वेर । जगावो राम से वेर ।
 वही मर जोग बजुरे । री निःशंक जम गाईं ॥ ३ ॥
 मखेवर वेर जन गोर । जगत में जीवना धोर ।
 धारि मर जान निरगानी । धरे फूँ न कर अभिमानी ॥ २ ॥
 धार निज आरसे गुर । धारि गी भीरवा फुर ।
 धारु जय निरुध आधेगा । कहै नहि काम आधेगा ॥ १ ॥
 सजन परिहार धर धार । सब उस रोग है धार ।
 कठिन है मोह की धार । गुनी सब आय संसार । ३८ ।
 जगत सब रूपाका सजा । समस विज की नही आजा ।

५२

। ॥ ३ ॥

धीरे धीरे फिर आगे मैं आँसू छिड़ा दिये ॥ ४ ॥
 वह वह धरु फिरकी धीरे धीरे मैं थी ।
 नगर दंडोई करती धीरे धीरे मैं थी ॥ ३ ॥
 जो मैं थी आँसू धीरे धीरे मैं थी ॥ २ ॥
 मैं आँसू धीरे धीरे मैं थी ॥ १ ॥
 फिर आँसू धीरे धीरे मैं थी ॥ १ ॥
 फिर न मैं धीरे धीरे मैं थी ॥ १ ॥
 मैं फिर धीरे धीरे मैं थी ॥ १ ॥
 धीरे मैं धीरे मैं धीरे मैं धीरे मैं ॥ १ ॥

११

साँसू धीरे धीरे मैं थी ॥ ४ ॥
 मैं धीरे धीरे मैं थी ॥ ३ ॥
 मैं धीरे धीरे मैं थी ॥ २ ॥
 मैं धीरे धीरे मैं थी ॥ १ ॥
 मैं धीरे धीरे मैं थी ॥ १ ॥
 मैं धीरे धीरे मैं थी ॥ १ ॥
 मैं धीरे धीरे मैं थी ॥ १ ॥
 मैं धीरे धीरे मैं थी ॥ १ ॥

१०

धीरे धीरे मैं थी ॥ ४ ॥
 मैं धीरे धीरे मैं थी ॥ ३ ॥
 मैं धीरे धीरे मैं थी ॥ २ ॥
 मैं धीरे धीरे मैं थी ॥ १ ॥
 मैं धीरे धीरे मैं थी ॥ १ ॥
 मैं धीरे धीरे मैं थी ॥ १ ॥
 मैं धीरे धीरे मैं थी ॥ १ ॥
 मैं धीरे धीरे मैं थी ॥ १ ॥

९

निरद्वि मा पीव का जोई । नहिं सुख देण दिन सोई ।
 पकव है निरद्व का सोला । खिनक मासा खिनक वोला । ३८
 अपन मुझे माखसी होई । मयावन बान धा सोई ।
 तब दिक् सेवसी अविष । एसी गति आयक यनिषा ॥ ३९ ॥
 जगव है सेव मुझे खनी । पिषा निन पकळी खनी ।
 निरद्व की बाप अति भासी । न जगिं दूखी कसी ॥ ४० ॥
 जाना पररना पीका । जग नहिं खार करु नीका ।
 मयण मुयग निम खार । असन पा पसन नहिं माई ॥ ४१ ॥

पद १७

जग की बात याति है । कदापी से कराति है । ३८
 जनी मन सरक एसी । कति उन देखली कसी ।
 खलदक यू कही बानी । चहूँ खली गही मानी ॥ ३९ ॥
 जनी सुखान के माई । पलख की वानी पारमाई ।
 अठर जख वजे गुरिया । सोखव सखव वलि दुरिया ॥ ४० ॥
 जग की पीर है भासी । न जाने वासिया भासी ।
 जनी से आदि खार । कधीर यू कहे माई ॥ ४१ ॥

पद १६

भया है ररक मखाना । कहे खय जोग दीवाना ।
 पिंला का दरद को जान । कहे से खल को मान । ३८
 दम न दिव देण रोव है । दमन से जान खोव है ।
 खली की सेज खोव है । निरद्व के से निखान है ॥ ३९ ॥
 वनी खियवत जनीपी की । पाई जखिव फकीपी की ।
 बरा किली खरीपी की । फकर के र मकान है ॥ ४० ॥
 दम न दक पार है जानी । पिषा हरि नाम का पानी ।
 आखिर होयगा फानी । अरु राम ही समान है ॥ ४१ ॥

पद १५

ललक जू नीर निन मीना । से दरदी मरम नहिं चीना ।
 आयर की पीर के बजा । कहे फया धान के भाजा ॥ ४४ ॥
 बीनी से वीर पुनि होई । न जाली दूखरा कौरे ।
 दीनी से महरसी होई । मीरी उर जानसी सोरे ॥ ४५ ॥
 दरद की पीर अति भासी । जग नहिं दूखी कसी ।
 सेवणराम निरद्वनी गाव । मिलाया पिय मण सुख पाव ॥ ४६ ॥

॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

००१

। ००१ ॥

कभीसे लिखती गाये । लिखा मय प्राण सुख पाये ॥ ४ ॥
कीपड़ियां फूक है सीनी । मायुं मोहि खोल की सीनी ।
पुढ़िया पीव मति पाये । सुगत मन परत है मोड़े ॥ ३ ॥
परत मुखाय के परती । तपत तन लिख की जती ।
टहका मोर का साये । हिय में एक सी साये ॥ २ ॥
उपये देण अंगियासी । बिजलियां चमक है भासी ।
पट्टे निव नीन में पासी । पिपा सेरि पीर नहिं जानी ॥ १ ॥
ऊपके देण दिन छापी । लिखी नहिं जात है पापी ।
कलेजा कटत है भापी । मुखे कहु खबर भी भापी । टर-
सजन एक धर्म है भापी । मुखे है आधिकी जोसी ।

००२

खर्य कपकी पुकांड रे । बेरे पर प्राण पाक रे ॥ ३ ॥
किगोर जन लिख अति भापी । जनी है दरयो की पापी ।
लिहारी देखयो भाये । नाथ कव दरयो दिखलाये ॥ २ ॥
दिवस मोहि अब नहिं भाये । रायुं नींद नहिं भाये ।
हरि हर वचन निव डेक । लिहारी पय निव डेक ॥ १ ॥
करत वदत है भेरे । महर कर रे न हेरे ।
पूजा पया हुआ बेदरी । जद तन होला हरी । टर-
पिया टुक देख रे मोस । बेरे निव प्राण में सोस ।

००३

झूरे निव आतमा दोसी । मिले मयु आय अविनासी ॥ ३ ॥
सेवा को खासि सुख दीये । निपट ही अब नहिं दीये ।
रहे नहिं जात यो तन ही । अवे पिय आया ही पनही ॥ ५ ॥
देण सब पीत गड़े सजनी । रही अब पीछली रानी ।
हिपी भर नीन जल भाये । दरोग कव पीव दिखलाये ॥ ४ ॥
आरति अब पीवकी मनस । निमित्त भर चैन गो वनस ।

यत्न विन मीय की कष्ट न सिद्धि नरकर विन आवि ही भइलवै । हेर.
 यही कही हउरै मीय की जाय कीष्ट पर पाव सुजाय ।
 पर जायन पीजव है विन विन पीव पाव पर फिर नहि जाय ॥ १ ॥

पद १०४

जागी मानीगी गुण बेरा जगो मानीगी गुण बेरा । हेर.
 मिन के विगुरे मनमोहन हई पीव परबेरा ।
 न हमारै भीर न छडे कवन भवन परबेरा ॥ १ ॥
 जेन विन कति कोरि हरि ही लख कर उपदेश परबेरा ।
 क्यारु जो हरि ही मिलवै माणवीपन पन भेरा ॥ २ ॥
 न जायन से मरन भजेरी पावे विवेरा ।
 इरयाम मयु होउ सब है पाय पीव का बेरा ॥ ३ ॥

पद १०३

न छिब सिद्धि द्याम मिले से, पापी एक जगी आत्म से ।
 र भई निर्याव । हेर.
 न भाव का परे पडोरा सुरत निरत कर भाई ।
 नरद बार नचमणकारा एक अखंड युनि राई ॥ १ ॥
 मल कथल का सब विगाप जागुं खजम रापी ।
 न मन जोरु कक घोषावन हई रामदा रापी ॥ २ ॥
 जगो मयु जग मयु जग मयु जग मयु जग मयु ।
 न हरिदाम द्याम सब सिद्धि अस परस लिखलया ॥ ३ ॥

पद १०२

परम

सिद्धि की द्यारु नैगावै आगल रहियो है । हेर.
 खलार मोह जल भरियो खार हमारि जहियो है ॥ १ ॥
 निगुणी में गुण नहि कोरुं आगुण खार सहीयो है ॥ २ ॥
 खलार में कोरुं न अपुणी के नैह जगाऊ कि नैहियो है ॥ ३ ॥
 यो कहे मयु निरपर नागर जल निरव की बहियो है ॥ ४ ॥

पद १०१

पर हेर पर जाली पीव सके जो पीवो है ॥ २ ॥
 र पडोरा निरम हौमी पीव खोरा से कोरुं है ॥ ३ ॥
 वडैलो संग न कोरुं जग में जीवण थोरा है ॥ ४ ॥
 आराम आणवड के मारुं मारुं पापी मोरुं है ॥ ५ ॥

बचल वहुत हमारै राम कैसे करु मं भजन गुहायै । हेरु
 मधी पवीस की संगी जसे वधी हे हमारै ।
 करु मया उठ मया फिर ना खरु लगायै ॥ १ ॥

५२ ११२

भजन विन मिरी नै खरु उगाय । हेरु
 मिरी एक पांच हे हरिणी जामे वीन छिकाय ।
 अपने अपने रसके जोगी बरु हे जारु जारु ॥ १ ॥
 आंवा जाय आमली खाई केसर केरी गर्जी ।
 कायागारुमं कइरु म राख्या वसी जगदी ॥ २ ॥
 मन मिरीनै किस विधि राखी विहंरु नहि विरुति ।
 जोगी जंगम जगी सेवइ पंडित पच पच हौति ॥ ३ ॥
 गील संतोपकी बाई करायली गुकरायं रखायै ।
 कइ करीर सुणी महुं सायी विरिया मली संमारी ॥ ४ ॥

५२ १११

राम आभायै ।

बुख सुप मन नहि आलिये पर साये धरिया ।
 टाकां फिखका ना टंरु रजुनापकी अरिया । हेरु
 सीता सीली मारजा खुपति मारु खानी ।
 लंकासे पति लेगायी पनां विपति जानी ॥ १ ॥
 हनुमानसा महाबली कारन किया मोटा ।
 मारुय की पापयो पाया बेल लंगोटा ॥ २ ॥
 हरिबाइसे राजी गारुये रानी ।
 फायी नगर के बाइटे फिर रीया पानी ॥ ३ ॥
 नल सीसा नर नही प्रमथवीसी रानी ।
 पन पन मटकन ये फिख्या विन अन अरु पानी ॥ ४ ॥
 पूर्य पांडय रामका पन माहि विगाय ।
 बुढा जगु ना मिली सुखमर नहि खरा ॥ ५ ॥
 श्रीरं पुरी महादेव मं सुमन्या आरजानी ।
 श्रीरं की भजन भूयो गावे नरसीलखानी ॥ ६ ॥

५२ ११०

फानी मुहमाय नूं मीन अज पानी नहि रूना ।
 आया संकेया मरे राम का कइ नहि करुणा ॥ ४ ॥

कहै कवीर सुणी आई साधी साधु का जउ पद ॥ ४ ॥
 कहै बाहुं परवर आई तो बाहुं ही कल वेद ॥ ३ ॥
 बाप सखत है और न को सुख वेद ॥ २ ॥
 काटे जासुं वैर नहीं है सीखे जासुं वेद ॥ १ ॥
 मन व बिरोधन की मति जेद । डेर.

पद ११८

कहै कवीर सुणी आई साधी फेर जनम नहिं पाऊं ॥ ४ ॥
 धानी दीप तो धान सुभाऊं पहिल वेद पदाऊं ।
 जे हथौड़ी साठ पयाऊं जंभी तार कदाऊं ॥ ३ ॥
 लोहा दीप तो प्रेम भागाऊं धाकी बाट दियऊं ।
 सुख निरत का पहर धूपरा साहिबुं सं मिलभाऊं ॥ २ ॥
 हस्ती होवे तो भावत बुलाऊं अंकुश दे बलवाऊं ।
 पव रंग नाल जगत सं फुंके पाणी ज्यों पिबलाऊं ॥ १ ॥
 सोनी दीप तो सोनी मिलऊं कदाही ताय दियऊं ।
 मन तोहि किसिधि कह समझऊं । डेर.

पद ११७

कहत कवीर सुणी आई साधी आवागण भिटाती ॥ ४ ॥
 कदा कदा रण मन की घाती जनी न लिलपर घाती ।
 जानबुझकर नर पदुं नरक सं पीतत है दिनराती ॥ ३ ॥
 वैर समा सं भीजे बोलै मनसं राखे आती ।
 सुगवला जग जोउ बावरे चरुं न सुखकी घाटी ॥ २ ॥
 भावत जावत जग रही मनसं कुकरम रोपे छाटी ।
 विषकी घात जनी अलि प्यारी हरि बरना न सुखाती ॥ १ ॥
 मन व प्रेमी नीच संगीती । डेर.

पद ११६

मयु स्वाम की आय पयायो अयोनी सेयक जानी ॥ ५ ॥
 दारणागत पाउक सुखवायक दीनवयु सुखवाती ।
 धान पुष्यकर कर शिव करले दीप सकल विरगाती ॥ ४ ॥
 मयुमय जग जखि नीच सकल कर सामय जय घाती ।
 बाहुं पायक अयु गमावत करत निपट नाराती ॥ ३ ॥
 मयुय वेद वेदन की कुलम जावत है मति घाती ।

मन तं विपद भयां संजानी । तं संव सीव नहिं मानी । टर.
 तन पन अन अन संपत्ति देखिके बेरी मति योजनी ।
 काम कोय मय लोभ मोह सब यथां निरुं आभिमाननी ॥ १ ॥
 देख विचार मोन नहिं छोड़े राय देक भय पानी ।
 किन देखिबयं देखीसि मय कहीं रोगां प्रगट करानी ॥ २ ॥

पद ११५

मने क्युं नहिं राम संभारे । टर.
 पा जगमं बहू मान बहूत है पुलि परलोक सिभारे ॥ १ ॥
 कदा भयो सुख संपत्ति पाई अय पान याम सोवारे ॥ २ ॥
 विक विषा पन कय बाहुबल निन देखिनाम उवारे ॥ ३ ॥
 हट मय केम पय तय कीना जदा लोभ नख धारे ॥ ४ ॥
 जो धै रामनाम नहिं गायो लोकनिबंदन सारे ॥ ५ ॥
 रत उत देखत अयय विदानी रे मन निरुंर निकारे ॥ ६ ॥
 अयहू संभार कहुं नहिं निगन्वां अदा बंद पुकारे ॥ ७ ॥

पद ११४

अरे मन धरत क्यो म अघाई । टर.
 भोगत भोगत बहूत दिन भीसे योति नहीं कयुं आई ॥ १ ॥
 निन विषयन में बहू दुख पायो निजमें कर उखाई ॥ २ ॥
 पया भान खानी सु उरयो पुलि पुलि सोटां खाई ॥ ३ ॥
 क्षण में योति भोग नहिं बहूत क्षण में फिर लजबाई ॥ ४ ॥
 यनाके हित भूदन के भागी सो सो नख दिखाई ॥ ५ ॥
 पूत निन ममता सुं बंध्यां नाग संग बनाई ॥ ६ ॥
 सबके देखत जगमें पक-यो अदा कोन सुबाई ॥ ७ ॥

पद ११३

मन्वां पदयो कुमति के पीछे जगदियो धान ध्यान सारो ।
 सायु स्वर्वाका कखा न माने प्रसा है धूतारो ॥ २ ॥
 पा मन्वा को लज न आवै साजगहरे कहुं यारो ।
 हटां पीछे दाल न आवै जैसे धोर उजारो ॥ ३ ॥
 वांति में सोकस और परतिदां खानमें हुंसियारो ।
 देखिवांकी भक्ति सायुकी सेवा जमसे लेखारो टारो ॥ ४ ॥
 दाख पुराण भागवत भोग सुण सुण गयो जमारो ।
 कही कथोर सुणो साईं सपयो इन मनघारो काह पसियारो ॥ ५ ॥

लल लंगरु नैना कर हरे वरुं वरुं अगार ॥ १ ॥
 धीना राजी ऊजर करुं अगार ।
 मी आखण ना रहे धरुनी लिखणुं सास । हेर ।
 ली माधवा निजनाम लिखार ।

पर १२४

अखण निरजन राम हरे वाका पर न पाऊ ॥ ३ ॥
 करुं कवीर मं वया करुं वया कहिके गाऊ ।
 निन धीमा निन धीमली असमान उदरया ॥ ५ ॥
 देखा जीनी ही करामावरी मनसा महल वणाया ।
 लेखण वाक हाथ हरे कहे कहे काठन वाकी ॥ ४ ॥
 शेष नाग सेवा करे वरुं पूरे वराकी ।
 वाया वाकिया राजक धरुनी असमाना ॥ ३ ॥
 एक जीनी देखा निन हरे जीनी मल विधाना ।
 जी मां जी जाऊं देव हरे देखा विरुं वरिया ॥ २ ॥
 जीपारी जीनी हीरी जीनी माहे माणक मरिया ।
 आया जीनी राम गयी निधना देण न पावुं ॥ १ ॥
 पाना छुं हरे जीनी रावरी कुंला सेज लिखणुं ।
 काहे हरे वराही जीनी आपना जीने लख वयावुं । हेर ।
 जीपारी देव जीन मयी करुं देखा ही माहे ।

पर १२३

राम लिखण

सुखसारण मज राम ने अवसर आया पर ॥ ५ ॥
 लख वावरी मंगल कर पावुं निजला देव ।
 निना परुंसा मुक्ति हरे करुं लेई सोल ॥ ४ ॥
 सब वीरकरुं करुनी देव परुंसा खोल ।
 मन धांटा मया रवी अरु लिखण कल देव ॥ ३ ॥
 जी मन भेरी गीरिया वरुं निजा अनेक ।
 रावरी काहे ही ना रहे ऊठ वरुं पव खोप ॥ २ ॥
 कया मया पावुनी और कया पर होय ।
 ना काहे वय निरारणी वया कया सुभरुं नहिं राम ॥ १ ॥
 ना काहे वासे जीपारी ना काहे जीना राम ।
 पदुवा जया पदुं नही जीने हरे । मना मुख राम रवीने हरे । हेर ।

पर १२२

धीपरी

४६

माय वन की मोर भ्रमण भावन भक्ति राम ॥ ३ ॥
 कति मुक खर वरन की सेवा कीज और न काम ।
 धामन राम सदाय प्रसन्न और विरामा जाम ॥ २ ॥
 मात विना परिवार पदार सुव विर गति सुवाम ।
 कि पवन बार दिन वामा धर विरामा और ॥ १ ॥
 शोभात बहू और अरती बाकर भवन और ।
 ब्रह्मकी दिन शेष कहीके कारन जीको रे । इत ।
 माय पर मोर नीकी रे ।

पर १२१

राम भक्तिमता ।

कहे कधीर जेस मन अपन अपन भयो अरामनी ॥ ४ ॥
 मनसा भावा और कसुना भवत सुव ब्रह्मनी ।
 सुधीर सुवा परा दीया जरा मरु भव भानी ॥ ३ ॥
 वन सुख लुभ भयो एक बाहे राम नाम लिव जानी ।
 मोवा डीरी रेवा राणी वाहु सुख म जानी ॥ २ ॥
 लय विरामन बर डुलवा राम देा वही राणी ।
 जानी भयो देव जग जाला मर जलानी जानी ॥ १ ॥
 इली शोभा नाम गह भंडर कानई पपक जानी ।
 विर विरामनी वन पन डीले सुख गन्ध म जानी । इत ।
 भरपरी भू भयो रे श्रुतानी ।

पर १२०

उल्लास मुक परताप म अमरापुर पाया ॥ ४ ॥
 लोका साद विरा वन आवा रामनाम लिवलाया ।
 धामपुर श्रुतानी विरि जय मर लकियो हारी ॥ ३ ॥
 देनी विरि विरई जग मारी वन न कोई राणी ।
 पाव पाव लोत बागदई पूजा कहि कौले ॥ २ ॥
 पूजा शेष बया पली मं शिखा कारण कौले ।
 मयाले लू पूजा कौले एक न माने शक्तिया ॥ १ ॥
 फाटा पूव भूज वन अर वरन मारी शक्तिया ।
 शीस उपाधी गज मं कथा करम कभंडु फुटी । इत ।
 मन रे भव रे जग रे छुटी ।

पर ११९

निर्गुणभजनमाला

देव दीनकी दयालि देवी देवी न कोई ।
जाहि दीनवा सुनाय दीन देवाँ सोई । ३२.
मुनि सुर नर नाग अक्षर साहिब तो पावै ।
जावै तोलाँ रावरे न लोक दीन देरे ॥ १ ॥

५२ १३९

तू दयालि दीन तू तू दीनी म मिजाति ।
तू मसिख पावकी तू पापुजावाति । ३२.
नाय तू अनाय की अनाय कोन मसो ।
माँ समान आरत नही आरत हर तोसो ॥ १ ॥
माल तू तू जीव तू काऊरे तू सोते ।
गत मात गुन सखा तू सब विधि हित मोते ॥ २ ॥
तोहि मोहि नाते अनेक मानिये जो माते ।
ज्याँ लोँ गजली कपालि करण पावै ॥ ३ ॥

५२ १३०

दीनसुखदेन देव सुखन गुनकारी । ३२.
अनाय की अनाय कोन मसो ।
माँ समान आरत नही आरत हर तोसो ॥ १ ॥
माल तू तू जीव तू काऊरे तू सोते ।
गत मात गुन सखा तू सब विधि हित मोते ॥ २ ॥
तोहि मोहि नाते अनेक मानिये जो माते ।
ज्याँ लोँ गजली कपालि करण पावै ॥ ३ ॥
दीनसुखदेन देव सुखन गुनकारी । ३२.
अनाय की अनाय कोन मसो ।
माँ समान आरत नही आरत हर तोसो ॥ १ ॥
माल तू तू जीव तू काऊरे तू सोते ।
गत मात गुन सखा तू सब विधि हित मोते ॥ २ ॥
तोहि मोहि नाते अनेक मानिये जो माते ।
ज्याँ लोँ गजली कपालि करण पावै ॥ ३ ॥

५२ १२९

दीनसुखदेन देव सुखन गुनकारी । ३२.
अनाय की अनाय कोन मसो ।
माँ समान आरत नही आरत हर तोसो ॥ १ ॥
माल तू तू जीव तू काऊरे तू सोते ।
गत मात गुन सखा तू सब विधि हित मोते ॥ २ ॥
तोहि मोहि नाते अनेक मानिये जो माते ।
ज्याँ लोँ गजली कपालि करण पावै ॥ ३ ॥
दीनसुखदेन देव सुखन गुनकारी । ३२.
अनाय की अनाय कोन मसो ।
माँ समान आरत नही आरत हर तोसो ॥ १ ॥
माल तू तू जीव तू काऊरे तू सोते ।
गत मात गुन सखा तू सब विधि हित मोते ॥ २ ॥
तोहि मोहि नाते अनेक मानिये जो माते ।
ज्याँ लोँ गजली कपालि करण पावै ॥ ३ ॥

५२ १२८

कई कर्षर शिव राजाने । उनकी सेवा मध्य मया अनने ॥ ४ ॥
 उरु विभर वही देवी ऊँचवती । मनस मान कर देववती ॥ ३ ॥
 अरुन देवी मीन फल जग । बाहुना कौरु देव विमान ॥ २ ॥
 गटक बूटक वरुई कना । धरगुड गुरु सँव गदलेग ॥ १ ॥
 दिव मिज मान गवो मीत सवनी । मया परगत वीगनरु रानी । ३

पद १२७

कई कर्षर मन राजक देवा । वन अभिमान मिसे रानीया ॥ ४ ॥
 मी मीती मीजाण कानी, भरनोवन मी नाम न रानी ॥ ३ ॥
 विपानी वरु मी पूरुव मीत, विपानी की सेन कर्ष न रानी ॥ २ ॥
 जो जगना से मानक पण, मी मय मीण सिय गणया ॥ १ ॥
 जग विपार अय कया सीई, देण मई दिन काई कं जीई डेर.

पद १२८

एण परानी ।
 कानीन के पूरुव से मीती सय रानी ॥ ५ ॥
 धीय दे अनी कते विरु विमाने ।
 राजा की मतिपण्डिया नहि तो विरु जगानी ॥ ४ ॥
 कानी विना न देविपु पूरण अविनारी ।
 अनकी या गति जानके उरानी वारा ॥ ३ ॥
 वरुण विन वरुन देवी निरुपन धनकजा ।
 जग विपार विन से वीसे वरु वकीर ॥ २ ॥
 मी वरु मी वलकता वीसे यन विन मीत ।
 से वी नाम के ऊपर मी वन मन वारी ॥ १ ॥
 गण पूरु मी विपारी विन उगर विपारी ।
 जीव वरुके पूरण विना विनारी कहु यारा ॥ डेर.
 अय तो गण देवा कते से समरु देवा ।

पद १२९

कई कर्षर धुण साधवा कानी साजण देवा ॥ ४ ॥
 धीरे धीकर अण्डिया जानी नाम धारा ।
 सदेव सतीस जीवो पावे पूरण अण ॥ ३ ॥
 मीम सतीस मदीवली देव उमण देवा ।
 शरुत बाजे देव उण उण मी वारा ॥ २ ॥
 उवा मीरि गुणवसे विच कौटिक धारा ।

१ शीकरि साहिब नामदेवकी सुन्दरदासकी अहि महेतमाओकी भाषीसँ विरह
बनाई । परज भाषमाओ (केशवभाषी) देखिरेपर के लखपान मन पदव धर
बनाकर कहीसरेख अहि महेतमाओकी छाप बनाई है और उनका कल अकली
अर्थ किया करते हैं । उनके अग्रपत्नी अलीबी कीवैत अग्रभाषी व साथ मानवै है ।
२ शीम । ३ भाषा अहि । ४ भाषा । ५ भाषा । ६ भाषा । ७ भाषा । ८ भाषा । ९ भाषा । १० भाषा ।

प्राणी कबरा खवटी जलगाया भौरी होगई साथ ॥ १ ॥

एक अनामि हमने देखा कौनसे लगाने साथ ।

देखीनी साथी नाथसँ गहिया देवीजाय कही कही समझाय । २८.

पद १५१

गुरु कन्होरास महाराज भक्ति की आज दास्य सँ आवै ॥ १ ॥

गुरु रामदास दासगई जन पीपल बलि बलि आवै ।

लिन झूठी वज बकवाह ईक रामनाम धन लाहै ।

ये रामसही साथ लिन होवो धम अगहै ।

यो है लिर पदला परै नरक सँ परै क जगपुर आवै ॥ ५ ॥

कोइ आनदेव को आवै यह पदिया परै चहवै ।

कोइ होम जाय मख लख कोइ अग्रजल ठहरवै ।

कोइ शुकल सरोया मानै औरन को मरम पवानै ।

सो फलहीकी पाय मरे देवदेवक जन्म नामवै ॥ ४ ॥

कोइ श्यापवाह लख सुतहत देहको देवै ।

कोइ दीरघ सेव आवै बाकी आस अवर माहै ।

कोइ थार धाम भक्ति आवै भक्ति को राह नहि पावै ।

तनकी देव भुकाय करे दुख राय ले होय चरवै ॥ ३ ॥

कोइ फल मूल फल खाय जेज का जीव खरावै ।

कोइ गहै हिमालय माहीं सो लग लोक को जाहीं ।

कोइ देव पद्वत जन शोषा वनसँ रहे होय निरास ।

आसो जो अपनी फिर जन्म परै परक खोराही सँ आवै ॥ २ ॥

कोइ धन धन फिरत उवासा पाके मनसँ और ही आस ।

कोइ नगन होय गुरे डोहै कोइ भोज परकर नहि पावै ।

कोइ करत गुन सँ पासो पाके परै जीवन की आस ।

दे महल समय गकरान करे सनमानक मनसँ आवै ॥ १ ॥

काशीसँ कराय सारे कोइ भीर भूख लिस मारे ।

घर न कीजै हे मंगी, घरन भटकन मोहि ॥ ११ ॥
घरन की घरन अही, घर न जोगी मोहि ।

माधव भरे उर वसै, सदा सकल सुखधान ॥ १० ॥
माधव मा भव होइ मम, माधव मम होइ आन ।
गुलसी सीताराम विन, अपना मोहि कोय ॥ ९ ॥
सब देखे परखे लिखे, वदित कहै क्या होय ।

गुलसी मोसम परित की, गुम पर राखी राम ॥ ८ ॥
नहिं निधा नहिं बाहुबल, नहिं खरवनको दोस ।
गुलसी मोसम दीनक, सीताराम अघार ॥ ७ ॥
काहिके वन घाम है, काहिके परिघार ।

होसै काम अदाज की, धार न बाहुं ठौर ॥ ६ ॥
सीतापति खूनाथनी, गुम लग भौं दीर ।
गुलसी यातक के मते, विन साती सब धूर ॥ ५ ॥
गंगा जमुना सरस्वती, सात समुद्र अघूर ।

राम भयै नहिं दहिने, सबै दहिने मोहि ॥ ४ ॥
जग मुहुरत योग बल, गुलसी गजन काहि ।
दुकक सोला महरया, लखौं करै सजाम ॥ ३ ॥
साहें देही आदिषया, धैरी खलक जहान ।

दया हमार गज बल बखी, बखी न दया गज चीर ॥ २ ॥
कहा करै धैरी प्रबल, जो सहाय खीरीर ।
कृपा होय धीराम की, बाल न बाँकी होय ॥ १ ॥
जिने वारे गान मं, जिने धैरी होय ।

दीहा ।

धरती ही क्या एक गली है अगुन धर धरौं आगुन एक न म क्या जाहिसे ॥ १ ॥
कई क्या न क्षम बसु जस आता राम एक एकरे बरान करे बरे की निवाहिसे ।
कई क्या न माई तारे करे ना बघाई एक न ही है सहाई और कीन पास आरै ॥
कई क्या न राम तारे परे नही कामा एक नही मरिणका और कीन की सपुहिसे ।

कविच ।

लिखिबं पर रखा देख्यो हीं तनी छत्राईं जग ॥ १ ॥
दास मस झूठ नहिं बाँधे कदाय अरु सुनो वै काम ।
दायो सकल सकलरी डाकुर न साकर साकरु तनी ॥
इं पर देवा अवंसी आये भट सुगणप लिपट भनी ।
गोलांरी सावो निरवण गोलांरी गोलांरी गोपाल ॥
कोहि २ प्रहार जो करला कोहि २ देविका काज ।

राम गजस कहलव है पृ गजस मया जगकी राम जग्या ॥
 भावो सो फल कल्यो तनन मनन नही आहो सो मय यो गज्या ॥
 मरुत मरुत निज मरुत को जीवत करेगी यो सरव को सारो ॥ १० ॥
 जगस ही मरि फ्या न मया जान जीव के रामकी मय न मयो ॥
 फलक जगो अपन कुलकी अपनीव नही फ्या मय न मयो ॥
 जगनी फ्या बोड मरी रनकी जान ऐसे पदा की पर मं गयो ॥
 जगते यो जीव मया नर माणक गाठ के सीग व पूछ को बोडो ॥ ९ ॥
 आचार महीन बरै अपना उनके संगे कोक भए न होव ॥
 कियो मयाव पूजु देह धरी सुख दुःख के पाप के कम को योव ॥
 पयुज मजे जग मं नहि कम की दुख बीज को योव ॥
 हरि सं उज्या हरि पोखत है हरिमहि रखा हरि के बिसयोही ॥ ८ ॥
 वैसे यो जीव विपयसंग फूलत नो विन जीव अही मुखोही ॥
 वापक जो रवि सोपत है निव कर जग नहि देखा बिसयोही ॥
 जलमं उज्या जलमहि रखा जल पोखत है जल छुवत नहि ॥
 बापगई सारै जगके एक मोव निगोही को मोव न आई ॥ ७ ॥
 बंद करव प्रकार कहै नर जीमगई अवतर सदाई ॥
 भीमस डोण मखे दुयायन पवई तब सभिर सुखोई ॥
 बिकस मोन देयोनि मखे बलि करण कुंवर निरा पिर नोई ॥
 देह तो बहि तजनी निदान पृ वहि तब किन देहकी यो ॥ ६ ॥
 रं निय देह करै सुख हान रते पर तो बहि जगत यो ॥
 जगि की पोड अराधिका ओट उपाधिका ओट समधिसे यो ॥
 देह बचवत भवती रज रते मरी मख सुव की यो ॥
 पावत पावत पावत रहे तो निरापर पावन के दिन आय ॥ ५ ॥
 धीरसभिर के पाव न हारेकी यान कियो न कमी निव जय ॥
 सोहि किया संग पावन जगो तो सति निगो हंस सुव गगय ॥
 पर मं पावक पावै मरी जगनी संग पाव के पाव कह्यो ॥
 देव उपाधिका जग्या नही अब कयो बडे बडे चार जगके ॥ ४ ॥
 वेरी श्री निव के निवचवै कवि प्रथ मने निव धीरे पना के ॥
 हारी चरै फिर मय बडे सुखपाव बडे चरै जीमं पना के ॥
 गमं चरै पुनि मय चरै पजना ये चरै चरै गीरे पना के ॥

पुंया ।

हारम के काम तो योव करै साहज के नाम भटकता है ।
 सोई दीन करै आधर मरी पकर के फल पटकता है ॥ ३ ॥

॥ १ ॥ ...
 ॥ २ ॥ ...
 ॥ ३ ॥ ...
 ॥ ४ ॥ ...
 ॥ ५ ॥ ...
 ॥ ६ ॥ ...
 ॥ ७ ॥ ...
 ॥ ८ ॥ ...
 ॥ ९ ॥ ...
 ॥ १० ॥ ...
 ॥ ११ ॥ ...
 ॥ १२ ॥ ...
 ॥ १३ ॥ ...
 ॥ १४ ॥ ...
 ॥ १५ ॥ ...
 ॥ १६ ॥ ...
 ॥ १७ ॥ ...
 ॥ १८ ॥ ...
 ॥ १९ ॥ ...
 ॥ २० ॥ ...
 ॥ २१ ॥ ...
 ॥ २२ ॥ ...
 ॥ २३ ॥ ...
 ॥ २४ ॥ ...
 ॥ २५ ॥ ...
 ॥ २६ ॥ ...
 ॥ २७ ॥ ...
 ॥ २८ ॥ ...
 ॥ २९ ॥ ...
 ॥ ३० ॥ ...

॥ ११ ॥ ...
 ॥ १० ॥ ...
 ॥ ९ ॥ ...
 ॥ ८ ॥ ...
 ॥ ७ ॥ ...
 ॥ ६ ॥ ...
 ॥ ५ ॥ ...
 ॥ ४ ॥ ...
 ॥ ३ ॥ ...
 ॥ २ ॥ ...
 ॥ १ ॥ ...

ताकी पत्र पसिया भरी कर करण कीनी ॥ २ ॥
 तिली आके दो नही पर भरी पर हीन ।
 खय जोड़ी रामसे से कहिये धैर्य ॥ १ ॥
 जोड़ी तन जोड़ी तनी फिर जोड़ी का खाम ।

दोहा ।

विरक्त कहिये भरती के गोपीचंद मीर ॥ ३ ॥
 अणवाहिक अवर्षत जन बनी भयं की मीर ।
 निरि डंगर वनवास समयसर बली आई ॥
 तीरु भया फकीर अख स पलक लगई ।
 टकी बलब उलीण तनि तीरु भया फकीर ॥
 विरक्त कहिये भरती के गोपीचंद मीर ।
 जनराम विरक्त साईं जोधेपद विधानवी ॥ २ ॥
 आठ पहर सोरठ बड़ी एकाएकी रामजी ।
 सेरसेरी तबै पक्ष के दिख न जावे ॥
 छजन भोजन नीर निकी पर डूखा आवे ।
 अहनिहि आठो राम रामजी लानी प्यार ॥
 विरक्त साईं जण बसे बली से ज्यार ।
 सुत दारा धन धाम गये स्व निके खटके ॥ १ ॥
 कहे निरिधर कविराय चीज जो खारी परके ।
 अथवा पाव अनेक करे निशि वासर डोले ।
 भावे बीच वजार प्यो रह मुछा न बोले ।
 भावे रही उजार में भावे बीच वजार ॥
 खटकेवाली पस्ति को दीनी निखन डार ।

कुंडलिया ।

भन हाथ सया निके निके पनही पर है पदही पन है ॥ ५ ॥
 कहे केशव मीर जोति जो अर बाहर भोगनको वन है ।
 अथनिअह संहद धम कया न परिअह सारुन को गन है ॥
 निरिधर पस्ति विचार सया मुख सवा कदगा पन है ।
 फकीर की राह कठिन अरु पगपराहि निकसत दूष छटोयो ॥ ४ ॥
 रूप विगार तो उगह को जोखिये जो कोउ आसक होत लटोयो ।
 कली हूँ खली हूँ राग रही काला भूरे कयो निय खडे सिरीयो ॥
 शिखरि मीर उंड दीव पन माहि न झुंझा बांध टोयो ।
 साईंदीन कहे मजपत मुक अवर्षत भरी अवर्षत को ॥ ३ ॥
 पदमें पर भोगलिया गडिके पर शीघट पाट अखन को ।

मत ही समद उवाचो, ज्ञानी ज्ञान न लेह ।
 आधी उवाचो, पाह संवाराण देह ॥ १ ॥
 हेला सरवर मत लवो, जो अल बागो होय ।
 बापर बापर जालो, मला न कहेसी कोय ॥ २ ॥
 सरवर हेस मनापले, वेदां पका पहाहे ।
 जो वेदां रक्षिपावणा, तापुं जाल न लोह ॥ ३ ॥
 रवनास परजो गरी, जाला न ज्ञान पहाहे ।
 सरवरस मीठी घणा, जो हेला जाल कहेहे ॥ ४ ॥
 और घणा ही जायसी, जिणे कामेची काग ।
 हेला कर न जायसी, मुण समदर भूद भाग ॥ ५ ॥
 जो अल न पावो जा, मुण मुण रजा न रंग ।
 कहेया बोख्या जोलना, कर न मिळसी भाग ॥ -

दीक्षा ।

लोक पावेंस रक्षिणाणी ही समदहे, बीजावे बापर मुणद फिर जाणो ।
 गरी मय बीच एक मन्त्री ही गुणावर, तेन विषयम देव और उदजाणो ॥
 कहे करारी जाल वडे ही वीर बाळ, राज वडे हेही पाळ जगल मुदजाणो ।
 बाण कहेल मर कहेको विजाण करे, रोवणी जो रडे गीरे विदेसी देव पाणो ॥ १ ॥

कवित्त ।

ब्रह्मी देही होय मं वेही सी कोपीन ।
 देही विच देही गरी काया देही कीन ।
 काया देही कीन कीन दीन वायक नहिं जोले ।
 मोग योग संयुक्त उक यह मन मं जोले ॥
 उर धर मुण को धान मोह ममता सब छुडी ।
 सो वेदाणी राम कहे हरिराम अखंडी ॥ १ ॥
 दीनदेक कोपीन के अर भावो विन भोव ।
 जेजसी खुबर उर घेसे इंद्र वापुरो कोन ॥ २ ॥
 कधीर सात गांठ कोपीनके मन मं रडे निदांक ।
 राम अमल मातो रडे निने इंद्र को रंक ॥ २ ॥
 कर अर जीम जोगीदडी यह दीनो वखरख ।
 निरमय होय निदांक राम वेसी मारी झरख ॥ ३ ॥

कुंडलिया ।

दमडी दमडी बीच मं हरिया निवरी होय ।
 दमडी सं बाया फिला दमडी मां कर जोय ॥ ३ ॥

कहँ जायँ कहँ जयते कहाँ जहायँ जहँ ।
 फयाजायँ किसँ जाहँ परँ रहँते रहँ ॥ १ ॥
 अथ सवँ जँ देव है उरुय अल जँ राज ।
 जो गुजरी निज मरत है वो आवहि किहिकार ॥ २ ॥
 जहँ है परलोक्य कर साधन वतकाल ।
 राजा नहँ जगसी राजी रानी राज ॥ ३ ॥
 उदसी सहस्र कोस दूय जायत है दिन रात ।
 एता रोटी रास पर काहेकी कुशलता ॥ ४ ॥
 जगहि रह्या नही चलया विद्या धीर ।
 राजन वनक सुदाम की कोन सुधावँ धीर ॥ ५ ॥
 आस सुधी ना लहे अल सुख माहिँ विपस ।
 जख जख जानत नामा दूमदा करँ विप्रास ॥ ६ ॥
 लीकत हैती पग विद्या पीठे दीना दीय ।
 असुगुन वी पहिले यथा कुशल कहलँ दीय ॥ ७ ॥
 सुन प्राणी सुदुगुन कहै देह खेद की खानि ।
 धरँ सहस्र दुख दीय की करँ मोख की खानि ॥ ८ ॥
 जसपुत्र सीधी कावकी शैली नरकी देह ।
 जान करती जगसी हरिमज जग्या लेह ॥ ९ ॥
 जसपुत्र रास सरयका फया सोयत मरि शैल ।
 दयास नकार करके याजत है दिन दिन ॥ १० ॥
 दय देवाराका पीठया वासँ पठी धीर ।
 रहत अथमा है जगत जान अथमा कोन ॥ ११ ॥

दीक्षा ।

शैली तन पन लहे दाम देवन दीकार ।
 गौता जगसी पूर मोह जग अब मरिप्या ॥ १२ ॥
 कर्मों कोका कुँक दाय देकावसी ।
 फलसँ बाहिर कुँक कोरँ न बजसी कानिया ॥ १३ ॥
 लीखी करली जार पण पुण हसि जग पी ।
 ओ वन देवी उदार सुवक कहै सब मरिप्या ॥ १८ ॥
 गंगी शैली रोहँ धुपन कोर बाँधु नही ।
 बाँपर जग्या बहीरु मरहट हक सं मरिप्या ॥ १९ ॥
 बाँधुया पर जेवाह जाना सह दीसँ जगत ।
 जन पन वन जेवाह सब ही अंत विपयसी ॥ २० ॥

५१
 सज्जप्राप्त कहियो सुगम करियो कहिन विजात ॥ ४२ ॥
 सब सुगत निप जगत है दान मान बुधवात ।
 अथवा पर पावनिपा माल विद्वान् दाय ॥ ४१ ॥
 साया सोनी खट्या खट्या सोई साय ।
 दोनी दाय उल्लिख्य यही सयानी काम ॥ ४० ॥
 पानी पावो नाथ में धर्म पावो दाम ।
 पूनी विरासे साह की करसे अशकर लेह ॥ ३९ ॥
 माया में रोगकी परणीपर की देह ।
 परने के आधीनता देवन के अधिमाम ॥ ३८ ॥
 सेवे के हरिनाथ है देवेके अन्याम ।
 जाला कीर्ती ले चली पावन की परिवार ॥ ३७ ॥
 कंजर मुख से निर परधी यथो न जाहि अहार ।
 धर्म किये धन ना धई जोखदाय खुशीर ॥ ३६ ॥
 गुलसी पछिन के पिपां सरवर धई न नीर ।
 सपनी आलि देखली यां कहै दास कबीर ॥ ३५ ॥
 धन दीये धन नौपडे नहिपां धई न नीर ।
 देह खेह ही जायनी फिर कोन कहिना देह ॥ ३४ ॥
 गाँठी दीप सो दाय कर दाय दीप सो देह ।
 बली विरियाँ रे नराँ संग न बलि छराम ॥ ३३ ॥
 जाय खुलाय छिदायई करले अपना काम ।
 आगे दार न पालियाँ जेना दीप स लेह ॥ ३२ ॥
 देह धरकी एह फल देह कहे देह ।
 कर साहिबकी धरनी सुख के कहे देह ॥ ३१ ॥
 कविरा कहै कमल के दो पानी लिख लेह ।
 की जुराई और न आप कियो उपकार ॥ ३० ॥
 गारपण है धान की दीजे सदा विचार ।
 गारपण एक मोल के देवे धीमगवान ॥ २९ ॥
 है वातन की मूल मति जो चाहे कदापन ।
 दाम दाम से बंधिया पामर मज्जा न राम ॥ २८ ॥
 काम की निकर हूँ रखा दाम की मयो गुलाम ।
 रे जहँ फिर कित पावही या आसरे जग माहि ॥ २७ ॥
 धरत गहँ धोही रही अजहँ सेवे नाहि ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

कवि ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

कवि ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

कवि ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

कवि ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

कवि ।

॥ २ ॥
माया तो ज्ञानी भई ज्ञान फिरि सब देत ।

दीक्षा ।

माया ।

अपनी निरुपायन बात ब्रह्मि सु अती सम द्वाव सबे सुबती ॥ १ ॥
गती बरती सु प्रानि पती माती अय ज्ये सु अती ।
न पती मर वृष्टि मज्जी सु दती कथ कुरे कती जगती साती ॥
जकती पकती सु खती कर मं पण पंथ परे न भरे जगती ।

संबंध ।

एह प्रयाग भई मायन बंधुप नवन न त्रिप जीवन सुबती ॥ ३ ॥
फिय सखा सकल सुदुर सरन लकमिपकरि निहरीति विमति ।
असन बसन वन गलिन वन सकल मजन से ॥
द्वंद्व दलित कव पलित तव्या संबलित सजन से ।
रसन न रस आवरहि वरण मग बलत सुबिधिप ॥
नयन अथवा गालिका कथ रव गंध सुमिधिप ।

जीवन गमाय जग निरखता जका कोष गोजी जरा ॥ २ ॥
बोली जीव पदमद यमल जर्क भई करती लखिर ।
अथवा गाने सुजना साद ओखले न सोना ॥

बोली नग निरखता गती ओखले न सोना ।
पूजा दायी देवता जोन देवता न पढ़ी ॥
वरण प्रबल सूरता वरण अंगल न बढी ।
सुत गती परिवार कहे आ भरे ती सुपडे बोको ॥ १ ॥
जगजग दाले गाई की सादव पदगयी बाबरी ।

गहि निव मं दिय दूबे सब लोग जिगाई ॥
सखर सोनी न कोष असी मं आस न काई ।
कह्या जगै पवास साउमं कोष हि दीवा ॥
निख जग अथवा ररन बालीसां मीठी ।

सिद्ध ।

गई जगानी भजन विन बानी पती विरोध ॥ १ ॥
पलित बुद्धके शीघ्रपर सोता पलित न पव ।

दीक्षा ।

पूज की सादर गरी बचल देना वडे भूमिकी निजान गही और की परति है ।
नैरे एक भासा धर्मन रस प्रपणन दुई के धर्मो मं निजानी अरति है ॥ २ ॥

उक्ता माहं निररुर्षी अरु निररुर्षी दोष ॥ १४ ॥
 विषय निररुर्षी टीकली कथा विषय टीक दोष ।
 रामचरण मीना मती या मती निररुर्षी ॥ १३ ॥
 परका निषे न पाउता हंस हंस दोषे मती ।
 विषयक वरुण दोषे वरी कथा परकी कथा परकी ॥ १२ ॥
 माहि निररुर्षी ककी कथा याती कथा कादी ।
 दोषा मदी लवकर बाधण बाधा दोषा ॥ ११ ॥
 कधीर पावा कपरी पदर कर गरी वरुण कथा ।
 मदीरुद अरु जगदीसी मदीरुद मदीरुद ॥ १० ॥
 कधीर वरी जलरु सुदीरु मदीरुद माहि कधीर ।
 जीव लीख काजती सुवा मदीरुद लीख ॥ ९ ॥
 कधीर मती माहि या माहिरी बाधण वरी वरुण ।
 फीरुद हरीजन अरुद पाउता फीरुद ॥ ८ ॥
 कधीर मती कधीरुद मदीरुद कधीरुद मती वरी ।
 रामचरण मदीरुद माकसी मदीरुद अरुद निररुर्षी ॥ ७ ॥
 कानिनि लीख फीरुद सुव पाउता परीवर ।
 वरी मदीरुद मदीरुद मदीरुद लीख ॥ ६ ॥
 लीखी मदीरुद कानिनि लीखी लीख फीरुद ।
 वरीरुदी मदीरुद लीख मदीरुद मदीरुद ॥ ५ ॥
 कधीर एक कनक अरु कानिनि लीख फल दोष पाय ।
 वरी कधीर लीख फीरुद अरुद लीख ॥ ४ ॥
 कधीर दोष मदीरुद लीख फीरुद मदीरुद ।
 जीरुद मती लीख वरुण वरुण वरुण ॥ ३ ॥
 जीरुद जीरुद लीख मदीरुद मदीरुद पाय ।
 लीख अरुद अरुद मदीरुद लीख मदीरुद मदीरुद ॥ २ ॥
 पवित्रत पूजा पाक लीख मदीरुद मदीरुद मदीरुद ।
 कधीर मती मती कधीरुद कधीरुद मदीरुद ॥ १ ॥
 मतीरुद मदीरुद लीख मतीरुद मतीरुद मतीरुद ।

दीर्घ ।

लयमति यती मदीरुद मदीरुद मदीरुद मदीरुद ॥ १ ॥
 लयमति लय लीख मदीरुद मदीरुद मदीरुद ।
 मदीरुद मदीरुद मदीरुद मदीरुद मदीरुद ।
 मदीरुद मदीरुद मदीरुद मदीरुद मदीरुद ।

शुद्ध ।

सुकल माहि निखरुई यरम विगारुई दोष ॥ १४ ॥
 विषय विगारुई दीकळी कथा विम दीक दोष ।
 रामचरण खीजा मली या मालि विरजाली ॥ १३ ॥
 यरका गिण न यारला हंस हंस देवुं गाली ।
 हिरेकाय लयां दोनुं विले कथा परकी कथा पाली ॥ १२ ॥
 मालि निखरुई केंकरी कथा राती कथा काली ।
 ह्यां मूईदी लायकर वायण जाया देवा ॥ ११ ॥
 कधीर राता कपटी पहर कर गार्त वया कया ।
 मक्षीरुई अंग लामसी सो मालुई यारी ॥ १० ॥
 कधीर जहां अलाई सुंदरी नू मालि आहि कधीर ।
 जीवत सोबे कालजी मुवां मरक लेजाय ॥ ९ ॥
 कधीर मालि नहिं या गारुई वायण वडी पजया ।
 फोरक हिरजन ऊवरे पारयण की ओट ॥ ८ ॥
 कधीर मालि कडूक गारुई करे निजर की ओट ।
 रामचरण मुह माकसी मोहका जंवा कियार ॥ ७ ॥
 कासिनि खारुई कीज सुव पोपयव परिवार ।
 वृषी मारुं वारुं सुं या मारुं हंस खोज ॥ ६ ॥
 जोटी मोटी कासिनी खरी विष की बोज ।
 देहीदी सीं विष चरुं जाया सुं मरजाय ॥ ५ ॥
 कधीर एक कनक अंग कासिनी विष फल दोक पाय ।
 जो काज लंघन की करे सोड अखुई आय ॥ ४ ॥
 कधीर दोष यादी वीसि खरी कही न लंघी जाय ।
 जो नर मालि से देव देवत देवत देवजाय ॥ ३ ॥
 और डोर जो देवत हू निकसे मोसर पाय ।
 लुं अंग अखिपान की वीं सुवें गवुं उचिंजाय ॥ २ ॥
 पण्डित वृजा पाक विज यह दिमाग मालि जाय ।
 कडू मीठा माळा कडू कडू पदवा कडू आय ॥ १ ॥
 मरक न रूई निखरला लुं हंगल की थाय ।

दोहा ।

खयमलि यती मायासंगाल पुमालि विभुतः ॥ १ ॥
 यजति सदां धूपं क्षीमः प्रसक्तिमानसः
 व्यभिचारात्तयोः सच्छीत्युदीरितयोः ।
 सतयित्पुत्रैः शान्तीः व्यवाप्तमहादेवो-

श्लोक ।

राम सुमरति धरित्री नरि ॥ १ ॥ गुरु सेवामं संकिन्त नरि ॥ २ ॥
 करुणी कर गुर्यात् नरि ॥ ३ ॥ निवकी निरुप यदात् नरि ॥ ४ ॥
 वानरेव अलघात् नरि ॥ ५ ॥ सन् वेष दलघात् नरि ॥ ६ ॥
 लल विन गीशु नमात् नरि ॥ ७ ॥ सार्थी वात उदात् नरि ॥ ८ ॥
 नीर्था संगति कीत् नरि ॥ ९ ॥ सार्थी परिहर दीत् नरि ॥ १० ॥
 गुरुत् वाव यथात् नरि ॥ ११ ॥ शीर्षा अकल उपात् नरि ॥ १२ ॥
 वृषा पालनां ललिन्त नरि ॥ १३ ॥ अग्न मतेलीं वलिन्त नरि ॥ १४ ॥
 आप वडाई कीत् नरि ॥ १५ ॥ वान उक्क विर दीत् नरि ॥ १६ ॥
 वान वेष पण्डितात् नरि ॥ १७ ॥ गुरु की धाम लजात् नरि ॥ १८ ॥
 आन आसरी लीत् नरि ॥ १९ ॥ न्याव अदल विन कीत् नरि ॥ २० ॥
 परमार्थ से मुहूर्त्त नरि ॥ २१ ॥ ऊखरुं मारग लख्त् नरि ॥ २२ ॥
 मन की मार्या कीत् नरि ॥ २३ ॥ वृत्त किरीकी दीत् नरि ॥ २४ ॥
 विन आया से सोत् नरि ॥ २५ ॥ शोक मारुत् दीत् नरि ॥ २६ ॥
 रत्नमं पुर ववात् नरि ॥ २७ ॥ शिष्यां ऊरुव यदात् नरि ॥ २८ ॥
 अण्डाल्यात् अल पीत् नरि ॥ २९ ॥ ऊयय किरीकी लीत् नरि ॥ ३० ॥
 शीर्षी कथिता करत् नरि ॥ ३१ ॥ सार्थी कडवां उरत् नरि ॥ ३२ ॥
 शीर्षी निर्या कीत् नरि ॥ ३३ ॥ पर गीरी विव दीत् नरि ॥ ३४ ॥
 पर वलि निरुप कमात् नरि ॥ ३५ ॥ अहर अणालां वात् नरि ॥ ३६ ॥
 काळ विकल मग लीत् नरि ॥ ३७ ॥ कपटी निरुत् कीत् नरि ॥ ३८ ॥
 सपथि मं कण रलत् नरि ॥ ३९ ॥ वान पीवन मं उकत् नरि ॥ ४० ॥
 राज प्रकाक वात् नरि ॥ ४१ ॥ वृत्त पराई कीत् नरि ॥ ४२ ॥
 सति गीरी कीत् नरि ॥ ४३ ॥ पर एला की दीत् नरि ॥ ४४ ॥
 सुत्त गीरुत् अत् नरि ॥ ४५ ॥ अग्नमं वृत्त कडात् नरि ॥ ४६ ॥
 शीर्षी वली वलत् नरि ॥ ४७ ॥ वापयु विन वलत् नरि ॥ ४८ ॥
 सुगत पावैरी कीत् नरि ॥ ४९ ॥ धाम परयो लीत् नरि ॥ ५० ॥
 मर्या यदात् नरि ॥ ५१ ॥ अलगा उरत् अत् नरि ॥ ५२ ॥

उरु एक पय ।

गणपय नर गीरीकी, सुघर लीक यलीक ॥ २ ॥
 मनुष्य अम की पाकि, दात्त एताग वीप ।
 पां वीरगिणी आदिगा, नरु वी परत् सुकल ॥ १ ॥
 गणपती गीरुप यवन, नरुदात्त उषुत्त वृःषः ।

दीर्घ ।

अप्य वीरगिणी योज ।

१ गौरी कला । २ पत्नी । ३ देवी । ४ देवी । ५ देवी । ६ देवी । ७ देवी । ८ देवी । ९ देवी । १० देवी । ११ देवी । १२ देवी । १३ देवी । १४ देवी । १५ देवी । १६ देवी । १७ देवी । १८ देवी । १९ देवी । २० देवी । २१ देवी । २२ देवी । २३ देवी । २४ देवी । २५ देवी । २६ देवी । २७ देवी । २८ देवी । २९ देवी । ३० देवी । ३१ देवी । ३२ देवी । ३३ देवी । ३४ देवी । ३५ देवी । ३६ देवी । ३७ देवी । ३८ देवी । ३९ देवी । ४० देवी । ४१ देवी । ४२ देवी । ४३ देवी । ४४ देवी । ४५ देवी । ४६ देवी । ४७ देवी । ४८ देवी । ४९ देवी । ५० देवी । ५१ देवी । ५२ देवी । ५३ देवी । ५४ देवी । ५५ देवी । ५६ देवी । ५७ देवी । ५८ देवी । ५९ देवी । ६० देवी । ६१ देवी । ६२ देवी । ६३ देवी । ६४ देवी । ६५ देवी । ६६ देवी । ६७ देवी । ६८ देवी । ६९ देवी । ७० देवी । ७१ देवी । ७२ देवी । ७३ देवी । ७४ देवी । ७५ देवी । ७६ देवी । ७७ देवी । ७८ देवी । ७९ देवी । ८० देवी । ८१ देवी । ८२ देवी । ८३ देवी । ८४ देवी । ८५ देवी । ८६ देवी । ८७ देवी । ८८ देवी । ८९ देवी । ९० देवी । ९१ देवी । ९२ देवी । ९३ देवी । ९४ देवी । ९५ देवी । ९६ देवी । ९७ देवी । ९८ देवी । ९९ देवी । १०० देवी ।

जो और कं कल देवता वो भी सदा कल पावेगा ।
 गौरी से गौरी जो से जो बावल से बावल पावेगा ॥
 जो आर देवता कल पावेगा यही देवता ही कल पावेगा ।
 कल देवता कल पावेगा कलपावेगा कलपावेगा ॥ कलजग ॥ ३ ॥
 वृ और ही गौरी करे गुणकारी सनाथानी मिले ।
 कर मुद्रिकल आया और ही गुणकारी भी मर्यादा मिले ।
 दोही खिल दोही मिले पानी पिला पानी मिले ॥ कलजग ॥ ७ ॥
 काले जो करना है अथ यह दम दो करि जान है ।
 परमान में परमान है गुकसान में गुकसान है ।
 शैवान कं शैवान है रहमान कं रहमान है ॥ कलजग ॥ ८ ॥
 यही अहरे दे दो अहरेले दाकर में दाकर देखले ।
 भेरी की भेरी का मजा मूर्खी को टाकर देखले ।
 गार गुणकारी यह गाँवर नही दो गौरी करके देखले ॥ कलजग ॥ ९ ॥
 जो शर्म दे और की जो यह भी शरत आयगा ।
 जोषे शरत और का उसका शरत आयगा ।
 यही आज निरक दाय से कोरे मर विवाय आयगा ॥
 गाणिक न ही रस यात पर कल वो भी मार आयगा ॥ कलजग ॥ १० ॥
 शकल कि यह जाले नही नही यही साहिब देदारक है ।
 शिख दाद रस शिख दाद है गमनाक रस गमनाक है ॥
 हर शाल में वृ भी गौरी अथ हर करम की शक है ।
 यह वो मका है अथ निपा यही पाक है ब्रवाक है ॥ कलजग ॥ ११ ॥

वनजरीनामा ।

१ पत्नी । २ बाली । ३ मंदवर्णा । ४ पत्नी । ५ पत्नी । ६ सुतेज ।
७ मय कृष्णा । ८ वसिष्ठा । ९ धात्री । १० धात्री । ११ वसिष्ठा । १२ धात्री ।

जय देवा स्वयं वी आहिर को न धीर्षी खाट खटोला है ॥ गुज ॥ १२ ॥
कहि छटना छात्र पिदारी है कहि विपना खाट खटोला है ।

कहि दीक दधु का खुरी कहि कोडी धुवा धुवा है ॥
कहि धान अटल टाट गनी कहि धमरख धमरख तकला है ।

जय देवा स्वयं वी आहिर को सब विपनी देखत भूली है ॥ गुज ॥ १३ ॥
तरकारी धान साग हरा गुंडगांडा गाजर भूली है ।

कहि बजनी छात्र पिदारी है कहि चूला चकी चूली है ॥
कहि बजनी देवी भूनी है कहि धास करव की पूनी है ।

जय देवा स्वयं वी आहिर कोन बेरी है न भरी है ॥ गुज ॥ १० ॥
कोर झण्डे अपनी जागाह पर यह भरी है यह बेरी है ।

कोर पट्टा सर पर जाला है कोर झण्डे पूज मुकरी है ॥
कोर धुवे धान दारव आफुरान कही देय देवी की कही है ।

जय देवा स्वयं वी आहिर को सब दगांधा रखा जाता है ॥ गुज ॥ ११ ॥
कोर माल कछा करता है कोर कुवा कुक लगाता है ।

कोर छीन झण्डे छे धान कोर धूस का डर दिखलाता है ॥
कोर रीता है कोर हंसता है कोर गाव है कोर गाता है ।

जय देवा स्वयं वी आहिर को सब छोह अकला जाता है ॥ गुज ॥ ८ ॥
कोर पूजा क्या बखाने है कोर छापा लिजक लगाता है ।

कोर कपड़े रंगे पहिने है कोर नंग मुनगा आता है ॥
कोर बाल बगुन फिरोता है कोर सर को घाट मंगला है ।

जय देवा स्वयं वी आहिर को न पगरी है न आमा है ॥ गुज ॥ ७ ॥
कमलाय गनी और गण्ड का निव कजिया और हंगामा है ।

कोर साफ पहना फिरोता है न पगरी है न पजामा है ॥
कोर दीपी दीप बनाता है कोर धाँप फिरे अगामा है ।

जय देवा स्वयं वी आहिर को न भोर है न बेरा है ॥ गुज ॥ ६ ॥
निव फलिये धाँप रूई है यह भोर है यह बेरा है ।

कोर धान कृष्ण बनवता है और धर किमी न घरा है ॥
कोर झण्डे फुले गजिया न बेघार किमी का घरा है ।

जय देवा स्वयं वी आहिर को सब दीला मकर बखलाता है ॥ गुज ॥ ५ ॥
गधीन कनीला फाल फिरे और और मकर जलाता है ।

कोर आंखिल कानिल बनाता है कोर मल सिरी दीपनाता है ॥
रामाल गनी आंखिल है और कानिल मुला खाना है ।

यह देखा एवं तो-आखिर को कुछ डेना एक न देना दो ॥ गूज ॥ ४ ॥
 कोर लड़ता है कोर मरता है कोर लड़क एक और नारक को ।
 कोर धोखे अपना मुससे जो और सोच है जो मुसको दो ॥
 कोर फूल के धूरे मराने पर कोर रोवे अपनी दोखत जो ।
 जब देखा एवं तो आखिर को देखल न को घोषो है ॥ गूज ॥ ३ ॥
 क्या जाने कौन खरीदे है और किसने जिन्स उतारो है ।
 यहां घोष किसी का इतका है और खेप किसी की मासो है ॥
 कोर सेठ मराने लखपणी पञ्जान कोर फलसो है ।
 जब देखा एवं तो आखिर को न रिदता है न गता है ॥ गूज ॥ २ ॥
 कोर माई बाप जबा कोर नाभी पूत करता है ।
 कोर कपड़े को पहिने है कोर गिरदी और जाता है ॥
 कोर राज खरीदे देस देस कर कोर रजत खर्च पनवाता है ।
 हम देस बुके देस बुनिया को सब धोखे कीसो टरी है ॥ १ ॥
 गूज और पवला आग हवा और कीचड़ पानी मरी है ।
 जब देखा एवं तो आखिर को न चरहा माइ न मरी है ॥
 कुछ पकता है कुछ भुनता है पकवान मिटाई पही है ।
 यहां माल किसी का मीठा है और बीज किसी की खरी है ॥
 यह पूर खजव है बुनिया की और क्या क्या जिन्स रकरी है ।

घोकेकी टरी ।

उस जाल में जब आह नवीर एक भुनगा आन न आकेगा ॥ सब ॥ १२ ॥
 ही है अकेला जाल में न खक लहर की फाकेगा ।
 कोर नाज समझेगा तेरा कोई गोन सिधे और टाकेगा ॥
 जब काल फिरकर बाहुक को यह बोल बदन का टाकेगा ।
 क्या बुज रहेकला तोप फिजा क्या सीया बोक और गोज ॥ सब ॥ ११ ॥
 क्या देखनी खेद करे पचा कोर कंगुम खनगोज ।
 न उंची मरी उतारा है यहां घोर गेह में मुह खोज ॥
 क्या पूल मका पनवाता है है खम तेरे ननका पोज ।
 क्या जिलमन तकिधे रदाम क क्या लाल पलंग क्या लामहल ॥ सब १० ॥
 घर घर अटारी चंपारै क्या खारा-जनखिल और मज मज ।
 एक भुनगा पास न आवेगा मोकेक हुआ जब क जाल ॥
 यह धूम धरुका साथ लिये क्या फिरता है जाल जाल ।

इस पाँच घण्टे कर चलने से मत रस्ते को हिरान करे ।
 और पाण्डे मुँह से रोटी को मत मल मल कर हलकाम करे ॥
 अब आप हुए हिम पानी से मत पानी का निकाल करे ।
 कुछ लाभ नहीं इस जीनें अब मरने से पहिचान करे ॥ वन ॥ ३ ॥
 गर अच्छी करनी नेक अमल हिम बुनिया से ले जाओगे ।
 तो घर भी अच्छा पाओगे और सुख से ढँके जाओगे ॥
 और ऐसी बौद्ध छोर के हिम जो छाँटी छाँटी जाओगे ।
 कुछ लाभ नहीं पनआने की पयराओगे पहिचानो ॥ वन ॥ ७ ॥
 घर घर कपड़े पूरे में मत दिज को हिम बुझाने करे ।
 या धीरे पनआओ जंगल में या जमुना पर आनंद करे ॥
 मीठ जो आन लजाओगे आखिर मकर करे या कन्द करे ।
 सब बहुत लभआ देल लुके अब आँखे अपनी बंध करे ॥ वन ॥ ८ ॥
 बोपार तो यहाँ का बहुत किया अब यहाँ का भी कुछ सोचो जो ।
 जो खेप उतर को चढ़ी हो उस खेप को यहाँ से लयवाओ ॥
 उस राह में जो कुछ छाते हो उस छाते को भी मंगवाओ ।
 सब छापी पढ़े मजिज पर अब हिमभी अपना रस्ते लो ॥ वन ॥ ९ ॥
 हो घर धरती या हो हिम में अब वन से आन निकलनी है ।
 यह हठी पसलौ जितनी है या गजनी है या जलनी है ॥
 है रात जो भाकी थोड़ी भी कोर वन की यह भी रुकनी है ।
 उठ थोड़ा कमर सधरे से हिम को भी मजिज चलनी है ॥ वन ॥ १० ॥
 यह पीठ काम न आओगी मत रखनी हिम जॉर करे ।
 यह छाक बदन की पाल है मत मार हैसे भसीर करे ॥
 जो पार उतारे बुनिया से उन पानी को गूँठ पीर करे ।
 सब गांध निकारे आ पुरैणी अब बड़ने की लपकी करे ॥ वन ॥ ११ ॥
 कुछ पूरे नहीं अब बड़ने में या आन पानी का काल पानी ।
 जो कपड़े सँके छेने हो जाली थोड़ा धोख निकलौ ॥
 सब काम नहीं मय पुवक हूँ मैं मीठ पिपुवकर पूज निकलौ ।
 पानी मारक पाण बडत हो पण उँट हो उँट पण निकलौ ॥ वन ॥ १२ ॥
 यह उँट निकलना पानी मारक जाली भोषी है ।
 सब पाण्डे की मधवार सब निकर पाँसा है मरणी है ॥
 जिस भीने पंडे हिम छोर हो पण पाण्डे निकलौ ॥ वन ॥ १३ ॥
 पूरे नहीं अब बड़ने में या आन पानी का काल पानी ।
 जो कपड़े सँके छेने हो जाली थोड़ा धोख निकलौ ॥
 सब काम नहीं मय पुवक हूँ मैं मीठ पिपुवकर पूज निकलौ ।
 पानी मारक पाण बडत हो पण उँट हो उँट पण निकलौ ॥ वन ॥ १४ ॥

परमार्थ अजल का आ पर्वण्य एक एकको देख डरो याया ।
 अब अर्क पक्षीको आँखों से आर आँहें दूर मरो याया ॥
 दिल दाय उठाकर जीनेसे बेचल मन मार मरो याया ।
 अब दाय की खातिर रोवेँ अब अपनी खातिर रो याया ॥
 मन सुखा ऊँचरी पीठ मुँहें घोरे पर जीन यरो याया ।
 अब मीठ नकाल आ यागा चलने का निकर करो याया ॥ १ ॥
 अब जीने को गुम रखलव दो और मरने को महमान करो ।
 क्षीरव करो अहसान करो या पुण्य करो या दान करो ॥
 या परो जरूँ बुद्धयाओ या खासा हलवा मीन करो ।
 कुछ जिक्र नहीँ अब चलने का सामान करो ॥ तन ॥ २ ॥
 दिल काली अपने जीनेसे अब और गले को मत काटो ।
 अब साट फनी की टिक चकली और खून किमीका मत बाटो ।
 येन छोड़ी हिस्से बाधरे की गुम भागी अपनी मत बाटो ॥
 भाकरं बहरे कंद चिक अब और डूबली मत छोटो ॥ तन ॥ ३ ॥
 यह क्षय बहल कपो उठला अब कौर मारो डेरको ।
 अब गाल कटो करे अब नकाल अपने डेर करो ॥
 गडू देठा लखर भाग चुका अब त्याग में गुम दामसेर करो ।
 गुम बाक लड़ाई दारचुक अब यागन में मत डेर करो ॥ तन ॥ ४ ॥
 सर काया चाँदी बाल डेर मुँह पीला पक्के पलट गरो ।
 कर देठी काल डेर बहरे अब आँख मी बुद्धियाय गरो ॥
 सुख नीर गरो और मुँह पटी दिल सुख हुआ आपाज मरो ।
 जो दोनी थी सो ही गुजारी अब चलने में कुछ डेर नहीँ ॥ तन ॥ ५ ॥

बुद्धी ।

कोर शिका बाज उजाता है कोर दाय में रखे गुजली है ।
 गोरवाज कोरे से देठा है और घोरे किमीनें डूबली है ॥
 है गार किमी के बाधों में और नालव फिरकी गुजली है ।
 अब बेला खूब तो आखिर को न रंदास खून न सुजली है ॥ गुज ॥ १३ ॥
 अब किछका रो गुम कहिये और किछका कर मला कहिये ।
 एक गुम की पीठ लगी है यह अर्थात् मजा चरवा कहिये ॥
 यह छेर नमादा देख नकीर अब आ कहिये बेजा कहिये ।
 कुछ बात नहीँ वनभाज की सुपवाय मला है फया कहिये ॥ गुज ॥ १४ ॥

कोर बाळ मल कोर माळ मल कोर पोती मीना खरे मं ।
 कोर खल मल कोर पखिल मल कोर राम रगिणी पूरे मं ॥
 कोर अमल मल कोर रामल कोर गान्धर्व खेरे मं ।
 एक खुर मली विन और मल खर पडे अविद्या खरे मं ॥ १ ॥
 कोर अकल मल कोर गोकल मल कोर चवळवाडी दूती मं ।
 कोर वेद मल कोर कथेव मल कोर मोक मं कोर काती मं ॥
 कोर ग्राम मल कोर ग्राम मल कोर सेवक मं कोर दासी मं ।
 एक खुर मली विन और मल खर पडे अविद्या खरे मं ॥ २ ॥
 कोर पर मल कोर टाळ मल कोर धीर मं कोर काडी मं ।
 कोर मध्य मल कोर पश्य मल कोर देव वीर दंग खाली मं ॥
 कोर काम मल कोर खाम मल कोर पूरण मं कोर खाली मं ।
 एक खुर मली विन और मल खर पडे अविद्या खाली मं ॥ ३ ॥
 कोर हाळ मल कोर धार मल कोर मन परवन खीचारा मं ।
 कोर आनि मल कोर पाति मल कोर वान मान सुत दारा मं ॥
 कोर कर्म मल कोर धर्म मल कोर महिबुर डाकुखारा मं ।
 एक खुर मली विन और मल खर पडे अविद्या धारा मं ॥ ४ ॥
 कोर राज मल कोर गज मल कोर जगत् मं कोर पूरे मं ।
 कोर बुज मल कोर कुज मल कोर खडग कुजर पखले मं ॥
 कोर धम मल कोर नेम मल कोर छिके मं कोर झुळे मं ।
 एक खुर मली विन और मल खर जळे अविद्या खरे मं ॥ ५ ॥
 कोर शाक मल कोर शाक मल कोर खोसे मं कोर मजमज मं ।
 कोर जोग मल कोर योग मल कोर स्थिति मं कोर खंजल मं ॥
 कोर सिद्धि मल कोर सिद्धि मल कोर जेव देव की गजाळ मं ।
 एक खुर मली विन और मल खर फूले अविद्या खंजल मं ॥ ६ ॥
 कोर कर्ण मल कोर अयः मल कोर गणित मं कोर अन्तर मं ।
 कोर देव मल कोर विदेव मल कोर शौण्डि मं कोर मंतर मं ॥
 कोर आय मल कोर वारा मल कोर मोटक खेडक खेडक मं ।
 एक खुर मली विन और मल खर असे अविद्या खंजर मं ॥ ७ ॥
 कोर सुव मल कोर सुव मल कोर दीर मं कोर खोडे मं ।
 कोर गुण मल कोर गुण मल कोर गुण मल कोर गुण मं ।
 कोर धार मल कोर धार मल कोर धार मल कोर धार मं ।
 एक खुर मली विन और मल खर धार मल कोर धार मं ॥ ८ ॥
 कोर कर्म मल कोर धर्म मल कोर महिबुर डाकुखारा मं ।
 एक खुर मली विन और मल खर पडे अविद्या धारा मं ॥ ४ ॥
 कोर राज मल कोर गज मल कोर जगत् मं कोर पूरे मं ।
 कोर बुज मल कोर कुज मल कोर खडग कुजर पखले मं ।
 कोर धम मल कोर नेम मल कोर छिके मं कोर झुळे मं ।
 एक खुर मली विन और मल खर जळे अविद्या खरे मं ॥ ५ ॥
 कोर शाक मल कोर शाक मल कोर खोसे मं कोर मजमज मं ।
 कोर जोग मल कोर योग मल कोर स्थिति मं कोर खंजल मं ।
 कोर सिद्धि मल कोर सिद्धि मल कोर जेव देव की गजाळ मं ।
 एक खुर मली विन और मल खर फूले अविद्या खंजल मं ॥ ६ ॥
 कोर कर्ण मल कोर अयः मल कोर गणित मं कोर अन्तर मं ।
 कोर देव मल कोर विदेव मल कोर शौण्डि मं कोर मंतर मं ॥
 कोर आय मल कोर वारा मल कोर मोटक खेडक खेडक मं ।
 एक खुर मली विन और मल खर असे अविद्या खंजर मं ॥ ७ ॥
 कोर सुव मल कोर सुव मल कोर दीर मं कोर खोडे मं ।
 कोर गुण मल कोर गुण मल कोर गुण मल कोर गुण मं ।
 कोर धार मल कोर धार मल कोर धार मल कोर धार मं ।
 एक खुर मली विन और मल खर धार मल कोर धार मं ॥ ८ ॥

खुरमली ।

सपत्नि प्रयाया निरपत्ति न वै भूत् यत्रथा

निर्दीर्ण यथावा निपतमया निपतयति ॥ ५५ ॥

कञ्च खेच्छजलस्य प्रतिपन्नसदृशं क्षितिच्छेदं

पयः स्यात् स्यात् क्षितिरेत्ययत् प्रपयसतिताम् ।

सूदृश्यायां शब्दा सुललितलतापुष्पयया

सदृशं सत्तमं तद्विदं यत्तिनां शक्तिं कृपणाः ॥ ५६ ॥

प्रथमतः पठन् कश्चित् कृतं पुनरुद्धौ परदेयानिपेयम् ।

यद्वत्क्षितिं दीनमप्य यवन् सदा कश्चिन्ना क्षितिना विदुषां कृता ॥ ५७ ॥

अदं शान्तवृत्तिना निरिजयाप्यु क्षिप्रस्तारत

वृत्तं अनादीवले सारदनायाव सुगुणीलति ।

नाम सान्तरभृत् शक्तिकला नामाक्षिपः क्षमाते

सर्वलक्षणशीलान्तरयामामत् त्वं मां च निपतयम् ॥ ५८ ॥

जातः शौलो कर्तव्यविषयात् श्रेययोगात्कपालो

यत्कामावादिनात्पवनतः श्वेदीक्ष्याञ्जटावान् ।

गुणान्तेषामपरिवयवशोदीप्यतेत्वं मयाम्-

मयापि त्वं मम तत्पते शिषुवदं न क्षति ॥ ५९ ॥

राधासदृश्यालयाः पदमतिः सायुः सर्वा वृत्तिमः

दूरः सञ्चरितः कलकश्चिन्ना मानी कृतश्चः कतिः ।

यायाविभुवववपातसदृशं वृद्धिं नो मापते

तस्मादाप्यभिदं मम शूल्य सखे मां शूहे दीनं ववः ॥ ६० ॥

देरे वाक्क सपथानमनसा निप स्यात् श्रेयता-

मयादी वदथा वदति मानं सवृत्तिं वृत्तादद्याः ।

कश्चिद्विभिरादृयति यमुषां गजति कश्चिद्वया

यं यं पश्यति तस्य तस्य पुरतो मां शूहे दीनं ववः ॥ ६१ ॥

दृष्ट्वां वाननिपयतां श्रुतिवृत्तौ सारसतदीहिणौ

वन्नं सपुत्तिजोक्तवन्न रक्षितं पाथी न वीथं गतो ।

अन्यायातिवृत्तिवर्णानुदरे गव्वाणं वृत्तिं क्षिपे

देरे वृक्क मुञ्च मुञ्च सद्रक्षा नीवस्य क्षिपं ययुः ॥ ६२ ॥

अप्याशया निपतिता गदन् स केषु द्रुपानस्य सख्योऽन्तकद्वेषम यातः ।

सया विपत्तिं सुगिणा गिणिना यदास तस्मान्प्रयोजकदं हि वृषसि लीमम्

सखेते मम वृत्तिना मयवज्जलनादस्यला

यावत्यापवपानिगम गुरुना मयापि अख्ये पयव ।

पराक्षिपतिदं अमं पुनरिदं अमपिदं यथावत्

क्षिन्नावादीवृत्तवर्षा यव शूलं का नाम शक्तिः कृपा ॥ ६३ ॥

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

(1) (2) (3) (4) (5) (6) (7) (8) (9) (10)

(11) (12) (13) (14) (15) (16) (17) (18) (19) (20)

(21) (22) (23) (24) (25) (26) (27) (28) (29) (30)

(31) (32) (33) (34) (35) (36) (37) (38) (39) (40)

(41) (42) (43) (44) (45) (46) (47) (48) (49) (50)

(51) (52) (53) (54) (55) (56) (57) (58) (59) (60)

(61) (62) (63) (64) (65) (66) (67) (68) (69) (70)

(71) (72) (73) (74) (75) (76) (77) (78) (79) (80)

(81) (82) (83) (84) (85) (86) (87) (88) (89) (90)

(91) (92) (93) (94) (95) (96) (97) (98) (99) (100)

(101) (102) (103) (104) (105) (106) (107) (108) (109) (110)

(111) (112) (113) (114) (115) (116) (117) (118) (119) (120)

(121) (122) (123) (124) (125) (126) (127) (128) (129) (130)

(131) (132) (133) (134) (135) (136) (137) (138) (139) (140)

(141) (142) (143) (144) (145) (146) (147) (148) (149) (150)

(151) (152) (153) (154) (155) (156) (157) (158) (159) (160)

(161) (162) (163) (164) (165) (166) (167) (168) (169) (170)

(171) (172) (173) (174) (175) (176) (177) (178) (179) (180)

(181) (182) (183) (184) (185) (186) (187) (188) (189) (190)

(191) (192) (193) (194) (195) (196) (197) (198) (199) (200)

(1)

(2) (3) (4) (5) (6) (7) (8) (9) (10)

(11) (12) (13) (14) (15) (16) (17) (18) (19) (20)

(21) (22) (23) (24) (25) (26) (27) (28) (29) (30)

(31) (32) (33) (34) (35) (36) (37) (38) (39) (40)

(41) (42) (43) (44) (45) (46) (47) (48) (49) (50)

(51) (52) (53) (54) (55) (56) (57) (58) (59) (60)

(61) (62) (63) (64) (65) (66) (67) (68) (69) (70)

(71) (72) (73) (74) (75) (76) (77) (78) (79) (80)

(81) (82) (83) (84) (85) (86) (87) (88) (89) (90)

(91) (92) (93) (94) (95) (96) (97) (98) (99) (100)

(101) (102) (103) (104) (105) (106) (107) (108) (109) (110)

(111) (112) (113) (114) (115) (116) (117) (118) (119) (120)

(121) (122) (123) (124) (125) (126) (127) (128) (129) (130)

(131) (132) (133) (134) (135) (136) (137) (138) (139) (140)

(141) (142) (143) (144) (145) (146) (147) (148) (149) (150)

(151) (152) (153) (154) (155) (156) (157) (158) (159) (160)

(161) (162) (163) (164) (165) (166) (167) (168) (169) (170)

(171) (172) (173) (174) (175) (176) (177) (178) (179) (180)

(181) (182) (183) (184) (185) (186) (187) (188) (189) (190)

(191) (192) (193) (194) (195) (196) (197) (198) (199) (200)

(N)। ३३
 - २०००
 - १९९९
 - १९९८
 - १९९७
 - १९९६
 - १९९५
 - १९९४
 - १९९३
 - १९९२
 - १९९१
 - १९९०
 - १९८९
 - १९८८
 - १९८७
 - १९८६
 - १९८५
 - १९८४
 - १९८३
 - १९८२
 - १९८१
 - १९८०
 - १९७९
 - १९७८
 - १९७७
 - १९७६
 - १९७५
 - १९७४
 - १९७३
 - १९७२
 - १९७१
 - १९७०
 - १९६९
 - १९६८
 - १९६७
 - १९६६
 - १९६५
 - १९६४
 - १९६३
 - १९६२
 - १९६१
 - १९६०
 - १९५९
 - १९५८
 - १९५७
 - १९५६
 - १९५५
 - १९५४
 - १९५३
 - १९५२
 - १९५१
 - १९५०
 - १९४९
 - १९४८
 - १९४७
 - १९४६
 - १९४५
 - १९४४
 - १९४३
 - १९४२
 - १९४१
 - १९४०
 - १९३९
 - १९३८
 - १९३७
 - १९३६
 - १९३५
 - १९३४
 - १९३३
 - १९३२
 - १९३१
 - १९३०
 - १९२९
 - १९२८
 - १९२७
 - १९२६
 - १९२५
 - १९२४
 - १९२३
 - १९२२
 - १९२१
 - १९२०
 - १९१९
 - १९१८
 - १९१७
 - १९१६
 - १९१५
 - १९१४
 - १९१३
 - १९१२
 - १९११
 - १९१०
 - १९०९
 - १९०८
 - १९०७
 - १९०६
 - १९०५
 - १९०४
 - १९०३
 - १९०२
 - १९०१
 - १९००

१९००
 - १९०१
 - १९०२
 - १९०३
 - १९०४
 - १९०५
 - १९०६
 - १९०७
 - १९०८
 - १९०९
 - १९१०
 - १९११
 - १९१२
 - १९१३
 - १९१४
 - १९१५
 - १९१६
 - १९१७
 - १९१८
 - १९१९
 - १९२०
 - १९२१
 - १९२२
 - १९२३
 - १९२४
 - १९२५
 - १९२६
 - १९२७
 - १९२८
 - १९२९
 - १९३०
 - १९३१
 - १९३२
 - १९३३
 - १९३४
 - १९३५
 - १९३६
 - १९३७
 - १९३८
 - १९३९
 - १९४०
 - १९४१
 - १९४२
 - १९४३
 - १९४४
 - १९४५
 - १९४६
 - १९४७
 - १९४८
 - १९४९
 - १९५०
 - १९५१
 - १९५२
 - १९५३
 - १९५४
 - १९५५
 - १९५६
 - १९५७
 - १९५८
 - १९५९
 - १९६०
 - १९६१
 - १९६२
 - १९६३
 - १९६४
 - १९६५
 - १९६६
 - १९६७
 - १९६८
 - १९६९
 - १९७०
 - १९७१
 - १९७२
 - १९७३
 - १९७४
 - १९७५
 - १९७६
 - १९७७
 - १९७८
 - १९७९
 - १९८०
 - १९८१
 - १९८२
 - १९८३
 - १९८४
 - १९८५
 - १९८६
 - १९८७
 - १९८८
 - १९८९
 - १९९०
 - १९९१
 - १९९२
 - १९९३
 - १९९४
 - १९९५
 - १९९६
 - १९९७
 - १९९८
 - १९९९
 - २०००

शिकावा पत्ता:—

सिद्धयल खडपा यामलेही यामपव व खालयाही यामपव

॥ श्रीः ॥

1073 1074 1075 1076 1077

(1073 1074 1075 1076 1077)

(2 1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

1073 1074 1075 1076 1077

(1073 1074 1075 1076 1077)

(1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

(N) (1073 1074)

(1073 1074)

(1073 1074 1075 1076 1077)

(1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

(1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

(1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

(1073 1074)

(1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

(1073 1074 1075 1076 1077)

(1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

(1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

1073 1074 1075 1076 1077

(1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

(S) (1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

(S) (1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

(S) (1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

(S) (1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

(S) (1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

1073 1074 1075 1076 1077

(1073 1074 1075 1076 1077)

(2 1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

(1073 1074) (1075 1076)

(1073 1074 1075 1076 1077)

(1073 1074 1075 1076 1077)

(S) (1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

(1073 1074 1075 1076 1077)

1073 1074 1075 1076 1077

(1073 1074) (1075 1076)

(1073 1074 1075 1076 1077)

1073 1074 1075 1076 1077

(1073 1074 1075 1076 1077)

(1073 1074)

(1073 1074 1075 1076 1077)

(1073 1074 1075 1076 1077)

(N) (1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

(N) (1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

(N) (1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

1073 1074 1075 1076 1077

(1073 1074) (1075 1076)

(1073 1074 1075 1076 1077)

(1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

(1073 1074) (1075 1076)

(S) (1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

(1073 1074) (1075 1076)

(S) (1073 1074)

1073 1074 1075 1076 1077

(1073 1074) (1075 1076)

1073 1074 1075 1076 1077

(1073 1074) (1075 1076)

(10) 1931-32

1. (10) 1931-32
 2. (10) 1931-32
 3. (10) 1931-32
 4. (10) 1931-32
 5. (10) 1931-32
 6. (10) 1931-32
 7. (10) 1931-32
 8. (10) 1931-32
 9. (10) 1931-32
 10. (10) 1931-32
 11. (10) 1931-32
 12. (10) 1931-32
 13. (10) 1931-32
 14. (10) 1931-32
 15. (10) 1931-32
 16. (10) 1931-32
 17. (10) 1931-32
 18. (10) 1931-32
 19. (10) 1931-32
 20. (10) 1931-32
 21. (10) 1931-32
 22. (10) 1931-32
 23. (10) 1931-32
 24. (10) 1931-32
 25. (10) 1931-32
 26. (10) 1931-32
 27. (10) 1931-32
 28. (10) 1931-32
 29. (10) 1931-32
 30. (10) 1931-32
 31. (10) 1931-32
 32. (10) 1931-32
 33. (10) 1931-32
 34. (10) 1931-32
 35. (10) 1931-32
 36. (10) 1931-32
 37. (10) 1931-32
 38. (10) 1931-32
 39. (10) 1931-32
 40. (10) 1931-32
 41. (10) 1931-32
 42. (10) 1931-32
 43. (10) 1931-32
 44. (10) 1931-32
 45. (10) 1931-32
 46. (10) 1931-32
 47. (10) 1931-32
 48. (10) 1931-32
 49. (10) 1931-32
 50. (10) 1931-32
 51. (10) 1931-32
 52. (10) 1931-32
 53. (10) 1931-32
 54. (10) 1931-32
 55. (10) 1931-32
 56. (10) 1931-32
 57. (10) 1931-32
 58. (10) 1931-32
 59. (10) 1931-32
 60. (10) 1931-32
 61. (10) 1931-32
 62. (10) 1931-32
 63. (10) 1931-32
 64. (10) 1931-32
 65. (10) 1931-32
 66. (10) 1931-32
 67. (10) 1931-32
 68. (10) 1931-32
 69. (10) 1931-32
 70. (10) 1931-32
 71. (10) 1931-32
 72. (10) 1931-32
 73. (10) 1931-32
 74. (10) 1931-32
 75. (10) 1931-32
 76. (10) 1931-32
 77. (10) 1931-32
 78. (10) 1931-32
 79. (10) 1931-32
 80. (10) 1931-32
 81. (10) 1931-32
 82. (10) 1931-32
 83. (10) 1931-32
 84. (10) 1931-32
 85. (10) 1931-32
 86. (10) 1931-32
 87. (10) 1931-32
 88. (10) 1931-32
 89. (10) 1931-32
 90. (10) 1931-32
 91. (10) 1931-32
 92. (10) 1931-32
 93. (10) 1931-32
 94. (10) 1931-32
 95. (10) 1931-32
 96. (10) 1931-32
 97. (10) 1931-32
 98. (10) 1931-32
 99. (10) 1931-32
 100. (10) 1931-32

1. 1931-32
 2. 1931-32
 3. 1931-32
 4. 1931-32
 5. 1931-32
 6. 1931-32
 7. 1931-32
 8. 1931-32
 9. 1931-32
 10. 1931-32
 11. 1931-32
 12. 1931-32
 13. 1931-32
 14. 1931-32
 15. 1931-32
 16. 1931-32
 17. 1931-32
 18. 1931-32
 19. 1931-32
 20. 1931-32
 21. 1931-32
 22. 1931-32
 23. 1931-32
 24. 1931-32
 25. 1931-32
 26. 1931-32
 27. 1931-32
 28. 1931-32
 29. 1931-32
 30. 1931-32
 31. 1931-32
 32. 1931-32
 33. 1931-32
 34. 1931-32
 35. 1931-32
 36. 1931-32
 37. 1931-32
 38. 1931-32
 39. 1931-32
 40. 1931-32
 41. 1931-32
 42. 1931-32
 43. 1931-32
 44. 1931-32
 45. 1931-32
 46. 1931-32
 47. 1931-32
 48. 1931-32
 49. 1931-32
 50. 1931-32
 51. 1931-32
 52. 1931-32
 53. 1931-32
 54. 1931-32
 55. 1931-32
 56. 1931-32
 57. 1931-32
 58. 1931-32
 59. 1931-32
 60. 1931-32
 61. 1931-32
 62. 1931-32
 63. 1931-32
 64. 1931-32
 65. 1931-32
 66. 1931-32
 67. 1931-32
 68. 1931-32
 69. 1931-32
 70. 1931-32
 71. 1931-32
 72. 1931-32
 73. 1931-32
 74. 1931-32
 75. 1931-32
 76. 1931-32
 77. 1931-32
 78. 1931-32
 79. 1931-32
 80. 1931-32
 81. 1931-32
 82. 1931-32
 83. 1931-32
 84. 1931-32
 85. 1931-32
 86. 1931-32
 87. 1931-32
 88. 1931-32
 89. 1931-32
 90. 1931-32
 91. 1931-32
 92. 1931-32
 93. 1931-32
 94. 1931-32
 95. 1931-32
 96. 1931-32
 97. 1931-32
 98. 1931-32
 99. 1931-32
 100. 1931-32

(1) (2) (3) (4) (5) (6) (7) (8) (9) (10) (11) (12) (13) (14) (15) (16) (17) (18) (19) (20) (21) (22) (23) (24) (25) (26) (27) (28) (29) (30) (31) (32) (33) (34) (35) (36) (37) (38) (39) (40) (41) (42) (43) (44) (45) (46) (47) (48) (49) (50) (51) (52) (53) (54) (55) (56) (57) (58) (59) (60) (61) (62) (63) (64) (65) (66) (67) (68) (69) (70) (71) (72) (73) (74) (75) (76) (77) (78) (79) (80) (81) (82) (83) (84) (85) (86) (87) (88) (89) (90) (91) (92) (93) (94) (95) (96) (97) (98) (99) (100)

(1) (2) (3) (4) (5) (6) (7) (8) (9) (10) (11) (12) (13) (14) (15) (16) (17) (18) (19) (20) (21) (22) (23) (24) (25) (26) (27) (28) (29) (30) (31) (32) (33) (34) (35) (36) (37) (38) (39) (40) (41) (42) (43) (44) (45) (46) (47) (48) (49) (50) (51) (52) (53) (54) (55) (56) (57) (58) (59) (60) (61) (62) (63) (64) (65) (66) (67) (68) (69) (70) (71) (72) (73) (74) (75) (76) (77) (78) (79) (80) (81) (82) (83) (84) (85) (86) (87) (88) (89) (90) (91) (92) (93) (94) (95) (96) (97) (98) (99) (100)

(1) (2) (3) (4) (5) (6) (7) (8) (9) (10) (11) (12) (13) (14) (15) (16) (17) (18) (19) (20) (21) (22) (23) (24) (25) (26) (27) (28) (29) (30) (31) (32) (33) (34) (35) (36) (37) (38) (39) (40) (41) (42) (43) (44) (45) (46) (47) (48) (49) (50) (51) (52) (53) (54) (55) (56) (57) (58) (59) (60) (61) (62) (63) (64) (65) (66) (67) (68) (69) (70) (71) (72) (73) (74) (75) (76) (77) (78) (79) (80) (81) (82) (83) (84) (85) (86) (87) (88) (89) (90) (91) (92) (93) (94) (95) (96) (97) (98) (99) (100)

(1) (2) (3) (4) (5) (6) (7) (8) (9) (10) (11) (12) (13) (14) (15) (16) (17) (18) (19) (20) (21) (22) (23) (24) (25) (26) (27) (28) (29) (30) (31) (32) (33) (34) (35) (36) (37) (38) (39) (40) (41) (42) (43) (44) (45) (46) (47) (48) (49) (50) (51) (52) (53) (54) (55) (56) (57) (58) (59) (60) (61) (62) (63) (64) (65) (66) (67) (68) (69) (70) (71) (72) (73) (74) (75) (76) (77) (78) (79) (80) (81) (82) (83) (84) (85) (86) (87) (88) (89) (90) (91) (92) (93) (94) (95) (96) (97) (98) (99) (100)

